कौवा उसे अपनी चोंच से तोड़ नहीं सकता और उसका गूदा नहीं खा सकता।)

बेल फूटा राई-राई हो गया

बेल (नीचे गिरकर) फूटा तो टुकड़े-टुकड़े हो गया। आपस की फूट से बहुत हानि होती है।
(राई या सरसो का दाना बहुत छोटा होता है। उसी से मुहावरा राई-राई बना, जिसका ठीक अर्थ छार-छार है।)

बेल बढ़ावे और जड़ काटे

मूर्ख आदमी।
(जो बेल को सींचता और उसकी जड़ भी काटता है। धूर्त या कपटी के लिए भी क०।)

बेल, बबूल, आक और धूल

दोनों ही एक से हानिकारी। एक के नीचे जाने से सिर फूटता है, दूसरे के पास जाने से कांटे छिदते है।

बेल मढ़े चढ़ते नहीं दिखाई देती

काम पूरा होते नही दिखाई देता।
मढ़े=मंडप पर।

बेवक़्त की शहनाई, मुए कूढ़ ने बजाई, (स्त्रि०)

कोई जब बिल्कुल ही बेमौक़े की बात करे, तब क०।

बेवारिसी नाव डावांडोल

जहां कोई देखभाल करनेवाला नही होता, वहा सब काम गड़बड़ हो जाता है।
(प्रायः अनाथ लड़के के लिए क०।)

बेसवा सती, न कागा जती

वेश्या चरित्रवान नही होती, और कौवा भी निरामिष-भोजी नही होता।

बेसिरी फ़ौज

बेमालिक या बिना अफ़सर के कार्यकर्ता।

बेहयाई का बुरका, मुंह पर डाल लिया है

शर्म लाद ली है।

बेहया के नीचे रूख जमा, उसने जाना छांह हुई

ऐसा निर्लज्ज आदमी, जिसे किसी भी बात की शर्म न हो।

बैंगनों का नौकर नहीं हूं, आपका नौकर हूं

ठकुर-सुहाती कहना।
(कथा है कि एक दिन किसी अमीर ने अपने मुसाहिब से कहा कि बैंगन की तरकारी बहुत अच्छी होती है, वैद्यक में इसकी बड़ी प्रशंसा लिखी है। उसके खाने से भूख बढ़ती है। मुसाहिब ने कहा—जी हां हुजूर, तभी तो उसके सिर पर मुकुट भी बना हुआ है। इसके बाद एक दिन फिर अमीर ने कहा—भाई बैंगन तो बड़ी खराब चीज़ हैं। भूख मारता है, और कफ़ भी पैदा करता है। मुसाहिब ने कहा—जी हां हुजूर, तभी तो उसके सिर पर कांटें हैं। अमीर बोला—उस दिन तो तुम बैंगनों की प्रशंसा कर रहे थे, और आज मेरे निंदा करने पर तुम भी निंदा करने लगे; क्या बात है? इस पर मुसाहिब ने जवाब दिया—हुजूर, मैं आपका नौकर हूं, न कि बैंगनों का।)

बैठा बनिया क्या करे? इस कोठी का धान उस कोठी में धरे?

कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थ का काम करे, तब क०।

बैठी बुढ़िया मंगल गाय

बूढ़ी औरत को कुछ काम नही तो वह गाना ही गाती है। करनेवाला कुछ-न कुछ करता ही है।

बैठे-बैठे तो कारूं का ख़जाना भी खाली हो जाता है

जब कोई उद्योग न करे, और बैठके ही खाए, तब क०।
कारूं- प्राचीन काल का एक बहुत अधिक धनवान जो हज़रत मूसा का बड़ा भाई और बहुत बड़ा कंजूस माना जाता है।

बैठे से बेगार भली

खाली बैठने की अपेक्षा मुफ़्त मे दूसरो का काम करना अच्छा।

बैद करे बैदाई, चंगा करे खुदाई

(१) वैद्य अपनी वैद्यकी का पैसा लेता है, आराम तो ईश्वर करता है।
(२) वैद्य का तो केवल नाम होता है, आराम ईश्वर ही करता है।

बैद की बैदाई गई, कानी की आंख गई

दोनों ओर नुकसान का होना—एक को मजदूरी नहीं मिली, दूसरे का काम बिगड़ गया।

बैरी का बोल, बसूले का छोल
दुश्मन की फब्तियां बसूली की तरह कलेजे को छीलती हैं।

बैरी बोल घिनावने, मरिए अपने बोल
मृत्यु तो अपने समय पर ही होती है, पर बैरी के बोल सहे नही जाते; कोसने से किसी का कुछ नही बिगड़ता, पर कोसना सहा नही जाता।

बैरी से बच, प्यारे से रच
दुश्मन से बचकर, और शुभेच्छु से मिलकर रहना चाहिए।

बैल का बैल गया, नौ हाथ का पगहा गया
पूरी हानि हुई।
पगहा=रस्सी, जिससे ढोर बाधे जाते है।

बैल न कूदी, कूदी गौन, यह तमाशा देखे कौन ?
बैल के ऊपर अनाज से भरी बोरी लादी गई, तो बैल ने तो कोई आपत्ति नही की, पर बोरी उछल-कूद मचाने लगी।
जब किसी से कोई (चुभती हुई) बात कही जाए और वह तो उसका कोई उत्तर न दे, पर दूसरा आदमी चिढ़ कर बोल उठे, तब क०। बिना मतलब बीच मे बोल उठना।

बैल, बधिया; साझे अधिया, (कृ०)
साझे की खेती में बैल भी आधे रहने है, अर्थात दोनो पक्षो को अपने-अपने बैल देने पडते है।

बैल सरकारी, यारों की टिटकारी
मुफ्त की चीज़ का मज़ा लूटना।

बैसाख, जेठ द्वितीयायाम, उत्तर ऊंचो चांद।
यह निहचे कर जानिए, पृथ्वी मेंह सुलाभ।
(कृ०)
यदि बैसाख और जेठ की शुक्लपक्ष की द्वितीया को उत्तर की ओर चद्रमा ऊंचा दिखाई दे, तो निश्चित रूप से बहुत वर्षा होती है।

बोटी दे कर बकरा लेते हैं
खूब नफ़े का सौदा करते हैं।

बोटी नहीं तो शोरबा ही सही
जो मिले वही बहुत।

बोया गेहूं उपजा जौ
(१) भलाई के बदले बुराई मिली।
(२) काम कुछ किया, परिणाम कुछ निकला।

बोया न जोता, अल्लाह मियां ने दिया पोता, (मु०, स्त्रि०)
अचानक भाग्य खुल जाने पर क०।

बोये आम, फले भाटा
दे०—बोया गेहूं....।

बोये पेड़ बबूल के, आम कहां से होयं ?
जैसा किया वैसा पाया।

बोलता चाकर मुनीब के आगे गूंगा
बातूनी नौकर मालिक के आगे घबरा जाता है।

बोलता है जब तलक है बोलता
सास रुकी और खत्म।

बोलती पर सदमा है
इतना गहरा दुख है कि बोल नही पाता।

बोलती बंद हो गई
(१) मर गया।
(२) किसी बात का जवाब देते न बने, तब भी क०।

बोलते की आशनाई है
(१) जब तक जीवन है तभी तक मित्रता है। इसलिए उसे क्यो थोडे समय के लिए तोडा जाए; ऐसा भाव प्रकट करने को क०।
(२) मित्र के मरने पर दुख प्रकट करते हुए भी क०।

बोली बोली तो ये बोली 'मेरी जूती बोले' (स्त्रि०)
एक औरत दूसरी से लड़ते समय ताना मार कर कह रही है।

बोले के न चाले के, मैं तो सूते के भली, (स्त्रि०)
सुस्त और आलसी औरत के लिए क०।
सूते के भली=सोते हुए ही अच्छी।

बोले तो बीबी मेरी, नहीं तो दरकार नहीं तेरी
स्पष्ट।
बीबी=औरत।

बोलो तो बोलो, नहीं तो पिंजड़ा खाली करो
या तो अच्छी तरह रहो, या फिर यहां से जाओ।

बोहनी होनी, रद्द बला, (व्य०)

बोहनी होने से बला टलती है, बिक्री अच्छी होती है।

बौना ओक का खिलौना

स्पष्ट।

ठिगने आदमी को चिढ़ाने के लिए क०।

बौहरे की राम-राम, जम का संदेशा, (हिं०)

क्योकि आकर तकाजा करेगा।

बौहरा साहूकार।

ब्याज बढ़ावे धन घना, राड़ बढ़ावे छोय।
जैसे गंधक आग में, गिरे तो दूनी होय।

स्पष्ट।

राड़ झगडा।

छोय क्षोभ। क्रोध।

ब्याज मोटा, मूल का टोटा, (व्य०)

अधिक ब्याज पर रुपया देने से असल भी डूबने का डर रहता है।

ब्याह का असगुन मालूम भये, जब लहकौरे में आये भट्टा, (पू०)

लहकौर मे जब (दूल्हा के लिए) आये तो पता चल गया कि ब्याह कैसा होगा, अर्थात बरातियों को क्या खाने को मिलेगा।

लहकौर एक रस्म, जिसमे कन्यापक्ष की स्त्रिया वर के लिए जनवासे मे भोजन लेकर आती है।

ब्याह न कराव, झूठ-मूठ का चाव

(१) जानबूझकर किसी को धोखे मे रखना।

(२) झूठी बात करना।

ब्याह नहीं किया, बरातें तो देखी हैं

हमने स्वयं कोई एक काम नही किया, तो क्या हुआ, दूसरो को करते तो देखा है।

(जब कोई किसी से ताना मारकर कहे कि तुम इस काम को करना क्या जानो, तब वह जवाब मे कहता है।)

ब्याह पीछे पत्तल भारी, (हिं०)

ब्याह हो चुकने पर एक पत्तल का खर्च भी अखरता है। जब उत्सव समाप्त हो जाता है, तब फिर उस संबंध में सामान्य खर्च करना भी एक बोझ मालूम पड़ता है।

ब्याह में खाई बूर, फिर क्या खावेगी धूर ?

साधनो के रहते भी अगर कष्ट उठाया तो सुख तो फिर कभी मिल ही नही सकता।

बूर=लकड़ी का बुरादा निकम्मी वस्तु।

ब्याह में बीद का लेखा

बेमौके की बात। हर काम का एक समय होता है।

बीद=चरागाह।

(फैलन ने यही अर्थ किया है, पर वह समझ में नही आता।)

ब्याह हुआ नहीं, गौने का झगड़ा

ब्याह हुआ नही, और बहू की बिदा के लिए झगड रहे है।

गौना ब्याह के बाद भी एक रस्म, जिसमें वर-वधू को अपने साथ घर ले जाता है।

ब्याही न बरात चढ़ी, डोली में बैठी, न चूं-चूं हुई

किसी बिना ब्याही से ताना मारकर कहा जा रहा है।

ब्याही बेटी का घर रखना और हाथी पालना बराबर है

(जमाई सहित) लड़की को घर मे रखने से बहुत खर्च उठाना पड़ता है।

ब्याही बेटी पड़ौसन दाखल

क्योकि फिर वह पराये घर की हो जाती है, और बहुत कम मायके आती है।

भंग कहे 'मैं रंगी अंगी', पोस्त कहे, 'मैं शाहेजहां' अफ़ीम कहे 'मैं चुन्नी बेगम'

नशेबाजो की ओर से नशों की प्रशंसा।

भंग, गांजा जिन देहु गंवारन के, हंड़िया भर भात संहारन के, (पू०)

भंग और गाजा गंवारो को नही देना चाहिए, अन्यथा वे भोजन का नाश मारेंगे।

(भंग और गांजा दोनों ही भूख बढानेवाले माने जाते है। नशे में आदमी यों भी ज्यादा खाता है।)

भंग पीना आसान है; मौजें आन मारती हैं
बिना जाने-बूझे किसी काम को कर डालना आसान है, पर उसका परिणाम भोगना कठिन है।
मौजें--तरंगे, नशे के झोके।

भंगी की बात क्या, झूठे की बात क्या ?
झूठे का विश्वास नहीं करना चाहिए।

भइल ब्याह मोर करबा का, (भो०)
(१) काम निकल जाने पर दूसरों का ठेंगा बता देना। अथवा (२) वक्ता कह रहा है कि अब तो मेरा काम बन गया, मेरा कोई क्या कर सकता है ?

भई अंधियारी, फूली छाती; चीन्ह पड़ई रांड अहबाती
भ्रष्ट विधवा के लिए क०।

भई छछूंदरी सर्प गति, उगलत बने न खात
कठिन असमंजस मे पड़ जाना। किसी काम को करते बने न छोड़ते, तब क०।
(लोक प्रवाद है कि सांप अगर छछूंदर को पकड़कर निगल ले, तो कोढ़ी हो जाता है और अगर उगल दे तो अंधा।)

भकुआ भींगे गांव के गेंवड़े, (पू०)
मूर्ख आदमी गांव के बाहर ही पड़ा भीगता है, उसमें इतनी बुद्धि नही कि जल्दी से गांव मे चला जाए और किसी घर की छाया म बैठे।
गेंवडा गांव के बाहर का हिस्सा, सीमांत।

भगले चोर कठरिया हाथ (भो०)
भागते चोर को जो भी चीज़ मिलती है, वह उसी को ले जाता है।
कठरिया कठौती। लकडी का छोटा बर्तन। यहा मतलब किसी भी रद्दी चीज से है।

भजन और भोजन एकान्त भला
ये दोनों एकान्त में करना चाहिए।

भट पड़ वह ज़माना, ननदी को घूरे नाना
ज़माने की खूबी पर क०।

भट पड़े वह सोना, जिससे टूटे काना, (स्त्रि०)
जिस वस्तु से हानि हो, उसे अलग कर देना चाहिए, फिर वह कितनी ही अच्छी क्यो न हो। ऐसे लड़के या संबंधी के लिए क०, जिससे बहुत कष्ट पहुच रहा हो, अथवा जो एक बोझ बन गया हो। जिस धन के उपार्जन मे बहुत परिश्रम करना पड़ रहा हो, अथवा जिसके कारण कोई विपत्ति आ सकती हो, उसके लिए भी क०।

भट, भटियारी, बेस्वा, तीनों जात कुजात।
आते का आदर करें, जात न पूछें बात।
स्पष्ट।
भट भाट, याचक ब्राह्मण।

भड़क भारी, खीसा खाली
कोरी शानशौकत।
खीसा जेब।

भड़भड़िया अच्छा, पेट पापी बुरा
जो तुरंत अपने विचारो को प्रकट कर दे, वह अच्छा, पर जो किसी बात को मन मे रखे (और बाद मे बदला लेवे) वह बुरा।

भड़भूजन की लड़की, केसर का टीका
अपनी मर्यादा के भीतर न रहना।

भड़वे को भी मुंह पर भड़वा नहीं कहते
किसी के मुंह पर उसे बुरा भला नही कहना चाहिए।

भर दे भर पावे, काल कंटक पास न आवे
जितना देगा उतना ही पाएगा और सुखी रहेगा। भिखारियो की टेर।

भरम मारे भरम जिआवे
भ्रम से ही आदमी मारा जाता है, भ्रम उसे जीवित भी रखता है।

भरमा भूत, शंका डायन, (हिं०)
भ्रम और शंका दोनो ही हानिकारक है।
(इसलिए साहस और समझदारी से काम लेना चाहिए।)

भर हाथ चूड़ी, पट सूं रांड, (स्त्रि०)
सुहागिन है, पर तुरंत रांड भी हो गई।
(१) बदचलन औरत के लिए क०।
(२) मक्कार से भी कहा०।

भरा कहार, खाली कुम्हार, तेज जाता है
पानी से भरी बैंगी लेकर धीरे-धीरे चलने में कहार

को असुविधा होती है, और खाली कुम्हार तो तेज़ चलेगा ही, अपने काम की वजह से।

भरा सो बरा

(१) आदमी को जब बहुत घमंड हो जाता है, तो उसे अलग रख दिया जाता है, अर्थात उसे फिर कोई पूछता नही। अथवा

(२) जो भरा अर्थात योग्य होता है, वह आराम से रहता है।

भरी थाली में लात मारना, (स्त्रि०)

(१) जानबूझकर अपना लगा हुआ काम छोड़ देना।

(२) मिली हुई सुविधा को अज्ञानवश ठुकरा देना।

भरी बरसात में आबदस्त न लेवे, वह भड़वा अलसेटी है

जो वर्षा में भी शौच के लिए पानी न ले, वह सचमुच ही बडा गंदा और आलसी है।

(किसी चीज़ के रहते हुए उसका उपयोग न करना।)

भरे को भरता है

ईश्वर धन में धन देता हैं।

भरे समुन्दर घोंघा हाथ

बहुत लाभ की जगह से कुछ न मिलना।

भरे समुन्दर प्यासे

जहा सुख के सब साधन मौजूद हो, वहा भी दुख मे रहना। दे० ऊ० भी।

यह कहावत 'भरे समुन्दर घोघा प्यासे' इस रूप मे ही प्रचलित है।

भल जनमल, भल पंडित भइल, (पू०)

अच्छे पैदा हुए और अच्छे पडित हुए। जो घर मे खाने को नही जुड़ता। किसी पडित की स्त्री उससे व्यंग्य मे कह रही है।

भल भइल पिया के बाघ मारल, जे बेगारी से बचल, (पू०, स्त्रि०)

अच्छा हुआ तो (मेरे) स्वामी को बाघ ने मार डाला, वह बेगार से ही बचा।

(किसी ऐसी स्त्री का कथन, जो अपने पति की अकर्मण्यता से शायद बहुत जली-भुनी है।)

भल मरलस, भल पिल्लू पड़ल, (पू०)

अच्छा मरा और अच्छे कीड़े पड़े। दुष्ट के लिए क०।

भल माथ मुड़ौलन, भल बेल गिरलैन, (पू०)

अच्छा सिर मड़ाया और अच्छा बेल गिरा। बदक़िस्मत आदमी।

भलाई कर, बुराई से डर

स्पष्ट।

भला कर भला हो, सौदा कर नफ़ा हो

फ़कीर कहा करते हैं।

भला किया सो खुदा ने, बुरा किया सो बंदे ने

(१) अच्छा भाई, हमने तुम्हारा बुरा ही किया सही, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

(२) कृतघ्न के प्रति भी क०, जो किसी के किए उपकार को नही मानता।

भलामानस घर में पड़ा, रिजाले ने जाना मुझसे डरा

भलामानस धूर्त के मुह लगना पसंद नही करता, इसलिए चुप बैठता है, पर धूर्त समझता है कि वह मुझसे डर गया।

(इसलिए और भी धूर्तता करता है।)

भला हुआ बीबी गौने गई, बीबी की फरिया मोको भई, (स्त्रि०)

किसी भावज का कहना कि, चलो अच्छा हुआ; ननद ससुराल गई, उसकी साडी अब मैं पहनूगी।

(ननद के जाने पर भावज को थोडी स्वतंत्रता मिल जाती है, यही कहावत का भाव है।)

भले आदमी की मुर्गी टके-टके

भला आदमी मुलाहिज़े मे मारा जाता है।

भले का ज़माना ही नहीं

भलाई का उल्टा नतीजा होता है।

भले का भला

(१) भले का भला होता है। अथवा

(२) भले की संतान भी भली होती है।

भले की बातें रस की खान, बुरे की बातें दुख निदान

भले की बातें भलीं और बुरे की बुरी होती हैं।

भले के भाई, बुरे के बंभाई

भले के साथ भले बनो और बुरे के साथ बरे।

भले घोड़े को एक चाबुक, भले आदमी को एक बात काफ़ी है

भला आदमी इशारे में बात समझ जाता है।

भले दिन आयेंगे, तो घर पूंछते चले आयेंगे

भले दिन आने पर हालत अपने-आप सुधर जाती है।

भले बाबा बंद पड़ी, गोबर छोड़ कसीदे पड़ी, (स्त्रि०)

किसी ग़रीब घर की लडकी का कहना, जो बडे घर मे ब्याही गई है, कि मै तो अच्छी आफत मे पड गई। गोबर थापने मे आज़ादी थी, पर यहा घर मे बद बैठी कसीदा काढ़ती रहती हूं।

भलेमानुस की सब तरह खराबी है

स्पष्ट।

भले संग बैठिये, खाइए नागर पान।
बुरे संग बैठिये, कटाइये नाक और कान।

सत्सग से लाभ और कुसंग से हानि होती है।

भलो भयो मेरी मटकी टूटी, मैं दही बेचन से छूटी, (स्त्रि०)

अच्छा हुआ कि मेरी मटकी फूट गई, दही बेचने (की झझट) से ही छुट्टी मिली।

(जिस काम को करने की इच्छा नही थी, उसे न करने का बहाना मिल जाना।)

भसक्कड़ के दामाद को भात ही मिठाई

पेटू को साधारण चीज़ भी खाने को (मुफ्त का) मिल जाए, तो वही बहुत बढ़िया।

भांग तो ऐसी पीजिए जैसी कुंज गलिन की कीच।
घर के जाने मर गए (और) आप नशे के बीच।

भगेड़ियो की उक्ति।

भांड़ों संग खेती की, गा बजाके अपनी की

भाडो के साझे मे खेती की, उन्होने गा-बजा के अपनी कर ली।

(लफगों के साथ काम करने मे हानि होती है।)

भाइयों के डंड मलो

जब कोई पहलवान कुश्ती मारता है, तब उसके शागिर्द खुशी में उसके दंड (भुजाएं) मलते हैं। (उक्त वाक्य का प्रयोग व्यंग्य में उस समय करते हैं, जब कोई मनुष्य शक्ति से बाहर काम करने जाकर असफल हो, अथवा जितनी शेखी मारे उतना काम न कर सके।)

भाई अइसन हित ना, भाई अइसन बैरी ना, (भो०)

भाई ऐसा मित्र नही, भाई ऐसा बैरी भी नही।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर चाव करे

भाई प्रेम भाव दिखाता है, पर (वह) ऊपर से तो प्रेम करता है, भीतर से जड़ काटता है।

भाई भाव का, नहीं अपने दाव का

(१) भाई या तो प्रेम करता है या फिर अपना मतलब गाठता है। अथवा (२) भाई प्रेम चाहता है, नही तो फिर अपना स्वार्थ देखता है

भाई दूर, पड़ौसी नेरे

समय पर भाई काम नही आता, पडोसी काम आ जाते है।

भाई न दे, भाव दे

बाजार भाव से ही चीज़ दे, किसी को भाई समझकर कम दामो मे न दे।

भाई सा साहू, न भाई सा बैरी

भाई सा सहायक नही? भाई सा शत्रु नही।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर

छीके पर वही वस्तु रखी जाती है जिसकी तत्काल आवश्यकता नही होती। यहा भाई शब्द मे श्लेष है, जिसका अर्थ है भ्राता और मन-भुहाई। इसलिए कहा० के दो अर्थ हैं—

(१) भाई ही अपना होता है, बाकी सब किनारे रख दिए जाते है।

(२) जो वस्तु अच्छी लगी सो खाई नही, तो छीके पर उठा कर रख दी।

भागते भूत की लंगोटी भी बहुत है

(१) जब सभी कुछ नष्ट हो रहा हो, तो उसमें से जो कुछ बच जाए, वही लाभ है।

(२) जिससे कुछ भी मिलने की आशा न हो, उससे थोड़ा भी मिल जाए, तब भी क०।

भागलपुर के भागलिये, कहलगांव के ठग।
पटने के दिवालिये, तीनों नामज़द।

ये तीनों प्रसिद्ध हैं।

भागलिये=भागलपुर निवासी, । यहां व्यापारियों से मतलब है।

भागे हुए लश्कर का मर्द पीछा नहीं करता

जो हार मान लेता है बहादुर आदमी उसे नही मारता।

भाजी की भाजी, क्या दूसरे की मुहताजी, (ग्रा०)

जितना दिया था उतना मिल गया, इससे अधिक और क्या चाहिए?

भाड़ लीपती जायं, हाथ काले का काला

भाड़ लीपने से हाथ काला ही रहता है।

बुरे के साथ अच्छाई करने पर भी बुराई ही मिलती है।

भाड़ा, ब्याज, दच्छना; पीछे पड़े कुच्छना

इन तीनों को बकाया नहीं रखना चाहिए, बाद में वे वसूल नहीं होते।

दच्छना=दक्षिणा। शुभकार्य आदि के समय ब्राह्मण को दिया जानेवाला दान।

भात खाते हाथ पिराय, (स्त्रि०)

इतनी सुकुमार है।

पिराय—दर्द करता है।

भात खाने बहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हन से

मुफ्तखोरो के लिए क०।

भात छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता

भोजन भले ही छोड़ दे पर (यात्रा में) किसी का साथ मिल रहा हो, तो वह नहीं छोड़ना चाहिए।

भात बिन रह जावे, पिया बिन रहा न जावे, (स्त्रि०)

भोजन के बिना तो (वह) रह सकती है, पर प्रियतम के बिना चैन नहीं पड़ता।

भात होगा तो कौवे बहुत आ रहेंगे

खाने को मिलने पर मुफ्तखोरे बहुत इकट्ठा हो जाते हैं।

भादों का घाम और साझे का काम

ये दोनों बुरे होते हैं।

भादों का झल्ला, एक सींग गीला एक सूखा, (कृ०)

भादों में वर्षा कम हो जाती है।

भादों की छाछ भूतों को, कार्तिक की छाछ पूतों को, (स्त्रि०)

भादों में छाछ हानिकारक और कार्तिक में गुणकारी मानी जाती है इसीलिए क०।

भादों की धूप में हिरन काले पड़ते हैं

भादों में जब कभी भी धूप निकलती है, तो वह बहुत तेज होती है।

(वास्तव में भादों की जगह क्वार के महीने की ही धूप तेज होती है।)

भादों के मेह से दोनों साख की जड़ बंधती है, (कृ०)

भादों में वर्षा होने से खरीफ और रबी, दोनों फ़सलों को लाभ होता है।

(खरीफ की फ़सल में ज्वार, मक्का मूंग आदि होती है और रबी में गेहूं, मटर अरहर चना, आदि।)

भादों दोनों साख का राजा है, (कृ०)

भादों मे पानी बरसने से दोनों फ़सलें बनती है इसीलिए क०।

भादों में बरखा होय, काल पंछोकर जाकर रोय, (कृ०)

भादो मे वर्षा होने से अकाल का भय नहीं रहता।

भादों से बचे तो फिर मिलेंगे

भादों में अधिक बीमारियां फैलती हैं और मौतें भी भी बहुत होती है, इसीलिए क०।

भार डाल सब भार में सम्मन उतरे पार

जिस झंझट में फंसे थे, उससे किसी तरह छुट्टी पाई।

भारी पत्थर देखा, चूम कर छोड़ दिया

किसी मनुष्य से जब कोई भारी पत्थर नही उठा, तो उसे चूमकर छोड़ दिया, यह प्रकट करने के लिए कि हम तो उसे उठा ही नहीं रहे थे, केवल चूम रहे थे।

(जब कोई काम अपने करने योग्य न जंचे, तो होशियारी के साथ उससे अपना हाथ खींच लेना चाहिए।)

भारी ब्याज मूल को खाय, (ब्य०)

अधिक सूद पर रुपया देने से असल भी वसूल नहीं होता।

भाव न जाने राव

(१) राजा मुरव्वत नहीं जानता। अथवा

(२) राजा-बाजार भाव क्या जाने ?

भाव राव की खबर नहीं

(१) बाजार भाव और राजा के बारे में (कि वह क्या करेगा) कोई कुछ नहीं कह सकता। अथवा (२) इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि तुम्हें किसी बात की कोई खबर नहीं।

भाव राव खुदा के हाथ

बाजार भाव और राजा ये दोनों ईश्वर के हाथ होते हैं, अर्थात उन पर किसी का काबू नहीं होता।

भावी के बस संसार है

स्पष्ट।

भावी=होनहार।

भिड़ का छत्ता

कोई ऐसा मज़बूत या खतरनाक गिरोह या परिवार कि जिसमें अगर किसी एक आदमी को छेड़ दिया जाए तो सब-के-सब हमला कर बैठें।

भीख और पिछोर

भीख तो जैसी मिले वैसी ले लेनी चाहिए।
(मुफ़्त की चीज में दोष नहीं निकालना चाहिए। अनुचित मांग करने पर भी क०।)
पिछोर=सूप से फटककर, । साफ़ करके।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार

झूठी अकड़ दिखाना।

भीख मांगे और आंख दिखावे

जब कोई आदमी ज़बर्दस्ती करके कोई चीज़ मांगे, तब क०।

कोई नीच आदमी रोब दिखाए तब उससे भी क०।
(बहुत से फ़क़ीरों की आदत होती है कि अगर उन्हें भीख देने से इन्कार कर दिया जाए तो, मुड़चिरापन करने लगते हैं। कहावत उनको लेकर ही बनी।)

भीख मांगे और पूछे गांव की जमा

जब कोई छोटी हैसियत का आदमी ऐसी बातें करे, जिनसे उसे कोई मतलब नहीं हो सकता तब क०।

जमा=मालगुजारी।

भीगा चूहा

ऐसे आदमी के लिए क०, जिसकी केवल ठुड्ढी पर दाढ़ी हो और जो स्वभाव का भी अच्छा न हो

भीगी बिल्ली

सयाने या धूर्त्त आदमी के लिए क०।

भीगी बिल्ली बताना

आलस्यवश काम को टालना और बहाना बनाना। (उक्त वाक्य एक ऐसे आलसी नौकर की कथा पर आधारित है, जो अपने मालिक के हुक्म को कोई-न-कोई बहाना बनाकर हमेशा टाल दिया करता था। एक दिन उसके मालिक ने चिराग़ बुझाने के लिए कहा, तो उसने जवाब दिया, 'आंख बंद कर लीजिए सब तरफ अंधेरा हो जाएगा।' इसी तरह एक बार रात के समय मालिक ने कहा, 'देखो, बाहर पानी तो नहीं बरस रहा है।' नौकर ने कहा, 'हां, बरस तो रहा है।' मालिक ने फिर पूछा, 'तुम्हें मालूम कैसे हुआ ?' नौकर बोला, 'एक बिल्ली अभी मेरे पास से निकली थी। उसका बदन मैंने टटोला तो भीगा था।' इसी से उक्त प्रवाद का जन्म हुआ।)

भीत के भी कान होते हैं

मुंह से बाहर बात निकली नहीं कि वह फैल जाती है।

भीत टले पर बान न टले

बुरी आदत किसी तरह नहीं छूटती।

भीतर का घाव रानी जाने या राव

मन की व्यथा तो जो पीड़ित है, वही जान सकता है।

भीत होगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे, (स्त्रि०)

(१) हड्डी रहेगी तो मांस भी बढ़ जाएगा।
(२) पूंजी रहेगी तो धंधा भी बहुत मिल जाएगा।
(३) जड़ रहेगी तो फल-ही-फल हो जाएंगे।
इस तरह का भाव प्रकट करने को क०।

भुई बिस्वा भर नहीं, नाम पृथ्वीपालक

कोरा नाम-ही-नाम।

भुजबंड ही आपके कहे देते हैं

कि आप कितने ताक़तवर हैं। कमज़ोर और निखट्टू से व्यंग्य में क०।

भुस के मोल मलीदा

जब बढ़िया चीज़ सस्ते दामों में मारी-मारी फिरे तब क०।

भुस पर लीपना
ऐसा काम जो बहुत दिनों टिके नही।

भुट्टा का भगवा मूजक डोरी, बीबी बुलोई छत नई हां मोर (स्त्रि०)
टाट का लंहगा और मूंज की डोरी, बीबी समझती है कि मेरे समान कोई है ही नही। कोई एक और दूसरी को बुरा भला कह रही है।

भुस में चिनगी डाल जमालो दूर खड़ी, (स्त्रि०)
लड़ाई-झगड़ा करानेवाला, शरारती, चुलगखोर, इनके लिए क०।

भूआ की नदी में कौन बहे ?
व्यर्थ की शंका में पड़ना। सुख सब चाहते है, दुख कोई नही चाहता, यह अर्थ भी हो सकता है। (कथा है कि किसी जुलाहे को रास्ते मे संभल का बहुत सा भूआ पड़ा दिखाई दिया। भूआ को नदी समझ कर उसने पार नही किया और लौट आया। उसी से कहावत का जन्म हुआ।)
भूआ-(१) रुई जैसा मुलायम टुकड़ा, सेमलवृक्ष की रुई। (२) मैल, फेन

भूख को भोजन क्या और नींद को बिछौना क्या ?
भूखे की तृप्ति जैसा भी भोजन मिले, उससे हो जाती है। जिसे नीद आ रही हो, वह भी जैसा बिछौना मिले, उस पर सो जाता है।

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये कबाय।
जोबन गये तिरिया मिले, तीनों देव बहाय।
समय निकल जाने पर कोई चीज मिले, तो वह किस काम की ?
कबाय = गर्म कपड़ा

भूख में किवाड़ पापड़
भूख में जो भी चीज मिले, वह अच्छी लगती है।

भूख में गूलर पकवान
दे० ऊ०।

भूख लगी तो घर की सूझी
भूख लगने पर घर याद आता है। प्रायः लड़कों से क० जो बाहर घमते रहते है, और भोजन के समय आ जाते है।

भूख सब से मीठी
भूख लगने पर सब चीज मीठी लगती है।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं
ईश्वर सबको खाने को देता है। जितने जीव हैं, उन सबको सुबह से शाम तक खाने को मिल ही जाता है।

भूखा गया जोय बेचने, अघाना कहे बंधक रखो
कोई भूखा धनी के पास अपनी औरत बेचने गया, तो उसने कहा—'गिरवी रखो।'
विपद्ग्रस्त से अनुचित लाभ उठाना।
अघाना जिसका पेट भरा हो। पैसेवाला।

भूखा जोरू बेचे, राजा कहे उधार लूं
दे० ऊ०।

भूखा तुरक न छेड़िए हो जाय जी का झाड़
भूखे मुसलमान को नहीं छेड़ना चाहिए।

भूखा बंगाली भात ही भात पुकारे
क्योकि भात उसका मुख्य भोजन है। आदत आसानी से नही छूटती।

भूखा मरता, क्या न करता
भूखा पेट के लिए नीच-से-नीच कर्म करता है।

भूखा मरे कि सतुआ खाने
भूखा मरने की अपेक्षा सत्तू ही खाना अच्छा। भूख मे जो मिले, वही खा लेना चाहिए।

भूखा सो रूखा
भूखे को जल्दी क्रोध आता है।

भूखे को अन्न अन्न, प्यासे को पानी, जंगल जंगल अबादानी
जो भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देता है, उसे हर जगह आराम मिलता है।
अबादानी=आबदाना। अन्नजल।

भूखे को कुछ दीजिए, यथाशक्ति जो होय, (हिं०)
स्पष्ट।

भूखे को क्या रूखा, और नींद को क्या तकिया
स्पष्ट।
दे० भूखे को भोजन क्या...।

भूखे को खिला और नंगे को पहना
स्पष्ट।

भूखे घर में नोन निहारी
भूखे के लिए नमक ही नाश्ते की तरह है। उसे जो मिले वही बहुत है।

भूखे ने भूखे को मारा, दोनों को ग़श आ गया
क्योंकि दोनों एक से कमज़ोर हैं। दो ग़रीब या साधनहीन आदमी आपस में लड़ें, तो दोनों ही मारे जाते हैं।

भूखे बेर, अघाने गांडा, (ग्रा०)
भोजन के पहले बेर और बाद में गन्ना लाभदायक होता है।

भूखे भजन न होय, साधो!
भूख में ईश्वर का भजन भी नहीं होता।
(पाठा०—भूखे भजन न होय गोपाला।)

भूखे भलेमानस से डरिये
क्योंकि नाराज़ हो जाने पर वह परेशान कर सकता है।

भूखे से कहा, 'दो और दो क्या?' कहा, 'चार रोटियां'
जो जिस चीज़ की तलाश में होता है, उसे वही सूझती है।

भूखे हो तो हरे हरे रूख देखो
हृदयहीन कंजूस का मंगतों से क०।

भूड़ के हूड़ होते हैं
देहाती मूर्ख होते हैं।
(यह देहातियों की पिछड़ी हुई हालत व्यक्त करता है न कि उनकी वास्तविक सामर्थ्य।)

भूत का पकवान
निस्सार वस्तु।

भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती
क्योंकि उसका भौतिक अस्तित्व नहीं होता।
बहुत धूर्त्त या चालाक के लिए क०।

भूत जान न मारे, सता मारे
दुष्ट के लिए क०।

भून बोया, उपट गया
भूना हुआ अन्न नहीं जमता।
मूर्खतापूर्ण कार्य।

भूनी भांग न कड़वा तेल
ऐसा मनुष्य जिसके पास कुछ न हो।

भूभल में रोटी दाब कर तो नहीं आई है?
कोई स्त्री किसी के यहां जाकर जल्दी आना चाहती है, तब उससे कहा जा रहा है कि आग में रोटी दबाकर तो नहीं आई है, जो जाने की इतनी जल्दी मचा रही है।

भूमियां तो भूमि पै मरी, तू क्यों मरी बटेर?
किसान तो जमीन के पीछे लड़ते हैं, हे बटेर, तू क्यों लड़ती है।
जब साधारण मनुष्य बड़ों के झगड़े में पड़े तब क०।

भूरा भैंसा, गंदली जोय, पूस महावट बिरले होय,
भूरा भैंसा, गंजी औरत, और पूस में वर्षा बहुत कम देखने को मिलती है।

भूल गई दिन बहाड़ा, मुंडों ने सिहरा बांधा
घमंड से फूल उठी।
जब कोई उन्नति होने पर ग़रीबी के पुराने दिन भूल जाए तब क०।

भूल गई नार, हींग डाल दई भात में, (स्त्रि०)
जल्दी में या घबराहट में कुछ-का-कुछ कर जाना।

भूल गये राग रंग भूल गये छकड़ी।
तीन चीज़ याद रही नोन तेल लकड़ी।
गृहस्थी का चक्कर।

भूल-चूक का डर नहीं
कभी भी ठीक की जा सकती है।

भूल-चूक लेनी-देनी, (व्य०)
हिसाब चुकाए जाने पर क०।

भूलल भांड़ दिवारी गावे, (भो०)
भूला भांड़ दिवारी गाता है, जब कि उसे गाना चाहिए होली। घबराया हुआ आदमी।

भूला जोगी दूनी लाभ
भुलक्कड़ जोगी एक ही घर में दो बार भीख मांगता है; इस प्रकार लाभ में रहता है।

भूला फिरे किसान जो कातिक मांगे मेह, (कृ०)
वर्षा पूष या माघ की अच्छी होती है; कार्तिक की वर्षा से खेती को कोई लाभ नहीं होता, बल्कि गेहूं आदि की बुवाई में बाधा पड़ती है।

भूली, रे रघुआ, तेरी लाल पगिया पर, (स्त्रि०)
जब कोई किसी के ऊपरी ठाटबाट से प्रभावित हो जाए या बाहरी रूप देखकर धोखे में आ जाए, तब क० ।

भूले-चूके दंड नहीं
अनजान में हुई भूल क्षमा की जाती है।

भूले बामन गाय खाई, अब खाऊं तो राम दुहाई, (हिं०)
किसी ब्राह्मण ने भूल से गाय का मांस खा लिया, तब वह सौगंध खाकर कहता है कि किया-सो-किया, अब ऐसा नही करूंगा।
एक बार कोई भूल करके जब आदमी दुबारा वैसी भूल न करने की प्रतिज्ञा करे तब क०।

भूले बिसरे राम सहाई
भूले-चूके का ईश्वर मालिक है।

भेख से भीख है
(१) दुनिया में दिखावट से ही काम चलता है।
(२) वेशभूषा से ही आदमी की कद्र होती है।

भेजा खायें, जेर सहलायें
खुशामद भी करे और खोपडी भी खाए। फ़ालतू आदमी।

भेड़ की लात घुटने तक
(१) किसी छोटे लेन-देन मे थोडी ही हानि होती है। (२) कमजोर की चोट का अधिक असर नही होता। ज्यादा से-ज्यादा इतना कर सकेगा, ऐसा भाव।

भेड़ चाल है
भेडों की तरह एक दूसरे के पीछे चलना। आख मूदकर दूसरे का अनुकरण करना।

भेड़ तो जहां जायेगी मुड़ेगी
(१) धनी जहां जाता है वहीं लूटा जाता है।
(२) गरीब को हर जगह सताया जाता है।

भेड़ पै ऊन किसने छोड़ी ?
कोई नहीं छोडता। सब कोई उस के बाल कतर लेते हैं, क्योकि वे बहुत कामो में आते है।

भेड़िया धसान
धांधली।

भैंस का गोबर भैंस के चूतड़ों को लग जाता है
सब दूसरों के काम नही आता। बड़े आदमियों के अपने ही खर्चे बहुत होते हैं। कहावत का यह मतलब है।

भैंस का दूध, नली का गूदा
भैंस का दूध हड्डी के गूदे की तरह होता है, यानी बहुत ताकत देता है।

भैंस के आगे बीन बजे वह बैठी पगुराय, (पू०)
(१) मूर्ख किसी अच्छी वस्तु का महत्व क्या समझे ?
(२) मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है।

भैंस को अपने सींग भारी नहीं
अपने घर के लोगों का पालन-पोषण किसी को कष्ट-कर मालूम नही देता।

भैंस दूध जो कढ़वां पीवे, हांगा घटे न जब लग जीवे (ग्रा०)
जो भैंस का थन-दुहा दूध पीता है, उसका बल कभी नही घटता।

भैंस पकौड़े हग गई
किसी मनुष्य के यकायक बहुत समृद्ध हो जाने पर व्यग्य मे क०।

भैंस पै दूध किसने छोड़ा?
किसी ने नही। सब उसे पूरा दुह लेते है।

भैंसा भैंसों में या कसाई के खूंटे में
दे० या भैंसा भैंसों में. . .।

भैय्या जो बहुतेरे डंड मलवायें, बंदा पहलवान नहीं बनने का
भाई साहब मुझे चाहे जितना कुश्ती लड़ना सिखाए, पर मै पहलवान नही बनने का।
(मै अपने दूसरे साथियो की बराबरी नही कर सकूगा। वाक्य से वक्ता का यह भाव प्रकट होता है।)

भोग बिलास, जब तक सांस
मरे पीछे सब समाप्त।'

भोग भाग, छत्तीसों राग
जितना भी हो सके, जीवन का आनंद लूट लो।

भोगी सो रोगी
स्पष्ट।

भोगी=भोगो मे लिप्त रहनेवाला। विषयासक्त।

भोजन न भात, नैहर का समाद, (स्त्रि०)

विधवा के लिए कहा है कि उसका कही आदर नही होता, न मायके मे न ससुराल मे।

समाद=समधी का घर ससुराल।

भोजपुर में जइहा मत, जइहा तो खइहा मत, खइहा तो सोइहा मत, सोइहा तो टोइहा मत, टोइहा तो रोइहा मत, (भो०)

भोजपुर कभी जाओ नही, जाओ तो खाओ नही, खाओ तो सोओ नही, सोओ तो (अपना बसना-बोरिया) टटोले नही, टटोलो तो रोओ नही। (भोजपुरियो की चोरी और ठगी की प्रवृत्ति पर फब्ती।)

भोंदू भाव न जाने, पेट भरन से काम

मूर्ख आदमी को किसी चीज का सवाद नही होता, उसे तो पेट भरने से काम।

भोर का मुरगा बोला, पंछी ने मुंह खोला

सबेरा होते ही चिड़िया बोलने लगती है, अथवा दाना चुगने के लिए उतावली हो उठती है।

भोर भया जब जानिये, जब पीले बादल होयं

जब बादल पीले हो उठे, तो समझो सबेरा हो गया।

भोरे भुलाये सांझ घर आये, ऊ भुलाइल न कहावे

सबेरे का भूला साझ को घर आ जाए, तो वह भूला हुआ नही कहलाता।

भौं का गिला आंख के सामने

(१) किसी मनुष्य के निकट सम्बन्धी से ही उसकी शिकायत की जा सकती है। अथवा

(२) किसी के निकट सम्बन्धी से उसकी शिकायत व्यर्थ है, क्योकि वह तो पहले से उसका सब हाल जानता है।

मंगनी की चादर, तापर पचास का आदर, (स्त्रि०)

मंगनी की चादर, वह पचास (लोगो को) भेट कर रही है। दूसरे की चीज़ अपनी करके बताना। अथवा दूसरे की वस्तु पर घमड करना।

मंगनी के बैल के दांत नहीं देखते हैं

मुफ्त मे जो चीज मिले वही अच्छी। उसमे कोई मीन-मेख नही निकालनी चाहिए।

(गाय-बैल आदि ढोरो की उम्र उनके दातो से ही जानी जाती है। उम्र के लिए दातो की परीक्षा करते है।)

मंगनी के सतुआ, सास के पिंडा, (स्त्रि०)

सास का श्राद्ध सत्तू से कर रही है, सो भी मागे का सत्तू!

(अनिच्छा से दूसरे का सम्मान करना।)

मंगाई छींट, लाया ईंट

(१) इच्छा के विरुद्ध काम करना। अथवा

(२) सुनी अनसुनी करना।

मंगाई हींग, लाया अदरक

दे० ऊ०।

मंड़वे के आटे में शर्त क्या ?

सस्ती चीज के अच्छे होने की दूकानदार क्या शर्त करे? वह तो जान-मानकर खराब होगी ही।

मड़वा—एक बहुत हल्की किस्म का आनाज।

मंत्री बिना राज सूना

मत्री के बिना राजकाज नही चलता।

मक़दूर की मां कौड़ी ही रगड़ती है

आदमी एक-एक कौडी का हिसाब रखने से ही धनी बनता है।

मकदूर—समर्थ धनवान।

मकर चकर की घानी, आधा तेल और आधा पानी

धूर्त और चालबाज़ व्यापारियो के लिए क०।

मक्के गये, न मदीने गये, बीच-ही-बीच में हाजी भये, (मु०)

अनायास ही जब किसी का अभीष्ट सिद्ध हो जाए तब क०।

मक्के में रहते हैं, पर हज नहीं करते, (मु०)

सुलभ चीज़ की कद्र नही होती, अथवा उसे पाने की कोई इच्छा नही करता।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना

धूर्त के लिए क० जो ऊंचा हाथ मारे ।

मक्खी बैठी शहद पर पंख गये लपटाय ।
हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय ।

लालची ।

मक्खीमार बड़ा चमार

कंजूस के लिए क० ।

मगह देश कंचन पुरी, देस अच्छा, भाखा बुरी

मगध देश बहुत अच्छा है, पर वहा की भाषा बहुत बुरी है।

(मगध की कर्णकटु बोलियो पर कटाक्ष।)

मगह में मरना, अगले जनम में गदहा बनना

मगध मे मरने से अगले जन्म में आदमी गधा होता है। हिन्दू अन्धविश्वास।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाये ?

जिसका जो पैतृक गुण है, वह अपने-आप आ जाता है, सिखाना नही पड़ता।

मछली तो नहीं कि सड़ जायेगी, (स्त्रि०)

आखिर ऐसी जल्दी क्या?—इस तरह का भाव प्रकट करने को क० ।

मजनूं को लैली का कुत्ता भी प्यारा

प्रेमी को अपनी प्रेमिका की ख़राब-से-खराब चीज़ भी अच्छी लगती है।

मज़ा मा मज़ा, (अ०)

बीती बात को भूल जाओ।

मट्टी का घड़ा भी ठोक बजाकर लेते हैं, (व्य०)

(१) हर चीज देखभाल कर खरीदनी चाहिए ।
(२) बिना सोचे-विचारे कोई काम नही करना चाहिए।

मट्टी में हाथ डाले सोना होय है

भाग्यवान पुरुष।

मट्ठा मांगन चली और मलैया पीछे लुकाई, (स्त्रि०)

जरूरत पड़ने पर किसी से कोई चीज मांगनी पड़े तो उसमे शर्म की क्या बात ?

मलैया= छोटी मटकी। चपिया।

मत कर सास बुराई, तेरे भी आगे जाई, (स्त्रि०)

बहू का कहना सास के प्रति।

(अभिप्राय यह है कि हे सास ! तू मुझे तंग मत कर, क्योंकि तेरे भी लड़कियां हैं, जो ससुराल जाएंगी। तू अगर मुझे कष्ट देगी, तो वे भी इसी प्रकार वहां कष्ट पाएंगी ।)

मत बो बापड़, उजड़े टाबर, (कृ०)

पथरीली ज़मीन में खेती मत करो, परिवार उजड़ता है, अर्थात पैदावार नहीं होती ।

मतला साफ हुआ

बात समझ में आ गई। शंका दूर हुई।

मतला=(१) पूर्व दिशा, (२) ग़ज़ल के आरंभ के दो चरण, जिनमें अनुप्रास होता है।

मथरा दे बुंदा, लुभावे दस गुंडा, (पू०, स्त्रि०)

दुराचारिणी के लिए क० ।

मथरा=माथे पर।

मथवा मदारी का क्या साथ ? (ग्रा०)

हिन्दू मुसलमान का क्या साथ ? यह भी विद्वेषमूलक है।

मथवा=हिन्दू नाम विशेष ।

मधुरे आंचे रोटी मीठ, (भो०)

धीमी आंच की सिकी रोटी स्वादिष्ट होती है। जो काम धीरे-धीरे और सावधानी से किया जाता है वह अच्छा होता है।

मन उमराव, करम दलिद्री

इच्छाएं तो बड़ी, पर भाग्य खोटा ।

मन करबे मोटा, लेबे सोटा, मन करबे मोंही सगरे तोहीं, (भो०)

उदार पुरुष को सब चाहते है ।

मोटा=संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण

मोही=(१) मेरी ओर। अथवा (२) मोहित करनेवाला।

मन करे पहिरन चौतार, करम लिखे भेड़ी के बार, (स्त्रि०)

दे० मन उमराव...।

चौतार=एक प्रकार की बढ़िया मलमल।

मन का अंकुस ज्ञान

ज्ञान से मन वश में रहता है।

मनका फेरत जनम गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका छोड़के, तू मन का मनका फेर।
(कबीर)

हाथ की माला को अलग रखकर ईश्वर का भजन तो सच्चे मन से ही करना चाहिए।

मन की मारी कासे कहूं, पेट मसोसा दे दे रहूं, (स्त्रि०)

किसी दुखिया का क०। अत्यन्त दीनता दिखाना। मसोसा देना—मन-ही-मन रज करना।

मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती

केवल विचारने से काम नही चलता।

मन के लड्डू फोड़ना

हवाई महल बनाना।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइये, मन ही की परतीत।

स्पष्ट। निराश कभी नही होना चाहिए।
परतीत=प्रतीत। विश्वास।

मन चंगा तो कठौती में गंगा

अगर मन शुद्ध है (अथवा अगर शरीर स्वस्थ है) तो घर मे ही गंगा है।

(कहते है कि एक बार संत रैदास ने कुछ यात्रियो को गंगास्नान के लिए जाते देख, उन्हे कुछ कौड़ियां देकर कहा कि उन्हे गंगा जी की भेंट कर देना, परंतु देना तभी जब गंगा जी साक्षात प्रकट होकर उन्हें ग्रहण करें। यात्रियों ने गंगा के समीप पहुंचकर कहा कि ये कौड़ियां संत रैदास ने दी हैं, आप इन्हे स्वीकार कीजिए। गंगा ने हाथ बढ़ाकर कौड़िया ले ली और उनके बदले मे एक सोने का कंगन रैदास जी को देने के लिए दे दिया। यात्री वह कंगन रैदास जी के पास न ले जाकर राजा के पास ले गए और उन्हें भेंट कर दिया। रानी उस कंगन को देखकर इतनी विमुग्ध हुई कि उसकी जोड़ का दूसरा कंगन मंगाने का हठ कर बैठी। पर जब बहुत प्रयत्न करने पर भी उस तरह का कंगन नही बन सका, तो राजा हारकर रैदास के पास गए और उन्हें सब वृत्तान्त सुनाया। रैदास जी ने तब गंगा का स्मरण करके अपनी कठौती में से, जिसमें चमड़ा भिगोने के लिए पानी भरा रहता था, उस कड़े की जोडी निकालकर दे दी। इसी कथा से उक्त कहावत का निकास है।)

मन चंचल, करम दलिद्री

भाग्यहीन।

मन चलता है, पर टट्टू नहीं चलता

इच्छाएं तो बहुत, पर शरीर काम नहीं देता।

मन चाहे, मुड़िया हिलावे

झूठमूठ ही इन्कार करना। स्त्रियों की ना भी हां होती है।

मन जाने, घर जाने

बिल्कुल स्वतंत्रता।

मन जाने पाप, माई न बाप

अपने किये पाप को अपना मन ही जानता है, मा-बाप नही जान सकते।

मन भर का सिर हिलाते हैं, पैसे भर की जबान नहीं हिलाते

जब कोई मनुष्य किसी बात का उत्तर मुह से न दे, विशेष कर प्रणाम आदि का उत्तर न दे और केवल सिर हिला दे, तब क०।

मन भाय तो ढेला सुपारी

जिस वस्तु पर मन जाए, वह बुरी होने पर भी अच्छी लगती है।

(स्त्रियां और लड़के प्रायः सोधेपन के लिए मिट्टी के टुकड़े सुपारी की तरह मुंह मे रख लेते है। कहावत उसी पर आधारित है।)

ढेला=मिट्टी का टुकड़ा।

मन भावे, मूंड़ हिलावे

दे०—मन चाहे. . ।

मन भोगी, करम दलिद्री

दरिद्री होकर भी भोगविलास की इच्छा रखना।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे,
विष रस भरा कनक घट जैसे। (तुलसी)

कपटी।

मनमानी, धनखानी

मनमानी करना।

मनमाने घर जाने
दे० ऊ०।

मन मिले का मेला, चित्त मिले का चेला
स्पष्ट।

मन में गांती टसटस रोवे; चूहा समझकर सुख से सोवे
कोई सयानी लड़की छोटे लड़के से ब्याही गई है। उसी पर कहा गया है। लड़की ऊपर से तो रोती है, पर मन मे प्रसन्न है कि वह स्वतन्त्र रहेगी।

मन में बसे, सो सपने दसे
जो बात मन मे रहती है, वही स्वप्न मे दिखाई देती है।

मन में मूरख, जून में दुखी कोई नहीं
कोई अपने को मूर्ख नही समझता, और किसी को अपना जीवन भारी नहो होता।
जून=योनि। शरीर। जीवन।

मन में शेख़ फ़रीद, बगल में ईंट
कपटी मनुष्य।
(इसकी कथा है कि कोई चोर शेख फरीद नामक एक फकीर का चेला हो गया था, और उसने कभी किसी की चीज न छूने की शपथ खा ली थी, पर एक बार ज्योही उसने रास्ते मे एक सोने की ईंट पड़ी देखी, त्योही उसे उठाकर बगल मे छिपा लिया।)

मन मोतियों ब्याह, मन चावलों ब्याह, (स्त्रि०)
ब्याह तो सब एक से ही होते है, चाहे मन भर मोतियो से किया जाए, चाहे मन भर चावलो से।

मन मौजी, करम दलिद्री
मन तो मौज करना चाहता है, पर भाग्य साथ नही देता।

मन मौजी, जोरू को कहे "भौजी"
मन में आया तो स्त्री से ही भौजी कहने लगे।

मनवां मर गया, खेल बिगड़ गया
हिम्मत हारने से काम बिगड़ जाता है।

मन हमरा पास, धन अनका पास, (स्त्रि०)
दूसरे के पास धन है, तो हमारे पास मन है। उदार पुरुष का कहना।

मन हुलासा, गावे गीत
चित्त प्रसन्न होने पर गाना सूझता है।

मर गये मरदूद, जिनकी फ़ातिहा न दरूद, (मु०)
दुष्ट मर गया, मरने पर जिसका कोई क्रिया-कर्म नही हुआ। एक प्रकार की गाली।

मरज़ीए मौला, अज़ हमद औला, (फ़ा०)
ईश्वर की इच्छा ही बलवान है।

मरता क्या न करता
जो मरने को तैयार है, वह सब कुछ कर सकता है।

मरते के साथ मरा नही जाता
मरे हुए के लिए जब कोई बहुत विलाप करे, तब क०।

मरते को मारे शामत जदा
जिसकी स्वय मौत आई हो, वही मरते हुए को छेड़ता है।

मरते को मारे शाह मदार
दुखिया को भगवान और भी दुख देता है।
(स०—दैवो दुर्बल घातक:।)

मरन चली और शुक्र सामने, (स्त्रि०)
मरने मे शकुन-अपशकुन का विचार क्या?
(हिन्दुओं के ज्योतिष के अनुसार शुक्र सामने रहने पर यात्रा वर्जित है।)

मरना जीना सबके साथ लगा है
स्पष्ट।

मरना भला बिदेस का, जहां न अपना कोय
भक्त या त्यागियों का कहना। यह पूरा दोहा इस प्रकार है—
मरना भला बिदेस मे, जहा न अपना कोय।
माटी खाय जनावरा, महा महोत्सव होय।

मरने को क्या हाथी-घोड़े जुड़ते है
जब चाहे तब मर जाए। उपेक्षापूर्वक कहते हैं।
जब कोई मरने की धमकी दे, तब भी क०।

मरने को जी चाहे, कफ़न का टोटा
दे० ऊ०।

मरने जायं, मल्हार गावें
अवसर के विपरीत काम।

(मल्हार आनन्द का राग है और वर्षा ऋतु में ही गाया जाता है।)

मरने पै डोम राजा

इसलिए कि श्मशान मे डोम ही कर लेता है। बाद मे कुछ होता रहे।

मर-मर न जाते तो भर घर होते, (स्त्रि०)

घर के लोग मरते नही तो घर भरा रहता है।

मरल बछिया, बामन को दान, (पू०)

निकम्मी चीज़ जब किसी के मत्थे मढ़ी जाए, तब क०।

मरा रावन फ़जीहत हो

बुरे आदमी के मरने पर भी लोग उसे कोसते हैं।

मरिहों, पर टरिहों नाहीं, (पू०)

ज़िद्दी।

मरी क्यों? सांस न आया, (स्त्रि०)

व्यर्थ का प्रश्न करना।

मरीज़े इश्क को दीदार काफ़ी है

प्रेम के रोगी के लिए अपने प्रिय को देख लेना काफी है।

मरे का कोई नहीं, जीते-जी के सब लागू हैं

स्पष्ट।

लागू=साथी । मित्र।

मरे को मर जाने दे, हलवा पूड़ी खाने दे

बच्चोकी तुकबदी, जिसका प्रयोग वे कबड्डी के खेल में करते हैं।

मरे तो शहीद, मारे तो गाज़ी, (मु०)

धर्म की रक्षा के लिए मरने मे भी कीर्ति मिलती है और दूसरो को मारने मे भी। मुसलमानो की उक्ति।

(मुसलमानो में जो धर्म के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, वह गाज़ी कहलाता है।)

मरे न जीये, हुकुर-हुकुर करे

बूढ़े रोगी के लिए कहते हैं, जिसकी सेवा करते-करते घर के लोग थक जाते हैं।

मरे न, पीछा छोड़े

किसी व्यक्ति से बहुत परेशान होने पर क०।

मरे न माझा ले

न मरता है, न आराम से चारपाई पर ही लेटता है। बहुत तंग आ जाने पर क०। दे० ऊ०।

(खाट पर मरना हिन्दुओं में अच्छा नहीं समझा जाता, इसलिए मरते हुए रोगी को नीचे लिटा देते हैं।)

मरे पै बैद

काम के नष्ट हो जाने पर उपाय।

मर्द औरत राज़ी तो क्या करेगा काज़ी?

किसी मामले मे दो आदमियो मे अगर समझौता हो जाए, तो उसमे फिर कोई क्या कर सकता है?

मर्द का क्या है? एक जूती पहनी एक जूती उतारी, (स्त्रि०)

एक स्त्री के मर जाने पर पुरुष दूसरी स्त्री से ब्याह कर लेता है। उसी पर टि०।

मर्द का दिखाया न खाइये, मर्द का लाये खाइए, (स्त्रि०)

स्त्री को पुरुष के सामने नही खाना चाहिए, पुरुष जो लाए, वही खाना चाहिए।

मर्द का नहाना, औरत का खाना बराबर है

पुरुष जल्दी नहाते है, और स्त्रियां जल्दी भोजन करती है, इसीलिए क०।

(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है: **मर्द का** नहाना औरत का खाना, किसी ने जाना किसी ने न जाना।)

मर्द का नौकर मरे वर्ष भर में, रंडी का नौकर मरे छः महीने मे

क्योकि उसे काम बहुत करना पडता है।

मर्द का हाथ फिरा, और औरत उभड़ी

ब्याह के बाद लड़की शीघ्र बढ़ती है।

मर्द की बात और गाड़ी का पहिया आगे को चलता है

भले आदमी अपनी बात नहीं बदलते।

मर्द के चार निकाह दुरुस्त हैं

स्पष्ट।

(हिन्दुओ का ताना मुसलमानो के धार्मिक विश्वास पर?)

निकाह्=ब्याह्।

मर्द को गर्द जरूर है

मनुष्य को मेहनत अवश्य करनी चाहिए।

मर्द जेकरा गांठ रुपैया, (पू०)

आदमी वही, जिसके पास रुपया हो।

मर्द मरे नाम को, नामर्द मरे नान को

वीर पुरुष को नाम प्यारा होता है, और कायर को रोटी।

मर्दों का एक कौल होता है

मर्द अपनी बात से नही हटते।

मल्लाह् का लंगोटा ही भीगता है

क्योंकि वह कोई और कपड़ा ही नही पहिनता।

मल्लाही की मल्लाही दी, बांस के बांस खाये

पैसा भी खर्च करना पड और अपमान भी हो, अथवा आराम भी न मिले, तब क०।

(नाव मे बैठने पर यात्री को प्राय उन बासो या पतवारो की ठोकरे लगती है, जिनसे नाव खेई जाती है।)

मल्लाही–नाव से नदी पार होने का किराया।

मशालची अंधा होता है

क्योंकि उसे अपने पैरो तले का नही दिखाई देता।

मशालची मरे तो पट-बीजना हो, यहां भी चमके, वहां भी चमके

हँसी मे कहते हैं।

पटबीजना=जुगनू।

मसखरी के चूड़ा, भर-भर गाल, (पू०)

केवल बातो मे बहलाना, देना कुछ नही।

चूडा=विशेष प्रकार के भुने चावल, जो दही या दूध के साथ खाए जाते है।

मसजिद ढह गई, मेहराब रह गई

मरने पर केवल नाम रह जाता है।

मस्ताई बकरी बोक का मुंह चूमती है

मस्ती चढने पर हिताहित का ज्ञान नही रहता।

महद से लहद तक

जन्म से मरण तक।

मुहल्ले में आई बरात, पड़ोसन को लगी घबराट

व्यर्थ परेशान होना, जब कि कोई मतलब नही।

महावट बरसी, जाड़ी सरसी, (ग्रा०)

जाड़े में वर्षा होने से रबी की फ़सल अच्छी होती है।

महिमा घटी समुद्र की, जो रावन बसा पड़ोस

बुरे की सगति करने से अच्छे को भी कलकित होना पडता है।

(लका-विजय के समय राम ने समुद्र को बाधा था, यहा उसी से अभिप्राय है।)

महीना पुराया और कमेरा अघाया

महीना पूरा होते ही मजदूर को तनख्वाह मिलती है, इसलिए वह प्रसन्न होता है।

मां एली, बाप तेली, बेटा शाखे जाफ़रान

जब कोई छोटा आदमी बहुत दिखावा करता है, तब व्यग्य मे क०।

एली=इधर-उधर को।

शाखे ज़ाफ़रान=केसर की टहनी।

मां का पेट, कुम्हार का आवा, कोई गोरा, कोई काला।

एक ही मा के लड़के अलग-अलग रूप-रग के होते हैं, उस पर क०।

मां का मान भला

मां का आदर करना चाहिए।

मां की सौक, न बाप से यारी, किस नाते तौन्ह महतारी, (स्त्रि०)

झूठा रिश्ता जोडना।

सौक=सौत।

मां के पेट से कोई सीखकर नहीं निकलता

काम करने से ही आता है।

मां खेत में पूत जनेत में

(पहेली) कुसुम को कहते है, जिसके रग से पगडी रगी जाती है और विवाह मे पहनी जाती है।

(कहावत के रूप मे उक्त वाक्य का अर्थ यही हो सकता है कि कोई कहीं, कोई कही।)

जनेत=विवाह।

मांग-जांच के गये झांझा, मांग लें तो लागे लाजा

झगडकर मागना, पर अच्छी तरह मांगने मे शर्माना।

झांझा=झगड़ा। हुज्जत।

मांगन गये सो मरि गैये, मरे जो मांगन जाहिं।
वे नर पहिले ही मरे, जो होते कह दें नाहिं।
स्पष्ट। जो पास में होते हुए भी न दे, उस पर क०।

मांगे के मंगनी, गुड़िया का सिंगार
मांगे की चीज़ से शौक़ करना।

मांगे-तांगे काम चले तो ब्याह क्यों करे?
हँसी में क०।

मांगे पर तांगा, बुढ़िया की बरात
भिखारी से भीख मांगना और बूढ़ी औरत से विवाह करना, दोनों बराबर हैं।

मांगे भीख, पूछें गांव की जमा
साधारण हैसियत का होते हुए भी जो बड़ी-बड़ी बातें करता है, या बड़ी बातों का भेद जानना चाहता है, उससे क०।
जमा=मालगुज़ारी।

मांगे में तांगा
मांगकर लाई गई चीज़ में से दान देना।

मांगे हड़, दे बहेड़ा
(१) कुछ कहना, कुछ सुनना।
(२) आज्ञा के विरुद्ध काम करना।

मां चाहे बेटी को, और बेटी चाहे मोटे धींग को, (स्त्रि०)
अभिप्राय यह कि लड़की मां की परवाह नहीं करती।

मां छोड़ मौसी से मज़ाक, (मु०)
मुसलमानों में मौसी से भी हँसी-दिल्लगी करते हैं। जाति-विद्वेषमूलक।

मां टेनी बाप कुलंग, बच्चे निकले रंग-बिरंग
निकम्मे मां-बाप के निकम्मे लड़के।

मां डायन हो तो क्या बच्चे ही को खायगी, (स्त्रि०)
अपनी हानि आप कोई नहीं करता।

मां तेलिन बाप पठान, बेटा शाहे ज़ाफ़रान
शेख़ीबाज से क०। जाति-विद्वेषमूलक कहावत।

मां धोबन, पूत बजाज
दे० ऊ०।

मां न मां का जाया, सभी लोक पराया
ऐसी जगह जहां अपना कोई न हो; विदेश।

मां नारंगी, बाप कोयला, बेटा रौशनउद्दौला
दे०—मां तेलिन...।

मां पनहारी, बाप कंजर, बेटा मिर्ज़ा संजर, (स्त्रि०)
दे०—मां तेलिन...।

मां पिसनहारी अच्छी और बाप हफ़्तहज़ारी कुछ नहीं
क्योंकि बाप की अपेक्षा मां का स्नेह लड़के पर अधिक रहता है।

मां पिसनहारी पूत छैला, चूनड़ पर बांधे बूर का बैला, (स्त्रि०)
मां पिसनहारी है, इसलिए लड़का भूसी के सिवा और किस चीज़ से अपना शौक पूरा करेगा?

मां पै पूत पिता पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़म थोड़ा, (स्त्रि०)
लड़के में अपनी मां के और घोड़े मे अपने पिता के थोड़े-बहुत गुण अवश्य आते हैं।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है: बापै पूत सिपाह पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।)

मां बाप जीते कोई हराम का नहीं कहलाता
अपने किसी दावे का प्रमाण देने के लिए क०।

मां बेटियों में लड़ाई हुई, लोगों ने जाना बैर पड़ा, (स्त्रि०)
घर के लोगों की लड़ाई लड़ाई नहीं कहलाती।

मां बेटी गानेवाली, बाप पूत बराती, (स्त्रि०)
जब कोई व्यक्ति किसी ख़ुशी के मौक़े पर अपने इष्टमित्रों और सगे-संबंधियों को न पूछे, और सब काम अकेले ही कर ले, तब क०।

मां भटियारी, पूत फ़तेहख़ां, (स्त्रि०)
पल्ले कुछ न होते हुए भी शेख़ी बघारना।

मां भटियारी, बेटा तीरंदाज़, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

मां मरे, मौसी जीवे
मौसी के प्रति अधिक प्यार दिखाने को क०।

मां मारे और 'मां' ही 'मां' पुकारे
लड़के का अपनापन मां के प्रति। मां के मारने पर

भी वह मां को बुलाता है।

मां रोवे तलवार के घाव से, बाप रोवे तीर के घाव से

(१) पिता की अपेक्षा मा अपने लड़के के अनाचारों को अधिक धैर्य के साथ सहन करती है।

(२) मां-बाप अपने लडके के दोषो को विभिन्न दृष्टियों से देखते हैं।

माई बाप के लातन मारे, मेहरी देख जुड़ाय।
चारों धामें जो फिर आवे, तबहुं पाप ना जाय।

स्पष्ट।

मेहरी=स्त्री।

माघ का जाड़ा, जेठ की धूप, बड़े कष्ट से उपजे ऊख (कृ०)

ऊख की खेती मे बहुत मेहनत करनी पडती है, माघ का जाडा सहना पडता है और जेठ की गर्मी भी, तब ऊख उपजती है।

माघ तिलातिल बाढ़े, फागुन गोड़े काढ़े

माघ मे दिन थोडा-थोडा बढने लगता है, फागुन मे प्रत्यक्ष हो जाता है।

माघ नंगे, बैसाख भूखे

ग़रीब या अभागे के लिए क०।

माघे जाड़ न पूसे जाड़, बतासे जाड़, (कृ०)

माघ पूस के महीने मे जब हवा चलती है, तभी जाडा पड़ता है।

माट का माट ही बिगड़ा है

सबके सब एक से खराब हैं। घर या समाज के लोगों के लिए क०।

(माट मिट्टी के उस बर्तन को कहते है, जिसमे रगरेज रंग तैयार करते है। रासायनिक रगो के आविष्कार के पहले नील, आल या टेसू के फूलो अथवा टहनियो आदि को मिट्टी के बर्तन मे डालकर सडाते थे। अगर उनके सडने अर्थात खमीर उठने मे कोई त्रुटि हो जाती थी, तो रग नही उतरता था। इसे ही 'माट बिगड़ना' कहते थे, जो अब एक मुहावरा बन गया है, कुल का कुल काम बिगड जाना।)

माटी में माटी मिली, मिली पौन में पौन।
मैं तोय पूछूं ऐ सखि, दोनों में मुआ कौन।

स्पष्ट। शरीर पर कहा गया है।

मुआ=मरा।

माड़ न जुरे, मांगे ताड़ी, (पू०)

हैसियत से अधिक शौक।

ताडी=ताड़ के वृक्ष से निकाला हुआ नशीला रस, जिसका व्यवहार मद्य के रूप में करते है।

माता का हाथ, भाई का साथ

दोनो अमूल्य है।

माता के परसे, भादों के बरसे पेट भरता है, (कृ०)

स्पष्ट।

पाठा०—माता न परसे भरे न पेट, भादो न बरसे भरे न खेत। वर्षा भादो मे ही अधिक होती है, इसीलिए कहा गया है।

माता बर्गी मामता, सौकन बर्गी बैर।
दूजा को राखे नहीं, देखा सांझ सबेर। (प्रा०)

मा से अधिक ममता और सूरत से अधिक बैर रखनेवाला संसार मे कोई नही। इसे अच्छी तरह खोज कर देख लिया गया है।

माथ पर मोटरी, बसंत के गीत (पू०)

असगत काम। भाव यह है कि बोझ तो ढो रहे है और बसंत के गीत गाने का शौक चर्राया है।

मोटरी=गठरी।

माथ मुड़ा के फ़ज़ीहत भये, जात-पांत दोनों से गये

ऐसा काम करना, जिससे न इधर के रहें न उधर के। दोनो दीन से जाना।

(कथा है कि कोई मनुष्य इस विचार से फकीर हो गया कि भीख मागकर जीवन बिताना अधिक सुविधाजनक है। किन्तु थोडे दिनो बाद यह रास्ता उसे अच्छा नही लगा, और उसने फिर अपनी जाति में मिलना चाहा, पर जातिवालो ने उसे नही लिया। इस प्रकार वह दोनों ओर से गया।)

माथे का मुड़ौना, बेल का खिसकना, (पू०)

सिर मुडाते ही बेल गिरा। किसी कार्य का आरंभ करते ही विघ्न आ जाना।

माथे गठरी मथुरी वास, आज न पहुंचब, पहुंचब काल, (पू०)
(१) बेफ़िक्र आदमी का कहना।
(२) काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए, देर लगे कोई परवाह नही।

मान का पान भी बहुत होता है
सम्मान से दी गई थोडी वस्तु भी बहुत होती है।

मान का पान, हीरा समान
दे० ऊ०।

मान का माहुर ओर अपमान का लड्डू
मान का ज़हर भी अच्छा होता है।

मान घटे नित के घर जायें, ज्ञान घटे कुसंगत पाये।
भाव घटे कुछ मुख के मांगे, रोग घटे कुछ औषध खाये।
रोज़-रोज़ (किसी के) घर जाने से इज्जत घटती है, बुरी सगत मे बैठने से ज्ञान घटता है, किसी से कुछ मुह से मागने मे कद्र घटती है, और दवा के खाने से रोग दूर होता है।

मान न मान, मै तेरा मेहमान
जबर्दस्ती किसी के गले पडना।

मान न मान, मै दूल्हा की चाची, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

मानस कसने को मुआमला कसौटी है
आदमी की परख काम पड़ने पर होती है।

माने तो देव, नही भीत का लेव, (स्त्रि०)
विश्वास से ही सब होता है। पूरा वचन यो है:
भाव भाव में सिद्धि, भाव भाव मे भेव।
जो मानो तो देव है, नही भीत का लेव।
लेव=पलस्तर।

माने न जाने, 'मै भी नौशा की खाला', (स्त्रि०)
दे०—मान-न-मान मैं तेरा मेहमान।

मामूं के काम में बालियां, भानजा ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरे
दूसरे की दौलत पर घमंड या शेखी करना।

माया का क्या ओढ़ना, जल जाना कंबल ओढ़ना
(१) किसी फक्कड़ का कहना।
(२) ऐसे धनी कंजूस के लिए भी व्यंग्य में कहते हैं, जो धन-संचय में ही सुख मानता है।

माया के भी पांव होते है, आज मेरे कल तेरे
लक्ष्मी एक जगह नही ठहरती।

माया गंठ और विद्या कंठ
पैसा पास रहने और विद्या कंठस्थ रहने से ही काम आती है।

माया तेरे तीन नाम, परसू, परसा, परसराम
आर्थिक स्थिति के हिसाब से ही मनुष्य का सम्मान होता है। किसी एक ग़रीब को लोग, परशुराम नाम होने पर भी, परसू ही कहते है,। वही व्यक्ति कुछ हालत सुधर जाने पर 'परसा' और फिर धनी हो जाने पर परशुराम कहलाने लगता है। मतलब, पैसे की ही इज्जत होती है।

माया मरी न मन मरे, मर-मर गये शरीर।
आशा तृष्णा ना मरे, कह गये दास कबीर।
माया, इच्छा, आशा और तृष्णा का नाश नही होता, शरीर ही का नाश होता है।
(स—भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता
स्तपो न तप्त वयमेव तप्ता।
कालो न यातोवयमेव यात,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा। (भर्तृहरि)

माया मेरे राम की, धरनीधर को देह।
पूंजी साहूकार ही, यश कोई कर लेय।
स्पष्ट।
दान के लिए प्रेरित किया गया है।

माया से माया मिले, कर कर लंबे हाथ।
तुलसीदास गरीब की, कोई न पूछे बात।
धनी के पास ही और अधिक धन आता है अथवा धनवान की सब इज्जत करते है। ग़रीब को कोई नही पूछता।

माया से माया मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।
जो जैसा होता है, वह वैसे ही की सगत करता है।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर।
नौ नेजे पानी चढ़ा, तऊ न भीजी कोर।
हृदय में यदि उदारता नहीं, तो पैसा होने से क्या लाभ? पत्थर यद्यपि पानी मे भीगा रहता है,

किन्तु फिर भी उस पर पानी का कोई असर नहीं होता।
नेजा=बांस।
कोर=किनार।

मार के आगे भूत नाचे
मार से सब भय खाते है।
पाठा०—मार के आगे भूत भागे।

मार खाता जाय, और कहे 'मारो तो सही'
कायर और निर्लज्ज के लिए क०।

मार खाना, मसजिद में सो रहना
ठग और उठाईगीरों के लिए क०।
(जिसका कोई घरबार नहीं होता, वही मसजिद में जाकर सोता है।)

मार गुसैंया, तेरी आस
बहुत सताए जाने पर नौकर का मालिक से या स्त्री का पति से कहना।

मारते का हाथ पकड़ा जाता है, कहते की जबान नहीं पकड़ी जाती
किसी को कोई झूठ या सच बात कहने से रोका नहीं जा सकता।

मारते के पीछे और भागते के आगे
कायर के लिए क०।

मारतेखां से सब डरते हैं, (मु०)
जबर्दस्त से भय खाते हैं।

मारनेवाले से जिलानेवाला बड़ा दाता है
जब किसी संकट से किसी के प्राण बच जाए, तब क०।

मार पीछे संवार
मारने के बाद माफी मांगना। अथवा लड़ाई में पहले तो बढ़कर हाथ जमाना चाहिए, फिर बाद मे जो हो सो देखे।

मार-मार किये जाय, फतह दाद इलाही है
भरपूर प्रयत्न तो करना ही चाहिए, सफलता तो ईश्वर के अधीन है।

मार-मार के सती करना
इच्छा के विरुद्ध काम लेना।

मार मुए मार, तेरी हथड़ियां पिरायं, मेरी आदत न जाय, (स्त्रि०)
बहुत हठीली और बेशर्म स्त्री से क०।

मारा बे अर्की क़िस्सा कि गाव आमद ख़र रफ़्त, (फ़ा०)
गाय आई और गधा चला गया, मुझे इस किस्से से क्या मतलब? भाव यह कि अप्रयोजनीय विषय की चर्चा मत करो।

मारा मुंह तबाक़, आगे धरा न खाय
पिटा हुआ आदमी भोजन करने से डरता है, यद्यपि थाली आगे रखी है।
तबाक एक प्रकार की बड़ी तश्तरी।

मारे न चूही, नाम फतेहखां
डींग हांकनेवाले से क०।

मारे मेहर और भागे पड़ौसन, (पू०)
कोई औरत पिट रही है और पड़ोसिन भागती है, कि कहीं मै भी न पिट जाऊं।

मारे सिपाही, नाम सरदार का।
काटे बार, नाम तलवार का।
असली काम तो नीचे के छोटे आदमी ही करते है, पर यश मिलता है बड़ों को।

माल का मुंह करते है, जान का मुह नहीं करते
पैसे का ख्याल करते हैं, जान का नहीं करते। कजूस के लिए क०, जो धन को प्राणो से अधिक चाहता है।

माल के नुक़सान में जान की ख़ैर
पैसा गया, पर जान तो बची। किसी का धन खो जाए, तो धैर्य बधाने का कहते है।

माल का ज़क़ात है
हैसियत के मुताबिक हर आदमी को दान-पुण्य करना चाहिए।
ज़कात=वार्षिक आय का चालीसवां हिस्सा, जो दान-पुण्य में खर्च करने के लिए मुसलमानी धर्म में कहा गया है।

मालवाला हार, गालवाला जीते
जिसका असली हक़ है, वह तो हार जाता है और बातूनी जीत जाता है।

(अदालतों के मामले-मुकद्दमों के सम्बन्ध में कहा गया है, जहां पावनेदार तो हार जाता है और वकीलो की पैरवी से देनदार जीतता है।)

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप।
साहू चाहे बोलना, चोर चाहे चूप।

स्पष्ट।
साहू=साहूकार।
चुप=चुप्पी।

मालूम होगा हश्र को पीना शराब का, (मु०)
शराबियो के लिए मुस्लिम क०।
जब क़यामत के दिन ईश्वर के यहा विचार होगा, तब शराब पीने का मजा मालूम पडेगा।

माले मुफ़्त दिले बेरहम
दूसरे का माल लोग बेरहमी से खर्च करते है।

माशूक़ की जात बेवफ़ा है
स्पष्ट।
बेवफ़ा= बेमुरव्वत, कृतघ्न।

मास खाये मास बढ़े, घी खाये बल होय।
साग खाये ओझ बढ़े, बूता कहां से होय।
स्पष्ट।
ओझ पेट

मास बिना सब साग रसोई, (मु०)
मास के बिना सब भोजन साग-भाजी की तरह है। मासाहारियो का कहना।

मासे भर की चार कचौड़ी, खुरमा मासे ढाई का।
घर में रोवें बहिन भानजी, बाहर रोवे नाई का।
धीरे-धीरे जीमों पंचों, देखो गजब खुदाई का।
लालाजी ने ब्याह रचाया, लहंगा बेच लुगाई का।
दे० तोले भर की...।

मित्र वह मर जाये जो अड़ी में काम न आया
जो मौके पर काम न आए, वह मित्र ही किस काम का?

मिज़ाज क्या है कि एक तमाशा,
घड़ी में तोला, घड़ी में माशा
अव्यवस्थित चित्त।

मिट्टी पकड़े सोना हो
भाग्यवान पुरुष।

मियां का दम और किवाड़ की जोड़ी
किसी ऐसे भले आदमी की बात जिसके पास कुछ नही, और जो किसी बात की फ़िक्र भी नही करता।

मियां की दाढ़ी वाहवाही में गई
झूठी प्रशसा के लाभ में जब कोई अपनी सब संपत्ति उड़ा दे तब क०।
(कहानी के लिए दे० मुल्ला की...।)

मियां के मियां गये, बुरे-बुरे सुपने आये (पू० स्त्रि०)
किसी स्त्री का पति मर गया है, या शायद विदेश चला गया है, उसका कथन। एक के बाद दूसरी मुसीबत।

मियां गये रौंद, बीवी गई पटरौंद
मिया का हाल बिगड़ा हुआ है, तो बीवी का हाल उनसे भी अधिक बिगड़ा हुआ।

मियान में से निकला ही पड़े है
आपे से बाहर हुआ जा रहा है। अकारण क्रोध करने पर क०।

मियां नाक काटने को फिरे, बीवी कहें नथ गढ़ा दो, (मु०, स्त्रि०)
(१) एक दूसरे की इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध काम।
(२) परस्पर मेल न होना।

मियां ने टोही, सब काम से खोई, (स्त्रि०)
मिया ने कुछ गडबड़ करना चाहा, और वह (नौकरानी) भाग गई।
अपनी बेवक़ूफ़ी से अड़चन पैदा कर लेना।

मियां फिरें लाल गुलाल, बीवी के हैं बुरे हवाल (स्त्रि०)
आप तो छैल चिकनिया बने फिरना, और घर की खबर न लेना।

मियां बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी
दो पक्ष एक हो जाएं, तो बीच में हस्तक्षेप करना व्यर्थ है।

मियां हाथ अंगूठी बीवी के कनपात।
लौंडी के दांत मिस्सी, तीनों की एक बात। (पू०)
सब एक से शौक़ीन। जैसा मालिक वैसा नौकर।
कनपात=कान के पत्ते। कान का एक आभूषण।

मिरग की सी आंखें, चीते की सी कमर
रूपवती स्त्री।
मिरग, बांदरा, तीतर, मोर; ये चारों खेती के चोर, (कृ०)
स्पष्ट। इनसे खेती नष्ट होती है।
बांदरा=बंदर।
मिरजा फोया
बहुत सुकुमार आदमी।
फोया=रूई का टुकड़ा।
मिलकी क्या जाने पराये दिल की
कौन आदमी किस प्रकार जीवन बिता रहा है, यह धनी पुरुष नही जान सकता।
मिलकी ना कहे दिल की; पैठें दरवाजे, निकलें खिड़की, (पू०)
धनी पुरुष कब, कौन-सा काम, किस तरह करते है, कोई जान नही सकता।
मिल गये की सलाम आलेक है
झूठे मित्र के लिए क०।
मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुस को, (स्त्रि०)
ग़रीबी की हालत पर क०। मिस्सी काजल किस पर लगाऊं? मियां तो जा रहे है भुस भरने।
मीजान ज्यों-का-त्यों, कुनबा डूबा क्यों?
दे० हिसाब ज्यों का त्यों...।
मीठा और कठौती भर
(१) अच्छी चीज़ कम ही मिलती है।
(२) दुहरा लाभ होने पर भी क०।
मीठा मीठा हप हप, कड़वा कड़वा थू थू
अच्छी चीज़ चुन-चुन कर लेना और बुरी दूसरो के लिए छोड़ देना।
मीठी छुरी
कपटी मनुष्य।
मीठी बातों में दिन रात कटे मालूम नहीं होते
स्पष्ट।
मीठे से मरे तो माहुर क्यों दीजे
दे० गुड़ दिये मरे...।
माहुर=जहर।

मीर साहब की बात आली है
मुंह चिकना और पेट खाली है
स्पष्ट। शौक़ीनों पर व्यंग्य।
मीर साहब ज़माना नाज़ुक है, दोनों हाथों से थामिये दस्तार
खूब सम्हलकर रहने के लिए कहा जा रहा है। अपनी इज्ज़त बचाइए।
दस्तार=पगड़ी।
मींरा की बोटी है, (मु०)
बड़ा हिस्सा तो बड़े आदमी को ही मिलेगा। (दरगाहो के मुजाविर या मदिरो के पुजारी चढ़ावे या प्रसाद का हिस्सा पीर या देवता के नाम से अलग रख लेते है, शेष सबको बांट देते है। उसी से मतलब है।)
मीरां गोर बराबर
जितने बड़े मियां उतनी ही बड़ी उनकी क़ब्र। आमदनी ख़र्च बराबर।
मुआ जोगी और पिसी दवा
पहचानी नहीं जाती।
मुंडे सिर पर पानी पड़ा, ढल गया
बेशर्म।
मुंह कहे 'खाया खाया', हलक कहे 'सवाद न आया'
कोई चीज इतनी थोड़ी मिलनी कि उसमें कोई मजा ही न आए।
मुंह का निवाला तो नहीं है
जो जल्दी निगल लिया जाए। अर्थात अपने हाथ का काम नही है।
मुंह काला, वक्त उजाला
दुष्ट भाग्यवान के लिए क०।
मुंह की मीठी, हाथ की झूठी, (स्त्रि०)
मुंह से मीठी बात करे, पर हाथ से कभी कोई चीज़ उठाकर न दे।
मुंह के आगे खंदक नहीं
खाने या बात करने की एक सीमा होती है।
मुंह को कालख लग गई
बदनामी हो गई।

मुंह खाय, आंख लजाय
जिसका खाय उसका एहसानमंद होना ही पडता है।

मुंह गैल तमाचे हैं
आदमी को देखकर उसका सम्मान होता है।

मुंह चिकना, पेट खाली
कोरी, साफ़ शौकीनी।

मुंह देख के बीड़ा और चूतड़ देख के पीढ़ा
आदमी की हैसियत देखकर ही लोग उसका आदर-सत्कार करते हैं। घनवान की अधिक खातिर की जाती है और ग़रीब की कम।
बीडा =पान।
पीढ़ा=बैठने के लिए आसन।

मुंह देखी सब कहते हैं, खुदा लगती कोई नहीं कहता
मुलाहिजे मे आकर पक्षपात की बात सब करते है, सच कोई नही कहना चाहता।

मुंह देखे की मुहब्बत है
दिखावटी प्रेम सब करते हैं।

मुंह धो रक्खो
अर्थात जो तुम चाहते हो, वह नही होने का।

मुंह न तूह, नाम चांद खां
नाम के अनुसार रूप नही।

मुंह नूर, न पेट सबूर
अमागा मनुष्य।
नूर= रौनक।
सबूर=धैर्य, अर्थात पेट खाली।

मुंह पर कहना खुशामद है
मुह देखकर बात करना ठीक नही।

मुंह पर कहे सो मूंछ का बाल, पीछे कहे सो झांट का बाल
पीठ पीछे किसी की निंदा अच्छी नही, जो कहे सो मुह पर ही कहना चाहिए।

मुंह पर हवाइयां लगीं
होश गुम हो गए। बुरी तरह घबरा गए।

मुंह पर पूत, पीछे हरामी भूत, (स्त्रि०)
सामने तो मीठी बात, पर पीछे निंदा।

मुंह पर फिटकार बरसने लगी
सभी धिक्कारने लगे।

मुंह पर मुमानी, पीठ पीछे सुअर खानी, (स्त्रि०)
दे० मुंह पर पूत...।
मुमानी=मामा की स्त्री। माईं।

मुंह मांगी मुराद मिले
भीख मागते समय भिक्षुक कहा करते हैं कि भगवान तुम्हारी इच्छाए पूरी करे।

मुंह मांगी मौत तो मिलती ही नहीं
(१) मनुष्य जो चाहता है वह नहीं होता।
(२) मागने से कुछ नही मिलता।

मुंह मांगे दाम नहीं मिलते, (व्य०)
मनचाहा कोई काम नही होता।

मुंह में आया सो बक दिया
बिना सोचे बात करना।

मुंह में दांत, न पेट में आंत
बहुत बूढ़ा मनुष्य।

मुंह रहते नाक से पानी पिये
असगत काम। मूर्ख से क०।

मुंह लगाई डोमनी, गावे ताल बेताल
किसी को बहुत मुंह नहीं लगाना चाहिए।
(कहावत का भाव यह है कि डोमनी को यदि सिर पर चढा लिया जाए, तो फिर वह किसी की बात नही सुनेगी, जैसा मन मे आएगा वैसा गाएगी।)
डोमनी - डोम की स्त्री, एक गाने बजानेवाली भिक्षुक जाति की स्त्री।

मुंह लगाई डोमनी बाल-बच्चों समेत आये
किसी के साथ थोडा भी अच्छा व्यवहार करो, तो वह फिर उसका अनुचित लाभ उठाता है। डोमनी से अच्छी तरह बात करो, तो वह पूरे परिवार को लेकर भोजन के लिए आती है।

मुंह लगी और फ़ैल मेरे पेट में
शराब के लिए क० कि एक बार जहा पीने की आदत पड़ गई कि बुरे कामो के सिवा आदमी को और कुछ नहीं सूझता।

मुंह सुई, पेट कुई
(१) जो थोड़ा-थोड़ा करके बहुत खा जाए।

(२) जो देखने में तो भला, पर वास्तव में बहुत शरारती हो।

मुंह से निकली हुई पराई बात

बात मुंह से बाहर निकली नहीं कि वह फिर सबको मालूम हो जाती है।

मुंह से बोलो, सिर से खेलो

हां-हूं कुछ तो करो। जब किसी के सिर देवता आते हैं, तो वह बहुत देर तक सिर हिलाकर हूं-हूं करता है। उसी से 'सिर से खेलना, मुहावरा बना, जिसका अर्थ है सिर हिलाकर बात का जवाब देना।

मुंह से महाबा

सामने मौजूद रहने से भय होता है। नजर रखने से काम ठीक होता है।

मुंह से राल टपकी पड़ती है

किसी चीज को देखकर उसे खाने अथवा पाने की बहुत लालसा होना।

मुंह से 'लाम' 'काफ' मत निकालो

बदजबानी मत करो।

मुंह से हजार चाउर खाय, नाके से एक ना, (पू०, स्त्रि०)

चावल मुंह से ही खाए जाते है, नाक से नहीं। ठीक ढंग से जितना काम बन सके, उतना ही करना चाहिए।

मुंह हाले ससर बला टाले

(१) रोगी के लिए क० कि यदि वह खाने लगे, तो समझ लो रोग चला गया। (२) आलसी के लिए भी कह सकते हैं जो केवल हां-हूं करके काम करने की मुसीबत से बचना चाहता है।

मुंह-ही-मुंह मारे और तोबा-तोबा पुकारे

लड़कों के सम्बन्ध में क० कि उनकी रिआयत नहीं करनी चाहिए। उन्हें ताड़ना करते रहना चाहिए।

मुई क्यों ? सांस न आया, (स्त्रि०)

दे० मरी क्यों....। बेतुका प्रश्न।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है ?

(१) पितरों का श्राद्ध करने पर किसी अन्य धर्मी का व्यंग्य। (२) जब कोई बुढ़ापे में जवानी का मजा लूटना चाहे तब भी क०।

मुई बछिया बांमन को दान, (हि०)

निकम्मी चीज दूसरे के मत्थे मढ़कर एहसान करना।

मुई माई, टूटी सगाई

मां के मरने पर नैहर का नाता टूट जाता है। क्योंकि मां ही लड़की को सबसे अधिक प्यार करती है।

मुई लोलो आंडो पर

कमजोर अपना गुस्सा बेकसूर पर उतारता है। लोलो=पुरुषेन्द्रिय।

मुएंगे और सो रहेंगे

मरने पर सब झगड़ो से छुट्टी मिल जाती है।

मुए पर सौ दुर्रे, (मु०)

मरे को सब मारते हैं।

मुए बैल की बड़ी-बड़ी आंखें

मरने के बाद आदमी की सब प्रशंसा करते हैं, जीते-जी कोई नहीं पूछता।

मुए शेर से जीती बिल्ली भली

साहस बड़ी चीज है।

मुकतमाल बानर लिये, वेद लिए अज्ञान।
परम सुंदरी जोगी लिये, कायर हाथ कमान।

बंदर के हाथ में मोतियो की माला, मूर्ख के हाथ में वेद, जोगी के साथ परम सुंदरी स्त्री, और कायर के हाथ मे धनुष— ये सब हास्यजनक कार्य है।

मुख में 'राम राम' बगल में छुरी

पाखंडी।

मुखाविम खां के साले

वह जो दूसरो के बल पर लंबी-चौड़ी बातें करे।

मुजर्रद सब से आला, जिसके लड़का न बाला

बिना ब्याह का आदमी सब से अच्छा, उसे किसी बात की फ़िक्र नही होती।
मुजर्रद=क्वांरा।

मुझको न मारे तो सारे जहान को मार आऊं

कोरी डींग हांकनेवाले से क०।

मुझे और न तुझे ठौर

ऐसे दो व्यक्ति, जिनका एक-दूसरे के बिना काम न चले, पर जो एक-दूसरे से संतुष्ट भी न रहते हों।

मुझे दे सूप तू हाथों फूंक
स्वार्थी व्यक्ति।

मुद्दई मुद्दालेह नाव में, शाहद तैरते जायें
दे० नाव चढ़े....।

मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त
(१) जिसका असली काम है, वह तो लापरवाही करे, दूसरे आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी दिखाएं तब क०। (२) रिश्वत लेकर जो हमेशा झूठी गवाही देने को तैयार रहते हैं उन्हें भी क०।

मुफ़लिस का चिराग़ रोशन नहीं होता
ग़रीब आदमी का कोई काम सफल नहीं होता।

मुफ़लिस की जोरू सदा नंगी
पैसा न होने से गहना-कपड़ा नहीं मिलता।

मुफ़लिस से सवाल हराम है, (मु०)
ग़रीब से कुछ मांगना बुरा है।

मुफ़लिस हमेशा ख्वार
ग़रीब हमेशा नीचा देखता है।

मुफ़लिसी और फालसे का शर्बत
हैसियत से बाहर जाना।

मुफ़लिसी और हाट की सैर
दे० ऊ०।

मुफ़लिसी में आटा गीला
विपत्ति में विपत्ति।

मुफ़लिसी सब बहार खोती है, मर्द का एतबार खोती है
ग़रीबी बुरी चीज है। जिंदगी का सब मजा चला जाता है, और मनुष्य अपना विश्वास भी खो बैठता है।

मुफ़्त का करना और दूर ले जाना
वृथा परिश्रम।

मुफ़्त का चंदन घिसे जा बिलल्ली, (स्त्रि०)
(१) मुफ़्त का माल सबको अच्छा लगता है। (२) दूसरे की वस्तु का दुरुपयोग करने पर भी क०।

मुफ़्त का माल किसको बुरा लगता है?
सबको अच्छा लगता है।

मुफ़्त का सिरका शहद से मीठा
मुफ़्त की बुरी-से-बुरी चीज भी अच्छी होती है। सिरका खट्टा होता है।

मुफ़्त की दावत में फ़क़त रोटी ही गोश्त है, (मु०)
मुफ़्त का रूखा भी खाने को मिले, तो वह भी अच्छा।

मुफ़्त की शराब काजी को भी हलाल, (मु०)
मुसलमानों में शराब पीना मना है। विशेषकर काजियों के लिए, पर मुफ़्त की मिले, तो फिर पीने में दोष क्या?

मुफ़्त के खानेवाले हम और हमारा भाई, (स्त्रि०)
स्त्रियां प्राय: अपने पति का धन अपने भाई-भतीजों को दे दिया करती हैं। उसी पर कहा गया है।

मुफ़्त के चिड़वा भर-भर फंके
हराम का खानेवालों के लिए क०।
चिड़वा=चिऊड़ा, हरे या उबले हुए चावलों को भूनकर बनाया गया विशेष प्रकार का चिपटा दाना।

मुफ़्त में निकले काम तो काहे को दीजे दाम
मुफ़्त में काम करानेवालों को क०।

मुफ़्त राचे मुफ़्त, (फ़ा०)
मुफ़्त की चीज में दोष नहीं निकालना चाहिए।

मुरगा पशम, भेड़ भसम, (मु०)
जो भेड़ को पचा सकता है उसके लिए मुर्गा क्या चीज है? धूर्त के लिए क०।

मुरगा बांग न देगा, तो क्या सुबह न होगी? (मु०)
किसी एक आदमी के न होने से दुनिया के काम नहीं रुकते।

मुरगा हज़म, बकरी पर दम, (मु०)
मुर्गा हज़म कर लिया, अब बकरी पर नज़र। लालची या धूर्त आदमी।

मुरगी अपनी जान से गई, खानेवाले को मज़ा न आया, (मु०, स्त्रि०)
किसी के त्याग, परिश्रम या आत्मबलिदान की उचित प्रशंसा न करना।

मुरगी की अज़ान कौन सुनता है? (मु०)
(१) ग़रीब की कोई सुनवाई नहीं करता।
(२) स्त्रियों की बात का कोई विश्वास नहीं होता
अज़ान=आवाज़।

मुरगी की बांग का क्या इतबार ? (मु०)
किसी छोटे आदमी की बात का क्या विश्वास ?

मुरगी के ख्वाब में दाना-ही-दाना
जिसे जिसकी चिंता रहती है, सपने मे भी उसे वही चीज दिखाई देती है।

मुरगी को तकले का ही घाव बस है, (स्त्रि०)
ग़रीब के लिए थोड़ी हानि भी असह्य हो जाती है।

मुरगे की एक ही टांग होती है, (मु०)
जब कोई आदमी सरासर झूठ बोलकर उसे सही साबित करने की कोशिश करे तब क०।
(इसकी कथा है कि कोई बाबर्ची अपने मालिक के लिए खाना पकाकर लाया। उसमे मुर्गे की एक ही टाग थी। एक टाग बाबर्ची ने चुपचाप खा ली थी। मालिक ने पूछा—इसकी दूसरी टाग कहा गई ? बाबर्ची ने जवाब दिया— हुजूर, मुर्गे के सिर्फ एक ही टाग होती है। सयोगवश किसी दिन एक मुर्गा कूडे के ढेर पर एक टाग से खडा था। बाबर्ची ने मुर्गे की ओर इशारा करके कहा—हुजर, एक टाग के मुर्गे को देखिए। जब मालिक ने ताली बजाई, तो मुर्गे ने झट दूसरा पैर जमीन पर रख दिया, और बाबर्ची से कहा—देख, इसके दोनो पैर है कि एक ? इस पर उसने जवाब दिया—हुजूर, ताली बजाने से दो पैर दीख पडे। अगर उस समय भी आपने ऐसा किया होता, तो दूसरा पैर जरूर सामने आ जाता।)

मुरदा ब-दस्ते जिंदा, (फ़ा०)
मुरदा जिन्दे के हाथ मे है, उसका चाहे जो करो।
लाशे को दफन कीजे मेरे याके फेक दीजे।
मुर्दा बदस्त जिंदा, जो चाहिये सो कीजे । (ज़ौक)

मुरदा बहिश्त में जाय या दोजख में, यहां तो हलवे मांड़े से काम, (मु०)
जो केवल अपना मतलब देखे उसके लिए क०।
(मुसलमानो मे मुर्दे के सामने जो मुल्ला कुरान पढ़ता है, उसे मिठाई आदि मिलती है। उसी के मुह से उक्त वाक्य कहलवाया गया है।) **मुल्लो और पंडों का दृष्टिकोण।**

मुरदे को बैठकर रोते हैं और रोजगार को खड़े हो कर
मुर्दे के लिए तो आदमी (आराम से) बैठकर रोता है, पर जीविका के चले जाने पर परेशान घूमता है। मतलब जीव से जीविका प्यारी होती है।

मुरदे पर सौ मन मिट्टी तो एक मन और सही, (मु०)
जब इतना नुकसान हुआ तो थोडा और सही, पर काम तो करके छोडेगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

मुरदों से शर्त बांध कर सोता है
बेखबर सोनेवाला।

मुरब्बी बियार—वो मुरब्बा बिखूर, (फ़ा०)
मुरब्बी बिना मुरब्बा नही पकता। आशय यह कि किसी धनी आदमी को अपने काबू मे किए बिना बढ़िया मालटाल खाने को नही मिलते।

मुलाजिमे नौ तेज रौ, (फ़ा०)
नया नौकर काम मे फुर्ती दिखाता है।

मुल्के खुदा तंग नेस्त, पाये मरा लंग नेस्त, (फ़ा०)
ईश्वर का मुल्क थोडा नही है और मैं भी पैरो से लगडा नही हू। किसी उद्योगी पुरुष का कहना, जिसे काम से जवाब दे दिया गया है।

मुल्ला की दाढ़ी तबर्रुक में गई, (मु०)
वाहवाही मे सब धन लुट गया।
(कथा है कि कोई मुल्ला यादगार के तौर पर चेलो को चीजे बाट रहे थे। यह देखकर एक मसखरे ने कहा कि मुल्ला जी आपकी दाढी हमेशा मुझे आपकी याद दिलाती रहेगी। यह कहकर उनकी दाढ़ी मे से उसने एक बाल उखाड लिया। यह देखकर सभी चेले आगे बढे और मुल्ला के बहुत मना करते रहने पर भी उन्होने एक-एक बाल करके उनकी सारी दाढ़ी नोंच डाली।)

मुल्ला जी क्या कहें, आखून जी आगे ही समझे हुए हैं, (मु०)
तुम क्या कहोगे, हम पहले से ही सब जानते हैं।
आखून जी=शिक्षक। उस्ताद।

मुल्ला न होगा तो क्या मसजिद में अजान न होगी (मु०)

किसी एक आदमी के बिना दुनिया का काम नहीं रुकता।

मुश्क आं अस्त कि खुदबोयद, न कि अत्तार गोयद, (फ़ा०)

कस्तूरी तो (अपनी गंध से) स्वयं अपना परिचय दे देती है, गंधी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

मुश्किले नेस्त कि आसां न शवद, मर्द बायद कि हिरासां न शवद, (फ़ा०)

ऐसा कोई मुश्किल काम नहीं जो (प्रयत्न करने से) आसान न हो जाए; मनुष्य को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

मुसलमानां दर गोर, मुसलमानी दर किताब, (फ़ा०)

मुसलमान सब क़ब्र में हैं, और उनका मज़हब किताबों में। अर्थात सच्चे मुसलमान अब नहीं रह गए।

मुसलमानी अबादानी, (मु०)

जहां भी मुसलमान होते हैं, वे सब इकट्ठे रहते हैं।

मुसलमानी में आनाकानी क्या? (मु०)

जो काम करना ही है उसमें हीले-हवाले की ज़रूरत क्या?

मुसलमानी=मुसलमानों की वह रस्म, जिसमें छोटे बालक की इन्द्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।

मुसल्ला पसार, बग़ल में यार, (मु०)

नमाज़ पढ़ने जा रहे हैं, फिर भी बग़ल में माशूक दबाए हैं। पाखंडी।

मुसल्ला=वह दरी, जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है।

मुसाफ़िर चले ही जाते हैं, कुत्ते भौंकते ही रहते हैं

काम करनेवाले काम करते हैं, बकनेवाले बकते रहते हैं।

मुहर्रम की पैदाइश, (मु०)

मनहूस आदमी।

(मुहर्रम के दिनों में मुसलमान हसन-हुसैन की यादगार में शोक मनाते हैं। इसीलिए क०।)

मुहरें लुटी जायें, कोयलों पर मुहर

दे० अशर्फियां लुटें....।

मूंग मोंठ में बड़ा कौन?

बिरादरी में कोई छोटा बड़ा नहीं होता; सब बराबर।

मूंछ मरोड़ा रोटा तोड़ा

आलसी आदमी।

मूंज की टट्टी और गुजराती ताला

असंगत या हास्यजनक काम।

(१) घास की टट्टी में गुजराती ताला (जो कीमती होता है) शोभा नहीं देता।

(२) मूंज की टट्टी, जो स्वयं कमज़ोर होती है, उसमें (गुजराती) मज़बूत ताला लगाना मूर्खता है। (पंजाब का गुजरात नामक स्थान किसी समय तालों के लिए प्रसिद्ध था।)

मूंड़ दिया, मांग खाओ

योगियों का अपने-अपने चेलों से क० कि हमने चेला बना लिया अब अपना काम तुम करो।

मूंड़ मुड़ाये, जटा रखाये, नगन फिरैं ज्यों भैंसा।
खलड़ी ऊपर राख लगाये, मन जैसे का तैसा।

पाखंडी साधुओं के प्रति क०।

मूंड़ मुड़ाये तीन गुन, गई टांट की खाज।
बाबा हो जग में फिरैं, खायं पेट भर नाज।

मूंड़ मुड़ाने (साधु होने) में तीन लाभ हैं—सिर की खुजली जाती रहती है, दुनिया में मान होता है और पेट भर खाने को मिलता है। दिखावटी साधुओं पर व्यंग्य।

मूज़ी का चंगुल

बुरा होता है।

मूज़ी=(१) कंजूस (२) अत्याचारी।

चंगुल=पकड़। फंदा।

मूज़ी का माल निकले फूट के खाल

मूज़ी का माल हज़म नहीं होता।

मूज़ी को नमाज़ छोड़ के मारे, (मु०)

दुष्ट जीव को जब देखे तभी मारे।

मूत का चुल्लू हाथ में

ऐसा आदमी जो दूसरों पर गंदगी उछालता फिरे।

मूरख की सारी रैन, चातुर की एक घड़ी

(१) मूरख के साथ सारी रात रहने की अपेक्षा चतुर के साथ घड़ी भर रहना अच्छा।

(२) जिस काम के करने मे मूरख घंटों लगा देता है, चतुर उसे ज़रा देर मे (बहुत सुघराई के साथ) निपटा देता है।

मूरख को समझाइए, ज्ञान गांठ को जाय

मूरख को उपदेश देना व्यर्थ है।

मूरख को समझावना सरस बीज चलि जाय।
ज्यों पत्थर के मारने, चोखो तीर नसाय।

मूर्ख को उपदेश देने से संपूर्ण अच्छे उद्देश्यों की हानि हो जाती है, जैसे पत्थर पर चोखा तीर मारने से वह नष्ट हो जाता है।

मूरख मूढ़ गंवार को सीख न दीजो कोय।
कूकर वर्गी पूंछड़ी कभी न सीधी होय।

मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है। चाहे जितना प्रयत्न करो कुत्ते की पूछ कमी सीघी नही होती।

मूरख से क्या कहिये, जा से क्या बिसाइये?

मूर्ख से बात क्यो की जाए? उससे कोई लाभ नही।

मूल से ब्याज प्यारा होता है, (ब्य०)

मूल तो अपना ही है ब्याज नफ़े में मिलता है, इसलिए अधिक प्यारा होता है।

मूली अपने ही पातों भारी है

जो स्वयं अपनी ही विपत्ति में फंसा हो वह दूसरो की विपत्ति कैसे दूर कर सकता है?

मूली और मूली के पत्तों पर नोंन की डली, (पू०)

जब कोई अपनी अत्यंत साधारण वस्तुओं को ही बड़ी करके बताए तब क०।

मूली हाथ पराइयां, जिस चाहे तिस दे, (पं०)

दूसरे के हाथ की बात है, वह चाहे जो करे हम क्या कर सकते है? ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

मेंढकी को भी जुकाम हुआ

जब कोई साधारण आदमी अपने को बहुत महत्व दे तब क०।

मेंह बरसेगा तो बौछारें आ ही जायेंगी

किसी ऐसे मनुष्य का कहना जो यह आशा करता है कि कोई उदार हृदय धनी पुरुष यदि खर्च करेगा, तो उसे भी कुछ-न-कुछ मिल ही जाएगा।

मेंह, लड़का और नौकरी घड़ी-घड़ी नहीं हुआ करती

स्पष्ट।

मेरा था सो तेरा हुआ, बराये खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि०)

दे० तेरा है सो मेरा था . ।

बराये खुदा=ईश्वर के लिए।

मेरा दिल बेदिल हुआ देख जगत की रीत

ऐसे मनुष्य का कहना जो दुनिया के हालचाल देखकर विरक्त हो रहा है।

मेरा बैल मनतिक़ नहीं पढ़ा है

जब कोई आदमी व्यर्थ की हुज्जत करे तब उससे पिंड छुड़ाने के लिए क०।

(कथा है कि किसी तर्कशास्त्री ने एक तेली से पूछा कि तुम लोग अपने बैल के गले में घंटी क्यों बांधते हो? तेली ने जवाब दिया कि जब हम बैल के पास नही भी होते है, तो हमे घंटी के शब्द से मालूम हो जाता है कि बैल खड़ा नही है और काम कर रहा है। इस पर उन्होने कहा कि यदि वह बैल यो ही खड़ा होकर अपना सिर हिलाए और घंटी बजाता रहे, तो तुम्हे कैसे पता चलेगा कि बैल काम करता है। इस पर तेली ने हँसकर ऊपर लिखा जवाब दिया।)

मनतिक़ न्याय। तर्कशास्त्र।

मेरा माथा उसी वक़्त ठनका था, (स्त्रि०)

मुझे तभी आशंका हुई थी (कि कोई विपत्ति आनेवाली है।)

मेरी एक बोली, दो बोली, मेरी नकटी सटासट बोली, (स्त्रि०)

एक लडाकू स्त्री का दूसरी से कहना कि मैंने तो एक गाली दी, दो गालियां दी, लेकिन यह नकटी तो बराबर गाली दिए जा रही है।

मेरी तेरे आगे और तेरी मेरे आगे कहना अच्छा नहीं

चुगलखोरी अच्छा काम नहीं।

मेरी ही बिल्ली और मुझसे ही म्याऊं
मेरा ही खाए और मुझे ही आंख दिखाए?

मेरे गांव का कूड़िया, नाम रक्खा इन्दर जौ
जब कोई मनुष्य अपने निवासस्थान में तो बहुत साधारण हैसियत रखता हो, पर बाहर जाकर लंबी- चौड़ी बातें करे, तब क०।
(कूडिया और इन्द्र जौ एक ही पौधे के दो नाम है।)

मेरे ब्याह, जीजी के ठिक-ठिक, (स्त्रि०)
बिना प्रयोजन दूसरे के सिर में दर्द।
जीजी=जिठानी, अथवा बड़ी बहिन।

मेरे मियां के दो कपड़े, सुथना, नाड़ा बस, (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने अकर्मण्य पति का मजाक उडा रही है कि उसके पास पैजामा और नाडा, बस ये ही दो कपड़े है। वास्तव मे कपडा तो एक ही है। नाड़ा कोई वस्त्र नहीं।

मेरे, मेरे मुंह की-सी; तेरे, तेरे मुंह की-सी करता फिरता है
चापलूस।

मेरे यहां आज गुर्रा है
मेरे यहां आज चूल्हा नही जला।
गुर्रा=उपवास।

मेरे लाल के सौ-सौ यार, धुनिये, जुलाहे और मनिहार, (स्त्रि०)
बुरी संगत में पड़े लड़के को लक्ष्य करके मां कह रही है।
मनिहार=बिसाती।

मेरे लाला की उल्टी रीत, सावन मास चुनावें भीत, (स्त्रि०)
जो काम जब न करना चाहिए तब करना।

मेरे ही से आग लाई, नाम धरा बैसांदुर, (स्त्रि०)
दूसरे के यहां से चीज लाकर उस पर घमंड करना और किये का एहसान न मानना।
बैसांदुर=वैश्वानर, यज्ञ की पवित्र अग्नि का नाम।

मेरे है सो राजा के नहीं, और राजा मेरा मंगता, (स्त्रि०)
जब कोई अपनी चीज पर बहुत घमंड करे या किसी को मांगे से न दे, तब उसके प्रति क०।

मेले में झमेला हुआ ही करता है
मेले-ठेले में कुछ-न-कुछ दंगा-फ़साद हो ही जाता है।

मेव का पूत बारह बरस में बदला लेता है
स्पष्ट।
(मेव कथित हलकी श्रेणी के मुसलमान मछुए होते हैं, जो बड़े प्रतिहिंसक माने जाते हैं।)

मेव बेटी जब दे, जब ओखली भर रुपैया रखवा ले
मेवों के ब्याह में लडकी बेचते हैं।

मेव मरा जब जानिए, जब तीजा हो जाय
मेव बडे तगड़े, हट्टे-कट्टे और हठीले भी होते हैं। इसी से उनके सम्बन्ध में यह कहावत बनी। (कथा है कि किसी मेवाती को एक बनिए का कर्ज़ चुकाना था। जब उसे कर्ज़ अदा करने का कोई और रास्ता नही सूझा, तो उसने अपने मरने की खबर फैला दी। उसके मित्र जब उसे कब्रिस्तान में दफ़नाने के लिए ले गए, तो बनिया भी यह जानने के लिए कि वह सचमुच मरा है या नहीं, उसके पीछे-पीछे गया। उसके सामने ही मेवाती के मित्रों ने उसे दफ़ना दिया। पर ज्यों ही बनिया वहां से वापस आया, उन लोगो ने फिर जाकर उसे बाहर निकाल लिया। दूसरे दिन बनिए ने जब मेवाती को जिन्दा देखा, तब उसने उक्त वाक्य कहा। मुसलमानों में मरने के तीसरे दिन जो संस्कार होता है, वह तीजा कहलाता है।)

मेहनत आराम की कुंजी है
परिश्रम से ही सुख मिलता है।

मेहर करे तो मेह बरसावे
ईश्वर की कृपा से ही सब कुछ होता है।

मेहर गई, मुहब्बत गई, गई नान और पान।
हुक्के से मुंह झुलस के, बिदा किया मेहमान।
कंजूस की मेहमानदारी।
मेहर=कृपा।
नान=रोटी।

मेहर है पर बूझ नहीं
झूठी आवभगत।

मेहरिया के आगे सगुन असगुन
स्त्रियों के लिए शकुन भी अशकुन होता है। उन्हें हर बात में संदेह रहता है।

मेहरी की रोक, जान की शोक
स्त्री का हठ एक मुसीबत है।

मैं और मेरा मानुस, तीसरे का मुंह झुलस, (स्त्रि०)
स्वार्थी स्त्री, जो अपने सिवा किसी और की चिंता नहीं करती।

मैं कब कहूं 'तेरे बेटे को मिरगी आवे है', (स्त्रि०)
जिस बात के लिए वह कह रही है कि मैंने नहीं कहा, उसी का जान-बूझकर वह प्रचार भी कर रही है। अपनी सफ़ाई देनाऔर दूसरे की निंदा भी करते जाना।

मैं करूं तेरी भलाई, तू करे मेरी आंख में सलाई, (स्त्रि०)
भलाई के बदले बुराई करना।

मैं की गर्दन पर छुरी
बहुत 'मैं-मैं' करता है अर्थात अपनापन दिखाता है, इसीलिए वह मारा जाता है। अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

मैं के गले पर छुरी
दे० ऊ०।

मैं क्या तेरी पट्टी तले हूं, (स्त्रि०)
मैं क्या किसी बात में तुझ से कम हूं? अथवा क्या मैं तेरी दबैल हूं?
पट्टी=चारपाई से मतलब है।

मैं तुम्हें चाहूं और तू काले धींग को, (स्त्रि०)
हम जिसे चाहते है, वह दूसरे को चाहती है।

मैं तो तेरी लाल पगिया पै भूली रे, रघुआ
किसी बनठन कर रहनेवाले पर व्यंग्य।

मैंने क्या उसकी खीर खाई है?
क्या मैं उससे दबा हुआ हूं?

मैं भली कि पनेठा?
मैं ही अच्छी हूं।
पनेठा=फेरीवाला।

मैं भली, तू शाबाश, (स्त्रि०)
एक दूसरे की प्रशंसा करना।
(सं०—अहो रूपमहोध्वनि।)

मैं भी हूं पांचवें सवारों में
अपने को अनुचित महत्व देना।
(कथा के लिए दे०—पांचों सवार. . .।)

मैं मरूं तेरे लिये, तू मरे वाके लिये
कोई दूसरे के लिए अपने प्राण दे, पर वह उसकी परवाह न करे, तब क०।

मैं ही पाल करा मुस्तंडा, मोय ही मारे लेके डंडा, (स्त्रि०)
अयोग्य और दुष्ट लड़के से मां का कहना।

मैंदे और शहाब की-सी लोई
आधा चेहरा सफेद, आधा लाल।
शहाब=एक प्रकार का गहरा लाल रंग।
लोई=आटे की गोली।

मैना जो 'मैं ना' कहे, दूध भात नित खाय।
बकरी जो 'मैं मैं' करे, उल्टी खाल खिंचाय।
जो मैना 'मैं ना' कहती है, उसका आदर होता है और जो बकरी 'मै मै' करती है, उसकी खाल खींची जाती है। आशय यह कि विनम्र और मधुरभाषी की इज्ज़त होती है और दंभी मारा जाता है।
मैना=एक पक्षी।
मैं ना=मैं नहीं हूं, मेरा कोई अस्तित्व नही।
मैं मैं=(१) बकरे की बोली (२) मैं हूं, अर्थात अहंकार।

मैल का बैल बनाते हैं
बात का बतंगड़ बनाना।

मैला कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कौन संदेह
हलके तबके के सरकारी कर्मचारी प्रायः अनपढ़ ग्रामीणों और ग़रीबों को सताया करते हैं, उन्हीं पर कही गई है।

मोकों न तोकों, ले चूल्हे में झोंको, (स्त्रि०)
दो आदमी किसी चीज़ के लिए लड़ रहे हैं। उनमें से किसी एक का कहना कि 'अच्छा, यह न मेरे लिए, न तुम्हारे लिए, इसे फेंको चूल्हे में।'

मोजे का घाव, मियां जाने या पांव
जूता कहां काट रहा है, इसे तो मियां जानते हैं या

उनका पैर। जिसका कष्ट वही जानता है।

मोम की नाक

जिधर चाहो मोड़ दो। सीधे आदमी के लिए क०।

मोम हो तो पिघले, कहीं पत्थर भी पिघलता है

कंजूस और कठोर आदमी के लिए व्यंग्य मे क०।

मोर सइयां चिकनियां, पचास बीड़ा खायं,
आगे-पीछे रिनिहा, दीवान बने जायं। (स्त्रि०)

स्त्री का अपने ऐसे पति के संबंध में कहना, जो कर्जदार होकर फिजूलखर्च भी है।

रिनिहा=ऋण देनेवाला, साहूकार।

मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी, (स्त्रि०)

जब कोई नीच आदमी उच्च पद पर पहुंच जाए, अथवा नीच कुल की लड़की बड़े घर में ब्याही जाए, तब क०।

मोरी=नाबदान। चौबारा=चौपाल।

मोरे बाप के उपजल कपास, मोरे लेखे पड़ल तुसार, (स्त्रि०)

गरीब घर मे ब्याही गई लड़की का कहना कि मेरे बाप के यहां तो (मनो) कपास उपजता है और मेरे भाग्य मे ठंड भोगना बदा है।

मौके का घूसा, तलवार से बढ़कर

समय पर किए गए काम का नतीजा बहुत अच्छा निकलता है।

मौत और गाहक का एतबार नहीं, जाने किस वक्त आ जाय, (व्य०)

स्पष्ट।

मौत को दारू नहीं

असाध्य रोगी के लिए क०।

मौत के आगे किसी का बस नहीं चलता

कोई मर जाए, तब उसकी मातमपुर्सी के समय क०।

मौत के आगे सब हारे हैं

दे० ऊ०।

मौत भली कि जान कंदन

असह्य पीड़ा से तो मौत अच्छी।

मौत सिर पर खेलती है

मौत आ गई है।

मौला यार, तो बेड़ा पार, (मु०)

ईश्वर की कृपा हो, तो सब काम हो जाता है।

मौला हाथ बढ़ाइयां, जिस चाहें तिस दें, (मु०, प०)

ईश्वर की जिस पर कृपा होती है, उसी को देता है।

म्याऊं को कौन पकड़ेगा ?

असली जोखिम का काम कौन करेगा ?

(कथा है कि एक बार चूहों ने सलाह की कि बिल्ली हमे जब मौका पाती है। तब पकड़कर खा लेती है, इसलिए उसके गले मे घंटा बाध देना चाहिए, जिससे जब वह आए तो घटे की आवाज़ सुनकर हम लोग भाग जाया करे। यह बात सब को पसद आई और इस पर विचार किया गया कि घंटा किस प्रकार बाधा जाए। किसी ने कहा मैं उसका पैर पकड़ लूगा, किसी ने कहा मैं पूंछ पकड़ लूगा, किसी ने कान पकड़ लेने को कहा; इसी प्रकार सब अपनी-अपनी बहादुरी बताने लगे। तब एक बूढ़े चूहे ने कहा—यह तो सब ठीक, पर म्याऊं को कौन पकड़ेगा ? इस बात को सुनते ही सब चूहे डर के मारे भाग गए।

इस कहावत का शुद्ध रूप 'म्याऊं का ठौर कौन पकड़ेगा', इस प्रकार है।)

य

यक मन इल्मरा दहमन अक्ल मी बायद, (फ़ा०)

एक मन ज्ञान के लिए दस मन सहज बुद्धि की आवश्यकता होती है।

बुद्धि के बिना ज्ञान व्यर्थ है।

यक न शुद, दो शुद; (फ़ा०)

अभी तो एक थे अब दो हो गए।

जब एक के साथ दूसरा आदमी बीच में बोल उठे, अथवा उसका सहयोग दे, तब क०।

यक़ीन बड़ा रहबर है

विश्वास सच्चा मार्गदर्शक है।

(सं०—विश्वास फलदायकः।)

यह आपके फ़रमाने की बात है
आप जो कुछ कहते हैं, वह ठीक है। मैं क्या कहूं?
यह किसी का भी सगा नहीं
धोखेबाज आदमी।
यह कुत्ता नहीं मानता
छिछोरे के लिए क०।
यह कै फ़ाक़ों में सीखे थे
आपने जो यह लाजवाब बात कही, वह कितने उपवास करने के बाद सीखी थी?
जब कोई लेखक अपनी कही हुई कोई ऐसी सुनाए, जिसका उसे बड़ा गर्व हो, तब व्यंग्य में क०।
यह कौवा फंसने की चाल है
जब कोई गहरी चालाकी करे, तब क०।
(कौवों के बारे में प्रसिद्ध है कि वे मुश्किल से जाल में फंसते है।)
यह गंगा किसकी खुदाई है?
जब कोई अपने माल-मत्ता का बहुत घमंड करे, तब उससे ताने में क०। और दो अर्थों मे कहावत का प्रयोग होता है: (१) उसके पास जो कुछ है, वह ईश्वर का दिया हुआ है। अथवा (२) उस सबके लिए वह वक्ता के निकट ऋणी है।
यह घोड़ा किसका? जिसका मैं नौकर; तू नौकर किसका? जिसका यह घोड़ा
किसी बात का सीधा उत्तर न देना; घुमा-फिराकर बात कहना।
यह जवानी मुसैं न भाव, सींग डलाव हँसी आव
कोई मनुष्य किसी जानवर को सीग हिलाते देखकर हँसने लगा, तब किसी दूसरे ने उससे उक्त बात कही। व्यर्थ दात निपोरने पर क०।
यह तीन काने, और यह पौ-बारह
चौसर खेलते समय दो आदमियो में से एक के तीन काने (अर्थात एक-एक करके तीन) पड़े, तब दूसरे ने पांसे फेककर उक्त बात कही कि लो, ये मेरे पौ बारह। अर्थात मै ऐसा खिलाड़ी नही, जो मेरे तीन काने पड़ें।
(चौसर के खेल में तीन काने पड़ना बहुत व्यर्थ और असुविधाजनक माना जाता है, जब कि पौ बारह पड़ना बहुत अच्छा।)
यह तू शिक्षा साब की, निहचे चित में ला।
भेद न अपने जीउ का, औरन को बतला।
स्पष्ट।
निहचे=निश्चित रूप से।
जीउ=हृदय।
यह तो अच्छे थे, ऊपरवालों ने बिगाड़ दिया
कुसंग में पड़कर कोई आदमी बिगड़ गया। उसका कोई मित्र उसका पक्ष लेकर उक्त बात कह रहा है।
यह दाढ़ी धोखे की टट्टी है
दाढ़ी देखकर इसे भला आदमी मत समझो। धूर्त के लिए क०।
यह दिन सब के वास्ते हैं
मृत्यु के दिन से अभि०।
यह दीदे नदीदे हैं दीदार के
ये आंखें दर्शन की प्यासी हैं।
नदीदे=लोलुप।
दीदार=दर्शन।
यह दुनिया दिन चार है, संग न तेरे जाय।
साईं का रख आसरा, अरु वासेहि नेह लगा।
यह संसार नश्वर है, किसी के साथ नही जाएगा; ईश्वर पर भरोसा करके उससे प्रीति करनी चाहिए।
यह पट्टी नहीं पढ़े
हम तुम्हारी बातो में नहीं आने के। अथवा हम ऐसा अनुचित काम नही करने के।
यह बचन मेरा ठीक है, सोच इसे तू जान।
मरे बिना छूटे नहीं, जीसे भोंड़ी बान।
स्पष्ट।
भोंड़ी बान=बुरी आदत।
यह बड़ मिट्ठा, यह बड़ खट्टा
मन की अस्थिरता।
यह बात, वह बात, टका धर मोरे हाथ
बार-बार अपने ही मतलब की बात करनेवाले के लिए क०।

(ब्राह्मण पूजा करते समय बात-बात मे दक्षिणा मांगते हैं। कहावत में उसी ओर सकेत है।)

यह बात शराफ़त से बईद है

यह बात या काम शिष्टता से बाहर है; मतलब, ऐसा मत करो।

यह बातें मत कीजियो, कभी न तू अय यार।
जिन बातों में रूस जायं, साईं और संसार।

स्पष्ट।

रूस जायं=अप्रसन्न हो जाए।

यह बिस की गांठ है

बड़ा फितरती है।

यह बेल मढ़े चढ़ती नजर नहीं आती

जब कोई काम पूरा होते न दिखाई दे, अथवा उसकी सफलता मे सदेह हो।

मढे=मडप पर।

यह भी अपने वक़्त के हातिमताई हैं

बडे परोपकारी है। (हातिम अरब के एक बहुत प्रसिद्ध दाता और परोपकारी हो गये है।)

यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुंह में कै दांत हैं ?

किसी ने मुझे टोका तक नही। राज्य के ऐसे सुप्रबध के लिए, जहा जान-माल का खतरा न हो।

यह भी दाम गुलामों खाये, यह भी बैंगन काट पकाये

सब तरह से बरबाद होना।

यह भी मेरी बात तू, जिऊ बिच धर ले।
गज्जा दे गजवाल को, पर जिऊ भेद मत दे।

धन भले ही दे दे, पर मन का भेद किसी को न बताए।

गज्जा=गज। हाथी।

गजवाल को=हाथीवाले को। महावत को।

यह भी शिक्षा नाथ जी, कह गये ठीकम-ठीक।
खोवें आदर मान को, दगा, लोभ अरु भीक।

स्पष्ट।

यह मुंह और गाजरें ?

योग्यता से अधिक पाने की इच्छा रखना। (गाजर यद्यपि एक सस्ती वस्तु है, पर यहां व्यंग्य में ही कहा गया है।)

यह मुंह और मसूर की दाल ?

दे० ऊ०।

यह मुंह पान जोगा ?

जब किसी ऐसे मनुष्य को पान दिया जा रहा हो, जिसने किसी की निदा की हो, तब उसके प्रति तिरस्कार दिखाते हुए क०।

दे० ऊपर की दोनो कहावते भी।

यह मेरी शिक्षा निपट है आछी, रोटी भूल न खा अधकाची

कच्ची रोटी नही खानी चाहिए।

यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, पर नारी को दूर से ताहो

पर स्त्री से दूर रहना चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान प्यारे, सौदा कभी न बेच उधारे, (व्य०)

सौदा कभी उधार न दे।

यह मेरी शिक्षा मान रे बेला, कभी बाट मत चाल अकेला

अकेले दूर की यात्रा नही करनी चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान रे बेले, वासूं मत मिल जुआ जो खेले

जुआरी की सगत न करे।

यह मेरी सिख मान रे बीरा, कपटी संग न राखो सीरा

कपटी के साथ कोई साझा या व्यवहार न करे।

यह मेरी सिख मान रे मीता, भीड़ समें मत रह हत रीता

भीड मे खाली हाथ न रहे, अर्थात कुछ लाठी वगैरह साथ रक्खे।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर संग न बैठ अकेली (स्त्रि०)

स्त्री को पराए पुरुष के साथ अकेला नही बैठना चाहिए।

यह वह गुड़ नहीं जो चिउंटी खाये

बहुत कजूस या सतर्क आदमी की चीज, जिसे हर कोई आसानी से नही ले सकता।

यह वह फ़क़ीर नहीं, जो खा कर दुआ दे

ऐसा व्यक्ति, जो एहसान न माने।

यहां अच्छों के पर जलते हैं
यहां फ़रिश्ते भी घबराते हैं। कड़े अफ़सर के बारे में क०। कठिन काम के लिए भी क०।
यहां उल्टी गंगा बहती है
यहां सब काम उल्टे होते हैं।
यहां के बाबा आदम ही निराले है
जहा सनकीपन से काम लिया जा रहा हो, वहा क०।
यहां क्या तेरी नाल गड़ी है ?
यहां क्या तेरी बपौती है ? जब कोई मनुष्य किसी जगह को न छोड़ना चाहे, तब क०।
(हिन्दुओं मे प्रथा है कि बच्चे के पैदा होने पर उसकी नाल वही सौरी घर में गाड़ देते है। कहावत मे उसी की ओर सकेत हैं।)
यहां जरूर कुछ दाल में काला है
कुछ गड़बड़ है।
यहां तुम्हारी टिक्की नहीं लगेगी
यहां तुम्हारा काम नही बनने का, अथवा हम तुम्हारी बातो मे नही आने के।
यहां तुम्हारी दाल नहीं गलेगी
दे० ऊ०।
यहां तो हम भी हैरान हैं
फिर तुम्हें क्या सलाह दें ?
यहां परिन्दा पर नहीं मार सकता
कोई पास नहीं फटक सकता।
यहां फ़रिश्तों के पर जलते है, (मु०)
दे०—यहां अच्छों के पर...।
यहां फिक्र मैशत है वहां दगदगे हश्र,
आसूदगी हरफेस्त न यहां है, न वहां है।
इस लोक मे खाने की चिंता है, और उस लोक मे ईश्वरीय न्याय का डर, मनुष्य को सुख, न यहा है न वहां ?
यहां सब कान पकड़ते है
(१) यहां कोई उस्ताद नहीं, सब चेले बनकर रहते है।
(२) यहा काम करने मे सब घबराते है।
यहां हजरत जिब्राईल के भी पर जलते हैं, (मु०)
यहां वे भी घबराते हैं।
दे०—यहां अच्छो के पर...।
(हजरत जिब्राईल एक फ़रिश्ते हैं।)
यही गौर, यही मैदान
अर्थात घटना यहीं घटित हुई।
यही गौना, बहुरि नहिं औना
मृत्यु पर।
यही भरोसा ठीक है कि दाता दे तो लूं।
औरत का कर आसरा, जी तरसावे क्यूं।
ईश्वर के देने ही मे काम चलता है।
यही भला है मीत जी, झूठ कथे ना बोल।
रांग न सोना हो सके, फिरत सुनहरी झोल।
झूठ कभी नही बोलना चाहिए, (क्योंकि) रागे पर सोने का मुलम्मा करने से सोना नही होता।
यही मुंह, यही मसाला
आप इसी मुंह से यही मसाला खाएगे ? तात्पर्य यह कि आप पहले अपने को इस योग्य बनाएं तो !
यही लच्छन मार खाने के है
प्रायः बच्चों से कहते हैं, जब वे बडो का कहना नही मानते।
या इधर हो, या उधर हो
बहुत आगा-पीछा सोचना ठीक नही। जल्दी निश्चय करो।
या करे दर्दमंद, या करे गर्जमंद
या तो दुखिया खुशामद करता है या गरजवाला।
या किसी को कर रहे, या किसी का हो रहे
दुनिया में दो तरह से ही काम चलता है, या तो किसी को अपना एहसानमद बना ले, या किसी का एहसानमद होकर रहे।
या खाय घोड़ा, या खाय रोड़ा
घोड़े के रखने और मकान की मरम्मत में नित्य खर्च होता रहता है, इसीलिए क०।
रोडा = ईंट-चूना।
या खुदा खैर कर, खैर का बेड़ा पार कर
हे ईश्वर, हमारी रक्षा कर, और भलो का भला कर। फ़कीर भीख मागते समय क०।
या खुदा खैर, बचा हाथ-पैर
स्पष्ट।

या खुदा तू दे, न मैं दूं

कंजूस को क०।

या तो भर मांग सेंदुर, या निपट ही रांड़

किसी चीज के दिए जाने पर उसे अधिक मांगना, या फिर उसके बिना ही रहना। जो मिल रहा है, उसमें संतोष न करना।

(हिन्दुओं में सेंदुर सौभाग्य का चिह्न माना जाता है, और ब्याह के समय कन्या की मांग सेंदुर से भरने की प्रथा है।)

भर मांग सेंदुर=मांग में खूब सेंदुर।

याद करी भगवान की, तो हो गये भगत कबीर।
झूठे वाकी याद बिन, सब हैं पीर फ़कीर।

स्पष्ट।

(कबीर १५ वीं शताब्दी में एक बड़े संत और कवि हो गए हैं।)

याद भली भगवान की और भली ना कोय।
राजा की कर चाकरी, जो परजा ताबे होय।

ईश्वर का ध्यान सबसे अच्छा है। जो राजा की सेवा करता है, सब उसके वश में रहते हैं।

याद रक्खो इस बात को, जो है तुम में ज्ञान।
साईं जाको हो गया, वाका सगर जहान।

स्पष्ट।

साईं=ईश्वर।

सगर=सकल। समस्त।

या बसे गूजर, या रहे ऊजर

यह कहा० निम्नलिखित किंवदंती पर आधारित है—

(कहा जाता है कि दिल्ली का बादशाह मुहम्मद तुग़लक (१३२४-१३५१) जब दिल्ली के नजदीक तुग़लकाबाद का क़िला बनवा रहा था, तो उसी के पास ही प्रसिद्ध सूफ़ी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया एक कुआं खुदवा रहा थे। किले के काम में इससे बड़ी बाधा पड़ने लगी, क्योंकि सभी मजदूर और राज निजामुद्दीन साहब के कुएं पर ही काम करने चले जाते थे। बादशाह को अब यह बात मालूम हुई, तो उसने इस बात का कड़ा हुक्म दिया कि एक मजदूर भी कुएं पर काम करने न जाए। बेचारे मजदूर तब दिन भर बादशाह के यहां और रात को संत साहब के यहां काम करने लगे। एक दिन बादशाह जब क़िले का काम देखने आया, तो उसने बहुत से मजदूरों को अपने काम पर ऊंघते पाया। पूरा क़िस्सा मालूम होने पर बादशाह ने तेल बेचनेवालों को निजामुद्दीन साहब के हाथ तेल बेचने से मना कर दिया। बादशाह ने सोचा था कि ऐसा करने से उनका रात का काम बंद हो जाएगा। दैव योग से उसी दिन कुएं में पानी का एक सोता निकला। तब निजामुद्दीन साहब ने मजदूरों से कहा कि तुम लोग नित्य प्रति रात को काम करने आया करो। इसी कुएं का पानी तेल का काम करेगा। जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ। बादशाह को जब यह बात मालूम हुई तो उसने उन्हें एक जादूगर समझा और उनका सिर मांगा। दूसरे दिन जब निजामुद्दीन साहब को इसका पता चला, तो उन्होंने गुस्से में आकर बादशाह को शाप दिया कि तेरे ऊपर वज्रपात हो और उस क़िले में गूजरों का वास हो या ख़ाली ही पड़ा रहे। उसी समय आसमान में काली घनघोर घटाएं घिर आईं और क़िले पर बिजली टूटी, जिससे तुग़लक की मृत्यु हो गई। अब भी यह किला ध्वंसावस्था में पड़ा है, और इसके एक भाग में बहुत दिनों तक गूजर लोग रहते रहे। इसी से कहावत चली।)

या बेईमानी, तेरा ही आसरा

जब कोई बेईमानी करे तब क०।

या बेहयाई (मु०, स्त्रि०)

बेशर्म से क०।

या भैंसा भैंसों में, या कसाई के खूंटे पर

भैंसे को या तो भैंसों के झुंड में देखा जा सकता है, और यदि वह कसाई के हाथ बेच दिया गया है, तो उसके खूंटे से बंधा मिलेगा।

(कुसंग में पड़े ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसके उठने-बैठने के कुछ निश्चित अड्डे बन गए हों।)

या मारे साझे का काम, या मारे भादों का घाम

साझे का काम और भादों की धूप, ये दोनों कष्टदायक होते हैं।

यारे शातिर हूं न बारे ख़ातिर, (फ़ा०)
मित्र वही जो सुख पहुंचाए, न कि दुख।
यार करूं, प्यार करूं? चूतड़ तले अंगार धरूं, जल जाय तो क्या करूं?
कपटी मित्र, जो ऊपर से प्रेम दिखाए, पर भीतर से हानि पहुंचाने की चेष्टा करता रहे।
यार का गुस्सा भतार के ऊपर
दुराचारिणी स्त्री के लिए क०। किसी वजह से वह अपने प्रेमी से नाराज़ हो गई है, तो उसका गुस्सा अपने पति पर उतारती है।
यार का दिल यार रक्खे तो यार का भी रखिये।
यार के घर खीर पक्के तो तनिक सी चखिये।
यार के घर आग लगी तो पड़े पड़े तकिये।
स्वार्थी मित्र।
यार की यारी से काम, या यार के फ़ेलों से
अपने मतलब से मतलब।
यार को करूं प्यार, ख़सम को करूं भसम, लड़के को करूं चटनी
बुरी औरत के लिए क०।
यार ज़िन्दा, सोहबत बाक़ी
जब तक यार ज़िंदा है, तब तक उससे मिलने की उम्मीद भी रहती है।
यार डोम ने किया जुलाहा, तन ढाकन को कपड़ा पाया
डोम ने जुलाहे को अपना मित्र बनाया, तो पहिनने को कपड़ा मिल गया।
यार डोम ने किया रंघड़िया और न देखा वैसा हड़िया
स्पष्ट।
हड़िया=चोर।
(रांघड़ एक छोटी जाति के राजपूत होते हैं, जो चोरी के लिए बदनाम हैं।)
यार डोम ने किया सिपाही, बात-बात में करे लड़ाई
स्पष्ट।
यार डोम ने कीना कंजर, हर लिया पला पलाया कूकुर
स्पष्ट।
यार डोम ने कीना गूजर, बुरा-बुरा कर घर कर दिया ऊजड़
स्पष्ट।
यार डोम ने कीना नाई, कौड़ी दे ना बाल मुड़ाई
स्पष्ट।
यार डोम ने जाट बनाया, सीत, दूध इन मुक्ता पाया
स्पष्ट
सीत=मठा।
मुक्ता=बहुत-सा।
यार डोम ने बनिया कीना, दस ले कर्ज सैकड़ा दीना
डोम ने बनिए को अपना मित्र बनाया, तो दस रुपए उधार लेकर सौ दिए।
(ऊपर की इन आठों कहावतों का तात्पर्य यह है कि जैसे का संग करोगे, वैसा ही फल मिलेगा।)
या रब मेरी आबरू, वा दिन रखियो सोय।
जा दिन सब संसार का, निर्मल लेखा होय।
स्पष्ट।
रब=ईश्वर।
यार वही, जो भीड़ में काम आवे
स्पष्ट।
भीड़=विपत्ति।
यार वही है पक्का, जिसने मन यार का रक्खा
सच्चा मित्र वही है, जो मित्र के मन को प्रसन्न रखे।
यारां चोरी न पीरां दग़ाबाज़ी, (मु०)
मित्रों से मन की बात छिपाना और संतों को ठगना ठीक नहीं।
या रिन्द रिन्दे, या फ़तहचंदे
या तो फ़क़ीर की तरह ग़रीब ही बने या फिर खूब अमीर।
यारी करें सो बावरे और कर के छोड़ें कूर।
या तो ओर निबाहिये, या फिर रहिये दूर।
जो प्रेम करते हैं, वे पागल हैं; जो करके छोड़ देते हैं वे मूर्ख हैं या तो अन्त तक अपना कर्त्तव्य पूरा करे या फिर उस रास्ते से दूर ही रहे।
या संसार में करम प्रधान
कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है; उसे वैसा फल

मिलता है।

या सुख नींद सो, या माला जपो

एक समय में एक काम, दो काम एक साथ नही किए जा सकते।

या हंसा मोती चुगें या लंघन कर जायें

स्वाभिमानी पुरुष मान के साथ ही जीवन व्यतीत करते हैं।

कवि-कल्पना है कि हंस केवल मोती ही चुगते है।

लंघन=उपवास।

यूं मत जाने बावरे, कि पाप न पूछे कोय।
साईं के दरबार में, इक दिन लेखा होय।

स्पष्ट। लेखा– हिसाब-किताब।

यूं मत जी मे जान तू कि मनुख बड़ा जग बीच।
याद बिना करतार की, है नीचन का नीच।

स्पष्ट।

यूं मत मान गुमान कर कि मैं हूं शेर जवान।
तुझ से इस संसार में लाखों हैं बलवान।

स्पष्ट।

मान-गुमान– अभिमान।

र

रंग की खुशी, मन का सौदा

मनमौजी आदमी।

रंग कौवे सा और मेहताब नाम

नाम तो बड़ा अच्छा, पर रंगरूप बिल्कुल उसके विपरीत।

मेहताब=चाद।

रंग रूप देख कर न भूलिये

ऊपरी तड़क-भड़क से धोखे मे नही आना चाहिए।

रंगरेज होते, तो अपनी दाढ़ी रंगते

मन की एक मौज।

(रंगरेज के काम को देखकर कोई खुश हो गया और वह मजे में आकर कहता है।)

रंडियों की खरची और वकीलों का खरचा पेशगी ही दिया जाता है

क्योंकि बाद में फिर कोई जल्दी नही देता।

रंडी का जोबन रकाबी में

(१) जो पैसा दे, वह उसका उपयोग कर सकता है।

(२) बढिया चीजे खाने से रडी का यौवन बना रहता है।

रडी किसकी जोरू और भडुवे किसके साले

ये अपने मतलब के होते हैं।

रडी की कमाई या खाय दाढ़ी या खाय गाड़ी

रडी का पैसा गायको को खिलाने और गाडी-भाड़ा देने मे बहुत खर्च होता है।

रंडी की गाली और भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती

रंडी की गालियो का कोई बरा नही मानता।

रडी के घर मांडे और आशकों के घर कड़ाके

रडी जब बढिया माल-टाल उडाएगी, तो उसके चाहने-वाले तो भूखो मरेगे ही, क्योकि उनका ही पैसा उसके यहा जाता है।

माडे– एक प्रकार की बहुत पतली बढ़िया रोटी।

रंडी के नाक न होती तो गू खाती फिरती

इसके दो अर्थ हैं—(१) रंडी को अगर नाक से बदबू न आती, तो वह गदी-से-गदी चीज खा लेती।

(२) उसे अगर अपनी नाक कटने (अर्थात बदनामी) का डर न होता, तो वह गदे-से-गदा काम करने मे भी न हिचकती।

रंडी के सैकड़ों यार

स्पष्ट।

'रंडी तेरा यार मर गया' कहा, 'कौन सी गली का?'

रडी के सैकडो यार होते हैं। कोई मर जाए, उसे क्या परवाह?

रंडी पैसे की आशना है

रंडी को पैसे से मतलब।

रंडी फ़कीर कर दे दम मे शाहेजमां को।
बदफ़न करे पलक में इंसान नेकफ़न को।

स्पष्ट।

शाहेजमां=दुनिया का बादशाह।

बदफ़न=दुर्गुणी।

रंडी मांगे रुपया 'ले ले मेरी मैया'।
फक्कड़ मांगे पैसा 'चल बे साले कैसा।'

रंडी को लोग खुशी से पैसा दे देते है, गरीब को नही देते।

रंडी मोम की नाक होती है

पैसा देकर चाहे जिधर मोड दो।

रंडुआ गया सगाई को, आपको लाभ या भाई को

स्त्री की उसे भी जरूरत है, इसलिए वह पहले अपना मतलब पूरा करेगा या दूसरे का? उसे भेजा ही नही जाना चाहिए था।

रकत ले गैलों सौतिन के घर (पू०, स्त्रि०)

किसी स्त्री से किसी ने पूछा—कहा गई थी? तो वह खीझकर जवाब देती है—रक्त लेने गई थी सौत के घर। मन का तीव्र क्षोभ प्रकट करने के लिए क०।

रक्खा तो चश्मों से, उड़ा दिया तो पश्मों से

(१) नौकर का कहना। मुझे रखते हैं तो अच्छी बात है, नही रखते तो उसकी परवाह नही।

(२) किसी को पहले तो बहुत आदर से रखना, बाद मे अनादर करके भगा देना, यह अर्थ भी कहावत का हो सकता है।

रक्खे तो पीत नहीं तो पलीत

निबाहा जा सके तो प्रेम, नही तो एक फजीहत है।

रक्खो इस मकूले पै दारो मदार,
कि नौ नगद अच्छे न तेरह उधार (व्य०)

कम मुनाफ़े पर नक़द सौदा देना अच्छा, अधिक मुनाफे पर भी उधार देना अच्छा नही।

रख पछतावा कुछ नहीं, बेच पछतावा अच्छा (व्य०)

माल बेचकर पछताना अच्छा, रखकर पछताना अच्छा नही।

रख पत, रखा पत

दूसरे की इज्जत रखो, तो तुम्हारी भी इज्जत रहेगी।

रज़ा ब क़ज़ा

ईश्वर का किया मंजूर है।

रजील की दो, न अशराफ़ की सौ

नीच की दो गालियां भी भले आदमी की सौ गालियों के बराबर हैं।

रत्तियों जोड़े, तोलों खोवे; वाको लाभ कहां से होवे

थोडा कमाए और बहुत खर्च करे, तो उसके पास कुछ बच कैसे सकता है?

रत्तो दान न धो को दिया, देखो रा समधन का हिया (स्त्रि०)

शिकायत कर रही है कि दहेज मे कुछ नही दिया। समधिन बडी कजूस है।

रत्ती दे कर मांगे तोला, वाको कौन बतावे भोला

स्पष्ट।

रत्ती भर की तीन चपातीं, खाने बैठे सात संगाती (स्त्रि०)

कंजूस पर क०।

रत्ती भर धन साथ न जावे, जब तू मर कर जीव गवावे

स्पष्ट।

रत्ती भर सगाई, न गाड़ी भर आशनाई

(१) न किसी से हमे थोडा भी रिश्ता जोडना है, और न बहुत सी आशनाई, अर्थात हमे किसी से कुछ मतलब नही।

(२) मित्रता की अपेक्षा साधारण रिश्तेदारी अच्छी चीज है, यह अर्थ भी।

रन फ़तह हो गया

लड़ाई जीत गए। काम बन गया।

रपट परे की 'हर गंगा'

कोई आदमी गगा के किनारे खडा था। नहाना नही चाहता था। पर पैर फिसला और पानी मे गिर पडा, तो लोगो को यह बताने के लिए वह स्नान करने ही आया था, बोल उठा 'हर गगा'। अनायास कोई अच्छा काम बन जाना।

रमजान के नमाजी मुहर्रम के सिपाही (मु०)

बाकी साल भर कुछ न करना। धूर्त्त या पाखडी के लिए क०।

(रमजान के महीने मे मुसलमान रोजे रखते हैं। मुहर्रम मुसलमानी वर्ष का पहला महीना है, जिसमें

हसन साहब शहीद हुए थे। उनकी यादगार में इस महीने में ताजिए निकलते हैं, जिनके साथ हसन की फौज के सिपाही बनकर लोग चलते हैं। यहां उन्हीं सिपाहियों से मतलब है।)

रले-मिले पंचो रहिये, जान जाये पर सच न कहिये

फ़ितरती और झूठ बोलनेवाले पंचों पर व्यंग्य।

रस दिये मरे तो विष क्यों दीजे

सहज में काम बने, तो कठोरता का आश्रय क्यों ले।

रस मारे रसायन हो

(१) पारे को भस्म करने से चांदी व सोना बनता है।

(२) इच्छाओं का दमन करने से मनुष्य को सिद्धि मिलती है।

रस में विष

रंग में भंग। आनंद में विघ्न।

रसोई और रसायन बराबर

दोनों का बनाना मुश्किल है। सबको नहीं आता।

रस्सी का सांप बन गया

छोटी-सी बात व्यर्थ बहुत बढ़ गई।

रस्सी जल गई पर बल नहीं गये

बर्बाद हो जाने पर भी अकड़ नहीं गई।

रस्सों जकड़े अब नहीं ठंरते

(१) संसार के बंधनों में जकड़े रहने पर भी अब ठहरना मुश्किल है, मौत नजदीक है।

(२) यद्यपि हम बंधनों में जकड़े हैं, पर अब हमसे नहीं रहा जाता। जो करना चाहते हैं वह करेंगे।

रहना भला विदेस का, जहां न अपना कोई

किसी वीतराग का कहना।

रहब भुखले, चलब टिहुकले, (पू०)

भले ही भूखे रहें पर छाती तानकर चलेंगे।

रहमान को रहमान, शैतान को शैतान

(१) अच्छे के लिए अच्छा और बुरे के लिए बुरा।

(२) अच्छे को अच्छा ही मिलता है और बुरे को बुरा।

रहमान जोड़े पली-पली, शैतान लुढ़कावे कुप्पे

(१) घर में स्त्री जब कोई चीज इकट्ठी करके रखे और कुत्ता-बिल्ली खा जाएं तब क०।

(२) घर का एक आदमी संचय करे और दूसरा उड़ाए तब भी क०।

रहम दिली बड़ाई की निशानी है

स्पष्ट।

रह रह बेंगना होने दे बिहान, तुझ पर तानेंगे तीर कमान

झूठी डींग मारने वाले से क०।

बेंगना=मेढक।

बिहान=सबेरा।

रहा करीमना तऊ घर गया, गया करीमना तऊ घर गया, (स्त्रि०)

स्त्री का (शायद) अपने निखट्टू पति के प्रति कहना कि करीम रहा, तो भी घर नष्ट होगा, न रहा तो भी नष्ट होगा।

जब किसी आदमी के बिना काम न चले और उसके रहने से हानि भी हो तब क०।

रही बात थोड़ी, जीन, लगाम, घोड़ी

किसी को रास्ते में एक चाबुक पड़ी मिल गई, तब उसने कहा कि बस अब क्या है, जीन, लगाम और घोड़ी खरीदना ही बाकी रहा। बहुत थोड़े काम से ही जब आदमी यह समझ ले कि बस अब तो पूरा काम बन गया तब क०।

रहे अंत मोची के मोची

फिर जैसे को तैसा हो जाना। बहुत कष्ट उठाने के बाद भी हालत न सुधरना।

रहे के भुसहुल, नाव लेबे के धरोहर, (पू०)

रहते हैं झोपड़ी में और नाम है धरोहर।

झूठी शान बघारने पर क० धरोहर से मतलब है जो दूसरों का माल गिरवी रखे अर्थात साहूकार।

रहे झोंपड़ी में, ख्वाब देखे महलों का

उच्चाकांक्षा रखना।

रहे तो टेक से, जाय तो जड़ बेख से

(१) इज्जत से रहे, या फिर बिल्कुल खत्म हो जाए।

(२) जिद्दी के लिए भी कह सकते हैं कि मर भले

ही जाए, पर अपनी हठ को पूरा करके रहेगा।
जड़ बेख से=जड़ वृक्ष से।

रहे नाम अल्लाह का
ईश्वर ही रहता है, नित्य है, और सब नष्ट हो जाता है।

रहे महमूब के, अंडे देवे मसूब के
किसी का खाना और काम किसी का करना।

रहो री कुतिया, मेरी आस; मैं आऊं कातिक मास, (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने निकम्मे और झूठा दिलासा देनेवाले पति से कह रही है।

रांघड़, गूजर दो, कुत्ता बिल्ली दो; ये चारों न हों, तो खुले किवाड़ों सो
स्पष्ट।
(रांघड और गूजर चोरी के लिए बदनाम हैं। कुत्ता और बिल्ली तो रात मे तग करते ही है।)

रांड़ और खांड़ का जोबन रात को
स्पष्ट।
खाड़=मिठाई।

रांड़ का सांड़, छिनाल का छिनरा
विधवा का लडका आवारा होता है, और छिनाल का शोहदा।

रांड़ का सांड़, सौदागर का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा
गरीब विधवा का लडका और सौदागर के पास से खरीदा गया घोड़ा, ये अच्छे नही निकलते।

रांड़ की गांठ में माल का टूक
(१) विधवा के पास चर्खे की माल का टुकडा ही रहता है। अर्थात वह बहुत असहाय और गरीब होती है।
(२) किसी विधवा को कही से बहुत-सी सपत्ति मिल गई। तब उस पर भी कह सकते हैं कि वह अब मौज से रहेगी।

रांड़ के आगे गाली क्या? (स्त्रि०)
सधवा के लिए 'राड़' से बढ़कर गाली और क्या हो सकती है?

रांड़ के चरखे की तरह चला ही जाता है
जो काम कभी रुके ही नही, अथवा जो आदमी हमेशा चलता-फिरता ही रहे उसे क०।

रांड़ को बेटी का बल, रंडुए को रुपये का बल
स्पष्ट।
(रांड़ को बेटी का बल इसलिए है कि रंडुए के साथ उसका विवाह करके अधिक-से-अधिक पैसा ले सकती है, रंडुए को इस बात का बल है कि वह अधिक-से-अधिक पैसा देकर कही भी शादी कर सकता है।)

रांड़ भइल के सुख कौन जो निश्चित सूतल ना, (पू० स्त्रि०)
राड़ होने का सुख ही क्या अगर आराम से नही सो पाए?

रांड़, भांड़ और सांड़ बिगड़े बुरे
ये तीनो ही अगर नाराज हो जाए तो विकट रूप धारण कर लेते हैं।

रांड़ मुई, घर संपत नासी, मूंड़ मुड़ाये भये संन्यासी
स्त्री मर गई, घर की संपत्ति भी नष्ट हो गई, तो सिर मुडाकर सन्यासी बन गए।
(जो किसी धार्मिक भावना के वश होकर साधु नही बनते, उन पर कटाक्ष।)

रांड़ रोवे, कुंआरी रोवे, साथ लगी सत खसमी रोवे
राड का रोना ठीक है, पर उसके साथ यदि कुआरी और सतखसमी भी रोवे, तो यह हँसी की बात है। झूठे रोने पर क०।

रांड़, सांड़, सीढ़ी, संन्यासी, इनसे बचे तो सेवे काशी
स्पष्ट।
(काशी की गलियो मे सीढिया बहुत बनी हैं, सांड़ भी बहुत घूमते रहते है और संन्यासियों तथा संन्यासिनियो की संख्या तो अधिक है ही।)

रांड़ से बढ़ कर कोसना नहीं
सधवा के लिए 'राड़ हो जा' इससे बढ़कर कोई शाप नही हो सकता।

रांड़ तो बहुतेरी रहें, जो रंडुए रहने दें
विधवाएं तो सच्चरित्र बनी रहना चाहती हैं, पर जब रंडुए रहने दें तब तो।

(दूसरों की इच्छा की खातिर जब विवश होकर कोई काम करना पड़े तब क० । प्रायः हँसी में ही क०।)

रांधो न सिझाओ, मुझे बैठ खिलाओ

स्पष्ट।

स्त्री का अपने लड़के या पति से कहना जो खाने के लिए जल्दी मचा रहा है।

सिझाना=पकाना ।

राई को पर्वत करे, पर्वत राई मांह

ईश्वर की लीला के लिए क० ।

राई भर नाता, न गाड़ी भर आशनाई

दे० रत्ती भर नाता...।

राई भर सगाई, न पेटहा भर प्रीत

दे० रत्ती भर नाता...।

पेटहा भर=पेट भर अथवा सदूक भर।

राखन हार भये भुज चार तो क्या बिगड़े भुज दो के बिगाड़े

ईश्वर जिसका सहायक है, मनुष्य उसका कुछ नही, बिगाड़ सकता ।

भुजचार=चार भुजावाले विष्णु भगवान।

राचे का पान, बिराचे की मेंहदी

(१) मुह रचे तो पान है, नही तो मेहदी के समान है।

(२) यदि सम्मान से दिया जाए तो पान, नही तो मेंहदी।

(स्त्रियो का विश्वास है कि प्रेम से दिए गए पान से ही मुहु रचता है । कहावत मे यही भाव छिपा है।)

राज का दूजा, बकरी का तीजा, दोनों खराब

राजा के दो लड़के हो तो वे राज्य के लिए आपस मे लड़ते हैं। बकरी के तीन बच्चे हो, तो भरपेट दूध नही पी सकते, क्योकि उसके दो ही थन होते हैं।

राज का राज में, ब्याज का ब्याज में, नाज का नाज में

जहां का पैसा वही खर्च हो जाता है। राजा का राज में, साहूकार का कर्ज देने मे और गल्लेवाले का गल्ले में लग जाता है।

राजपूत, जाट, मूसल के धनुही, टूट जात, नवे नहीं कब ही

राजपूत और जाट मूसल क उस धनुष के समान हैं जो झुकाने से झुकता नही, टूट भले ही जाए।

(ये दोनो ही अपनी हठ और कटटरपन के लिए प्रसिद्ध है।)

राजा आगे राज, पीछे चलनी न छाज, (स्त्रि०)

विधवा का कहना है।

राजा से मतलब पति से है।

राजा करे सो न्याव, पांसा पड़े सो दाव

दे० पांसा पड़े सो दाव...।

राजा का दान, प्रजा का असनान

दोनों बराबर हैं। सबको अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार धर्मकार्य करना चाहिए।

असनान=तीर्थ-स्नान।

राजा का परचाना और सांप का खिलाना बराबर है

दोनो खतरनाक हैं।

परचाना=परिचय। हिलना। मिलना।

राजा किसके पाहने और जोगी किसके मीत

राजा और जोगी किसी के मीत नहीं होते।

राजा की हेटी, करमों की हेटी

भाग्य के लिए क०।

राजा की सभा नरक को जाय

क्योकि सब खुशामद की बाते करते है।

राजा के घर गई और रानी कहलाई, (स्त्रि०)

राजा की कृपा जिस पर हो जाती है, उसी पर बड़प्पन लद जाता है।

राजा के घर काज, हमारे घर ठक ठक

राजा के घर विवाह हमारे घर फ़ाकामस्ती ।

(प्रजा से धन खीचकर राजा मौज-मजा करते हैं, उसी से मतलब है।)

राजा के घर मोतियों का काल

एक आश्चर्य की बात।

राजा को मोती का दुख

दे० ऊ०।

राजा छुये और रानी होय

राजा की कृपा हुई नही कि आदमी को रुतबा मिला नही।

राजा छोड़े नगरी, जो भावे सो लेवे

जिस वस्तु से अपना कोई संबंध नही रहा उसे कोई भी ले ले।

राजा, जोगी, अगन, जल, इनकी उल्टी रीत।
डरते रहिये परसराम, ये थोड़ी पालें प्रीत।

स्पष्ट।

राजा जोगी किसके मीत

किसी के नहीं।

राजा नल पर विपदा पड़ी, भुनी मछली जल में तिरी

बुरे दिन आने पर सभी बातें उल्टी हो जाती है। विपत्ति अकेले नही आती।

(कथा है कि जब राजा नल जुए मे अपना राजपाट हार गए, तो दमयंती को लेकर जगल मे चले गए। वहां एक दिन उन्हे कुछ खाने को नही मिला, तब भूख से व्याकुल होकर उन्होने तालाब मे से मछली पकडी और उसे आग मे भूना। यह देखकर कि उसमे बहुत राख लगी है, रानी जब उसे पानी मे धोने ले गई, तो वह जिंदा हो गई और तैर कर चली गई।)

राजा न्याव न करेगा तो घर तो जाने देगा

(१) अपनी स्पष्ट बात कहने मे संकोच नही करना चाहिए।

(२) काम चाहे हो अथवा न हो, पर प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

राजा बुलावे, ठाढ़े आवें

राजा का सदेशा पाते ही दौडकर आते है। जिसके हाथ में शक्ति है, उसका सब कहना मानते है।

राजा भीम की कजा, राम की रजा

भीम भी ईश्वर की इच्छा से ही मरे।

राजा रखे रानी खावे

पुरुष कमाता है, स्त्री खर्च करती है।

राजा राज, परजा चैन

जब न्यायी राजा होता है, तो प्रजा सुख से रहती है।

राजा रूठेगा तो अपना सुहाग लेगा, क्या किसी का भाग लेगा, (स्त्रि०)

कोई आदमी अगर हमसे नाराज होता है तो हो जाए, हमे इसकी बिल्कुल परवाह नही है, वह हमें जो कुछ देता है न दे, हम स्वयं अपना बहुत कर लेंगे—इस तरह की स्वाधीन भावना प्रकट करने के लिए कहते हैं।

सुहाग- सौभाग्य। यहा कृपा अथवा भेंट में दी गई वस्तु से मतलब है।

राजा रूठे अपनी नगरी लेगा

दे० ऊ०।

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।
यहां यों भी वाह वाह है और वों भी वाह वाह है।
(नज़ीर)

जिसमे तू प्रसन्न रहे हम हर तरह से वही करने को तैयार है।

(ईश्वर के प्रति कथन।)

रात की नीयत हराम, (लो०-वि०)

रात मे सोचा गया काम सफल नही होता। लोक-विश्वास।

रात की मालज़ादी, दिन की खूज़ादी

रात को वेश्या और दिन को भलीमानसिन।

रात को झाड़ू देनी मनहूस है, (लो०-वि०)

रात मे झाड़ू देना बुरा है।

रात को सांप का नाम नहीं लेते, (लो०-वि०)

लोगो का विश्वास है कि रात मे साप का नाम लेने से वह आकर मौजूद हो जाता है।

रात गई, बात गई

(१) समय भी नष्ट हुआ और काम भी नही हुआ।

(२) रात की बात रात के साथ गई, अब उसकी चर्चा छोड़ो।

रात थोड़ी, कहानी बड़ी

हमारे दुख की कहानी इतनी बड़ी है कि वह इतने थोड़े समय में पूरी नहीं होगी।

रात थोड़ी, स्वांग बहुत

समय थोड़ा है, पर काम बहुत करना है।

रात नर्बदा उतरी, सुबह कुआं देख डरी, (स्त्रि०)
रात में तो नर्मदा तैर कर उतर गई, और सुबह कुंआ देखकर डरती है।
स्त्री-चरित्र पर क०।
(सं०—दिवा काकरुताद्भीता, रात्रौ स्तरतिनर्मदाम्।)

रात पड़ी बूंद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि०)
रात मे ही गर्भ रहा, लडके के होने मे नौ महीने की देर, पर उसका नामकरण कर दिया। काम होने के पहले ही अपनी इच्छानुसार उसके नतीजे भी निकाल लेना।

रात पड़े उपासी, दिन को खोजे बासी, (स्त्रि०)
बहुत गरीबी।

रात भर गाई बजाई लड़के के नूनी ही नहीं
जिस काम के लिए आडबर किया जाए, वह व्यर्थ सिद्ध हो तब क०।
लडका होने की खुशी मनाई गई, पर उसमे पुरुषत्व के कोई चिह्न ही नही।

रात मां का पेट
रात मां के पेट की तरह है। सब कष्टो को भुला देती है, अथवा सब बुरे कामो को ढक लेती है।

रात रात का पड़ रहना, भोरे भए चल देना
राहगीर या फकीर का कहना।

रात हटाई, तड़के ही आई, भूख वेदना बुरी रे भाई
भूख के लिए क०, रात को किसी तरह मिटाई, सुबह फिर लग आई।

रातों काता कातना, सिर पर नहीं नातना, (स्त्रि०)
रात भर सूत काता, फिर भी सिर ढकने को कपडा नही। व्यर्थ परिश्रम।

रातों रोई, एक ही मूआ, (स्त्रि०)
रात भर रोती रही (अथवा कोसती रही) पर मरा एक ही।
(प्रयास बहुत, लाभ थोड़ा।)

राधे राधे रटत हैं, आक ढाक अरु कैर।
तुलसी या ब्रजभूमि में कहा राम से बैर।
स्पष्ट।
(कहा जाता है, एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी मथुरा गए। वहा उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को राधे-कृष्ण का नाम लेते ही देखा, राम की चर्चा कोई नही कर रहा था, तब उन्होंने उक्त दोहा कहा।)

रानी को कौन कहे 'आगा ढक', (स्त्रि०)
बडे आदमी को कौन उपदेश दे?

रानी को राना प्यारा, कानी को काना प्यारा
(१) अपनी-अपनी वस्तु सबको प्यारी होती है, फिर वह कैसी ही हो।
(२) जो जैसा होता है वह वैसे ही आदमी को पसद करता है।

रानी गई हाट, ले आई रीझ कर चक्की के पाट
क्योकि उन्होने चक्की का पाट कभी नही देखा था। बडे आदमियो की सनक।

रानी दीवानी हुई, औरों को पत्थर, अपना को लड्डू मार कर
होशियार पागल। देखने मे सिडी पर बडा चतुर।

रानी रूठगी अपना सुहाग लेगी क्या किसी का भाग लेगी?
दे० राजा रूठेगा ।
मालिक नाराज होगा, अपनी नौकरी लेगा।

राम की माया, कहीं धूप, कहीं छाया
ईश्वर की विचित्र लीला; कही सुख है तो कही दुख।

राम के भक्त काठ के गुड़िया, दिन भर ठकाठक, रात के घुसकुरिया, (भो०)
उन वैष्णव पुजारियो पर व्यग्य जो दिन मे भगवान के नाम की माला जपते है और रात मे दुष्कर्म करते हैं।

राम छोड़ी अयोध्या, मन भावे सो लेय
दे० राजा छोडे नगरी. . ।

राम जी का आसरा है,
असहाय दुखिया का क०।

राम झरोखे बैठ के सब का मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी, वैसा वाको देय।
जो जैसी सेवा करता है, वैसा फल पाता है।

राम न मारे, आपई मरे, देय कुमति चढ़ावे, (बु०)
मनुष्य अपने दुष्कर्मों का ही फल भोगता है, ईश्वर को व्यर्थ दोष देता है।

राम नाम की लूट है, लूटी जाय सो लूट।
अन्त काल पछतायगा, प्रान जायेंगे छूट।
स्पष्ट।

राम नाम के कारने सब धन डारो खोय।
मूरख जाने गिर पड़ा, दिन दिन दूना होय।
परोपकार में खर्च किया गया पैसा व्यर्थ नहीं जाता।

राम नाम को आलसी भोजन को तैय्यार
अकर्मण्य आदमी।

राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी।
हर को नाम मिश्री, तू घोल घोल पी।
स्पष्ट।

राम नाम ले सो धक्का पावे, चूतड़ हिलावे सो टक्का पावे, (स्त्रि०)
दुश्चरित्रों को धन मिलता है, सच्चरित्रों को कोई नहीं पूछता।
कहावत में वेश्या से मतलब है।

राम नाम सुमरन करो, यही नाम है तत।
तीन लोक चौदह भुवन, छाय रहे भगवंत।
स्पष्ट।
तत=सार।

राम नाम शमशेर पकड़ ली, कृष्ण कटारा बांध लिया।
दया धरम की ढाल बनाले, जम का द्वारा जीत लिया।
स्पष्ट।

राम बढ़ाये सो बढ़े बल कर बढ़ा न कोय।
बल करके रावन बढ़ा छिन में डारा खोय।
जिस पर राम की कृपा होती है, वही बढ़ता है, या उन्नति करता है। अपना बल दिखाकर कोई नहीं बढ़ा, रावण ने बल दिखाया, जिससे उसका तुरत नाश हो गया।

राम बिना दुख कौन हरे?
बरखा बिन सागर कौन भरे?
लक्ष्मी बिन आदर कौन करे?
माता बिन भोजन कौन धरे?
राम के बिना दुख कौन दूर कर सकता है? वर्षा के बिना समुद्र कौन भर सकता है? लक्ष्मी (पतिव्रता स्त्री) के बिना आदर कौन कर सकता है, और मां के बिना कौन भरपेट खिला सकता है?

राम भरोसा भारी है
राम सबकी सुध लेते हैं।

राम भरोसे जे रहें पर्वत पर हरियायं।
तुलसी बिरवा-बाग के सींचत ही कुम्हलायं।
स्पष्ट।
बिरवा वृक्ष।

राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा, एक कोढ़ी
दो एक से (दुष्ट) आदमियों का मिलना।

राम नाम कहते रहो, जब लग घट में प्रान।
कबहुं तो दीन दयाल के भनक परेगी कान।
राम का नाम लिये जाओ, कभी-न-कभी तो सुनवाई होगी ही।

राम नाम जपना, पराया माल अपना
धूर्त साधुओं या पाखंडियों के लिए क०।

राम राम तू कहो मन मेरे, पाप कटेंगे छिन में तेरे
स्पष्ट।

राम नाम लिख दे, सिला तिर जायेगी।
भज ले सीताराम, मुक्त हो जायेगी।
स्पष्ट।
(कहावत में अहिल्योद्धार की घटना की ओर संकेत है।)
सिला– शिला।

राम ही राम सत है
ईश्वर जिसका सहायक है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है?
सत सत्य।

राम सहाय करे तो कोई क्या कर सके
स्पष्ट।

रावन का साला
ऐसा दुष्ट व्यक्ति जिसका कोई बड़ा आदमी हिमायती हो।

रावन ने जब जनम लिया, थी बीस भुजा, दस सीस।
माय अचंभे हो रही, किस मुंह में दूं चीस।
स्पष्ट।
माय=माता।

खीस=खाना।

राड न रावड़ी, ले उठे खावड़ी

न कोई लड़ाई न झगड़ा, फिर भी तलवार खीच ली। कोई अकारण लड़ने को तैयार हो जाए तब क०। राव=रार, टंटा, बातचीत।

रास्तगो मुफ़लिस मजलिस में झूठा

ग़रीब आदमी सच भी बोले, तो भी वह अदालत में झूठा ठहरता है।

(जो लोग रिश्वत देकर विपक्ष मे झूठी गवाही दिलाते हैं, उनकी आलोचना।)

राह की बात है

हित की बात है।

राह छोड़ कुराह चले

उचित नहीं किया।

राह पड़े जानिये, या वाह पड़े जानिये, (पं०)

संग होने से या काम पड़ने से ही आदमी पहिचाना जाता है।

रिकाब पर पांव रक्खे हुए हो

बहुत जल्दी में हो, जाने को तैयार हो।

रिज़क़ न पल्ले बांधते, पंछी औ' दरवेश।
जिनका तकिया रब्ब है, उनको रिज़क़ हमेश।

जो ईश्वर पर निर्भर रहते हैं, उन्हे रोज़ी की फ़िक्र नही करनी पड़ती।

रिज़क=(रिज़्क़ अ०) नित्य का भोजन। जीविका। तकिया=आश्रय, सहारा।

रब्ब=ईश्वर।

रिज़क़ है न मौत

बदनसीब के लिए क०।

रिज़ाला मस्त हुआ, ख़ुदा को भूल गया, (मु०)

नीच के पास पैसा हो जाए, तो ईश्वर को भूल जाता है।

रिज़ाले का लट्ठ

(१) नीच का लड़का (२) बदशक्ल और बेहूदा आदमी।

रिज़ाले की जोरू को सदा तलाक़

कमीने की औरत को हमेशा ही छुट्टी।

रिज़ाले की दोस्ती पानी की लकीर।
शरीफ़ों की दोस्ती पत्थर की लकीर।

कमीने की मित्रता पानी की लकीर की तरह तुरंत मिट जाती है; भले आदमी की मित्रता पत्थर की लकीर की तरह स्थायी होती है।

रिज़ाले के नाखून हुए

सताने का साधन उसे मिल गया।

रियासत बग़ैर सियासत नहीं होती

बिना रौबदाब के शासन नही चलता।

रिश्वतखोर जहन्नुमी है

रिश्वत लेनेवाला नर्क मे जाता है। मत० रिश्वत लेना बुरा काम है।

रीछ का एक बाल भी बहुत है, (लो० वि०)

अपनी करामात दिखाता है। रीछ का बाल लड़कों को नज़र से बचाने के लिए ताबीज़ मे रखकर बाधते है।

रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे

खुश होगे तो भी नुकसान पहुंचाएगे।

(ऐसे ओछे और नीच प्रकृति के आदमी के लिए जिसमे प्रसन्न-से-प्रसन्न अवस्था मे भी कभी भलाई की आशा न की जाए।)

रीत की कौड़ी, न ऊत बिलाव की ढेरी

ईमान की एक कौडी अच्छी, पर मूर्ख की रुपयो की ढेरी अच्छी नही।

रीत न सतवांसा, मेरा लाड़ला नवासा, (स्त्रि०)

न तो कोई नेग-दस्तूर हुआ, न सतवांसा हुआ, फिर भी मेरे लाड़ला नाती हो ही गया। कोई जबर्दस्ती का सम्बन्ध जोडता फिरे तब क०।

सतवासा=वह दस्तूर जो गर्भवती स्त्री के सातवें महीने मे होता है।

नवासा=लड़की का लड़का।

रीता हाथ मुंह तक नहीं पहुंचता

खाली हाथ काम नही चलता।

रीते भरै, भरे ढुलकावै, मेहर करे तो फिर भर आवे

ईश्वर की इच्छा के लिए क०।

मेहर=दया। कृपा।

रीस न कर धनवंत की, निर्धन हो कर खार।
रीस करते सैकड़ों, बेखे होते ख्वार।
ग़रीब होकर धनवान से स्पर्द्धा नहीं करनी चाहिए।

रीस भली, हौंस बुरी
स्पर्द्धा अच्छी, पर द्वेष बुरा।

रुपया आनी जानी शय है
एक जगह नहीं टिकता।
शय - चीज।

रुपया तो शेख़, नहीं तो जुलाहा, (मु०)
रुपये से ही आदमी छोटा या बड़ा बनता है।

रुपयावाले को रुपये की आस, मोको राम की आस
गरीब का आत्मसंतोष।

रुपया हाथ का मैल है
दान-पुण्य में खर्च करना चाहिए, भिखारी कहा करते है।

रुपये का काम रुपये से चलता है, (व्य०)
कोरी बातों से नहीं चलता।

रुपये की खीर है
रुपया है तो खीर खाओ।

रुपये को रुपया कमाता है, (व्यं०)
रुपया से रुपया आता है। रुपये से ही रोज़गार होता है।

रुपये वाले की हमेशा पूछ है
रुपयेवाले के पास सब जाते है, सब उसे तलाश करते है।

रूख बिना ना नगरी सोहे, बिन बरगन ना कड़ियां।
पूत बिना ना माता सोहै, लख सोने में जड़ियां।
स्पष्ट।
बरगा=लकड़ी के वे छोटे पटिए जो छत को पाटने के लिए कड़ियों पर रखे जाते है।
कड़ी=छत को पाटने के लिए रखी जानेवाली लंबी चौपहली लकड़ी; धरन।

रूखा खाना धरती सोना, नाह सुहेला फक्कड़ होना
फ़क्कड़ (या फ़कीर) होना आसान नहीं है, क्योंकि फ़क्कड़ को रूखा खाने को मिलता है और धरती पर सोना पड़ता है।
सुहेला=सहज।

रूखा सो भूखा
(१) जो रुखाई से बात करे, समझ लो वह भूखा है।
(२) रूखा (बिना घी का) खाने से भूख जल्दी लगती है, क्योंकि वैसा अन्न जल्दी हज़म होता है।

रूठे को मनाय नहीं, फटे को सिलाय नहीं, तो काम कैसे चले?
रूठे को न मनाया जाए, तो नाराज़ होकर ही बैठा रहेगा, फटे कपड़े को न सिया जाए, तो और फट जाएगा।

रूठे बाबा, दाढ़ी हाथ
बूढ़ा आदमी नाराज़ होता है, तो अपनी दाढ़ी नोंचता है; बेचारा करे क्या?

रूप न सिंगार, खतरानी की साध, (स्त्रि०)
न तो रूप है, न बनाव-ठनाव है, फिर भी खतरानी बनने की साध।
(खत्रियो की स्त्रिया अपने सौन्दर्य और शृंगार के लिए प्रसिद्ध है।)

रूप निरूप जाय नहिं बोली।
हलुका गरू जाय नहिं तोली।
(१) ईश्वर के लिए क०, वह साकार है या निराकार, हलका है या भारी, कुछ कहा नही जा सकता।
(२) एक दूसरा अर्थ भी हो सकता है; अच्छे-बुरे सौन्दर्य के विषय में कुछ कहा नही जा सकता है वह अपनी-अपनी रुचि पर निर्भर करता है।

रूप रोये, भाग खाये
रूपवान लडकी रोती है (ग़रीब घर में विवाह होने पर), भाग्यवान खाती है, (अच्छे घर में जाने पर), भाग्य ही बड़ी चीज़ है।

रूसल बहुरिया, उधुगारल आग, दोनों ठहरें बड़े हैं भाग
रूठी हुई स्त्री और जलती हुई आग अगर ठहर जाए, तो बड़े भाग्य समझिए। अर्थात स्त्री घर छोड़ कर चली जाएगी और आग भी बिना फैले नहीं रहेगी।

रेवड़ी के फेर में आ गये
चक्कर में पड़ गए।

(रेवड़ी बहुत परिश्रम से बनती है। उसकी गाढी चाशनी को कीली से लटकाकर खीचते है और लपेटते जाते है, जिससे उसमें कई बल पड़ जाते हैं।)

रो के पूछ ले, हँस के उड़ा दे

ऐसे धूर्त्त व्यक्ति के लिए क० जो सहानुभूति दिखाकर किसी के मन का भेद जान ले और बाद मे उसकी हँसी उड़ाता फिरे।

रोग का र खांसी, लड़ाई का घर हांसी

खांसी बीमारी का लक्षण है, बहुत हँसी-दिल्लगी करने से लड़ाई हो जाने का डर रहता है।

रोगिया भावे सो बैद बतावे

रोगी को जो अच्छा लगता है, वैद्य भी वही खाने को बतलाता है।

(रोगी कोई बड़ा आदमी हो तब क०।)

रोगी को रोगी मिला, कहा 'नीम पी'

जिसे जिस बात का अनुभव होता है, वही दूसरे को भी बतलाता है।

रोज कुआं खोदना और रोज पानी पीना

किसी ऐसे गरीब का कहना जो रोज मज़दूरी करके खाता है; कठिनाई मे रहना।

रोजगार और दुश्मन बार-बार नहीं मिलता

इनको पाकर छोड़ना नही चाहिए।

रोज रोज की दवा भी गिज़ा हो जाती है, (मु०)

जो दवा नित्य खाई जाए, वह फिर लाभ नही करती। गिज़ा=खुराक़, भोजन।

रोजी का मारा दर दर रोवे, पूत का मारा बैठ के रोवे

(१) जिसकी रोजी छूट जाती है, वह घर-घर जाकर अपना दुखड़ा रोता है, पर जिसका पुत्र मर जाता है, वह किसके पास जाकर अपना दुख कहे?

रोज़े को गये, नमाज़ गले पड़ी, (मु०)

दे० गये थे रोज़ा छुड़ाने. . . ।

मुसीबत हलकी करने गए, पर और बढ़ गई।

रोज़े खोर, खुदा का चोर, (मु०)

जो रोज़े में खाना खाता है, वह ईश्वर को धोखा देता है।

(रमज़ान के महीने में मुसलमान रोज़े रखते हैं, जिसमें वे दिन भर उपवास करके अर्द्ध रात्रि के अन्त में खाते हैं।)

रोटिया चाकर, घसहा घोड़, काम बहुत चले थोड़ा, (पू०)

जिस नौकर को वेतन नही मिलता, और केवल खाने पर रखा जाता है, और जिस घोड़े को केवल घास ही खाने को मिलती है, दाना नहीं मिलता, वह बहुत कम काम करता है।

रोटी करो, सत्तू करो, भात बरोबर नाहीं।
मौसी करो, फूफी करो, माय बरोबर नाहीं।

चाहे रोटी बनाओ, चाहे सत्तू बनाओ, पर वह भात की बराबरी नही कर सकता; चाहे मौसी रखो, चाहे फूफी रखो, वह मां के तुल्य नही हो सकती।

रोटी कारन छोड़ कर, कुटम देस घरबार।
लाख कोस जाकर बसें, रोटी ढूंढनहार।

पेट के लिए सभी तरह के कष्ट सहने पड़ते है।

रोटी कारन जाल में, फंसे पखेरू आय।
रोटी कारन आदमी, लाखों पाप कमाय।

दे० ऊ०।

रोटी कारन लश्करी, रन में सीस कटाय।
रोटी कारन रैन दिन, गीत गवेसर गाय।

दे० ऊ०

लश्करी सिपाही।

गवेसर –गवैया।

रोटी कारन सीखते, विद्या हैं सब लोग।
जिस घर में रोटी नहीं, उस घर पूरा सोग।

ऊपर के चारों दोहे एक ही भाव को व्यक्त करते हैं, जो स्पष्ट है।

रोटी किस्मतकी, हुक्का पांव दौड़ी का

रोटी भाग्य से ही मिलती है, पर हुक्का चलने-फिरने से मिल जाता है।

(किसी के यहां जाओ तो वह चिलम तमाखू से ख़ातिर करता है।)

रोटी की खाक झाड़ना

रोटी पर मक्खन लगाना। खुशामद करना। घी चुपड़ी खाना।

रोटी की जगह उपला खाना
बेहूदगी दिखाना।

रोटी को टोटी, पानी को बिल्ला, खसम को दादा
(१) फूहड़ औरत के लिए क०।
(२) जो जानबूझकर नासमझ बने उससे भी०।

रोटी को रोवे, लपड़ी को टोवे, (स्त्रि०)
बहुत ग़रीबी हालत।

रोटी को रोवे, चूल्हे पीछे सोवे, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
(वास्तव में ये केवल तुकबंदियां हैं।)

रोटी खाइए शक्कर से, दुनिया ठगिए मक्कर से
जो लोग धूर्त्तता और खुशामद से दुनिया को ठगते हैं, वे ही मज़े में रहते हैं, सीधे और सच्चे दुख पाते हैं।

रोटी गई मुंह में, जात गई गुह में, (स्त्रि०)
पेट के लिए आदमी जात को भी छोड़ देता है। विधर्मी बन जाते हैं।
गुह=गू, मल।

रोटी न कपड़ा, सेंत का भतरा, (स्त्रि०)
खाना दें न कपड़ा, केवल नाम का भतार है। जो दिखावटी प्रेम करे उसके लिए क०।
भतार=पति, स्वामी।

रोटी पड़ी जो पेट में, तो हो गया मस्त शरीर।
सूझन लागे जीव को, लाख जतन तदबीर।
पेट भरा होने पर ही आदमी को काम सूझते हैं।

रोटी पर का घी गिर पड़ा, मुझे रूखी ही भाती है
किसी वस्तु के हाथ से निकल जाने, गिर जाने या टूट फूट जाने पर मन को समझाना; झेंप मिटाना।

रोटी पै रोटी रख कर खा
तुम्हें खूब रोटियां खाने को मिलें, खूब आराम से रहो। एक प्रकार का आशीर्वाद।

रोटी बिन औंड़े लगें, सकल कुटुम के लोग।
रोटी ही को जान लो ठेठ मिलन का जोग।
स्पष्ट।

रोटी वहां खाओ तो पानी यहां पीओ
बहुत जल्दी आओ। विदेश से किसी को जल्दी बुलाना हो तब लिखते हैं। किसी ज़रूरी काम की खबर लाने के लिए किसी को भेजा जाए तो उससे भी क०।

रोटी ही का ब्याह है, रोटी ही का काज।
सांच भलों ने है कहा 'सब से भला अनाज।'
स्पष्ट।

रोटी ही के कारने, दर दर मांगे भीख।
रोटी ही के वास्ते, करें कार सब ठीक।
स्पष्ट।

रोते क्यों हो? कहा, शकल ही ऐसी है
मनहूस या मुंहफल्ले आदमी के लिए क०।

रोते गए, मुए की खबर लाये
जब कोई आदमी बेमन से काम करे तब क०। भाव यह है कि वह अपनी इच्छा के विरुद्ध तो गया, और फिर लौटकर आया, तो बुरी खबर सुना दी, जिसमें फिर कभी न जाना पड़े।

रोते रिज़क हैं
रोने से ही नौकरी मिलती है। अथवा नौकरी में रोना पड़ता है।

रो दे, बनिया गुड़ देगा
स्त्रियां बच्चों से कहा करती हैं।

रोने को तो थी ही, इतने में आ गए भइया, (स्त्रि०)
मनचाहा काम करने के लिए बहाना मिल जाना। कोई औरत रुआसी बैठी थी। पर सास के डर से रो नहीं पाती थी। इतने में भाई आ गया, तब खुल कर रोने लगी।
(ससुराल में मायके से जब कोई मिलने आता है, तो उसेदेखकर स्त्री रो उठती है, यह कुछ रिवाज सा है।)

रोने से रोज़ी नहीं बढ़ती
रोज़ी परिश्रम से बढ़ती है।

रोया सो मुंह धोया
(१) प्रायः बच्चों से कहते हैं कि रोओगे तो तुम्हें फिर चीज़ नहीं मिलेगी।
(२) रोने से आदमी की शर्म मिट जाती है। यह अर्थ भी हो सकता है।

रोये से दान नहीं मिलता
ज़बर्दस्ती किसी से कुछ नहीं लिया जा सकता।

रो-रो के दाम मांगते हो

दे० ऊ०।

रौ बन्दे, खरीददार खुदा

चले चलो दोस्त, खुदा तुम्हारा माल खरीदेगा। अर्थात तुम्हारी मदद करेगा। (बूढ़ो का कहना।)

रौ में सब रवा है

धुन में जो काम किया जाए, वह सब ठीक है।

लंका में से जो निकले, सो बावन गज का

किसी जगह के सभी लोग शरारती हों, तब क०।

लंगट पड़ले उधार के पाले, (भो०)

बेशर्म नंगे के पाले पड़ गया, अब अक़्ल दुरुस्त हो जाएगी।

लंगड़ी कट्टो, आसमान में घोंसला

किसी का दिमाग न मिलना।

कट्टो-- गिलहरी।

लंगड़ी, घोड़ी, मसूर का दाना

अयोग्य पर खर्च करना। जो सम्मानयोग्य नही, उसका सम्मान करना।

लंगड़े ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां अन्धे

बेतुकी बात के लिए क०।

लंगड़े-लूले गये बरात, दो-दो जूते दो-दो लात

निकम्मों की हर जगह यही हालत होती है।

लंगड़े-लूले गए बरात, भात की बिरियां खइलन लात

दे० ऊ०।

(दोनों ही बच्चों की तुकबंदियां है।)

लंगोटी में फाग खेलते हैं

(१) बिना पैसे कौड़ी के ही उत्सव मनाते है।

(२) चुपचाप ही कोई काम कर लेना चाहते है।

लंबे घूंघटवाली से डरिए

किसी ऐसे व्यक्ति का कहना जो स्त्रियों का सम्मान नहीं करता।

लकड़ी के बल बंदरी नाचै

भय दिखाने से ही काम होता है।

लकड़ी पर फ़क़ीर

लकडी लेकर ही वह फ़कीर बन गया है। कोरा दिखावा।

लकीर पर फ़कीर

पुराने ढर्रे पर चलनेवाला।

पाठा०—लकीर के फ़कीर।

लग गई जूती उड़ गई खेह, फूल पान-सी हो गई देह

निर्लज्ज के लिए क०।

खेह-- धूल।

लगा तो तीर, नहीं तुक्का ही सही

प्रयत्न करना चाहिए, कुछ-न-कुछ नतीजा तो निकलेगा ही।

लगा सो भगा

(१) शरीर क्षण-भंगुर है।

(२) जो काम आरंभ किया, वह समाप्त हुआ।

लगी में और लगती है

चोट में ही और चोट लगती है।

लगे आग तो बुझे जल से,
जल में लगे तो बुझे कहो कैसे ?

अनहोनी का कोई उपाय नही।

लगे को बिड़ारियेना, बिन लगे को हिलाइये ना

मित्र को त्यागना नही चाहिए, और अपरिचित को मुह नही लगाना चाहिए।

हिलाना अनुकूल बनाना, परचाना।

जैसे ढोरो को हिलाना, बच्चे को हिलाना।

लगे तोते भीतों बोलने

अर्थात बात फैल गई है।

लगे दम, मिटे ग़म

अफ़ीमचियों की उक्ति।

लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा

भंगेड़ी कहा करते हैं।

लक्मी बिन आदर कौन करे ?

(१) अच्छी स्त्री के बिना आदर कौन कर सकता है ?

(२) पैसे के बिना कोई नहीं पूछता।

लच्छमी से भेंट ना, दरिद्दर से बैर, (भो०)

घर में पैसा नहीं, फिर भी दरिद्रता से लड़ते हैं

अर्थात और भी दरिद्र बने रहना चाहते हैं। कोई अच्छा काम न करके ऐसा काम करना जिससे कठिनाई और बढ़े।

लजाइल लड़िका ढोंढी टोहवे, (भो०)
शरमाया हुआ लडका अपने पेट की ओर देखता है; उसे शौच जाना है, पर कह नही सकता।

लजाधुर बहुरिया, सराय में डेरा, (भो०)
(१) बहू शर्मीली है और उसे सराय मे ले जाकर टिका दिया गया। एक धर्म सकट की बात। (२) अगर बहू स्वय ही सराय मे जाकर टिकी, तो उसकी शर्म की बलिहारी।

लजाना बोलू मुंह बिदोरे, (पू०)
शरमाई बकरी मुह बिदोरती है। कोई लज्जाशील स्त्री खुलकर हँस नही पाती, उसके लिए हँसी मे कहा गया है।

लजालू मरे, ढिठाऊ जिये, चमारो गंगाजल पिये
शर्मदार मरता है, ढीठ और ओछे आदमी मजे करते है।
(समय की उल्टी रीति।)

लटा हाथी बिटौरे बराबर
बडा आदमी बिगडने पर भी छोटो से बडा ही रहता है। कहावत का साधारण अर्थ भी लिया जा सकता है कि दुबला हाथी कडो के ढेर जितना दिखाई देता है।

लटे की जोय सारे गांव की सरहज, (पू०)
स्पष्ट।
गरीब को सब छेडते है।
सरहज—सलहज, साले की स्त्री, उससे मजाक करने का हक रहता है।

लटे पटे दिन काटिये
ग़रीबी के दिन आजाए, तो धैर्यपूर्वक काटना चाहिए।

लठ, मुंफट
जो बिना विचारे बात करते है उनके लिए क०।

लड़कन के भगवा ना, बिलाई के गाती, (स्त्रि०)
घर के लोगो की खबर न लेकर दूसरो की सहायता करना।
भगवा—अंगोछी।
गाती—कुर्ती

लड़का जने बीवी और पट्टी बांधें मियां
किसी को दर्द, कोई रोता फिरे। प्रसव के बाद पेट मे दर्द होने पर पट्टी बाधते है।

लड़का परकावे के न चाहीं, हरकावे के चाही, (पू०)
लडके को डाटना चाहिए, लडियाना नही चाहिए।

लड़का रोवे खसम चिल्लाय, लड़कौरी मेहरिया फ़जीहत होय, (स्त्रि०)
गृहस्थी का झगडा।
लडकौरी—जिसकी गोद मे बच्चा हो।

लड़का रोवे बालों को, नाई रोवे मुड़ाई को
सब अपना स्वार्थ देखते है।
(लडका इसलिए रो रहा है कि उसके बाल काट दिए गए।)

लड़की तेरा ब्याह कर दें, कहा 'मैं कैसे कहूं'?
कोई सकोच की बात बड़ो से कैसे कही जा सकती है?

लड़के के पांव पालने में पहचाने जाते हैं
होनहार लडका बचपन मे ही पहचान लिया जाता है।

लड़के को जब भेड़िया ले गया, तब टट्टी बांधी
काम बिगड जाने पर सचेत होना।

लड़के को मुंह लगाओ तो दाढ़ी खसोटे, कुत्ते को मुंह लगाओ तो मुंह चाटे
नादान या ओछे को मुह नही लगाना चाहिए।

लड़कों का खेल, चिड़िया का मरना
अपने आराम के लिए दूसरे के कष्ट की परवाह न करना।

लड़कों में लड़का, बूढ़ों में बूढ़ा
सीधा आदमी। ऐसा आदमी जिसे सब चाहे।

लड़ते तो नहीं, मुए मारते हैं, (स्त्रि०)
किसी जनखे का कहना। लडाई मे मारपीट तो होती ही है।

लड़तों के पीछे और भागतों के आगे
कायर के लिए क०।

लड़ाई और आग का बढ़ाना क्या ?
बढ़ाना चाहो, तो बहुत जल्दी बढ सकती है।

लड़ाई का घर हांसी, और रोग का घर खांसी
स्पष्ट। दे० रोग का घर . . ।

लड़ाई में लड्डू नहीं बंटते हैं
मारपीट होती है, और वह अच्छी चीज नही।

लड़ाके के चार कान
झगडा करने के लिए दूसरे की बात बहुत जल्दी सुनता है।

लड़ें न भिड़ें, तरकस पहने फिरें
शेखीबाज को क०।

लड़ें सांड़, बारी का भुरकस
बडों की लडाई में छोटे पिट जाते है।
बारी - खेत के चारो ओर लगाई गई कटीली झाडियो की आड।

लड़े सिपाही, नाम हो सरदार का
काम अधीनस्थ कर्मचारी करते हैं, बडो को यश मिलता है।

'लड्डू' कहे मुंह मीठा नहीं होता
बातों से काम नही चलता।

लड्डू न तोड़ो, चूरा झार खाओ
मूल मत छुओ, ब्याज से काम चलाओ। पूजी न बिगाड़ो मुनाफा खा लो।

लड्डू लड़े, चूरा झरे
दो बडे आदमियों की लडाई मे दूसरो को लाभ होता है।

लश्कर की अगाड़ी, और आंधी की पिछाड़ी
इनका दृश्य भयानक होता है।

लश्कर में ऊंट बदनाम
बदनाम आदमी के लिए क०।

लहू लगा शहीदों में मिले
झूठा यश चाहनेवाले पर क०।

लाओ कुआं, मैं डूबूं
किसी बेशर्म से जब लोगों ने कुए मे डूब मरने को कहा तब वह जवाब देता है।

लाओ सीपी, खखोर भीती, मेरे सैयां पर इतनी बीती, (स्त्रि०)
लाओ सीपी, मैं दीवार खरोचकर साफ करू, मुझ क्या पता था कि मेरे स्वामी का घर इस तरह बर्बाद हो रहा है। जब कोई व्यक्ति अपनी कारगुजारी दिखाने के लिए किसी काम मे आवश्यकता से अधिक सावधानी बर्ते तब क०।
(कथा है कि कोई नव-विवाहिता स्त्री जब पहले-पहल ससुराल आई, तो उसने दीवार मे भात लगा देखा, जो वहा विवाह के अवसर पर किसी दस्तूर को पूरा करते समय लगाया गया था। पर स्त्री ने यह समझा कि यह बेकार ही यहा लगा हुआ है। तब अपनी कर्मठता दिखाने के लिए उसने उक्त बात कही कि लाओ इस भात को मै खरोचकर रखू।)

लाख का घर खाक में मिला दिया
सब सत्यानाश कर दिया।

लाख तदबीर एक तरफ़, और एक तक़दीर एक तरफ़
भाग्य के आगे तदबीर नही चलती।

लाग लगी तब लाज कहां
किसी से प्रेम हो जाने पर लाज-शर्म अलग रखी रहती है।

लाचार मे विचार क्या ?
मजबूरी मे उचित अनुचित का विचार नही किया जाता।

लाचारी पर्वत से भारी
मजबूर होकर आदमी न जाने क्या-क्या करता है।

लाज की आंख जहाज से भारी
(१) शर्म के मारे जब कोई अपनी बात न कह पाए और आख नीची करके रह जाए।
(२) सकोचवश किसी बात के लिए जब कोई इन्कार न कर सके, तब भी कह सकते हैं।
(३) शर्मदार की बात टाली नही जा सकती, अथवा शर्मदार की सब इज्जत करते है, यह अर्थ भी हो सकता है।

लाठी के हाथ मालगुजारी बेबाक
लाठी के भय से काम जल्दी होते हैं।

लाठी मारे पानी जुदा नहीं होता
रिश्तेदारों में कितनी ही लड़ाई हो, पर उनके आपसी सम्बन्ध नहीं टूटते।

लाठी लिये पांव पर खाक
लाठी लेकर चलने से पैर खराब होते ही हैं। लाठी के टेकने से धूल उड़ती है।

लाठी हाथ की, भाई साथ का
लाठी हाथ की ही काम आती है, भाई नज़दीक हो तब काम आता है।

लाड़ का नांव भलभार खातून
लाड़ का नाम 'लड़ाकू बिटिया'।
(प्रेम मे आकर लोग बच्चो के अजीब-अजीब नाम रखते हैं उसी पर क०।)

लाड़ में आवे कुकड़ी, बल बल जावे कौवा
मुर्गी जब अपने नखरे दिखाती है, तो कौआ भी उस पर न्योछावर हो जाता है।

लाड़ला लड़का जुआरी और लाड़ली लड़की छिनाल
बहुत लाड़ करने से बच्चे बर्बाद होते हैं।

लात मारी झोंपड़ी, चूल्हे मियां सलाम
जिसका रहने का कोई ठिकाना नहीं होता, उसके लिए क०।

लातों का देव बातों से नहीं मानता
नीच समझाने से नही मानता। अर्थात बिना पिटे राहरास्ते पर नही आता।

लाद दे, लदा दे, हांकनेवाला साथ दे
अनुचित मांग पर क०।
(जब किसी को कोई वस्तु दी जाए और वह कहे कि हमारे घर पहुचा दीजिए, अथवा किसी को कोई लाभ का काम बताया जाए और वह कहे कि साथ चलकर करवा दीजिए। प्रायः तब क०।)

लाभे लोहा ढोइये बिन लाभ न ढोइय रुई
लाभ के काम में ही परिश्रम किया जाता है।

लायगा दारा तो खायगी दारी, न लायगा दारा तो पड़ेगी ख्वारी
पुरुष कमाकर लाएगा तो स्त्री खाएगी, नहीं तो झगड़ा होगा। गृहस्थी के बखेड़ों पर क०।

लाये दाम, बने काम
पैसे से ही सब काम होते है।

लारा लीरी का यार, कभी न उतरे पार
जरूरत से ज्यादा सोच-विचार करनेवाले का काम कभी पूरा नही होता।

लाल किताब उठ बोली यों, तेली बैल लड़ाया क्यों ? खेल खिला कर किया मुसंड, बैल का बैल और डंड का डंड।
(क़िस्सा है कि किसी तेली के बैल ने एक काज़ी के बैल को मार डाला। इस पर काज़ी ने तेली से कहा कि तुम ने अपने बैल को खिला-पिलाकर मुसंड बनाया, जिससे मेरा बैल मारा गया। अब तुम्हे मेरा बैल और जुर्माना दोनो देना होगा। बाद में जब काजी को पता चला कि उसके ही बैल ने तेली के बैल को मार डाला है, तो उसने यह कहकर मामले को ख़ म कर दिया कि जानवर ही तो था, अर्थात बेचारा क्या जाने। भाव यह कि लोग दूसरो का हीदोष देखते हैं, अपना दोष हमेशा छिपाते है।)
लाल किताब से मतलब काज़ी से ही है।

लाल खां की चादर बड़ी होगी तो अपना बदन ढंकेगा, हमको क्या ?
किसी के पास अगर बहुत धन है तो हमें उससे क्या लाभ ?
वह उसीके काम आएगा, न कि हमारे।

लालच गुन घर बिनास
बहुत लालच से घर बर्बाद हो जाता है।

लालच पशेमान है
बहुत लालच से आदमी को शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है।

लालच बस परलोक नसाय
लालची को मुक्ति नहीं मिलती।

लालच बुरी बला है
लालच सबसे बड़ा दुर्गुण है।

लालची को जहान तंग
(१) लालची के लिए दुनिया में रहना मुश्किल हो जाता है।

(२) लालची को दुनिया बहुत छोटी मालूम होती है: वह चाहता है कि दुनिया की सब चीज उसे मिल जाए।

लाल, नीच निर्बचन कहं, बांह वेत सो बार।
भेड़ पूंछ भादों नदी, को गह उतरे पार।

नीच आदमी की सहायता पर कभी निर्भर नही करना चाहिए, भेड़ की पूंछ पकड़ कर भला भादों की गहरी नदी कौन पार उतरना चाहेगा ?

लाल प्यारा है तो उसका ख्याल भी प्यारा है

लडका अगर प्यारा है, तो उसकी हर बात मान ली जाती है।

लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझा कोय।
कड़ी बरंगा टार के ऊपर ही को लेय।

मूर्खतापूर्ण सलाह के लिए।

(कथा है कि किसी जगह एक लडका अपने दोनो हाथ खभे के दोनो ओर फैलाए खडा था। उसी समय उसके बाप ने उसके दोनो हाथो मे भुने चने दे दिए। अब लोगो के सामने यह समस्या उपस्थित हो गई कि किस तरह लडका चना नीचे गिराए बगैर अपने हाथ खभे से अलग करे। उसी समय लाल बुझक्कड वहा पहुच गए। उन्होने सलाह दी कि खभे पर से कडी बरगा हटाकर लडके को निकाल लिया जाए, इसके सिवा और कोई उपाय नही।)

लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझा कोय।
पैरों चक्की बांध के हिरना कूदा होय।

दे० ऊ० ।

(किसी गाव मे होकर एक हाथी निकल गया था, जिससे उसके पैरो के चिह्न धूल मे बन गए थे। गांव वाले उन लबे-चौडे गोल चिह्नो को देखकर चकित हुए। अपनी शका दूर करने के लिए उन्होने लाल बुझक्कड़ को बुलाया। उन चिह्नो को देखकर उन्होंने बताया कि भयभीत होने की कोई बात नही, यह तो हिरन अपने पैरो मे चक्की बाधकर कूद गया है।

ये लाल बुझक्कड़ हिन्दी लोक साहित्य मे एक ऐसे सयाने आदमी के प्रतीक बने हुए है, जो अपनी विलक्षण बुद्धि से काम लेकर ऐन मौके पर लोगों की सहायता करते हैं और उनकी शंकाओं का समाधान भी किया करते हैं। जन प्रवाद है कि ये बीरबल के पुत्र थे और उनका असली नाम लाल था।)

लाला का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा

इसलिए कि लाला जी उसे रखना नहीं जानते। बड़े आदमियो के नौकर चाकरों पर व्यंग्य।

लालों के लाल बन रहे है

बड़े आदमी के पुत्र से व्यंग्य में क० ।

लिखतम के आगे बकतम नहीं चलती

लिखित के आगे जबानी (बात या प्रमाण) की कोई वुकत नही होती।

लिखना आवे नहीं, मिटावें दोनों हाथ

नालायक के लिए क०।

लिखे ईसा, पढ़े मूसा, (मु०)

मूसा ही ईसा के लिखे को पढ़ सकते हैं। बुरी हस्तलिपि के लिए क० ।

लिखे न पढ़े, दूध मारे कढ़े

पढा-लिखा कुछ नहीं, बस, मालटाल उड़ाते रहे। व्यग्य मे मूर्ख लडके से क०।

लिखे न पढ़े, नाम मुहम्मद फ़ाजिल

मूर्ख के लिए क० ।

लिखे मूसा पढ़े खुदा, (मु०)

(१) खुदा ही मूसा के लिखे को पढ़ सकता है। (२) ऐसा खराब लिखा है कि जिसने लिखा, उसके सिवा कोई आकर पढ नही सकता। मूसा और खुदा मे श्लेष है।

मूसा = (१) पैगम्बर। (२) बाल जैसा महीन (मू + सा)।

खुदा = (१) ईश्वर। (२) खुद आकर (खुद + आ)।

लिहाज की आंख जहाज से भारी, (स्त्रि०)

दे० लाज की आंख। संकोच की वजह से जब कोई किसी से कुछ कह न पाए, अथवा किसी वस्तु के लिए इन्कार न कर पाए

लीक लीक गाड़ी चले, लीकहि चले कपूत।
लीक छोड़ि तीनहि चलें, शायर, सूर, सपूत।
गाड़ी ही बंधी हुई लकीर (मार्ग) पर चलती है, या फिर अकर्मण्य लड़का चलता है। कवि, वीर और पुरुषार्थी लड़का लकीर छोड़कर चलते हैं, अर्थात अपना नया मार्ग बनाते है।

लीप बहू दिवाली आई, पोत बहू दिवाली आई,
छेद-छिवाली माथ मारी, क्यों सासू यही दिवाली आई?
सास ने दिवाली के अवसर पर बहू से कस कर काम लिया, उसके बाद किसी बात पर नाराज़ होकर लीपने से बचा हुआ गोबर उठाकर उसके सिर से मार दिया, तब बहू ने ताना मारकर उक्त बात कही कि क्यो सासू जी, क्या दिवाली के उपलक्ष्य मे यही पुरस्कार तुमने मुझे दिया?

लीपूं ओटा, मरे मोटा
हे ओटा देव! कोई मोटा (धनी) आदमी मरे, तो मैं तुम्हे पूजा चढाऊंगा।
(किसी महापात्र ब्राह्मण का कहना। महापात्रो के घर मे 'ओटा' नाम के देवता की एक प्रतिमा रहती है और वे सदैव उसकी पूजा इसलिए किया करते हैं कि किसी धनी की मृत्यु हो जाए और उन्हे बहुत-सा धन मिले।)

लुगाई रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बाप से
दे० औरत रहे तो...।

लुटाया बिगाना माल, बन्दी का दिल दरियाव, (स्त्रि०)
जो नौकर अपने मालिक का पैसा बेरहमी से खर्च करते हैं, उनके लिए क०। कृतघ्न या नमक हराम के लिए क०।

लुहार की कूंची, कभी आग में, कभी पानी में
एक-सी स्थिति न रहना।

लूट का मूसल भी बहुत
मुफ़्त का जो मिले सो अच्छा।

लूट कोयलों की मार बर्छी की
कोयलों की लूट में बर्छी का घाव।
परिश्रम बहुत, लाभ थोड़ा।

लूट में चरखा नफ़ा
दे० लूट का मूसल...।

लूट लाए, कूट खाया
सफल चोर या ठग के लिए क०।

लूर न ऊर, चला मियां जगदीशपुर, (पू०)
अक्ल न शऊर और चले जगदीशपुर।

लेके दिया, काम के खाया, ऐसी तैसी जग में आया
जो दूसरो का पैसा लेकर न दे उसके लिए क०।

लेता मरे कि देता!
जो अपना कर्ज़ नही चुकाना चाहता, उसका कथन कि देखे मुझसे कौन लेता है और देता है तो कौन?

ले दे आटा कठौती में
किसी चीज़ को घुमा फिराकर अपने पास ही रख लेना, देने का केवल नाम करना।

लेना एक न देना दो
(१) न किसी से एक लो न दो देना पड़े।
(२) न हमे किसी से कुछ लेना है, न देना है, किसी से कुछ सरोकार नही।

लेना देना काम डोम दाढ़ियों का, मुहब्बत अजब चीज़ है
जो लेकर नही देते उन पर व्यंग्य।

लेना देना साढ़े बाईस
(१) सौदा पक्का करके भी फिर न खरीदना।
(२) कोरी बात करना, खरीदना कुछ नहीं।

लेने के देने पड़ गये
(१) लाभ की जगह उल्टी हानि हो गई।
(२) उल्टे मुसीबत मे पड़ गए।

लेने देने के मुंह में खाक, मुहब्बत बड़ी चीज़ है
(१) किसी का लेकर देने के वक़्त टरकाना।
(२) कजूस की उक्ति भी हो सकती है।

लेना न देना, काटे न मसले
व्यर्थ समय नष्ट करना, न सौदा करना, न खरीदना।

लेना न देना 'गाड़ी भरे चना'
कुछ खरीदना है नही, फिर भी कहते है 'एक गाड़ी चना तोल दो।' व्यर्थ की बात करना।

लेना न देना, झूठों मुंह छुटव्वल
कोरी बात करना, खरीदना कुछ नहीं।

लेना न देना, बातों का जमा खर्च
दे० ऊ० ।
(ऊपर की चारों कहावतों का लगभग एक-सा भाव है और दूकानदार उस समय उनका प्रयोग करते हैं, जब कोई ग्राहक बातचीत करके भी सौदा नहीं खरीदता ।)

ले लिया पल्ला और बीनन लागी सिल्ला, (हु०)
जो बिना पूछे किसी चीज में हाथ लगाता है या कोई काम करता है, उससे क० ।
(फसल कट जाने के बाद खेत में अनाज की जो फलियां या बालें पड़ी रहती हैं, उन्हे सिला कहते हैं। खेत कटते ही ग़रीब मजदूर उन्हें बीनने को दौड़ पड़ते हैं; तब मालिक उक्त प्रकार की बात कह कर प्रायः उन्हें मना करता है।)

ले लुंगड़ी, चल गुदड़ी, (स्त्रि०)
पुराने कपड़े उठा और जा गुदड़ी में। जो तेरा काम है सो कर।

लोमड़ी के शिकार को जाय, तो शेर का सामान कर लीजिए
किसी छोटी सी-मुसीबत का सामना करने के लिए भी इस तरह की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, जिसमें मौके पर अगर कोई नई बात सामने आ जाए, तो उससे भी निपटा जा सके।
(लड़ते वक़्त एक स्त्री दूसरी से कह रही है।)

लोहा करे अपनी बड़ाई, हम भी हैं महादेव के भाई
जब कोई फ़ालतू आदमी किसी बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति से अपना सम्बन्ध जोड़ता फिरे, तब क० ।
(यहां महादेव के त्रिशूल से मतलब है, जिसकी स्वय भी पूजा होती है।)

लोहा जाने लुहार जाने, धौंकनेवाले की बला जाने
अपने काम से काम रखना।
(धौकनी चलाने के लिए लुहार प्रायः मजदूर नौकर रखते हैं। कहावत का भाव यह है कि लोहा गरम हुआ है या नहीं, अथवा कैसा क्या गरम होगा यह देखना तो लुहार का काम है और उसी को उससे मतलब भी है, धौंकनेवाले को उससे क्या? उसे तो जो काम सौंपा गया सो किए जा रहा है।)

लोहे की मंडी में मार ही मार
लोहे की मंडी में तो दनादन हथौड़े ही चलते नजर आते हैं।

लौंडी की जात क्या? रंडी का साथ क्या?
भेड़ की लात क्या? औरत की बात क्या?
नौकरानी की जात का कोई ठिकाना नहीं होता, रंडी का साथ तो किसी हालत में नही करना चाहिए, भेड़ की लात इतनी कमजोर होती कि उससे चोट नहीं लग सकती, और औरत की बात का तो कभी विश्वास करना ही नही चाहिए।

लौंडी बन कर कमाना और बीबी बन कर खाना
परिश्रम करके कमाओ, और इज्जत से खाओ।

वकीलों का हाथ पराई जेब में
वकील हमेशा किसी-न किसी की जेब टटोलते रहते हैं।

वक़्त का गुलाम और वक़्त ही का बादशाह
(१) जब जैसा वक़्त तब तैसा बन जाना; अवसरवादी। अथवा (२) वक़्त ही कभी किसी को ग़ुलाम और कभी बादशाह बनाता है।

वक़्त का रोना बेवक़्त के हँसने से बेहतर है
हर काम अपने समय पर ही अच्छा लगता है।

वक़्त की खूबी है
समय का प्रभाव है। व्यंग्य में क०।

वक़्त को ग़नीमत जानिये
समय का सदुपयोग कर लेना चाहिए।

वक़्त निकल जाता है, बात रह जाती है
जब कोई किसी की सहायता करने से इन्कार कर दे, या किसी की शिकायत दूर न करे, तब क०।

वक़्त पड़े पर जानिए, को बैरी, को मीत?
विपद् पड़ने पर ही शत्रु-मित्र की पहिचान होती है।

वक़्त पर कुछ बन नहीं आती
विपत्ति में अक़्ल काम नहीं करती।

वक़्त पर कोई काम नहीं आता
जरूरत पड़ने पर किसी से सहायता नहीं मिलती।

वक़्त पर गधे को बाप बनाते हैं
अपने मतलब के लिए छोटे आदमी की खुशामद करनी पड़ती है।

वक़्त पर गांठ का पैसा ही काम आता है
जरूरत पर कोई देता नही, इसलिए।

वक़्त पर जो हो जाय सो ठीक है
न हो सके, तो फिर परेशान नहीं होना चाहिए।

वक़्त पर भाग जाना मर्दानगी नहीं है
जब लड़ना चाहिए, तब भाग जाना बहादुरी नही।

वक़्त पर सब कुछ करना पड़ता है
छोटे-से-छोटा काम भी समय पड़ने पर करना पड़ता है।

वक़्त पीरी शबाब की बातें, ऐसी हैं जैसे ख्वाब की बातें
बुढ़ापे में जवानी की बातें ऐसी जान पडती हैं, मानो स्वप्न की बातें हो।

वक़्त वक़्त की रागनी है
(१) समय-समय की बात है।
(२) हर काम का एक समय होता है।

वक्त सब कुछ करा लेता है
समय पड़ने पर सब करना पड़ता है।

वजीरे चुनीं शहर यारे चुनां, (फा०)
जैसा वजीर होता है वैसा ही बादशाह।

वलायत में क्या गधे नहीं होते?
मूर्खों की कहीं कमी नही होती। अच्छे बुरे सब जगह होते हैं।

वली का बेटा शैतान
संत के घर में बुरा लड़का।

वली के घर शैतान
दे० ऊ०।

वली को वली ही पहचानता है
संत की क़द्र संत ही करता है।

वली सब का अल्लाह, हम तो रखवाली हैं
मालिक सब (चीज) का ईश्वर है, हम तो रखवाली करनेवाले हैं।

वसीला बड़ी चीज है
किसी कंजूस का क०।
स्पष्ट।
वसीला=सहायता। जरिया। काम का रास्ता। हीला।

वसीले बिना रोजगार नहीं मिलता
बिना हीले या जरिये रोजी नही मिलती।

वह अपने दम से अच्छा है
वह स्वयं अच्छा है, (पर उसका परिवार नही)।

वह कमली ही जाती रही, जिसमें तिल बंधे थे
अवसर निकल जाने पर जब कोई किसी चीज की मांग करे, तब क०।
बहू की बिदा के समय उसके दुपट्टे के छोर में तिल-चावल बाध देने का रिवाज है। उसी से कहावत बनी।

वह कीमियागर कैसा, जो मांगे पैसा
स्पष्ट।
(प्राचीन काल में यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था; जो पारा, सीसा आदि धातुओं से सोना बनाने की फिक्र मे रहते थे। उसी से कहावत का भाव यह है कि वह रसायन शास्त्री ही कैसा, जिसे पैसे की जरूरत पड़े, वह तो स्वयं सोना बना सकता है।)
कीमियागर—रसायन विद्या जाननेवाला।

वह कुछ नाहर तो नहीं, जो खा जायेगा
जब कोई किसी के सामने जाने से डरे, तो उसका भय छुड़ाने को क०।

वह कौन-सी किशमिश है, जिसमें तिनका नहीं
कुछ-न-कुछ दोष हर चीज में होता है।

वह कौन-सी टपरी, जो हम से छपरी
वह कौन-सा घर है जो हमसे छिपा है? तात्पर्य यह कि तुम हमे क्या सिखाते हो; हम सब जानते हैं।

वह क्या मेरी खाला की खलबच्ची है ?

अर्थात उससे मुझे क्या मतलब ? वह मेरी कोई नहीं।

वह गुड़ नहीं जो च्यूंटियां खायं

हम तुम्हारी बातों में नही आने के। यहां तुम्हे कुछ नही मिलने का। प्रायः कंजूस के लिए क०।

वह गुड़ नहीं जो मक्खी बैठे

दे० ऊ०।

वह डूबें मझधार, जिन पर भारी बोझ

दुष्कर्मी के लिए क०।

वह तिरिया तो नित सुख पावे, जाका पुरखा जो चावे

जिस स्त्री का पति, उसे चाहता है, वह हमेशा सुख पाती है।

वह तिरिया पत नांह गंवावे; जाकी बर बर आंख लजावे

जिस स्त्री की आखो मे लज्जा होती हे, उसका धर्म नष्ट नही होता।

बर बर=बार बार।

वह तो शैतान से भी एक दर्जा ज्यादा है

बहुत शैतान है।

वह दफ्तर गाव खुर्द हो गए

उन दफ्तरों को गायों ने चर लिया। अर्थात वहा अब कुछ नही, केवल घास पैदा होती है।

वह दरबा ही जल गया

वह जगह ही अब नष्ट हो गई, वहां से अब कोई आशा नही।

दरबा=मुर्गों या कबूतरो के रहने का खानेदार घर।

वह दिन गये जो खलील खां फाख्ता मारते थे

वे मजेमौज के दिन निकल गए। अब तो फटेहाल हैं।

वह दिन गये जो भैंस पकौड़े हंगती थी

अब न वैसी आमदनी है, और न वैसा खर्च किया जा सकता है।

वह दिन कुब्बे, जब घोड़ी चढ़े कुब्बे

(१) वह दिन निकल गए, जब कुबड़ा घोड़ी पर चढ़ता था; अर्थात अब पहले जैसी धांधलीबाजी नहीं रही, या अब वैसा सुयोग नही मिलने का। (२) अभिशाप के रूप में भी कहावत का प्रयोग हो सकता है कि वह दिन गारत हो, जब कुबड़ा भी घोड़ी पर चढ़े।

वह नारी भी दिन दिन रोवे, जाका पुरख निखट्टू होवे।

जिस स्त्री का पुरुष अकर्मण्य होता है, वह हमेशा रोती है।

वह पानी मुलतान गया

(१) अब तो वह बात बहुत दूर चली गई। (२) तुम जो चाहते थे, वह अब नही होने का। (कथा है कि एक समय गुरु गोरखनाथ भक्त रैदास से मिलने आए। प्यास लगने पर उन्होंने पानी मांगा, जो रैदास जी ने उनके खप्पर में भर दिया। जब उन्हें ध्यान आया कि रैदास तो जाति के चमार हैं, तो उन्होंने पानी नही पिया और उसे खप्पर में ही रहने दिया। वहां से वे कबीर से मिलने गए। जब कबीर ने पूछा कि खप्पर मे क्या है, तो उन्होने असली किस्सा बता दिया। कबीर की लड़की कमाली, जो उस समय वहा बैठी हुई थी और रैदास की ख्याति से भली-भांति परिचित थी, उस पानी को पी गई। पानी पीते ही उसे दिव्य ज्ञान उत्पन्न हो गया। ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होते देख गोरखनाथ को होश हुआ और फिर रैदास जी के पास आकर उन्होंने पानी मांगा। इसी बीच में कमाली अपने पति के साथ मुलतान चली गई। रैदास ने अपने योगबल से सब हाल जानकर गोरखनाथ जी से कहा—प्यावत थे जब पिया नही, तब तुमने बहु अभिमान किया, भूला योगी फिरे दिवाना, वह पानी मुलतान गया।)

वह पुरखा इक दिन पछतावे, दया, धरम जो जी से ताहवे

जो मनुष्य दया धर्म हृदय से त्याग देता है, उसे एक दिन पछताना पड़ता है।

वह पुरखा तो फले और फूले; जो दाता को भूल न भूले

जो ईश्वर को (अथवा अपने उपकारी को) नहीं भूलता, वह सदैव फलता-फूलता है।

वह पुरखा दिन-दिन पछतावे, जो आमद से दुगना खावे

जो आमदनी से ख़र्च अधिक करता है, वह हमेशा पछताता है।

वह पुरखा भी अति दुख पावे, सीख बड़ों से जो फिर जावे

जो बड़े-बूढ़ों का कहना नहीं मानता, वह भी बहुत दुख पाता है।

वह पुरखा भी मूल है खोटा, पावे लाभ बतावे टोटा

वह मनुष्य भी बिल्कुल बुरा है, जो लाभ होने पर भी हानि बतावे।

वह पुरखा ले निपट भलाई, जिसको होवे खौफ़ इलाही

जो ईश्वर से डरता है, उसकी हमेशा प्रशंसा होती है।

वह बात कोसों गई

वह मौक़ा दूर निकल गया, अब नहीं आने का।

वह बिल्ली पूज के चलते हैं

अर्थात शकुन-अपशकुन बहुत मानते है।

(हिन्दुओं में बिल्ली को पवित्र माना जाता है, और उसे मारते नही।)

वह बूंद मुलतान गई

अब तो वह मौका निकल गया।

दे०---वह पानी मुलतान गया...।

(वाक्य का यह साधारण अर्थ भी हो सकता है कि वर्षा की वह बूद जो पंजाब की पाच नदियों मे से किसी एक मे गिरी मुलतान पहुंच गई है और अब हाथ नहीं आने की।)

वह बूंद वलायत गई

दे० ऊ०।

वह भला मानस कैसा, जिसके पास नहीं पैसा

पैसे से ही भला मानस बनता है।

वह भी ऐसे गये जैसे गधे के सिर से सींग

चुपचाप उठकर चले जाने पर क०। पता ही नही चला कब गए।

(गधे के सिर पर सीगों का निशान भी नहीं होता। कुछ जातियों के लोगों में यह विश्वास प्रचलित है कि पहले गधों के सींग और घोड़ों के पर होते थे। संभव है कहावत उसी आधार पर बनी हो।)

वह भी कन्या जिसके अबलख बाल

जिसके बाल सफ़ेद हो जाएं, क्या वह भी कन्या ही है। किसी अनहोनी या आश्चर्यजनक बात के लिए क०।

(हिन्दुओ में इतनी बड़ी उम्र तक स्त्री अनब्याही नही रह सकती।)

अबलख =आधा सफ़ेद आधा काला।

वह भी कुछ ऐसा तो न था

इतना बुरा नही था; (जितना सुनने में आ रहा है।)

वहम की दारू तो लुकमान के पास भी नहीं

शक्की को कोई नही समझा सकता।

दारू -दवा।

लुकमान -अरब के प्रसिद्ध हकीम और दार्शनिक। मुसलमानो मे उनका वही स्थान है जो हिन्दुओं में धन्वन्तरि का।

वहम की दारू ही नहीं

स्पष्ट। दे० ऊ०।

वह मड़ी हो जाती रही जहां अतीत रहते थे

(१) वह आदमी ही अब नही। अथवा

(२) वह समय ही अब जाता रहा। ऐसे मृत पुरुष की याद में कहते है, जो अपने जीवन काल में बहुत उदार रहा हो, और जिसके निकट अनेक लोगों को बराबर आश्रय मिलता रहता हो।

वह मर गये, हमें मरना है

हम व्यर्थ झूठ नही बोलेंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

वह मानस तो नित सुख पावे; सीख बड़ों की जो चित लावे

जो बड़े-बूढ़ों का कहना मानता है, वह हमेशा सुखी रहता है।

वह राजा मरता भला, जिसमें न्याव न होय।
मरी भली वह इस्तरी, लाज न राखे जोय।

वह राजा मर जाए तो अच्छा, जो न्याय न करे;

वह स्त्री भी मर जाए तो, अच्छा जो अपनी और दूसरो की लज्जा न रक्खे।

वह शराब पानी की तरह पीता है, (मु०)
बहुत शराबी है।

वह शैतान से ज्यादा मशहूर है, (मु०)
उसे हर कोई जानता है।

वह समय ही नहीं रहे
बीते दिनो की याद मे क०।

वहां उसके घर बसंत है, यहां मेरे घर बसंत है
इसलिए मैं क्यो उसके यहा जाऊ?

वहां तलक हंसिये जो न रोइये
हँसी-दिल्लगी या खुशी को सीमा के भीतर ही रखना चाहिए।

वहां फ़रिश्तों के भी पर जलते है
दे०—यहा फरिश्तो के. . ।

वही अपना जो अपने काम आवे
जो वक्त पर मदद करे, वही अपना।

वही ढाक के तीन पात
अर्थात (आर्थिक) अवस्था ज्यो की त्यो है, पहले से बिल्कुल नही सुधरी।
(ढाक की एक टहनी मे तीन ही पत्ते होते है।)

वही तीन बीसी, वही साठ, वही चारपाई वही खाट
बात वही है, कोई अतर नही, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

वही फूल जो महेश चढ़े
जिस वस्तु का सदुपयोग हो, उसी का होना सार्थक है।

वही बड़ा जग बीच है, जिन पूजा करतार।
बिन पूजा तो मनुष से, आछे माटी राख।
संसार में वही बड़ा है, जो ईश्वर की पूजा करता है। जो नही करता, उस मनुष्य से तो मिट्टी और राख अच्छी।

वही बड़ा है जगत में, जिन करनी के तान।
कर लीना है आपना महाराज भगवान।
संसार मे वही बड़ा है जिसने अपने सत्कर्मों के द्वारा परमपिता ईश्वर को अपना बना लिया है।

वही भला है मेरे लेखे, हक़ नाहक़ को जो देखे
जिसे कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान न हो, मेरी समझ मे वही मनुष्य अच्छा है।

वही मन, वही चालीस सेर
एक ही बात। किसी तरह कहो।
(एक मन मे चालीस सेर होते है।)

वही मनुष धनवंत है, वही मनुष बलवंत।
जो साईं के नाम पर, बैठा होय निचंत।
सतवाणी।
(वही मनुष्य (सच्च) धनवान और वही (सच्च) बलवान है जो भगवान के नाम पर निश्चिन्त बैठा हो।)

वही मनुष तो दे सके, राजन को सिख ज्ञान।
जो ना राखे लोभ धन, और धरे हाथ पर जान।
वही मनुष्य राजाओ को ज्ञान और उपदेश दे सकता है, जिसे धन का लोभ न हो और जो प्राणो को हथेली पर लिए रहे, अर्थात निडर हो।

वही रहेगा चैन में, लाभ किया जिन दूर।
साईं का कर आसरा, राखा जी भरपूर।
जिसने लोभ को दूर कर दिया है, और जो पूरी तरह भगवान पर निर्भर है, वही सुख से रहेगा।

वही राड़ की रांड़, वही बाबा पीटी
दोनों एक सी गालिया है। कुछ भी कहो, बात वही है। राड की राड़ एक बुरी गाली है; और बाबा पीटी, अर्थात पिता के द्वारा पीटी गई, यह भी गाली है।

वही राग गाना
वही दुखड़ा रोना। वही बात बार-बार कहना।

वाकी गति वाही जाने
(१) उसके मन की वही जाने।
(२) ईश्वर के लिए भी क० कि उसकी लीला वही जान सकता।

वाको आछा मत कहे, जो तेरे ढोरे आय।
करे बुराई और की, अपने तईं बचाय।
उस मनुष्य को अच्छा नहीं समझना चाहिए, जो तुम्हारे पास आकर अपनी तो बड़ाई करे, और दूसरों के दोष दिखाए।

.बोरे=द्वारे, दरवाज़े पर, घर पर।

बाको सीख न दीजिये, जो हो मूढ़ गंवार।
गाली मठ पर डाल दो, पकड़े नाहिं करार।

मूर्ख और गंवार को उपदेश देना व्यर्थ है। मंदिर के गुंबद पर अगर गोली डाल दो, तो वह कही रुकेगी नही; (लुढ़क कर नीचे आ जाएगी।)
करार—किनारा।

वा तिरिया तो एक दिन भाजे; जाकी आंख कभीं ना लाजे

वह स्त्री, जिसकी आंख में शर्म नही होती, कभी-न-कभी भाग जाती है।

वा तिरिया संग बैठ न भाई; जा को जगत कहे हरजाई

जिस स्त्री को दुनिया व्यभिचारिणी कहे, उस के पास नही बैठना चाहिए।

वादाखिलाफ़ी बुरी बात है

स्पष्ट।

वादाखिलाफ़ी—कथन के विरुद्ध काम करना। बचन देकर पूरा न करना।

वा दिन देखे जायेंगे, भले बुरे सब कार।
जा दिन लेखा लेगा, वो कादिर करतार।

परमपिता परमात्मा जिस दिन हिसाब लेगा, उस दिन सबके भले-बुरे काम देखे जाएगे।
फ़कीरो की उक्ति।

वा नर से मत मिल रे मीता, जो कभी मिरग कभी हो चीता

ऐसे मित्र से कभी मित्रता नही करनी चाहिए जो कभी तो हिरन और कभी चीता बन जाए, अर्थात कभी तो बहुत सीधा जान पड़े और कभी धूर्त बन जाय।

वा नारी को मत कूढ़ बताव, जासूं दिन दिन लाभा पाव

जिस स्त्री से तुम्हें सुख मिल रहा हो, उसे कूढ़ (बेवकूफ़) नही समझना चाहिए।

वा पुरखा की दिन दिन ख्वारी; जाकी तिरिया हो कलहारी

जिसकी स्त्री कलहकारिणी (झगड़ालू) होती है, उसकी दिन-प्रति-दिन ख़राबी आती है।

वा पुरखा को जगत सराहवे; जो हरी नाम के बल बल जावे

उस मनुष्य की संसार प्रशंसा करता है, जो अपने को भगवान के नाम पर न्यौछावर कर देता है।

वार करत पिय जात है, फेर न आवत हाथ।
वेग चरन पिय के गहो, जो भूल न छूटे साथ।

विलंब करने से पिय चले जाएंगे, फिर हाथ नही आएंगे, जल्दी उनके चरण पकडो, जिसमें फिर बिल्कुल साथ न छूटे।
पिय=(१) प्रियतम। ईश्वर से अभिप्राय है।

वार कहें उत पार है, पार कहें इत वार।
पकड़ किनारा बैठ रहो, यही पार यही वार।

इस पार को उस पार कहते है, और उस पार को इस पार। (सबसे अच्छा तो यह है कि) किनारा पकड़ कर बैठ रहो, और उसी को इस पार, उस पार समझ लो। तात्पर्य यह कि शब्दो के भ्रम में मत पड़ो। एक दृढ़ विचार के वशीभूत होकर काम करो।

वार न पार, अधम मांनैया, खेवा कहे कि 'उतरो भैया'

न तो यह किनारा न वह किनारा, मंझधार में नाव है, और मल्लाह कहता है कि 'उतरो भाई।'
चक्कर मे पड़ना।

वार वार पानी पीते है, (स्त्रि०)

बार-बार न्यौछावर हो रहे हैं।
(कुछ जातियो मे यह प्रथा है कि ब्याह के अवसर पर वर के सिर पर पानी घुमाकर मां पीती है। इसे पानी वारना कहते है। उसी से कहावत बनी। भाव यह है कि बड़े खुश है।)

वार वाले कहें पार वाले अच्छे, पार वाले कहें वार वाले अच्छे

हर आदमी दूसरे को अपनी अपेक्षा अधिक सुखी समझता है, अपनी अवस्था में किसी को संतोष नही मिलता।

वारी गई, फेरी गई, जलवे के बक़्त टल गई, (स्त्रि०)

ऊपरी लाड़-प्यार दिखाना, पर ज़रूरत के बक़्त खिसक जाना।

बारी कोरी जब गई, जब नेव धराई; (और) मुंह मोड़े बातें करे जब ताखों आई, बांध मुंडेरी उतरा, जम दिखे दिखाई

मकान बनने का रूपक है, जो स्त्री पर घटित किया गया है। जब नीव रक्खी जा रही थी (अर्थात जब ब्याह हुआ) तब बड़ी खुशामद करती रही, (कारीगर की) मकान बनने मे कोई बाधा न आ जाए, अर्थात पति नाराज़ न हो जाए। जब मकान बनकर मेहराब तक पहुचा (अर्थात जब अधेड़ हो गई) तो मुह मोड़कर बाते करने लगी, और जब मकान मुड़र तक पहुच गया तो कारीगर यम की तरह दिखाई देने लगा, अर्थात पति जब बूढा हो गया तो उसकी बिल्कुल उपेक्षा करने लगी।

बारी सोवे उठे सबेरे; वाको नांह दलिद्दर घेरे

जो देर से सोता और जल्दी उठता है उसे कभी दारिद्र्य नही घेरता।

वाह पीर अलिया, पकाई थी खीर, हो गया दलिया

अच्छा काम करने गए, पर बुरा हो गया।

(अलिया एक पहुचे हुए फकीर थे, जो हासी के निवासी थे। एक बार जब वे भीख मागते हुए घूम रहे थे, तो उन्होने एक औरत को कुछ पकाते हुए देखा। उन्होने पूछा 'क्या पकाती है?' औरत ने जवाब दिया 'दलिया।' जब कि वास्तव मे वह खीर पका रही थी। 'अच्छा, ऐसा ही सही।' कहकर अलिया साहब चल दिए। उनके जाने के बाद औरत ने बर्तन खोल कर देखा, तो उसमे खीर की जगह दलिया मिला। तब उसने कहावत के उपरोक्त शब्द कहे।)

वाह पुरखा, तेरी चतुराई; चून बेच कर गाजर खाई

घोर मूर्खता।

(गाजर एक बहुत सस्ती चीज़ है और उसे ढोर ही खात हैं। आटे के बदले मे, उसे लेना और खाना एक अहमकपन है। पुरखा का अर्थ सयाना है जो व्यंग्य मे प्रयुक्त हुआ है।)

वाह पुरखा, तेरी चतुराई, मांगा गुड़, लावी खटाई

कुछ करने को कहा और किया कुछ।

वाह पुरखा, मेरे चातुर ज्ञानी; मांगी आग, उठा लाया पानी

दे० ऊ०।

चातुर = चतुर।

वाह बहू, तेरी चतुराई, देखा मूसा, कहे बिलाई

असली बात न बताना।

वाह मियां काले, खूब रंग निकाले

'अपनी शकल ही बदल ली। पहिचाने ही नही जाते।' इस तरह का भाव छिपा है।

वाह मियां नाक वाले

व्यग्य मे कहा गया है।

नाक वाले इज्ज़त वाले।

वाह मियां बांके, तेरे दगले में सौ-सौ टांके

किसी छैल-चिकनिया के लिए व्यंग्य मे कथित।

दगला अगरखा, कुर्ती।

वाही नर को जान तू, पूरा अपना मीत।
जो राखे बिन लाभ के, तुझसे प्रीत परीत।

उसी मनुष्य को अपना सच्चा मित्र समझो, जो बिना स्वार्थ के प्रीत करे।

वैसा ही तोको फल मिले, जैसा बीज बुवाय।
नीम बोय के बाल के, गांडा कोई न खाय।

जैसा बीज बोओगे, वैसा ही फल मिलेगा, नीम बोकर ईख कोई नही खाता।

वोई नर भरपूर कहावे; अपने आप को जो बिसरावे

वही मनुष्य पूर्ण ज्ञानी है, जो अपने अहम् को—घमड को भूल जाता है।

शंका डायन, मनसा भूत, (हि०)

शंका ही डायन और मनसा (इच्छा) ही भूत है। अर्थात ये मनुष्य के शत्रु हैं।

शकल चुड़ैल की, मिजाज परियों का

जब कोई बदशकल (औरत) बहुत टिमाक से रहे, तब क०।

शकल भूत की-सी, नाम अलबेलेलाल
रूप तो बुरा, नाम अच्छा।

शक्करखोरे को खुदा शक्कर ही देता है, (मु०)
जो जिस योग्य होता है, ईश्वर उसे वैसा ही देता है।

शक्करखोरे को शक्कर ही मिलती है
स्पष्ट। दे० ऊ०।

शक्कर दिये मरे तो जहर क्यों दीजे
दे० गुड़ दिये मरे . . ।

शतरंज नहीं सदरंज है
शतरंज में सौ परेशानियां हैं। इसमें दिमाग बहुत लगाना पड़ता है, इसीलिए क०।
सद सौ।

शब्द भेद को लखा नहीं तो क्या हो पुस्तक चीन्ह लिये, जो दिल दिलबर से मिला नहीं तो क्या हो करवा कोपीन लिये
संतवाणी। शब्दो के अर्थ को यदि नही समझा, तो केवल पुस्तक पढ़ लेने से क्या लाभ हुआ ? दिल अगर दिलवर (प्रेमी यानी ईश्वर) से नही मिला, तो भिक्षापात्र लेना और साधुओ के कपडे पहिनना व्यर्थ है।

शमला ब मिकदारे इल्म, (फा०)
उसकी पगड़ी उतनी ही ऊंची जितना उसका ज्ञान। अर्थात् बड़ा दंभी है।

शमा का पुश्त और रू बराबर है, (मु०)
मोमबत्ती का आगा-पीछा एक-सा होता है। सज्जन के लिए क०, जिसके मन मे कोई छल-कपट नही होता।
(दुर्जन की उपमा चिराग से देते है,जिसके पीछे के हिस्से की छाया पड़ती है।)

शमा की रोशनी जलते तलक और दीये की रोशनी महशर तक, (मु०)
मोमबत्ती की रोशनी तो जब तक वह जलती रहती है, तभी तक रहती है; पर दीये (१. दीपक तथा २. दान) की रोशनी क़यामत के दिन तक रहती है। अर्थात दान-पुण्य स्वर्ग तक साथ देता है।

शमा के सामने चिराग़ की क्या ज़रूरत ?
चिराग की रोशनी मोमबत्ती से कम होती है, इसलिए क०।

शरन गुरु की आय के, जा सुमरे सियाराम। यहां रहे आनंद से, अन्त बसे हरिधाम। (हिं०)
जो गुरु की शरण में आके भगवान का भजन करता है, वह इस लोक मे आनद से रहता है, और अन्त मे स्वर्ग पाता है।

शरम की बहू नित भूखी मरे, (स्त्रि०)
जो बहू खाने-पीने में शर्म करती है, वह भूखों मरती है।

शरमाई बिल्ली खंभा नोंचे
अपनी शर्म छिपाने के लिए। चेहरे पर मूर्खता छा जाना।

शरह में शरम क्या ? (मु०)
व्यवहार में संकोच की ज़रूरत नहीं।

शराब कायथों की घुट्टी में पड़ती है
कायस्थ आमतौर से शराब पीते थे, इसीलिए कहावत बनी।

शराबख्वार हमेशा ख्वार
शराबी हमेशा दुर्दशा में रहते है।

शराब से सब नशे नीचे है
शराब से अच्छा और कोई नशा नही।

शराबियों से दूर ही भले
उनका संग न हो तो अच्छा।

शर्म चे कुत्तीस्त कि पेश मरदां बि आयद, (फ़ा०)
शर्म क्या कुतिया है जो मर्दों के पास आएगी ? बेशर्म के लिए व्यंग्य में क०।

शहद की छुरी
चिकनी-चुपड़ी बाते करनेवाला; धोखेबाज।

शहद लगा कर चाटो
ऐसे कागज़ या दस्तावेज के लिए, जिसके सम्बन्ध मे कोई कार्यवाही न की जा सके। मियाद से बाहर हुआ कागज़।

शहद, सुहागा, घी, भरी बात का जी
इन तीनों के सेवन से शरीर पुष्ट होता है।

धात=(धातु) शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ।

शहर का गुंडा है

गाली।

शहर का सलाम, देहात का दाल-भात

शहर में (कोरी) सलाम से खातिर करते हैं और तमें देहा भोजन से।

शहर में ऊंट बदनाम

जब कोई आदमी व्यर्थ ही बदनाम हो जाता है, तब क०।

शाकिर को शक्कर, मूजी को टक्कर, (मु०)

एहसान माननेवाले को मिठाई और कृतघ्न को थप्पड़ें, (मिलती है।)

शागिर्द क़हर, उस्ताद गजब

जैसा मालिक अत्याचारी वैसा ही नौकर भी जालिम।

शादी, खाना आबादी

ब्याह से घर बसता है।

शादी ग़मी सब के साथ है

सुख-दुख सब को लगा है।

शादी है, कुछ गुड़ियों का ब्याह थोड़ा ही है

शादी मे बहुत खर्च होता है। यह मत समझिए कि आप सस्ते निपट जाएगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

शान में क्या जुफ़्ते पड़ेंगे? (मु०)

शान मे क्या बट्टा लग जाएगा; (अगर तुम जैसा मैं कहता हूं वैसा करोगे तो)?

जुफ़्ते=शिकनें, सिकुड़ने।

शाबाश मियां तुमको, तूने मोह लिया मुझको

बेतुका या मूर्खतापूर्ण काम करने पर व्यंग्य में क०।

शाम के मुर्दे को कब तक रोये?

इस तरह कैसे पूरा पड़ेगा? सारी रात कोई रो नहीं सकता।

शाम भई दिन ढल गया, चकवी दीनी रोय।
चल चकवे वा देश में, जहां शाम कभी न होय।

स्पष्ट।

(लोगों की कल्पना है कि संध्या होते ही चकवा और चकवी बिछुड़ जाते हैं। एक नदी या तालाब के इस किनारे होता है तो दूसरा उस किनारे। वे फिर सारी रात इस प्रकार संभाषण करते रहते है: "चकवा मैं आऊं?" "नहीं चकवी।" "चकवी मैं आऊं?" "नही चकवा।")

शाह का माल भुईं पड़े दूना

साहूकार का माल नीचे गिर जाए, तो भी दुगना हो जाता है। वह हर सौदे मे मुनाफ़ा करता है।

शाह के दूने

स्पष्ट। दे० ऊ०।

शाह के सवाये कमबख़्त के दूने

जो कम मुनाफे से माल बेचे, वही (सच्चा) साहूकार है, जो अधिक मुनाफा खाता है उसका व्यापार नष्ट हो जाता है।

शाह खानम की आंखें दुखती हैं, शहर के दिये गुल कर दो, (स्त्रि०)

पुराने जमाने मे राजा या जमीदार अपने आराम के लिए जनता के सुख-दुख की ओर परवाह नही करते थे, उसी पर गहरा व्यंग्य।

(जब कोई झूठी नज़ाकत दिखाए, प्राय तब क०।)

शाह खानम बेगम।

शाहजहां बूढ़े, बगल में छड़ी, खाते-पीते बिपत पड़ी

बुढ़ापे में कष्ट होना।

(भारत का मुगल सम्राट शाहजहां जब बूढ़ा हुआ, तो उसके पुत्र औरंगज़ेब ने उसे क़ैद कर लिया था। उसी पर कहावत बनी।)

शाह जी की अमलदारी है

किसी राजा, ज़मीदार या हाकिम की अमलदारी (शासन) मे कोई अनोखी बात होना।

(यहा 'शाह जी' शब्द व्यक्ति विशेष के नाम के रूप में ही प्रयुक्त हुआ समझा जाना चाहिए, पर हो सकता है कि शिवाजी के पिता शाह जी भोंसला के नाम पर कहावत बनी हो।)

शाहिद वार-वार, मुकद्दमे वाले पार-पार

गवाह तो इस पार हैं, और मुकदमेवाले उस पार।

(१) उद्देश्यों की बिभिन्नता, एक कुछ कहे, दूसरा कुछ।

(२) घुमा फिरा कर जवाब देना।

शिकार के वक़्त कुतिया हगासी

काम के वक़्त (बहाना बनाकर) ग़ायब हो जाना।

शिकार को गये और खुद शिकार हो गये

दूसरे को मारने गए, और स्वयं ही मौत के घाट उतर गए।

शिकारी शिकार खेलें, कुतिया साथ फिरें

जो दूसरों के साथ (जो काम मे लगे है) अपना वक़्त खराब करे, उसे क०।

शिव जपें, न राम जपें, ना हरि से लावें हेत।
वे नर ऐसे जायेंगे, ज्यों मूली के खेत।

जो ईश्वर का भजन नही करते, वे मूली के खेत की तरह है।

शीन के झटक्के (या झड़प्पे)

जो 'स' की जगह तालव्यं 'श' का उच्चारण करते है, उनका मज़ाक उड़ाकर क०।

शुक सारी राखें सबै, काक न राखै कोय।
मान होत है गुनन ते, गुन बिन मान न होय।
(वृंद)

तोता मैना सभी पालते है, कौवा कोई नही पालता गुणो से ही इज्जत होती है, बिना गुणो के नही होती।

शुक्करवार की बादली, रहे शनीचर छाय।
ऐसा बोले भड्डरी, बिन बरसे ना जाय। (कृ०)

शुक्रवार के दिन बदली हो, और शनिवार तक छाई रहे, तो भड्डरी कहते है जल अवश्य बरसेगा। (भड्डरी के समय और जन्मस्थान आदि का ठीक पता नही चलता। पर वह उत्तर प्रदेश के बताए जाते है। उनकी वर्षा और शकुन संबंधी कहावतें जन-साधारण मे बहुत प्रसिद्ध है।)

शुग़ल बेहतर है इश्क़बाज़ी का, क्या हक़ीक़ी और क्या मजाज़ी का

इश्क़बाज़ी (प्रेम) का धंधा ही अच्छी चीज़ है, फिर चाहे वह आध्यात्मिक हो या लौकिक। शुग्ल=(शग़ल); कामधंधा। मनोविनोद।

शुतर गमज़े करते हैं

ऊँट जैसी नज़रों से देखते हैं। अर्थात
(१) चालाकी करते हैं।
(२) अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं।
(शुतुर गमज़ा करना, एक मुहावरा है जिसका अर्थ 'छल करना' है।)

शुनीदा कये बवद मानिंदे दीदा, (फ़ा०)

सुनना देखने जैसा नहीं होता। दोनों में अंतर है।

शेख़ क्या जाने साबुन का भाव ?

जिसका जिस काम से संबंध नही, वह उसका भेद-भाव क्या जाने।

शेख़ चंडाल, न छोड़े मक्खी, न छोड़े बाल

बहुत खाऊ के लिए तिरस्कारपूर्वक क०।

शेख़ ने कछुए को भी दग़ा दी है

कछुआ बहुत सीधा जानवर होता है। शेख़ ने उसे भी नही छोड़ा। धोखेबाज आदमी।

शेख़ ने कौवे को भी दगा दी

कौवा बहुत चतुर होता है। पर शेख़ उससे भी बढकर निकल गए।
(इसकी कथा है कि किसी शेख़ ने एक कौवे को पकड़ना चाहा। इसके लिए वह अपने मुंह में रोटी का एक टुकड़ा लेकर मृतवत जमीन पर पड़ा रहा। एक कौवे ने ज्यों ही उसके शरीर पर बैठकर उस टुकड़े को लेना चाहा त्यो ही उसने उसकी चोच अपने मुह से पकड ली। कौवे ने छुटकारा पाने का कोई उपाय न देख उसकी जात पूछी, यह सोचकर कि ज्यो ही यह मुह खोलेगा, मै उड़ जाऊंगा। पर शेख़ उससे भी अधिक चालाक निकला। उसने और भी मज़बूती से उसकी चोंच अपने दांतों के बीच दबाकर कहा—'शेख़')

शेख़ सद्दो का बकरा है

दुष्ट के लिए क०।
(शेख सद्दो एक जिन यानी भूत है, जिनके नाम से औरतें बहुत डरती हैं।)

शेख़सादी शीराज़ी, आशिक़ों के बादशाह, माशूक़ों के क़ाज़ी, (मु०)

फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि शेख़सादी के संबंध में किसी

मनचले की उक्ति।

शेखी और तीन काने

(पासे के) तीन काने आपने फेंके और उस पर भी इतनी शेखी!

(चौसर के खेल मे तीन काने बिल्कुल व्यर्थ माने जाते है। काना पासे पर की बिंदी या चिह्न को कहते है। एक बिदी की एक सख्या गिनते हैं।)

शेखी का मुंह काला

शेखीबाज को नीचा देखना पड़ता है।

शेखीखोरे से कहा–"तेरा घर जलता है" कहा–"बला से, मेरी शेखी तो मेरे पास है"

(१) शेखी के मारे घर की आग भी नही बुझाना चाहते। अथवा

(२) हजरत का घर जल गया है, फिर भी अकड ज्यो-की-त्यो।

शेखी सेठ की, धोती भाड़े की

किराये की धोती पर मेठ जी शेखी बघारते है। झूठी शान।

शेखों की शेखी, पठानों की टर,
'यहां न धोवेंगे, धोवेंगे घर'

शेख और पठान अपनी शेखी और घमड को घर जाकर ही धोते है। अर्थात बाहर हमेशा बडी अकड दिखाते है।

शेर का एक ही भला

लड़का सपूत हो तो एक ही अच्छा।

शेर का खाजा बकरी

शेर की खुराक बकरी है। सबल का भोजन निबल।

शेर का जूठा गीदड़ खाय

(१) आलसी और अकर्मण्य ही दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

(२) बड़ो से छोटो का बहुत काम चलता है।

शेर के बुरके में कीछड़े खाते हैं

जो घृणित उपायो से जीवन व्यतीत करते हैं, उन पर क०।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं

अच्छे शासन और प्रबंध के लिए क०।

शेरशाह की दाढ़ी बड़ी या सलीमशाह की?

मूर्खतापूर्ण बातो को लेकर जब कोई झगड़े और बहस करे, तब भर्त्सना करत हुए क०।

शेरों का मुंह किसने धोया?

उन छोटे बच्चो से हँसी मे कहते है जो साफ-सुथरे नही रहते।

शेरों के शेर ही होते हैं

यशस्वी पिता के लडके भी यशस्वी होते है।

शैतान की आंत, (मु०)

बहुत लबी चीज के लिए क०।

शैतान की खाला, (स्त्रि०)

दुष्ट और लडाकू औरत।

शैतान के कान काटे, (मु०)

ऐसा आदमी जो चालाकी (या दुष्टता) मे शैतान से भी बढ़कर हो।

शैतान के कान बहरे, (मु०)

शैतान बहरा हो जाय, अर्थात कोई एक बात ऐसे लोगो तक न पहुच जाए, जो उसका अनुचित लाभ उठा ले।

शैतान जान न मारे, हैरान तो जरूर करे, (मु०)

दुष्ट आदमी प्राण न ले, तो परेशान तो जरूर करता है।

शैतान तूफान से खुदा निगहबान, (स्त्रि०)

ईश्वर हमे शैतान और उसकी शरारतो से बचाए। बहुत बड़े शरारती के लिए क०।

शैतान ने भी लड़कों से पनाह मांगी है, (मु०)

लडको से शैतान भी घबराता है।

(इस पर कथा है कि किसी शैतान को लडको के साथ खेलने मे बडा आनद मिलता था। एक दिन वह गदहे के रूप मे उनके बीच खेलने आया। लडको ने उसे देखते ही उस पर सवारी गाठनी शुरू कर दी। चार लड़के तो आसानी से उसकी पीठ पर बैठ गए, पर जब पाचवे को कही जगह नही, मिली, तो वह उसकी दुम मे बांस बांध कर बैठ गया। शैतान के लिए यह असह्य हो गया। वह फ़ौरन वहां से रफ़ूचक्कर हुआ और फिर कभी लड़को के पास नही आया।)

शैतान सिरपर चढ़ रहा है, (मु०)
क्रोध के आवेश में होना।
शैतान से ज्यादा मशहूर
जिसे सभी लोग जानते हो, ऐसे के लिए व्यग्य मे क० ।
शौक़ दाद इलाही है
(काव्य कला आदि जैसी अच्छी चीजो का शौक स्वाभाविक होता है।
दादइलाही=ईश्वर का दिया हुआ।
शौकीन बहुरिया, चटाई का लहंगा, (मु०, स्त्रि०)
बेतुका शौक।
बहुरिया बहू।
पा०-शौकीन बुढिया
शौकीन बीबी, कम्मल की चोली;
चोली में आग लगल, तहलल फिरी, (मु०, स्त्रि०)
शौकीन बीबी ने कबल की चोली पहिनी, चोली मे आग लग गई, तो तलफती (हाय ! हाय ! करती) फिरी। किसी छैल छबीली औरत का मजाक।

सं

संख बजाओ, सोवो साधू, औ सुख पावे काया
ढोंगी साधुओं पर कटाक्ष ।
काया– शरीर।
संख बाजे, सत्तर बला टाले, (लो० वि०)
घर मे शख बजते रहने से विपत्तिया दूर होती है।
संग आमद-ओ सख्त आमद, (फा०)
पत्थर की चोट जब लगती है, तब कडी लगती है।
(१) विपत्ति पर विपत्ति आती है।
(२) कठिन समय मे धैर्य और तत्परता से काम लेना चाहिए ।
संगत अच्छी बैठिये, खैये नागर पान।
खोटी संगत बैठ के, कटे नाक और कान।
स्पष्ट ।
नागर=पान की एक जाति, नागौरी।
संगत का प्रभाव है
स्पष्ट। जब कोई बुरी सगत मे पड जाता है, प्राय: तब क० ।
संगत की फूट का अल्लाह बेली
भगवान आपस के झगडो से बचाए ।
संगत से फल होत है, वही तिली वहि तेल।
जात-पांत सब छोड़ के, पाया नाम फुलेल।
सगत का फल मिलता हे। तिलो का वही तेल (फूलो की महक मे बसकर) फुलेल कहलाने लगता है।
संग सोई तो लाज क्या? (स्त्रि०)
पास सोई तो फिर शरम किस बात की?
संतन की बानी सुने, प्रेम सहित जो कोय।
गंगादिक सब तीर्थ फल, बिन अस्नाने होय।
जो सतो की वाणी को प्रेमपूर्वक सुनता है, उसे गगा जैसी पवित्र नदियो मे स्नान करने का फल मिलता है।
संतोख कड़ुवा, पर फल मीठा
स्पष्ट।
संदल के छापे मुंह को लगे
तुम्हारी प्रतिष्ठा बढे। आशीर्वाद।
सदल के छापे चदन के तिलक।
संपत की जोरू, विपत का यार, (हिं०)
स्त्री धन की साथी है और सच्चा मित्र विपत्ति का साथी है।
संपत से भेंटा नहीं, दलिद्दर से टूं-टां, (पू०)
धन का तो अभाव है और दरिद्रता से लड़ते हैं, अर्थात ऐसा काम करते है जिससे हानि हो। मूर्ख मनुष्य।
सखी करीम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं।
बखील मूसलों से मोतियों को फोड़ते हैं।
दाता और उदार तो दुख पाते है, कज़ूस मौज़ करते हैं।
बखील—कृपण।
सखी का खजाना कभी खाली नहीं होता
दाता के पास पैसे की कमी कभी नही रहती।

सखी का बेड़ा पार और सूम की मट्टी ख्वार
दाता के सब काम बनते हैं, कंजूस कष्ट भोगता है।

सखी का बेड़ा पार है
स्पष्ट। दे० ऊ०।

सखी का सर बुलंद, मूजी की गोर तंग, (मु०)
दाता का सर ऊंचा रहता है, कृपण की कब्र तग रहती है। (वह वहा भी दुख पाता है) भिखारियो की टेर।

सखी की कमाई में सबका साझा
क्योकि वह दूसरो को बाटकर खाता है।

सखी की नाव पहाड़ चढ़े
दाता के कठिन-से-कठिन काम सफल होते है।

सखी के माल पर पड़े, सूम की जान पर पड़े
दाता का तो केवल धन खर्च होता है, (दान करने मे) पर कजूस के प्राणो पर आ बनती है, (चोर, डाकू उसे मार डालते है।)

सखी देवे और शरमावे, बादल बरसे और रमावेग
दाता दान देकर शरमाता है कि मैने थोडा ही दिया, पर बादल पानी बरसाकर गर्मी पकडता है, घमड करता है कि मैंने बहुत दिया।

सखी न सहेली, भली अकेली, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री जो अकेले रहना पसन्द करे।

सखी सखावत फलता है, अदू अदावत से जलता है
दानी दान से सुख पाता है, ईर्ष्यालु ईर्ष्या करके मरता है।

सखी सूम का लेखा बरस दिन मे बराबर हो जाता है
इसलिए कि कंजूस का धन चोर-डाकू इकट्ठा ले जाते हैं।

सखी से भेंटा नहीं तो सूम से क्यों बिगाड़े ?
मित्रता तो हरेक से रखनी चाहिए।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब
दाता से तो कृपण अच्छा, जो तुरंत नही कर देता है। देने मे जो बहुत टालमटोल करे, उससे क०।

सखी हो, हम हूं राजकुमारि !
ताना मार कर क०। हम भी बड़े आदमी हैं।

सगरी उमर में पाप कमाई, जनम न कीना पुन्न।
लेवनहारा आ गया, तो तन-मन हो गया सुन्न।
स्पष्ट। सत बचन।

सगरी रैन बन-बन फिरी, भोर भये कुएं से डरी, (स्त्रि०)
दिखावटी लज्जा। दुश्चरित्रा के लिए क०।

सगरे गांव घुर अइली, कहीं न देखो लबदा।
पटना सहर अइसन देखलिन, कांख तरे लबदा।
सब नगर और गाव मैने घूमे, पर कही लाभ नहीं दिखाई दिया, पर पटना नगर ऐसा है जहा बगल मे लाभ मौजूद है। (इससे जान पड़ता है पटना कभी व्यवसाय का बडा केन्द्र रहा होगा।)
लबदा = लब्धि, प्राप्ति।

सगरे घर में रंग के मुसरी सिर पटक के मर जा
(१) किसी को कोसना।
(२) विपत्ति मे पडे से भी कह सकते है।
मुसरी मूसल।

सगों बिन सगाई कैसी ? भलों बिन भलाई कैसी ?
सम्बन्ध तो सगे-संबंधियों से ही रहते है, और भलाई भलो से ही होती है।

सच और झूठ में चार अंगुल का फ़रक है
आख से देखी बात सच और कान से सुनी बात झूठ होती है, और आख तथा कान मे चार अगुल का अतर होता है। उसी से सच और झूठ का अतर चार अगुल बताया गया है।

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है
क्योकि सच बात किसी को अच्छी नही लगती।

सच कहे सो मारा जाय
दे० ऊ०।

सच की संसी बुरी होती है
सच की पकड़ बुरी होती है; लोग सच से घबराते है।
संसी=लोहे का एक औजार जिससे कोई चीज पकड़ते हैं; सड़ासी, जंबूरा।

सच बराबर पुन्न नहीं, झूठ बराबर पाप
स्पष्ट।

सच बात आधी लड़ाई होती है
दे०—सच कहना . . . ।
सच बात कड़वी लगती है
स्पष्ट।
सच बोलना और लड़ाई मोल लेना बराबर है
दे०—सच कहना . . . ।
सच बोलना और सुखी रहना
स्पष्टवादी का कथन।
सच बोल, पूरा तौल, (व्य०)
व्यापार का सूत्र।
सच सबको कड़वा लगता है
स्पष्ट।
सच है, हरामजादे की रस्सी दराज है
दुष्ट का अंत मुश्किल से आता है।
दराज=बड़ी।
सचाई में खुदा की सूरत है, (मु०)
स्पष्ट। सत्य ही परमेश्वर है।
सच्चा जाय, रोता आय; झूठा जाय, हंसता आय
अदालतों के न्याय पर क०, जहां झूठों की ही जीत होती है।
सच्चे की बहुरे, झूठे की न बहुरे
(१) सच्चे का समय आता है, झूठे का नहीं आता।
(२) सच्चे की बात सच साबित होकर रहती है।
सच्चे के आगे झूठा रो मरे
सच्चे के आगे झूठे की नही चल पाती।
सच्चे राम को छोड़ कें, पूजे देवी भूत।
आप बिचारे मर गये, उनसे मांगे पूत।
स्पष्ट।
सच्चे लोग कसम नहीं खाते
झूठी बात को सच साबित करने को ही क़सम खाई जाती है।
सजन चले परदेस को, धर घोड़े पै जीन।
जो मैं ऐसा जानती, चाबुक लेती छीन।
स्त्री का क०, जिसका पति विदेश चला गया है।
सजन तुम झूठ मत बोलो, खुदा को सांच प्यारा है।
कहावत है बड़ों की यूं, कभी सांचा न हारा है।
(स्त्रि०)
स्पष्ट।
सजन बिन ईद कैसी? (स्त्रि०)
पति के बिना उत्सव कैसा?
सजन सकारे जायेंगे, और नैन भरेंगे रोय।
बिधना ऐसी रैन कर, कि भोर कभी ना होय।
स्पष्ट।
किसी स्त्री का पति विदेश जा रहा है। वह कहती है 'हे भगवान् तू ऐसी (लंबी) रात कर कि कभी सबेरा ही न हो; जिसमें मेरे पति जा न सकें।
सज्जन चित कधू न धरे, दुर्जन जन के बोल।
पाहन मारे आम को, तऊ फल देत अमोल।
स्पष्ट।
पाहन=पत्थर।
सड़ी साहिबी और गच का सोना
झोपड़ी में रहकर महलों के ख्वाब देखना।
गच चूने का फर्श।
सत मत छांड़े हे पिया, सत छाड़े पत जाय।
सत की बांधी लच्छमी, फेर मिलेगी आय। (स्त्रि०)
हे प्रियतम! सत्य नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य छोड़ने से सम्मान जाता है, सत्य के वश में हुई लक्ष्मी फिर आकर मिलती है (चले जाने पर भी)।
सतरा बहतरा
फालतू आदमी। ऐरे ग़ैरे।
सतवंती का लाज बड़, छिनाली के बत बड़, (स्त्रि०)
पतिव्रता लज्जाशील होती है, और दुश्चरित्रा बहुत बातूनी अर्थात् निर्लज्ज।
सत हारा, गया मारा
जो सत्य छोड़ देता है, वह मारा जाता है।
सती कुच, भुजंगमणि, केसरि केस, गजदंत।
सूर कटारी, बिप्र धन, हाथ लगे जब अंत।
पतिव्रता स्त्री के स्तन (सतीत्व), सर्प की मणि, सिंह के बाल, हाथी के दांत, शूरवीर की तलवार.

और ब्राह्मण का धन, ये उनके मरने पर ही हाथ लगते हैं।

सत्त मान के बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा।
पूजा थी सो मालिन ले गई, मूरत को घर चाटा।
(कबीर)

मूर्तिपूजा पर व्यंग्य।

सत्तर कीने सात के, और सोलह के किए सौ।
ब्याज बुरा रे बालके, यासूं राखौ भौ।

सूदखोर और कर्ज पर क०।

सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली

बुरे कर्म करते हुए भी धर्मात्मा बनने का ढोंग करना। (बिल्ला की कथा बहुत पुरानी है। वह जातक और महाभारत में मिलती है। एक बिल्ली चूहो से यह झूठी बात कह कर कि अब तो मैने सन्यास ले लिया है और मास खाना भी छोड़ दिया है, एक-एक करके उन सबको खा जाती है।)

सत्तू खाके शुक्र क्या? (मु०)

सत्तू खाकर क्या धन्यवाद देना?
तुच्छ वस्तु पाकर प्रशसा क्या?

सत्तू बांध कर पीछे पड़ना

दृढ़ता के साथ उद्देश्य को पूरा करने मे लगे रहना।

सत्तू मनभत्तू, जब घुलवा जब खइबा, जब जइबा;
धान बिचारे भल्ले, कूटे खाये चल्ले; (पू०)

दो और दो पाच बताना, या काले को सफेद कहना। सत्तू को घोलने और खाने मे थोडा समय लगता है, जब कि धान को कूटना और चावल पकाना एक श्रमसाध्य कार्य है।

दे० पूरी कथा के लिए धान बिचारे.. ।

सत्य रहेगा, सब मरेगा

सत्य ही जीवित रहता है।

सदका दिये रद्द बला, (लो० वि०)

दान-पुण्य करने से विपत्तियां दूर होती हैं।

सदा ईद नहीं जो हलुवा खाये, (मु०)

आनंद के दिन सदा नहीं रहते।

सदा किसी की नहीं रही

हमेशा किसी के अच्छे दिन नहीं रहे।

सदा की पदनी, उरदों दोष, (स्त्रि०)

अपने किसी बुरे ऐब के लिए दूसरे को जिम्मेवार ठहराना।

पदनी=पादने वाली। उर्द पेट मे वायु पैदा करते है।

सदा के उजड़े, नाम बस्तीराम

शेखीबाज।

सदा के दानी, मूसल के नौ टके!

व्यंग्य में कृपण के लिए क० कि वह एक टके की चीज के नौ टके देता है।

सदा के दुखिया, नाम चंगे ख.

हैसियत के प्रतिकूल नाम।

सदा दिन एक से नहीं रहते

दुख और सुख आदमी को लगे ही रहते है।

सदा दिवाली संत के, जो घर गेहूं होय

घर मे खूब खाने-पीने को हो तो नित्य त्योहार है।

सदा दौर दौरा यह रहता नहीं, गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं

स्पष्ट।

दौरदौरा=प्रभाव, प्रताप, दबदबा।

सदा न काहू की रही, पीतम के गल बांह।
ढलते ढलते ढल गई, तरवर की-सी छांह!!

स्पष्ट।

सदा न फूले केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवे कोय।

सदा दिन एक से नही रहते।
(सावन आनद, उत्सव की ऋतु मानी जाती है।)

सदा नाम साईं का

ईश्वर का नाम ही सदा रहता है।

सदा नाव कागज की बहती नहीं

(१) कच्चा काम स्थायी नही होता।
(२) धोखा हमेशा नही दिया जा सकता।

सदा फूली फूली चुनी है

हमेशा फूली कलियां ही चुनी हैं; अर्थात मुरझाई कली कभी उसके हाथ नहीं आई।
भाग्यवान् के लिए क०।

सदा भवानी दाहने, सम्मुख रहें गनेश।
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
आशीर्वाद।

सदा मियां घोड़े ही तो रखते थे
किसी को व्यंग्य में क०।

सदा रहे नाम अल्लाह का
फकीरों की टेर।

सदा सुहागन
(१) व्यंग्य में वेश्या से क०।
(२) एक प्रकार के फ़कीर जो सधवाओ की तरह वस्त्राभूषण पहनते हैं।

सपूती रोवे टूकों को, निपूती रोवे पूतों को, (स्त्रि०)
जिसके बाल-बच्चे है उसके धन नही, जिसके धन है उसके बाल-बच्चे नहीं।

सपूतों के कपूत और कपूतो के सपूत होते आए हैं
अच्छों के बुरे और बुरो के अच्छे होते ही है।

सफ़र और सक़र बराबर
यात्रा और नरक दोनो बराबर हैं, अर्थात यात्रा में बहुत कष्ट होता है।

सफ़र और सक़र में एक नुक्ते का फ़र्क है
सफ़र (यात्रा) और सक़र (नरक) में बहुत थोड़ा अंतर है।
(फ़ारसी के फे अक्षर मे—जिससे सफ़र लिखा जाता है एक नुक्ता होता है, दो नुक्ता रखने से वही काफ़ बन जाता है, जिससे सक़र लिखते हैं।)

सफ़र कर्द : बिसयार मोयद दरोग, (फ़ा०)
(दूर देशों के) यात्री तरह-तरह की गप्प-हांकते है।

सफ़र, वसील-अये-जफर
यात्रा से ही प्राप्ति होती है; (ज्ञान या धन की)।

सब उस्तरे बांधो, कोई तलवार न बांधो।
कर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो।
(१) कायरों पर व्यंग्य।
(२) अंग्रेजों के जमाने के आर्म्स ऐक्ट पर भी ताना है।
दस्तार=पगड़ी।

सब एक ही थैली के चट्टे हैं
जहां सबके स्वार्थ एक से हों, अथवा सब एक-सी ही बात कहते हों, वहां क०।

सब एक ही माथे
(१) सब काम एक के ही ज़िम्मे। अथवा
(२) एक के माथे ही तिलक।

सबक़ और तबक़ दोनों मौजूद हैं, (मु०)
पाठ और भोजन दोनों।
(१) पुराने ज़माने में मक़तब में जो लड़के पढ़ने जाते थे, उनसे मौलवी साहब घर का सब काम भी करवाते थे। उसी से अभिप्राय है कि लड़कों को पढ़ाओ और उनसे भोजन भी बनवाओ।
(२) विद्यार्थियों को मिलनेवाली आर्थिक सहायता से भी मतलब हो सकता है।

सब काम थक्का, तो बुरा काम तक्का
जब कोई मनुष्य पेट के लिए ओछा काम करने लगता है, तब क०।

सब कामों में पूरी, कोई न कहे अधूरी, (स्त्रि०)
जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे व्यंग्य में क०।

सब की मैया सांझ
संध्या सबकी माता है। वह सबको अपनी गोद में विश्राम देती है।

सब कुछ गई, मियां, तेरी चुलबुल न गई, (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने बूढ़े पति से कह रही है।

सबकुछ गया, मियां की टखटख न गई, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
टखटख=बहुत बात करना। ऐब निकालना। खीझना।

सब के दांव अंडे-बच्चे, हमारे दांव कुड़क
सबको तो जहां कोई वस्तु मिल रही हो, पर स्वयं को न मिले, तब क०।
कुड़क=ऐसी मुर्गी जिसने अंडा देना बंद कर दिया हो।
कुड़क हो जाना=अंडा देना बंद कर देना।

सब के दाता राम
भगवान सब को देते हैं।

सब केहू बोले तो नीक लागला, कपूर बहू बोलें टिहुक बड़ेला, (स्त्रि०)

सास अपनी बहू के बारे में कह रही है जिससे वह बहुत अप्रसन्न रहती है—कोई और बोलता है तो मुझे अच्छा लगता है, पर जब कपूर बहू बोलती है तो मेरा बदन जल उठता है। बहू का पक्ष लेकर सास से भी कोई उक्त बात कह सकता है कि कोई और बोलता है, तो तुम कुछ नही कहती पर कपूर बहू के बोलने से तिनक उठती हो।

सब कोई झूमर पैरे, लंगड़ी कहे 'हमहूं', (स्त्रि०)

सब झूमर पहिनते हैं, तो लंगड़ी भी पहिनना चाहती है।

किसी वस्तु के उपयोग करने के योग्य न होने पर भी उसके पाने की इच्छा करना।

झूमर- पैरों में पहिनने का एक गहना।

सब कोई मिलियो, लंगोटिया न मिलियो

क्योकि वह बचपन की सब बाते जानता है।

लंगोटिया=छुटपन का साथी।

सब को ठेल, मैं अकेल

स्वार्थी मनुष्य, जो सब चीज अपने लिए ही चाहे।

सब गहनों में चन्दनहार

(१) चंद्रहार सब गहनो मे अच्छा होता है।

(२) सब मे अच्छा मनुष्य।

सब गुड़ मट्टी हुआ

बना-बनाया काम बिगड़ गया।

सब गुन की आगर धीया, नाक बिना बेहाल, (पू०, स्त्री०)

एक दुर्गुण होने से सब गुण नष्ट हो जाते हैं।

धीया=धी, लड़की।

सब गुन की आगर, फूटल गागर, (स्त्रि०)

गगरी में और तो सब गुण हैं, पर वह फूटी है।

दे० ऊ० ।

सब गुन पूरी, कौन कहे अधूरी, (स्त्रि०)

बेशऊर स्त्री को व्यंग्य में क०।

सब गुन भरी, बैतरा सोंठ

यंग्य में भ्रष्ट स्त्री या धूर्त के लिए क०।

(बैतरा सोंठ बहुत गुणकारी मानी जाती है, इसमें रेशा नहीं होता।)

सब घटा देते हैं मुफलिस के गरज माल का मोल

गरीब आदमी जब गरज पड़ने पर अपनी कोई चीज बेचता है, तो सब उसके कम दाम लगाते हैं। अर्थात गरीबों की सब उपेक्षा करते हैं।

सब घर मटियाले चूल्हे

(१) सब घरों का एक-सा ही हाल है।

(२) सब घरों में कोई-न-कोई बुराई मौजूद है।

सब जग रूठा, रूठन दे, एक वह न रूठा चाहिए

ईश्वर के प्रति किसी ऐसे मनुष्य का कहना है जिसका समय खराब आ गया है, और जिससे सभी ने मुंह मोड़ लिया है।

सब जीते-जी के झगड़े हैं, यह तेरा, यह मेरा है।
जब चल बसे इस दुनिया से, ना तेरा है ना मेरा है।
(नज़ीर)

स्पष्ट।

सबजी मत देव गंवारन को,
हंडिया भर भात बिगारन को, (पू०)

गंवारो को भंग मत दो, व्यर्थ भोजन का सत्यानाश मारेंगे ।

जो मनुष्य जिस वस्तु की क़द्र नहीं जानता, वह उसे नही देनी चाहिए ।

(भंग खाने से भूख खूब लगती है, पर हजम नहीं होता।)

सबजी में सुरखी, खबर लाये धुर की

भंग का नशा जब चढता है तो वह दूर-दूर की खबर लाता है। भंगेड़ियों का कहना।

सब तोड़ें, मेरा एक रब न तोड़े, (स्त्रि०)

दे०—सब जग रूठा...।

रब=ईश्वर।

सब दिन चंगे, तिहवार के दिन नंगे, (स्त्रि०)

खुशी के दिन खुशी न मनाना। स्त्रियां प्रायः बच्चों से कहा करती हैं।

सब धान बाईस पसेरी

(१) जहां सबको एक डंडे से हांका जाय, वहां क०।

(२) बहुत सस्ती चीज के लिए भी क०।

सब पीर छूटे, पकड़ी गई बीबी नूर, (मु०)

व्यंग्य में कहा गया है। मतलब है कि जो असली बदमाश थे, वे तो बच गए; पर एक ग़रीब पकड़ा गया।

सब पेड़ों में बड़ा जो बड़, आकाश वाकी चोटी पाताल, वाकी जड़, हरे हरे पत्ते, लाल लाल फर, अकबर बादशाह गीदी खर

कविता का मजाक उड़ाया गया है।

(कथा इस प्रकार है—यह जानकर कि अकबर बादशाह कविता के बड़े प्रेमी हैं और कवियों का विशेष सम्मान करते हैं चार देहातियों ने कोई कविता बनाकर उन्हें प्रसन्न करने का इरादा किया। तीन ने तो उपर्युक्त तुकबंदी के तीन चरण बना लिए, पर चौथे से कुछ न बन सका। इतने में एक भांड वहां से जा निकला। उसने उन चारों को कविता बनाने में व्यस्त देखकर चौथे चरण की पूर्ति कर दी। चारों देहाती खबर भेजकर दरबार में पहुंचे और बादशाह के हुक्म से अपनी-अपनी रचना सुनाने लगे। तीन तो बारी-बारी से अपने पद सुना गये, पर चौथे ने जब अपना पद सुनाया, तो सब दरबारी सन्नाटे में आ गए और बादशाह भी बहुत नाराज़ हुए। उस देहाती की समझ मे जब यह आया कि उससे कोई बड़ी भूल हुई है, तो उसने उस व्यक्ति को बता दिया जो वहीं बैठा हुआ था और जिसने वह चौथा चरण बनाया था। यह देखकर कि वह तो दरबार का ही मशहूर भांड है, बादशाह ने हँसकर मामले को टाल दिया।)

सब बातों में है यारो, यही सगुन दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त।

सब बातों में बस यही बात ठीक है कि ईश्वर इज्ज़त से रक्खे और तन्दुरुस्त रक्खे।

सब मद मदई हैं, विद्या मद उन्माद

सब नशो में विद्या का नशा अधिक है, वह मनुष्य को पागल बना देती है।

सब शकल लंगूर की, एक दुम की कसर है

सिलबिल्ले लड़के से क०।

सब सबके, मैं अलग, (स्त्रि०)

अपने को छोडकर (तुम पर) सब न्यौछावार। दिखावटी प्रेम।

सब संसै मिट जायगा, जब होगा राम सहाय।
रानी उस भगवान से लीजे ध्यान लगाय।

स्पष्ट।

राजा नल का दमयंती के प्रति कथन।

संसै=संशय।

सब से बड़ी भूख, जो पावे सो चूख

भूख मे जो मिलता है, वही खा लिया जाता है।

सब से बेहतर है, मियां, साहब सलामत दूर की

किसी से बहुत घनिष्ठता बढ़ानी ठीक नही।

सब से भला किसान, खेती करे और घर रहे

जीविका के लिए जो बाहर जाते है, उन पर क०।

सब से भली चुप

स्पष्ट।

(स०—मौनम् सर्वार्थ साधकम्।)

सब से भले मूसलचंद, करें न खेती, भरें न दंड

किसानों को जो सरकारी लगान देना पड़ता है, उस पर कहा गया है कि मूर्ख अच्छा जो खेती नही करता, और किसी परेशानी में नही पड़ता।

सब से मीठी भूख

भूख में सब चीज अच्छी लगती है।

सब से रलमिल चालिये, जब लग पार बसाय।
मिष्ट बचन मुख बोलिये (जो) नेकी ही रह जाय।

स्पष्ट।

रलमिल—हिलमिलकर।

सब से हिलिये, सब से मिलिये, सब से कीजे चाव।
हां जी, हां जी सब से कहिये, बसिये अपने गांव।

सबको प्रसन्न रखकर चलना चाहिए।

सब ही कूकर जो काशी जायें, तो पातर चाटन कौन आयें? (स्त्रि०)

सब कुत्ते अगर (तीर्थ यात्रा के लिए) काशी जाएं, तो पत्तल चाटने कौन आए?

मूर्ख यदि समझदारी का काम करने लगे, तो फिर समझ-दारों को कौन पूछे।

सब ही जात चमार की, बिना चाम नहिं कोय।
बिना चाम वह आप है, जिसको लखे न कोय।
स्पष्ट।

सब ही बात खोटी, सिरे दाल रोटी
(१) दाल रोटी सबसे अच्छी होती है। अथवा
(२) दुनिया मे दाल रोटी ही मुख्य है।

सबेरे का टहलना, दिन भर की खुशी
सुबह घूमने से दिन भर चित्त प्रसन्न रहता है।

सबेरे का भूला सांझ को भी आवे, तो भूला नहीं कहलाता
अपनी भूल को जब कोई स्वयं ही जल्दी सुधार ले, तब क०।

सब्र का अजर खुदा देगा, (मु०)
संतोष का फल ईश्वर देता है।

सब्र कर मन में, तो सुख लहे मन में
संतोष से सुख मिलता है।

सब्र की डाल में मेवा लगता है
संतोष का फल अच्छा होता है।

सब्र की दाद खुदा के हाथ है
संतोषी की ईश्वर सहायता करता है।

सब्र की दाद खुदा देगा
दे० ऊ०।

सब्र तल्ख अस्त, व लेकिन बरे शीरीं दारद, (फ़ा०)
संतोष कड़ुवा है, पर उसका फल मीठा होता है।

सभा की चूकी डोमनी और डाल का चूका बंदर बराबर
डोमनी अगर किसी के यहां मौके पर गाने-बजाने न जा पाए, तो हानि उठाती है; इसी तरह डाल का चूका बंदर भी हानि उठाता है।

सभा बिगारें तीन जनें, चुगल, चूतिया, चोर
जिस सभा में चुगल, चूतिया (फालतू आदमी) और चोर ये तीन मौजूद हों, उस सभा का सब आनद जाता रहता है।

सभी पदारथ पान है, एक ही औगुन आह।
जाके कर पै धरत हैं, बिदा करत हैं ताह।
पान बहुत अच्छी चीज है, पर उसमें एक ही अवगुण है कि जिसे देते हैं, उसे विदा करने के लिए ही देते हैं।
(राज-दरबारों में यह नियम था कि जब कोई राजा से मिलने जाता था, तो विदा करते समय राजा उसे अपने हाथ से पान देते थे। उसका अर्थ यह होता था कि 'भेंट समाप्त हो गई, अब आप जाइए।' उक्त दोहे मे उसी पर कटाक्ष है।)

सभी मिसरी की हैं डलियां
(वे) सभी भले मानुस हैं।

सभी सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपक देत बुझाय।
(वृन्द)
बलवान के सब सहायक होते है, निर्बल का कोई नही। हवा आग को प्रज्वलित करती है, और दीपक को बुझा देती है।

समझ का घर दूर है
समझदारी एक मुश्किल चीज है।

समझनेवाले की मौत है
(१) समझदार पर ही सब काम की जिम्मेवारी आकर पड़ती है, इसलिए कोई काम अगर बिगड जाए, तो उसकी बुराई भी उसी को भुगतनी पड़ती है।
(२) समझदार चुप नही रह पाता, और अगर वह अपनी कोई स्पष्ट राय जाहिर कर देता है, तो उसकी मुसीबत आ जाती है।
(इसकी कथा है कि एक बार अकबर बादशाह के दरबार में किसी अच्छे गवैये का गाना हो रहा था। उसे सुनकर सब अपना सिर हिला रहे थे। बादशाह ने अचभे मे आकर बीरबल से पूछा क्यों 'ये सब लोग गाना समझते है?' बीरबल ने उत्तर दिया 'इसका पता मैं अभी लगाए देता हूं।' और उन्होंने दरबारियो को संबोधन करके कहा कि 'आप लोगों का जहांपनाह के सामने इस तरह सिर हिलाना अच्छा नही मालूम देता। अब अगर कोई ऐसी गुस्ताखी करेगा, तो उसका सिर कलम कर दिया जाएगा।' इस पर सब संभलकर बैठ गए, और गाना चलता

रहा। थोड़ी देर में एक बूढ़े दरबारी के मुंह से निकल पड़ा—'हे भगवान समझदार की मौत है।' बीरबल ने पूछा—'क्यों भाई, क्या बात है?' तब उस दरबारी ने जवाब दिया—'क्या बताऊं, गाना सुनकर मैं सिर हिलाए बिना नहीं रह सकता और आपने उसके लिए मना कर दिया है।' तब बीरबल ने बादशाह से कहा कि 'जहांपहान' यही एक साहब हैं जो गाना समझते हैं। बाकी तो सब यों ही सिर हिला रहे हैं।')

समझा और पत्थर हुआ
समझदार अपने विचारों को आसानी से नहीं बदलता।

समझाये समझे नहीं, मन नहिं धरता धीर।
प्रालब्ध पहले बनी, पीछे बना शरीर।
स्पष्ट।
प्रालब्ध=प्रारब्ध, भाग्य।

समझे सो गधा, अनाड़ी की जाने बला
समझदार की मुसीबत है।

समझो न बूझो, खूंटा ले के जूझो
बिना समझे हठ करना। दुराग्रही।

समय चूक पुन का पछताने
अवसर निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है।

समय न बारंबार, (हिं०)
अच्छा अवसर बार-बार नहीं आता।

समय समय की बात है
कभी सबल को भी दुर्बल के आगे दबना पड़ता है।

समय समय की बात, बाज पर झपटे बगुला
दे० ऊ०।

समय समय के दाता राम, (हिं०)
समय पर भगवान सहायक होते हैं।

समय समय सुन्दर सभी, रूप कुरूप न कोय
अपने-अपने समय पर सभी अच्छे लगते हैं, स्वयं कोई न रूपवान होता है, न कुरूप।

समा करे (नर क्या करे) समय समय की बात।
किसी समय के दिन बड़े, किसी समय की रात।
मनुष्य कुछ नहीं करता। परिस्थितियां ही सब करवाती हैं। समा=समय।

समुन्दर क्या जाने दोजख का अजाब, (मु०)
समुद्र नरक के कष्टों को क्या जाने?
(क्योंकि नरक में तो हमेशा आग भभकती रहती है और समुद्र पानी का ढेर है। पानी क्या समझे कि आग क्या चीज है?)

समुन्दर सोख को दरया क्या?
जो समुद्र को सोख सकता है, उसके लिए नदी कोई बड़ी चीज़ नहीं।
(अगस्त्य ऋषि ने समुद्र सोख लिया था। उसी ओर संकेत है)

सम्मन ऐसी प्रीत कर जैसी करे कपास।
जीते तो हुरमत रखे, मुए चलेगी साथ।
प्रेम तो कपास की तरह करना चाहिए, जो जीते-जी शरीर को ढक कर इज्जत रखती है और मरने पर कफ़न बनकर साथ जाती है।

सम्मान ऐसी प्रीत कर, जैसे शक्कर घीउ।
जात पांत पूछे नहीं, जिससे मिल जाय जीउ।
प्रेम तो शक्कर और घी की तरह करना चाहिए, (सब उनकी दृष्टि में बराबर हैं।) जिससे प्रेम हो जाए, उसकी जात-पांत नहीं पूछनी चाहिए।

सम्मान ऐसी प्रीत कर, ज्यों हिन्दू की जोय।
जीते-जी तो संग रहे, मरै पै सत्ती होय।
स्पष्ट।

सम्मन चूड़ी कांच की, कौड़ी कौड़ी देख।
जब गल लागी पीऊ के, लाख टके की एक। (स्त्रि०)
कांच की चूड़ी एक बहुत सस्ती चीज़ है, पर वही जब सधवा के हाथ में पहिनी जाकर (उसके) प्रियतम के गले से लगती है, तो उसका मूल्य लाखों रुपए हो जाता है।

सम्मन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे पर जो जोड़ हो, बीच गांठ पड़ जाय।
स्पष्ट।

सम्मन वह दिन कौन से, जो सुख से लाए पीत।
अब कुछ वे न्यारे भये, कौन गांव की रीत।
स्पष्ट।

सम्मन वह फल कौन से, जो पक्के पै कड़वास।
कच्चे लगें सुहावने, गद्दर करें मिठास।
मनुष्य की तीन अवस्थाओं पर०।
पक्के पै=वृद्ध होने पर। कच्चे=बचपन में
गद्दर=युवावस्था मे।
सम्मन सांझ अंधेर मां, भूल बाट मत चाल।
जान गंवावे एक दिन, संग गंवावे माल।
सध्या के बाद अंधरे में यात्रा नही करनी चाहिए।
जान-माल का खतरा रहता है।
सम्मन सांसा मत करो, सिर पर है साईं।
जो कुछ लिखा लिलाट में, भेजेंगे याहिं।
स्पष्ट।
सासा सशय।
सयाना कौवा खे खाय
अपने को बहुत होशियार समझनेवाला मनुष्य जब कोई स्पष्ट भूल कर बैठे, तब क०।
खे मल, विष्ठा।
सयाने का गू तीन जगह
जो बहुत होशियार बनता है, वही हमेशा धोखा खाता है।
(दो मित्र एक साथ कही जा रहे थे। रास्ते मे कही उनके पैरो मे विष्ठा लग गई। एक ने तो तुरंत अपना पैर धो डाला। पर दूसरे ने सोचा कि यह विष्ठा है या नही, इसका क्या सबूत? इसलिए उसे हाथ लगाकर देखा। जब इस पर भी उसे निश्चय न हुआ तब, उसने हाथ को सूघा; जिससे विष्ठा उसकी नाक मे, लग गई। इस प्रकार वह तीन जगह गदा हुआ।)
सयाने तो हैं बहुत से, सब से सयाना छोह।
हीना देख हो चौगुना, ठांडे पर कम होय।
क्रोध सबसे समझदार है, वह ताकतवर पर तो कम, और कमज़ोर पर अधिक बल दिखलाता है।
सरकार से मिला तेल, पल्ले ही में मेल
सरकार से छोटी-से-छोटी वस्तु भी मिले, तो उसे प्रसन्नतापूर्वक लेना चाहिए।
सरदारी का डंडा अटका है
जो अपनी बीती हुई प्रतिष्ठा के अभिमान में रहकर कोई छोटा पद स्वीकार नहीं करना चाहता, उसे क०।
सरदी का मारा पनपता है, अन्न का मारा नहीं पनपता
सरदी से आदमी बच सकता है, पर भूख से मर जाता है।
सरधा ढाल जो पहने खावे, वाके टोटा कभी न आवे
जो अपनी हैसियत के अनुसार चलता है, उसे कभी किसी बात की कमी नही रहती।
सरधा=श्रद्धा, सामर्थ्य।
सरधा लागल, कइलों भतार, ओहू निकसल जात के चमार, (स्त्रि०)
बडे चाव से तो खसम किया और वह भी निकला जात का चमार! (अभिलाषा का पूरा न होना।)
सरफियां रा मग्ज़ बायद चूं सगां; नहवियां रा मग्ज़ बायद चूं शहां, (फा०)
विभक्ति या प्रत्यय के प्रयोग के लिए बहुत समझदारी की आवश्यकता नहीं पड़ती। पर पदयोजना के लिए विशेष योग्यता चाहिए। (अरबी भाषा के संबंध में कहते हैं।)
सरसों फूले फाग में, और सांझी फूले सांझ।
नाह कभी फूले फले, जो तिरिया हो बांझ।
फागुन के महीने में सरसों और सूर्यास्त के समय सांझ फूलती है, पर बांझ स्त्री कभी नही फलती-फूलती अर्थात कभी पुत्रवती नहीं होती।
(संध्या समय आकाश में जो लाली फैलती है उसे सांझ फूलना कहते है।)
सराय का कुत्ता हर मुसाफिर का भार
मुफ़्तखोर।
सराहल बहुरिया डोम घर जाय, (स्त्रि०)
सराही बहू भंगी के साथ निकल जाती है।
जो व्यक्ति हमारी दृष्टि में बहुत योग्य होता है, उससे ही कभी-कभी हमें बहुत निराशा भी होती है।
सरेसे का टट्टू बना फिरता है
इन्द्र का घोड़ा बना फ़िरता है।
निकम्मे आदमी से व्यंग्य में क०।
सरेस—सुरेश, इन्द्र।

सला न शुद, बला शुद, (फा०)
निमंत्रण क्या, एक मुसीबत थी।

सलामत रहे बहू, जिसका बड़ा भरोसा है, (स्त्रि०)
किसी का लड़का मर जाने पर उसे दिलासा देते हुए क०।

सलाम बिसर मियां जी क्यों रुसाये ?
(१) सलाम न करके मिया जी तुमने (उसे) नाराज़ क्यो कर दिया ? अथवा
(२) मिया जी तुम इतने नाराज़ क्यो हो गए जो (हमसे) सलाम नही किया ?
भाव यह है कि अपने अशिष्ट व्यवहार से किसी को अप्रसन्न करना ठीक नही।

सलीते में मेख लश्कर में शेख न रक्खे
बोरे में कील-कांटा न रक्खे और फौज में शेख को भर्ती न करे।
(मुसलमानो के चार फिरके है सैय्यद, मुगल, पठान और शेख। इनमे शेख लडने मे बोदे माने जाते थे।)

सलेमो बिन ईद कैसे ? (स्त्रि०)
सलेमो के बिना भला ईद कैसे हो सकती है ? उनके बिना तो मजलिस सूनी ही रहेगी।
(सलेमो किसी छैल-छबीली औरत का काल्पनिक नाम है।)

सबाब न अजाब, कमर टूटी मुफ्त में
निष्फल परिश्रम।
सबाब पुण्य।
अजाब=पाप।

सवाल दीगर, जवाब दीगर
पूछा जाय कुछ, जबाब मिले कुछ।

ससुरार सुख की सार, जो रहे दिना दो-चार
ससुराल बहुत अच्छी चीज़ है, पर वहा अधिक न रहे।
(इस पर कथा है कि एक कायस्थ अपनी ससुराल गए। वहा अपना विशेष आदर सत्कार देखकर उन्होने पहला वाक्य कहा। जब उनके साले ने देखा कि ये तो यहां जमकर रहना चाहते हैं, तो उसने दूसरा वाक्य उसमें जोड दिया। पूरी कहावत इस प्रकार है: ससुरार सुख की सार, जो रहे दिना दो चार। रहे मास पखवारा, हाथ मे खुर्पा बगल में खारा।)

सस्ता ऊंट, मंहगा पट्टा
उल्टी बात। ऊंट मंहगा और पट्टा सस्ता मिलना चाहिए।

सस्ता गेहूं, घर-घर पूजा, (पू०)
अच्छी और सस्ती चीज़ का लोग खूब उपभोग करते है।

सस्ता रोवे बार-बार, मंहगा रोवे एक बार
सस्ती वस्तु खराब होने के कारण रोज़-रोज़ बिगडती है, पर महगी चीज़ का एक बार दाम अधिक जरूर लग जाता है, पर वह टिकाऊ होती है।

सस्ता हँसावे, मंहगा रुलावे, (कृ०)
सस्ता अन्न होने पर लोग प्रसन्न रहते है, महगा होने पर कष्ट पाते है।

सस्ती भेड़ की टांग उठा कर देखते हैं
सस्ती चीज़ को बार-बार देखते है, इसलिए कि उसके अच्छे होने मे सदेह रहता है।

सस्ते को देखभाल कर लेना चाहिए
कि कही खराब न हो।

सहता सहे, न सहता छाती दहे
(१) सहने योग्य बात ही सही जाती है, जो असह्य है, उससे छाती जलती है।
(२) जो सहनशील है, वह सब सह लेता है; असहनशील से बडा कष्ट पहुचता है।

सहरी खाये सो रोजा रक्खे, (मु०)
रोजे के दिनों मे मुसलमान सूर्योदय के पहले ही कुछ खाना खा लेते है। फिर दिन भर कुछ नही खाते। सुबह का वह भोजन ही सहरी कहलाता है ?
(कथा है कि एक मिया साहब के पास एक कुत्ता था। एक दिन उस कुत्ते ने उनकी सहरी खा डाली। इस पर मियां साहब ने नाराज होकर उसे एक खंभे से बाध दिया और कहा कि बस अब आज मेरे बदले यह कुत्ता ही रोजा रक्खेगा, क्योंकि

इसने ही सहरी खाई है। इस प्रकार मियां साहब ने उस कुत्ते की ओट लेकर स्वयं अपने को रोजा रखने की मुसीबत से बचा लिया और दोपहर मे मजे से खाना खाया।)

सहरी भी न खाऊं तो काफ़िर न हो जाऊं, (मु०)

सहरी के लिए दे० ऊ०।

(इसकी भी कथा है कि एक समय बहुत से मुसलमान इकट्ठे होकर सहरी खा रहे थे। उनमे एक मुसलमान ऐसा भी था, जो रोजा नही रक्खे हुए था। उसे अपनी पंक्ति मे देखकर सबके सब कह उठे कि तुम क्यों सहरी खा रहे हो? तुम क्या रोजा रख रहे हो? इस पर उसने जवाब दिया—मै तो नमाज भी नही पढ़ता, न रोजा ही रखता हू, अब अगर सहरी भी न खाऊ तो क्या काफिर हो जाऊ? मतलब की बात तुरत ढूढ लेना।)

सहस्सर गोपी एक कन्हैया

एक वस्तु के अनेक चाहक।

सहस्सर डुबकी मै लई, मोती लगा न हाथ।
सागर का क्या दोष है, हीन हमारे भाग।

भाग्यहीन पुरुष।

सही गए, सलामत आए, (स्त्रि०)

जो किसी काम से कही जाकर असफल लौटे, उससे व्यंग्य में क०।

साईं अंखियां फेरियां, बैरी मुलक जहान।
टुक इक झांकी मिहर दी, लक्खां करें सलाम। (पं०)

ईश्वर जिससे विमुख होता है, ससार उसका बैरी हो जाता है, और जिस पर उसकी कृपा होती है, सब उसे सिर झुकाते हैं।

साईं अपने चित्त की, भूल न कहिये कोय।
तब लग मन में राखिये, जब लग कारज होय।

जब तक काम न हो जाए, तब तक अपना मनोविचार किसी पर प्रकट नही करना चाहिए।

साईं इस संसार में, भांत भांत के लोग।
सब से मिल के बैठिये, नदी-नाव संजोग।

जैसे नदी पार होते समय एक नाव मे सभी तरह के लोग इकट्ठे हो जाते हैं, वैसे ही इस संसार मे भी सभी प्रकार के लोगो से काम पड़ता है, इस कारण सबसे मिलकर रहना चाहिए।

साईं का घर दूर है, जैसे लंब खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना-चूर।

ईश्वर का घर बहुत ऊंचा है, जैसे खजूर का पेड। यदि वहा तक पहुच सके, तो (प्रेम) रस पीने को मिलता है, और यदि (फिसलकर) गिर जाए, तो नष्ट हो जाता है।

साईं का रख आसरा और वाही का ले नाम।
दो जग में भरपूर हों (तो) तेरे सगरे काम।

ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उसी का नाम लेना चाहिए, तो दोनो लोको मे (मनुष्य के) सब काम सफल होते है।

साईं का सुमरन करो, जो होयं संपूरन कार।
साईं भी सन्मुख मिले और भगत करे संसार।

ईश्वर का स्मरण करने से सब कार्य सफल होते हैं। ईश्वर भी मिलता है और ससार भक्त के रूप मे याद करता है।

साईं के दरबार में, बड़े बड़े हैं ढेर।
अपना दाना बीन ले, जिसमें हेर न फेर।

ईश्वर के यहा किसी बात की कमी नही है, मगर तुम्हारे भाग्य मे जो बदा है, वही तुम्हे मिलेगा। आशय यह कि जो तुम्हें मिले, उसी मे सतोष करो, किसी से ईर्ष्या मत करो।

साईं के सौ खेल हैं

ईश्वर की लीला अद्भुत है, वह क्या किया चाहता है, पता नही चलता।

साईं को सांच प्यारा, झूठे का मालिक न्यारा

ईश्वर सच्चे को प्यार करता है, झूठे का कोई ईश्वर ही दूसरा है।

साईं घोड़ मर गये, गदहन आयो राज।
काग हाथ पै लेत हैं, दूर कियो है बाज।

योग्य का सम्मान न होना।

साईं जिसके साथ हो, उसको सांसा क्या?
छिन में उसके कार सब, दे भगवान बना।

ईश्वर जिसका सहायक हो, उसे किस बात का

डर ? भगवान उसके सब काम पल भर मे बनाता है।

साईं जिसको राख ले, मारन हारा कौन ?
भूत, देव, क्या आग हो, क्या पानी क्या पौन ?

भगवान जिसकी रक्षा करता है, उसे कोई मार नही सकता।

पौन=पवन, हवा।

साईं तेरा आसरा, छोड़े जो अनजान।
दर-दर हांडे मांगता, कौड़ी मिले न दान।

जो ईश्वर पर निभर नही करता, उसे मागे से भीख भी नही मिलती।

हाडे=फिरता है।

साईं तेरी याद मे, जिन तन कीना खाक।
सोना उसके रूबरू, चूल्हे की राख।

ईश्वर के ध्यान मे जिसने अपना शरीर धूल बना डाला उसके लिए सोना चूल्हे की राख के समान है।

साईं तेरी सोहली और आदर करे न कोय।
दुर-दुर करें सहेलियां, मैं मुड़-मुड़ देखूं तोय।
(स्त्रि०)

हे स्वामी! मैं तो तुम्हारी ही दासी हू, (फिर भी) कोई मेरा आदर नही करता। सब सखिया मुझे अपने से दूर भगाती है, और मै मुड-मुड कर तेरी ओर देखती हू। भक्त का ईश्वर को उलाहना।

साईं तेरे आसरे, आन परे जो लोग।
उनके पूरे भाग हैं, उनके पूरे जोग।

जो ईश्वर की शरण मे जाता है, वही भाग्यवान और योगी हे।

साईं तेरे कारने, छोड़ा बलख बुखार।
नौ लख घोड़े पालकी, और नौ लख असवार।

हे प्रियतम! मैंने तेरे लिए बलखबुखारा छोडा, लाखो घोडे पालकी और लाखो सवार छोड दिए हैं—(मुझे तुम अपनी शरण मे लो। भक्त का ईश्वर के प्रति निवेदन।)

साईं तेरे कारने, जिन तज दिया जहान।
ठेठ किया बैकुंठ में, उसने जहां मकान।

हे ईश्वर! तेरे लिए जो संसार को छोड देता है, उसे स्वर्ग मिलता है।

साईं तेरे नेह का, जिन तन लागा तीर।
वो ही पूरा साधु है, वोही पीर फकीर।

जिसे ईश्वर से सच्चा स्नेह है, वही पूरा साधु और सत है।

साईं ते सच्चा रहो, बंदे ते सत भाव।
भावें लंबे केश रख, भावें घोंट मुड़ाव।

चाहे सिक्खो की तरह लबे बाल रक्खो, चाहे हिन्दुओ की तरह उन्हे कटवा डालो, पर ईश्वर के प्रति सच्चे रहो, और सबसे सद्भाव रक्खो।

साईं तो बिन कौन है जो करे नवड़िया पार।
तू ही आवत है नजर, चहूं ओर करतार।

स्पष्ट।

नवडिया—नाव।

साईं मोर आप बिचझल, लोग दिहल पोचारा।
लात, मूका हम सहलौं, और सहलौं दू गारा।
(स्त्रि०)

स्त्री का कहना—मेरा पति स्वयं मुझसे नाराज था, लोगों ने उसे शह दे दी। मैंने मार सही और गालिया भी सही। बलती आग मे घी डालना।

पोचारा (पुचारा) भीगे कपडे से पोछने का काम। पतला लेप करने का काम।

पोचारा (पुचारा) देना = (मु०) खुशामद करना, बढावा देना।

साईं राज बुलंद राज, पूत राज दूत राज

विधवा का कथन, क्योकि पति के समय मे उसे जो सुख प्राप्त था, वह अब पुत्र के समय मे नही है।

बुलद ऊचा।

दूत राज निकृष्ट राज।

साईं साईं जीभ पर, (और) गरब, कपट मन बीच।
वह नर डाले जायेंगे, पकड़ नरक में खींच।

जो मन के कपटी और अहंकारी हैं, और ऊपर से ईश्वर का नाम लेते हैं, वे नरक मे जाते हैं।

साईं सांसा मेट दे, और न मेटे कोय।
वाको सांसा क्या रहा, जा सिर साईं होय।

जिसका ईश्वर सहायक है, उसे किसी बात का भय नही।

सांसा=संशय।

सांई से जो फिर गया, उसको लाभ न होय।
वह तो यूं ही जायगा, जनम अकारथ खोय।

जो ईश्वर से विमुख है, उसका जीवन वृथा है।

सांई से सांची कहूं, बाज बाज रे ढोल।
पंचन मेरी पत रहे, सखियों में रहे बोल।

हे प्रियतम ! मैं तेरे प्रति सच्ची रहूं (ढोल इसकी घोषणा करे या साक्षी दे), पंचो मे मेरी इज्जत रहे और सखियों में भी मेरी बात।

सांच को आंच नहीं

सच्चे को आग नही जलाती, अर्थात उसे किसी बात का भय नही होता।

(प्राचीन काल में किसी व्यक्ति के दोष या निर्दोष होने की परीक्षा उसे अग्नि पर चला कर अथवा जलता हुआ तेल, पानी या लोहा उसके बदन से छुआकर करते थे। कहावत उसी संदर्भ मे कही गई है।)

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके मन में सांच है, ताके मन में आप।

जिसके मन मे सत्य है, उसके मन मे ईश्वर का वास होता है।

सांची बात गोपालै भावे

ईश्वर को सत्य प्रिय है।

सांची बात सादुल्ला कहे, सब के मन से उतरा रहे

सच बात किसी को अच्छी नही लगती।

सांचे गुरु का बालका, मरे न मारा जाय

जो सच्चे गुरु का चेला है, वह किसी से डरता नही।

सांचों कोई न मानें, झूठों जग पतयाय

सच बात कोई नही मानता, झूठ सब मान लेते हैं।

सांझ आये और भोर आये, वह कैसे न छिनाल कहाये

भ्रष्टाचारिणी के लिए क०।

सांझी चली सांझ से, साथ बसंता पूत।
माधो भी तो जात है, बांध कमर के सूत।

स्पष्ट।

(किस्सा है कि किसी गांव में माधो नाम का एक गड़रिया रहता था। उसकी स्त्री का नाम सांझी और लड़के का नाम बसंता था। जब उस पर बहुत कर्जा हो गया और लोगों ने कड़ा तक़ाज़ा किया, तो उसने कहा—'मैं मागूंगा नहीं और जो जाऊंगा तो कहकर जाऊँगा।' एक दिन होली के दिनों में स्वांग बन कर और उक्त दोहा सबको सुनाकर, वह चंपत हो गया।)

बाध कमर के सूत—कमर से फेंटा बांध कर।

सांटे की सगाई और ब्याजू रुपए का एहसान क्या ? (व्य०)

बदले का ब्याह और ब्याज पर लिये गये रुपए मे किसी का क्या एहसान ?

(साटे की सगाई या ब्याह उसे कहते हैं, जिसमें किसी के लड़के के साथ अपनी लड़की का ब्याह करते समय बदले में अपने लड़के का ब्याह उसकी या उसके किसी रिश्तेदार की लड़की से कर देते है।)

सांटे की सगाई सेधे, तेल की मिठाई सेधे

बदले का ब्याह और तेल की मिठाई, दोनों ही खराब होती है।

सांप और चोर की धाक बड़ी होती है

दोनो से डर लगता है, (फिर चाहे वे कोई हानि न करें)।

सांप और चोर दबे पर चोट करते हैं

दोनो से डर लगता है, फिर चाहे वे कोई हानि न करे।

इन्हे जब अपने ऊपर आक्रमण का कोई भय होता है, तभी वे आक्रमण करते हैं।

सांप का काटा पानी नहीं मांगता

क्योंकि उसके काटने से जल्दी मौत आ जाती है। धूर्त जिसे अपने चक्कर में फंसा लेता है, वह फिर पनपता नहीं।

सांप का काटा रस्सी से डरता है

एक बार कोई कटु अनुभव हो जाने पर मनुष्य

उस प्रकार के सामान्य मामले मे भी फिर बहुत सावधान रहता है।

सांप का काटा सोवे, बिच्छू का काटा रोवे

सांप के काटने से आदमी बेहोश हो जाता है और मर भी जाता है; पर बिच्छू का जहर तेज जलन पैदा करता है, जिससे रुलाई आती है।

सांप का बच्चा संपोलिया

साप का बच्चा भी सांप जैसा ही जहरीला होता है। जब किसी दुष्ट का लडका भी दुष्टता करे, तब क०।

सांप का सिर भी कभी काम आता है

किसी वस्तु को निकम्मी समझकर फेक नही देना चाहिए।

सांप का सिर ही कुचलते हैं

इसलिए कि फन मे ही जहर होता है और फन के कुचलने से ही वह मरता है।

सांप की तो भाप भी बुरी, (लो० वि०)

उसकी हवा भी बुरी।

दुष्ट से दूर रहना चाहिए।

सांप की-सी केंचली झाड़ दी

लंघन के बाद रोगी को जब आराम हो जाता है, तब कहते है कि उसका नया शरीर बन गया।

सांप के मुंह मे छछूंदर, निगले तो अंधा, उगले तो कोढ़ी

दोनो तरह से मसीबत। कोई काम करो तो भी आफत, न करो तो भी आफत।

(कहा जाता है कि छछूदर अगर सर्प के मुह मे फस जाय और सर्प यदि उसे निगल ले, तो वह अधा हो जाता है और छोड दे तो कोढी।)

सांप निकल गया, लकीर पीटा करो

अवसर पर काम न करके बाद मे करने से कोई लाभ नही होता।

सांप मरे, ना लाठी टूटे

(१) सांप तो मर जाए, पर लाठी न टूटे। अपना काम भी बन जाए और कोई हानि भी न हो।

(२) साप भी न मरे और लाठी भी न टूटे; अर्थात दो मनुष्यो के बीच का झगडा आसानी से निपट जाए।

(३) युक्ति पूर्वक काम करने के लिए भी क०।

सांप, सतावा, चोकिया, तीनों जीउ निकास।
जब लग पार बसाय तो, बैठ न इनके पास।

सांप, शत्रु और ठग, इनसे जहां तक बन सके; दूर ही रहना चाहिए।

जीउ निकास=प्राण लेनेवाले।

सांप सब जगह टेढ़ा चलता है, पर अपने बिल में सीधा जाता है

जहां जैसा अवसर हो, वहा वैसा ही बर्ताव करना चाहिए।

सांप, सिंह, जित देह पखालें,
ढोर, मनुख हालन ज्यों हालें, (ग्रा०)

सर्प और सिंह जहा होते हैं, वहा सब जीव भय से कापते रहते हैं।

हालन=डोलन, भूकप।

सांपों की सभा में जीभों की लपालप

वहा और होगा क्या ?

जहा बहुत से गप्पी आदमी इकट्ठे हो गये हो और कोरी बकवास हो रही हो, वहा क०।

सांभर जाय, अलोना खाय

इससे बढकर मूर्खता और आलस्य की बात कुछ हो नही सकती।

दे०—तेली खसम किया...।

साभर=प्रसिद्ध झील, जहा के खारे पानी से नमक बनता है।

सांभर में नोंन का टोटा

जिस वस्तु की जहा प्रचुरता है, वहा के लोग उसी के अभाव से कष्ट पाए, तब क०।

सांभर में पड़ा सो सांभर हुआ

सांभर झील का पानी इतना खारी है कि उसमे जो वस्तु गिरती है, वह भी गलकर नमक बन जाती है। आशय यह है कि किसी वस्तु (या समाज) के प्रबल प्रभाव से अपने को बचाना बड़ा कठिन होता है।

सांस सांस में जीतब घटे, बाधा मूल न होय।
इस जीतब पर फूल कर, मत भूलो हरि कोय।

हरेक सांस के साथ जीवन घट रहा है, इसमे कोई

बाधा नहीं पड़ती, इस जीवन पर घमंड करके ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए।

सांसा भला न सांस का, और बान भला ना कांस का

कांस की रस्सी जिस तरह अच्छी नही होती, उसी तरह एक क्षण के लिए भी भय (या चिन्ता) करना अच्छा नहीं।

सांसा मत कर मूरखा, सिर पर है करतार।
बोही है सब जगत का, सांसा मेटनहार।

जब ईश्वर जैसा सहायक मौजूद है, तब चिंता किस बात की? वही संसार के सब कष्टो को दूर करनेवाला है।

सांसा सांई मेट दे, और न मेटे कोय।
जब हो काम संदेह का, तो नाम उसी का लेय।

ईश्वर ही मन के संशय को दूर करता है। जब कोई दुविधा की बात हो, तब उसी का स्मरण करना चाहिए।

सांसा सुध-बुध सभी घटावे, सांसा सुख का खोज मिटावे

संशय (या डर) बुरी चीज है। संशय मे पडे मनुष्य को सुख नही मिलता।

साईसी इल्म दरयाव है

साईसी करने के लिए भी अक्ल चाहिए। सभी पेशो मे कुछ-न-कुछ रहस्य की बात होनी है। मूर्ख से व्यग्य मे क०।

साईसों का काल मुंशियों की बहुतात

साईस कम और मुंशी बहुत मिलते है। पढे-लिखो में बेकारी।

साख गये फिर हाथ न आये

लेन-देन के बारे में एक बार विश्वास उठ जाने पर फिर नही लौटता।

साख लाख से भली, (व्य०)

लाखों रुपयों की अपेक्षा साख बड़ी चीज है।

साग में शोरबा, अंडे में पानी, क्यों बीबी पठानी, (स्त्रि०)

फूहड़पन से काम करना।

साजन आवत हूं सुनो, कुछ नीरे कुछ दूर।
पलकन ही से झाड़ लूं उन पांवन की धूर। (स्त्रि०)

सुना है प्रियतम आ रहे हैं, नजदीक ही हैं, या दूर हों; आने पर पलकों से उनके पैरों की धूल साफ़ करूंगी। प्रेम की अधिकता।

साजन दुखिया कर गये, और सुख को ले गये साथ।
अब दुख दे न्यारे भये, बहुर न पूछी बात। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

बहुर = फिर।

साजन पीत लगाय के, दूर देस जिन जाव।
बसो हमारी नागरी, हम मांगे तुम खाव। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

साजन! यों मत जानियो, तोहि बिछरत मोहि चैन।
आले बन की लाकड़ी, सुलगत हूं दिन रैन। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

आले बन की—हरे जंगल की।

साजन वह दिन कौन थे, जो सुख से लाये पीत।
अब दुख दे न्यारे भये, कौन गांव की रीत। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

साजन साजन मिल गये, झूठे पड़े बसीठ, (स्त्रि०)

लडाई-झगड़े के बाद दो मित्र या सगे-संबधी तो आपस मे मिल जाते है, पर उनका पक्ष लेने-वाले व्यर्थ मे मूर्ख बनते है।

साजन हम तुम एक हैं, देखत ही के दोय।
मन से मन को तौल ले, दो मन कभी न होय।

स्पष्ट।

मन शब्द के दो अर्थ है

(१) सुहृदय। (२) चालीस सेर की तौल।

साझा जोरू खसम ही का भला

साझा अच्छी चीज नही।

साझा भला न बाप का, ताव भला न ताप का (व्य०)

साझे का काम बाप के साथ भी अच्छा नही।

साझा सधे न बाप का, (व्य०)

साझा बाप के साथ भी नहीं निभता।

साझा सधे न बाप का, है रासे की खान।
घर न्यारा कर बालमा, बात मेरी तू मान। (स्त्रि०)

स्त्री पति से कह रही है कि बाप के साथ हम लोगों

की नहीं बन सकती। अच्छा है, हम लोग अलग ही रहें।

साझे का काम, उजाड़े काम

साझे के काम मे हमेशा झगड़ा हुआ करता है।

साझे की मां गंगा न पावे, (हिं०)

लड़के साझे की मां के अंतिम संस्कार की भी परवाह नही करते। जब बाप मरा तो सारी संपत्ति बट गई, केवल मां साझे में रही। जब वह मरी तो उसे गंगा नही मिली।

साझे की सुई सांग में चले

साझे की सुई लट्ठे पर चलती है। अर्थात इस बात का झगडा होने पर कि उसे कौन ले चले, लट्ठे से बांधकर ले जाते हैं।

साझे की हांड़ी चौराहे में फूटे

साझे के काम की बडी दुर्गति होती है।

साझे की होली सब से भली, (हिं०)

मिलजुलकर जो उत्सव मनाया जाता है, वही अच्छा होता है।

(भाव यह है कि उत्सव मनाने का काम ही ऐसा है जो मिलजुलकर किया जा सकता है।)

साठ गांव बकरी चर गई

कोई बड़ा नुकसान हो जाने पर क०।

(कथा है कि किसी समय कोई एक राजा शिकार से बहुत थका हुआ लौट रहा था और रात हो जाने के कारण किसी गरीब आदमी की झोपड़ी में आ टिका। उस गरीब ने राजा की यथाशक्ति आवभगत की। प्रातःकाल चलते समय उसकी सेवा से संतुष्ट होकर साठ गांव का दान एक पत्ते पर लिखकर उसे दे दिया। दुर्भाग्यवश उसकी एक बकरी ने उस पत्ते को खा डाला। दूसरे दिन वह बेचारा रोता-कलपता राज-दरबार में पहुंचा और उसने वहां चिल्लाकर उक्त वाक्य कहा। राजा ने उसे पहचान लिया। और उसके नाम दूसरा दानपत्र लिख दिया।)

साठ सास, ननद हों सौ; मां की होइ न इन सूं हो, (स्त्रि०)

मां की बराबरी न तो सास ही कर सकती है और न ननद ही।

(फिर वे चाहे जितनी अच्छी क्यों न हों।)

साठा नाठा

(१) गाली।

(२) ऐसा आदमी जिसके आगे-पीछे कोई न हो।

नाठा – (सं० नष्ट) भाग्यहीन पुरुष।

साठा सो पाठा, बीसी सो खीसी

साठ वर्ष का होने पर भी पुरुष जवान रहता है और स्त्री बीस वर्ष मे ही बुड्ढी दिखाई देने लगती है।

साढ़ा टिढ़ गड़बड़ाया, हगन दा वेला आया (पं०)

पेट गड़बड़ हो तो पाखाने हो आना चाहिए।

साढ़ी की साख और पीपल की लाख, (कृ०)

रबी की फसल और पीपल की लाह ये दोनों अच्छी होती है।

सात तवों से मुंह काला करना, (स्त्रि०)

सात घरो मे जाकर बैठना, (सात खसम करना।)

(१) भ्रष्ट स्त्री के लिए क०।

(२) कोई बहुत बुरा निंदनीय काम करनेवाले से भी।

सात पांच की लाकड़ी, एक जने का बोझ

कई एक आदमियों के हाथ की एक-एक लकड़ी मिलकर एक आदमी के लिए बोझ हो जाती है। सबकी सहायता से जो काम आसानी से हो जाता है, वही एक आदमी के लिए मुश्किल पड़ जाता है।

सात पांच पकुआ न, एक गूलर, (पू०)

कई पकुओं से एक गूलर अच्छा।

एक लड़का अगर सपूत निकले, तो वही बहुत।

(पकुआ एक बहुत बेस्वाद जंगली फल होता है।)

सात पांच मिल कीजे काज, हारे जीते न आवे लाज

कोई भी (शुभ) कार्य दस-पांच लोगों के साथ मिलकर अथवा उनसे सलाह लेकर करना चाहिए।

वैसा होने से काम अगर बिगड़ भी जाए, तो शर्मिन्दगी नहीं उठानी पड़ती।

सात मामा का भानजा, न्यौता ही न्यौता फिरे; (हिं०)

उसे फिर कोई भोजन नहीं कराता, हरेक का यह ख्याल रहता है कि वह किसी दूसरे के यहां खा आया होगा; इसलिए वह भूखा ही रह जाता है। जिस काम के बहुत से लोग जिम्मेवार होते हैं, वह फिर अधूरा ही पड़ा रहता है। सबका काम किसी का भी काम नहीं समझा जाता।

सात मामा का भानजा, भूखा ही भूखा पुकारे

दे० ऊ०।

सात सौ चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली

दे०--सत्तर चूहे...।

सात हाथ हाथी से रहिये, पांच हाथ सिंगहारे से।
बीस हाथ नारी से रहिये, तीस हाथ मतवारे से।

हाथी से सात हाथ, सींग वाले जानवर (बैल आदि) से पांच हाथ, स्त्री से बीस हाथ और शराबी से तीस हाथ दूर रहना चाहिए।

साथ के लिए भात छोड़ा जाता है

(यात्रा में) किसी का साथ मिल रहा हो, तो उसके लिए भोजन भी छोड़ देना चाहिए।

साथ कोई आया, न कोई जाये

मनुष्य अकेला जन्म लेकर आता है और मरने पर अकेला ही जाता है।

साथ कौन किसी के जाता है

मरने पर कोई किसी के साथ नहीं जाता।

साथ जोरू खसम का

किसी का जीवन पर्यन्त सच्चा साथ यदि होता है तो वह पति और पत्नी का ही।

साथ तो हाथ का दिया ही चलता है

मरने पर तो जो दान दिया जाता है वही, साथ जाता है।

साथ सोओ, पेट का दुख, (स्त्रि०)

साथ सोने का दुख यह है कि गर्भ रह जाता है।

साथ सोई बात खोई, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

साथ सोन और मुंह छिपाना, (स्त्रि०)

जिससे कोई बात छिपी न हो, उससे पर्दा करना।

साथी ऐसा चाहिए, जो सारा साथ निभाय।
साथ न उसका लीजिए, जो दुख बिच काम न आय।

जो दुःख में काम आए, वही सच्चा साथी है।

साथी तो वोही भला, जो धुर ले तुर्मा पहुंचाय।
वाको साथी मत कहो, जो छोड़ अधम मों जाय।

साथी तो वही सच्चा है जो ठिकाने तक पहुंचा दे जो बीच में ही छोड़कर चला जाए, उसे साथी नहीं समझना चाहिए।

साध खुटाई ना करें, ना मूरख से प्रीत।
चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत।

सज्जन कभी किसी की बुराई नहीं करते, वे मूर्ख से मित्रता भी नहीं करते। समझदार तो शत्रु अच्छा, मूर्ख मित्र अच्छा नहीं।

साध चले बैकुंठ को, बैठ पालकी माहिं।
रस्ते में से आये फिर, भांग तमाखू नाहिं।

(१) जो साधु गांजा, चरस आदि बहुत पीते हैं, उन पर व्यंग्य।

(२) तमाखू की तारीफ में भी क०।

साधन पीई, संतन पीई, पीई कुंवर कन्हाई।
जो बिजया की निंदा करे, उसे खाय कालिका माई।

भांग पीने वाले कहा करते हैं।

साध भगत की करे जो सेवा, पार तुरत हो वाका खेवा

जो साधु-संतों की सेवा करते हैं, उनका जल्दी बेड़ा पार होता है।

साध भगत दें जिन्हां असीस; सुखी रहें वे बिस्वे-बीस, (ग्रा०)

साधु-संत जिन्हें आशीर्वाद देते हैं, वे पूर्ण सुखी रहते हैं।

साध भगत हों जिस पर छो, भूल भला न उसका हो

साधु जिस पर कुपित हो जाते हैं, उसका भला नहीं होता।

साध भये तो क्या हुआ, मत मत जानें माहिं।
तुलसी पेट के कारने, साध भये जग माहिं।

ऐसे साधु किस काम के, जिन्हें किसी विषय का कोई

ज्ञान ही न हो, और जो केवल पेट के लिए साधु हों।

साध संत की टहल कर, कर लीजे कछु धर्म।
तुलसी फेर न मिलेगा, बार-बार यह जन्म।
स्पष्ट।

साध संत की टहल को, उठो न बैठो जाय।
तुलसी लालच लेन को, दौड़ा-दौड़ा जाय।
साधु सतो की सेवा न करके जो दिनरात लोभ मे पड़े रहते है, उन पर क०।

साधु मिलन अरु हरि भजन, दया, धरम, उपकार।
तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार।
साधुओ का सत्सग, ईश्वर का भजन, दया, धर्म और उपकार, ससार मे ये पाच वस्तुए ही मुख्य है।

साधू कहिये सूप को, पाया फेंके हिलोर।
ओछी कहिये चालनी, भूसी राखे बटोर।
सज्जन सूप की तरह होते है जो भूसी को फेककर सार रख लेता है; दुर्जन चलनी की तरह होते है जो भूसी बटोरकर सार फेक देते है।

साधू की जिन संगत कीनी, उन्हीं कमाई पूरी कीन्हीं
जो साधुओ का सत्सग करते है, उन्ही का जीवन सफल है।

साधू जन रमते भले दाग न लागे कोय
साधु को हमेशा चलते-फिरते रहना चाहिए। उससे चित्त निर्मल रहता हे।

साधू तो वोही भला, जो भर साधू का मेस।
पूजा करता रब्ब की, हांडे वेस बिवेस। (पं०)
स्पष्ट।
रब्ब ईश्वर।
हाडे फिरे।

साधू बच्चे, बहुते झूठे थोड़े सच्चे
साधुओं मे झूठे बहुत और सच्चे थोड़े ही होते है।

साधू, दुखिया सब संसारा, जो सुखिया सो राम अधारा
जो ईश्वर के भरोसे रहता है, वही इस ससार मे सुखी है।

साधू वही जो साधन करे; क्रोध, लोभ और मोह को हरे
स्पष्ट।

साधू वही सराहिये, जाके हिरदे गांठ।
लड्डू ले भीतर धरे, चरनामृत दे बांट।
साधु तो वही प्रशंसा के योग्य है, जो सार की वस्तु को हृदय की गांठ मे बांधकर रक्खे और जो बांटने योग्य है, वह दूसरों को भी बाटे।

साधू वही सराहिय, जो बुलें बुलावें नाहिं।
फल फूलहिं छेड़े नहीं, रहे बगीचे माहिं।
स्पष्ट।

साधू सत कर बैठ जा, वही साधु है ठीक।
वाको साधू मत कहो, जो घर-घर मांगे भीक।
स्पष्ट।

साधू हो कर कपट जो राखे, वह तो मजा नरक का चाखे
स्पष्ट।

साधू हो कर करे जो चोरी, उसका घर है नरक की मोरी
स्पष्ट।
मोरी—नाबदान।

साधू हो कर करे जो जारी, उसकी हो दो जग में ख्वारी
साधु होकर जो दुराचार करता है, वह दोनो लोको मे कष्ट पाता है।
जारी—परस्त्रीगमन।

साधू हो कर देवे बुत्ता, उसको जानो पेट का कुत्ता
स्पष्ट।
बुत्ता—धोखा।

साधों को क्या सवाद गुड़ नहीं बताशे ही सही
किसी साधू ने एक स्त्री से थोड़ा गुड़ मांगा। स्त्री बोली—महाराज, गुड़ तो नही है, बताशे हैं। तब साधु ने उक्त बात कही। ढोगी साधुओं पर व्यंग्य।

साधों ने काम साधपन से, कुसन ने काम कसापन से
सज्जन सज्जनता से काम लेते है, और दुर्जन दुर्जनता से।

साबन काटे मैल को, जस तन को काटे तेग
स्पष्ट।
तेग=तलवार।

साबन थोड़ा, पानी गंदला, क्या मलमल कर धोता है।
अंबर दाग लगा कुदरत का, जब देखो जब रोता है।
मनुष्य की स्वाभाविक बुराइयां आसानी से दूर नहीं होतीं।

साबन दिये मैल कटे, गंगा नहाये पाप, (हिं०)
साबुन से जैसे मैल दूर होता है, वैसे ही गंगा-स्नान से पापों का क्षय होता है।

साबास तेरे सऊर को! सुरवा पका लिया।
सक्कर को घोलघाल के, सरबत बना लिया।
जो तालव्य 'श' का प्रायः 'स' उच्चारण करते है, उनका मज़ाक।

साबित क़दम को सब जगह ठांव
दृढ़ता से काम लेनेवाले के लिए हर जगह आश्रय है।

साबित नहीं कान, बालियों का अरमान, (स्त्रि०)
किसी वस्तु का उपयोग करने के योग्य न होते हुए भी उसकी इच्छा करना।

साबिर व शाकिर दोनों जन्नती हैं, (मु०)
धैर्यवान और उपकार माननेवाला, ये दोनों पुण्यात्मा होते है।

सामने पानी भरा कलसा आ जाय तो अच्छा सगुन होता है, (लो० वि०)
स्पष्ट।

सारंग ने सारंग गहो, सारंग बोलो आय।
जो सारंग सारंग कहे, सारंग मुंह से जाय।
पहेली। सारंग शब्द के यहा मोर, सर्प, बादल, मोर की ध्वनि, आदि कई अर्थ है; उनके अनुसार दोहे का अर्थ यह है--एक मोर ने सर्प को पकड़ लिया। इतने में बादल गरज उठा। अब अगर मोर बादलों की आवाज़ सुनकर (हर्ष से) कूकता हे, तो सर्प उसके मुह से निकल जाएगा।
(सारंग का एक अर्थ मेंढक भी है, जिससे दोहे का इस तरह एक दूसरा अर्थ भी लगाया जा सकना है कि एक सर्प ने मेढक को पकड़ लिया। इतने मे मोर बोल उठा। अब अगर सर्प (घबराकर) अपना मुंह खोलता है, तो मेढक भाग जाएगा।)

सार पराई पीर की क्या जाने अनजान ?
अनुभवहीन आदमी दूसरे के कष्ट की गहराई को नहीं समझ सकता।

सारस की-सी जोड़ी
दो घनिष्ठ मित्र, या दो सगे भाई, जिनमें आपस में बहुत प्रेम हो।
(कहते है सारस पक्षी का जोड़ा एक साथ रहता है और कभी बिछुड़ता नहीं।)

सारस की-सी जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
दो बुरे आदमी, जो हमेशा साथ रहें।

सार सरावत ना करें, ब्याह काज के बीच।
इसमें धन को यों समझ, जैसे कंकर कीच।
ब्याह के काम मे कंजूसी नही करनी चाहिए। उस तरह के काम में पैसे को तुच्छ समझे।
(ब्राह्मणों का उपदेश अपने जजमानों को, जिसमे उन्हें खूब दान-दक्षिणा मिले।)

सारा खेल तक़दीर का है
सुख या दुख भाग्य से होता है।
(स०--भाग्य फलति सर्वत्र।)

सारा गांव जल गया, काले मेघा पानी दे
गाव जल जाने पर बादलों से पानी मांगना।
हानि हो जाने पर उपाय सोचना।

सारा घर जल गया जब चूड़ियां पूंछीं, (स्त्रि०)
दे०--घर जल गया, तब...।

सारा जाता देखिये तो आधा दीजे बांट
सारी संपत्ति नष्ट हो रही हो, तो उसमें से आधी बाटकर यश लूट लेना चाहिए।

सारा धड़ देख नाचे मोरवा, पांव देख लजाय
स्पष्ट। मोर के पैर भद्दे होते है।

सारा नरबदा फिरदी, कुआं देख डरदी, (पं०)
कोई स्त्री अपने प्रेमी से मिलने के लिए नर्मदा तो पार कर गई, पर कुआं देखकर भयभीत हो गई। स्त्री-चरित्र पर क०।

सारा शहर जल गया, बीबी फ़ातमा को ख़बर ही नहीं, (स्त्रि०)
अड़ोस पड़ोस की कोई खबर न रखना। अपने

रंग में ही मस्त रहना।

सारी उमर काठ में रहे, चलते वक्त पांव से गए।

कोई आदमी जिंदगी भर लकडी के कुंदे मे पडा रहा, पर जब छोडा गया तो फिसल कर गिरने से उसका पैर टूट गया, जिससे वह फिर चल ही नही सका। भाग्यहीन के लिए क०।

(प्राचीन काल मे अपराधी को जब सजा दी जाती थी, तो उसका पैर लकडी के कुंदे मे फसा दिया जाता था, जिसे 'काठ मे देना' कहते थे।)

सारी उम्र भाड़ ही झांका

(१) बेशऊर से व्यग्य मे क०।

(२) बदकिस्मत से भी क०।

सारी कुड़ियां मर गई, नानी से राह चले ?

क्या जवान औरतें मर गईं, जो नानी के पीछे दौड़ते हो ?

सारी खुदाई एक तरफ़, जोरू का भाई एक तरफ़

साले की लोग बड़ी इज्जत करते है, इसीलिए व्यग्य मे क०।

सारी सृष्टि एक ओर, ईश्वर की महिमा एक ओर।

सारी चोट निहाई के सिर

घर के बडे या जिम्मेदार के सिर ही सारी मुसीबत आती है।

निहाई=सोनारो और लोहारो का लोहे का वह चौकोर औजार, जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते है।

सारी देग में एक ही चावल देखते है, (मु०)

हाड़ी का एक चावल देखकर ही पता लगा लिया जाता है कि सब चावल गल गए अथवा नही।

(१) नमूना देखकर ही माल का पता चल जाता है कि वह कसा होगा।

(२) एक छोटी-सी बात से मन का सारा भेद मालूम हो जाता है।

सारी रात कहानी सुनी, सुबह को पूछे : 'जुलेखा औरत थी या मर्द', (मु०)

ध्यान से किसी की बात न सुनना या सुनकर भूल जाना अथवा समझाने से न समझना।

(जुलेखा फारस की एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा की नायिका है।)

सारी रात मिमियानी और एक ही बच्चा ब्यानी, (स्त्रि०)

चिल्ल-पो बहुत, पर काम कुछ नही।

सारी रात रोई और एक ही मरा

बहुत परिश्रम का भी कुछ फल न निकलना।

सारी रात सोये अब सुबह को भी न जागें

स्पष्ट।

सारी रामायन सुन के पूछा : 'सीता किसकी जोरू थी ?' (हिं०)

स्पष्ट। दे०—सारी रात कहानी...।

सारे डील में जबान ही हलाल रे

सारे शरीर में जीभ ही पवित्र है।

(इसलिए हमे झूठ नही बोलना चाहिए।)

हलाल = धर्मसगत। जायज।

सारे दिन ऊनी ऊनी, रात को चरखा पूनी

बे-समय का काम करना।

ऊनी ऊनी=उ नींदी, आलस्य में भरी हुई।

(चर्खा दिन मे ही कातते है, रात मे कातना अशुभ माना जाता है।)

सारे दिन पीसा पीसा, चपनी भर भी न उठाया, (स्त्रि०)

परिश्रम का कोई विशेष फल नही।

निकम्मापन।

सारे धड़ की सुई निकाले, सो कोई नहीं, आंख की सुई निकाले सो सब कोई, (स्त्रि०)

दे०—आख की सुइया..।

सारे नगर में दो ही, धुनक्कर या भुनक्कर

कोई जब ओछे लोगो में ही बैठे, तब क०। जाति-विद्वेष टपकता है।

धुनक्कर=धुनाई करनेवाला।

भुनक्कर=भड़भूजा।

सारे शहर में ऊंट बदनाम

बदनाम आदमी का हर काम में नाम लिया जाता है।

साली आधी निहाली, सलहज पूरी जोय, (मु०)
साली (पत्नी की बहिन) और सलहज (साले की स्त्री) इनसे हँसी-दिल्लगी का रिवाज है, इसीलिए क०। निहाली=निहाल करनेवाली, आनद देनेवाली।

साली निहाली, चहिए ओढ़ी, चहिये बिछा ली
दे० ऊ०।

साव का साथ भला, और रात का घात भला
मित्रता धनी की अच्छी होती है और दावपेच का या भेद का काम रात मे अच्छा होता है।

सावन की न सीत भली, जातक की न पीत भली
सावन के महीने मे दही खाना और छोटे लडके से प्रेम करना अच्छा नही।

सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझे
जो सावन मे अधा हो जाता है, उसे हरे रग की ही स्मृति रह जाती हे।
हर आदमी दूसरो का हाल अपना जैसा ही समझता है।
व्यग्य मे उन लोगो के लिए, जो अनुचित उपाय से बहुत-सा पैसा पैदा कर लेते है और यह समझते है कि दूसरो के पास भी उसी तरह का मुफ्त का पैसा होगा।

सावन के रपटे और हाक़िम के डपटे का कुछ डर नहीं
सावन मे वर्षा के कारण फिसलन हो जाती है और लोग अक्सर फिसलकर गिर पडते है। इससे सावन मे फिसलकर गिरने मे कोई लज्जा की बात न होनी चाहिए। इसी तरह हाकिम के डपटने का भी बुरा नही मानना चाहिए, क्योकि हाकिम सबको डपटते रहते है।

सावन कैसा साँथरा ? पूह मास कैसा पाँखड़ा
सावन के महीने मे चटाई और पूस के महीने मे पखा बेकार है।
(जिन लोगो के कच्चे घर होते है, वे वर्षा ऋतु मे चारपाई पर ही लेटते है, नीचे नही लेटते।)

सावन खीर जो खाये सकारे, मिरग डाल कुर चालें मारे, (घा०)
सावन में जो (नित्य) सुबह खीर खाता है, वह हरिन की तरह उछलता फिरता है। (खूब तन्दुरुस्त रहता है।)

सावन घोड़ी, भादों गाय, माघ मास में भैंस बियाय; जी से जाय, या खसमें खाय
लोगो का विश्वास है कि अगर सावन मे घोड़ी, भादो मे गाय और माघ के महीने मे भैंस बियावे तो वह या तो स्वय मर जाती है या उसके मालिक का अनिष्ट होता है।

सावन मास चले पुरवैया, बेले पूत बला ले मैया, (कृ०)
सावन मे पुरवैया चलने से सूखा पडता है, इसलिए किसान का लडका बेकार रहता है और उसकी मां (ईश्वर से) कुशल मनाती है, क्योकि अन्न पैदा नही होता।
(पुरवाई क्वार-कार्तिक मे ही चलती है। सावन मे नही चलती।)

सावन मास बहे पुरवैया, बेचे बरदा कीनो गैया, (कृ०)
सावन मे पुरवैया चलने से वर्षा नही होती, इसलिए किसान को चाहिए कि वह बैल बेचकर गाय खरीद ले, जिसमे उसकी गुज़र हो सके।

सावन में करेला फूला, नानी देख नवासा भूला
कोरी तुकबदी। नानी नवासे को बहुत प्यार करती है, इसीलिए क०।

सावन में हुए सियार, भादों में आई बाढ़, 'ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी थी'
जब कोई छोटी उम्र का आदमी बडे-बूढो जैसी बाते करे या दून की हाके तब क०। महीने भर की उम्र मे सियार दूसरी बाढ कहा से देखेगा ?

सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके ऊगे भान।
कहे घाघ सुन घाघनी, बरखा देव उठान।
श्रावण शुक्ला सप्तमी को यदि बादल फटकर सूर्य निकले अर्थात रात मे बादल रहे, तो देवोत्थान तक वर्षा होती है।

सावन साग, न भादों दही; क्वार मीन न कातिक मही
सावन मे हरा साग, भादो मे दही, क्वार में मछली और कार्तिक मे मठा नही खाना चाहिए।

सावन सिवा उपास

सावन का महीना शिवजी के उपवास का है। (हिन्दुओं में सावन का महीना शिव के व्रत के लिए पुनीत मानते है। विशेषकर सोमवार को व्रत रखते हैं।)

सावन सोवे सांथरे, माह खुरैरी खाट।
आपहि बहू मर जायेंगे, जो जेठ चलेंगे बाट।

सावन में सील के कारण नीचे चटाई पर न सोवे, माघ में सरदी के कारण खुरैरी (खाली) चारपाई पर न सोवे, और जेठ में लू के कारण रास्ता न चले।

सावन हरे न भादों सूखे

सदा एक-सी हालत में।

सास उठलिया, बहू छिनलिया, ससुरा भाड़ झुकावे।
फिर भी दूल्हा सास-बहू को, सीता सती बतावे।

सास पराए पुरुष के साथ भाग गई है, बहू छिनाल है, ससुर भाड़ झोकता है, फिर भी दूल्हा अपनी मा और पत्नी को सीता जैसी सती बताता है। अपने घर के लोगो की कोई बुराई नही करना चाहता।

सास का ओढ़ना, बहू का बिछौना, (स्त्रि०)

सास जो कपड़े ओढ़ती है, बहू उन्हे बिछाती है। अर्थात बहू अपने को सास से बड़ा मानती है। (जो होना नही चाहिए।)

सास की चेरी, सब की जिठेरी, (स्त्रि०)

सास की नौकरानी सबकी जिठानी। सब बहुएं उससे डरती है।

सास की रीसी पतोहू के माथे, (स्त्रि०)

सास का गुस्सा बहू पर उतरता है।

सास के आगे बहू को क्या बड़ाई ?

सास के आगे बहू को (किसी काम के लिए) कैसे शाबाशी दी जा सकती है ?

सास केओढ़ना, पतोहू के बिछौना, (पू०, स्त्रि०)

दे०—सास का ओढ़ना...।

सास, कोठे पर की घास, (स्त्रि०)

कोई स्त्री सास के प्रति अवज्ञापूर्वक कह रही है।

सास कोठे, बहू चबूतरे, (स्त्रि०)

सास कोई काम छिपकर करती है, तो बहू खुल्लम-खुल्ला। बहू सास से बढ़कर है।

सास को नहीं पायंचे, बहू चाहे तंबू और सरांचे, (स्त्रि०)

सास के पास तो घांघरा नही है, और बहू तबू और परदा चाहती है। (इतना दिमाग उसका।)

सास गई गांव, बहू कहे 'मैं क्या-क्या खाऊं' ? (स्त्रि०)

सास के जाने पर बहू की मौज़ रहती है। मनचाहे सो करती है।

सास झांके टुईं-टुईं, बहू चली बैकुंठ, (स्त्रि०)

सास चुपचाप खड़ी देख रही है और बहू तीर्थयात्रा को चल दी है। उस बहू के लिए ताने मे कहा गया है, जो सास की जरा भी परवाह नही करती, और जहा भी जी चाहता है, वहा सैर-सपाटे के लिए चली जाती है।

सासड़ कारन बैद बुलाया, सौक कहे तेरा यगड़ौ आया, (स्त्रि०)

सास के लिए वैद्य बुलाया, सौतिन कहती है, तेरा यार आया। (सौतियाडाह ऐसा ही होता है।)

सासड़ सांसा मत करै, देख थुड़ेरा काम।
थोड़े को बहुता करे, देन लगे जब राम। (स्त्रि०)

कोई स्त्री सास से कह रही है कि रोज़गार मंदा है, तू इसकी चिता मत कर। भगवान को जब देना होगा, तो (इसी) थोड़े मे बहुत देगे।

सास न नंदी, आप ही आनंदी, (स्त्रि०)

घर मे न सास है न ननद। अकेली मौज मे है। (सास की तरह ननद भी बहू के लिए एक विपत्ति होती है।)

सास बहू की हुई लड़ाई, करें पड़ौसिन हाथापाई, (स्त्रि०)

सास और बहू की लड़ाई होने पर पड़ोस की औरतें बीच में आ कूदती है। (झगड़े में मज़ा लेती है।)

सास बहू की हुई लड़ाई, सिर को फोड़ मरी हमसाई (स्त्रि०)

सास बहू की लड़ाई मे पड़ोसिन का सिर फूटता है। वह जिसका भी पक्ष लेती है, वही उससे अप्रसन्न हो जाता है। दूसरे के झगड़े में नही पड़ना चाहिए।

सास बिन कैसी ससराल ? लाभ बिन कैसा माल ? (स्त्रि०)

सास के बिना (जमाई के लिए) ससुराल व्यर्थ है और लाभ के बिना रोज़गार।

सास मर गई अपनी अलाह तूंबे में छोड़ गई, (स्त्रि०)

मर जाने पर भी साम की आत्मा बहू को कष्ट देती है।

(कथा है कि कोई बूढी औरत अपनी बहू को बहुत तग किया करती थी। जब वह मरने लगी तो बहू से बोली कि देखो, मरने के बाद मै अपनी आत्मा घर मे रखे तूबे मे बन्द कर जाऊगी। तुम उस तूबे को ही सास समझना और हर काम उससे पूछकर किया करना। उसके मर जाने पर बहू ऐसा ही करने लगी। रोज सुबह तूबे के पास जाती और उससे सलाह लेती। एक दिन जब वह तूबे के पास खड़ी होकर कुछ पूछ रही थी, तब उसकी पड़ोसिन सयोग से वहा आ गई। उसने जो यह तमाशा देखा, तो तूबे को लेकर ज़मीन पर पटक चकनाचूर कर दिया। उस दिन के बाद से बहू फिर आनंदपूर्वक रहने लगी।)

सास मुई, बहू बेटा जाया; वाका पल्टा यामें आया, (स्त्रि०)

हिसाब-किताब ज्यो-का त्यो।

दे०—बाप मरा घर बेटा . . .।

'सास मोरी मरे, ससुर मोरा जीये', नई बहुरिया के राज भये, (स्त्रि०)

सास के मर जाने पर बहू स्वतत्रतापूर्वक दिन व्यतीत करती है।

सासरा, सुख बासरा, (स्त्रि०)

(१) लड़की का ससुराल में रहना ही अच्छा। ससुराल में रहने से सुख मिलता है।

(२) जो लोग ससुराल में रहना पसंद करते हैं, उन पर व्यंग्य।

सास-री सास, तुझे पेट का दुख, पहले चूल्हा ही याद आया, (स्त्रि०)

बहू का सास से कथन। स्पष्ट।

सास-रे तेरे साग, मायें तेरे भाग; बाप के तेरे राज, तू बैठी-बैठी झांक, (स्त्रि०)

सास का कहना बहू के प्रति जो हमेशा मायके की बडाई किया करती है—ससुराल में तुझे सब तरह का सुख है, तू भाग्यशालिनी है; तेरे बाप के घर अगर राज्य है, तो तू बैठी-बैठी ताका कर (उससे तुझे क्या लाभ ?)।

सास लुक्का लुक्का, बहू बुक्का बुक्का, (स्त्रि०)

सास जो काम छिपकर करती है, बहू उसे खुलकर करती है।

सास से तोड़, बहू से नाता, (स्त्रि०)

(१) एक मूर्खता का काम, क्योंकि घर में तो सास का ही राज्य रहता है, बहू का नही। जिसकी चलती हो, उसी मे प्रेम रखना चाहिए।

(२) ऐसे व्यक्ति के लिए भी कह सकते है, जो आपस मे तोड़-फोड कराए।

सास से बैर, पड़ौसन से नाता, (स्त्रि०)

एक अनुचित काम। बहू का साम से प्रेम रखना चाहिए, न कि पड़ोसिन से।

सासू छोटी, बहू बड़ी

जवान लडका और बहू के रहते हुए जब कोई मनुष्य एक छोटी लड़की से दूसरी शादी करता है, तब क०।

साह के सवाये, कमबख्त के दूने, (व्य०)

समझदार व्यापारी कम मुनाफे पर ही माल बेचता है। अथवा कम ब्याज पर रुपया उधार देता है, पर नासमझ दूने करता है (जिससे उसका व्यापार चौपट हो जाता है)।

साहिब मेरा बानिया, सहज करे व्यापार।
बिन डंडी बिन पालड़े, तोले जग संसार।

ईश्वर के लिए कहा गया है कि वह सच्चा बनिया है, बिना तराजू के ही वह (न्याय की तराजू पर)

सारे संसार को तोका करता है।

साहूकार को किसान, बालक को मसान, (व्य०)

साहूकार के पीछे किसान (रुपया उधार लेने के लिए) उसी तरह लगा रहता है, जैसे बालक के पीछे श्मशान का भूत।

साहू बट्टे, वह भी साहू, (व्य०)

जो घाटे से सौदा बेच देता हो, वह भी साहूकार है। बहुत दिनों तक व्यर्थ माल को रखे रहने से ब्याज का नुकसान होता है, इसलिए उसे निकाल देना अच्छा।

साहू बहे न जायें, गों से जायें

दूकानदार जो भी काम करता है, वह अपने मतलब से।

(इस पर एक चुटकुला है कि किसी समय एक बनिया नदी मे बहा जा रहा था। वह तैरना बिल्कुल नही जानता था, इसलिए सहायता के लिए चिल्ला उठा। एक मसखरे ने, जो नदी किनारे खड़ा था, उसकी चिल्लाहट सुनकर हँसी में जवाब दिया---साहू जी, बहे नही जा रहे है, बल्कि अपने मतलब से कही जा रहे है।)

सिंह चढ़ी देवी मिलें, गरुड़ चढ़े भगवान।
बैल चढ़े शिव जी मिलें, अड़े संवारें काम।

स्पष्ट। आशीर्वाद।

सिंह पराये देश में, नित मारे नित खाय

चोर-डकैत दूर देश में जाकर ही उपद्रव मचाते है।

सिंह सांप से हेत कर, भूतों के गल लाग।
रांगड़ उठे नमाज को, कोस पचासे भाग।

सिंह, सांप, और भूतों से भले ही प्रेम करे, पर रांगड़ से बचना चाहिए।

(रांगड़ एक हलकी श्रेणी के मुसलमान हैं, जो बड़े उद्धत माने जाते है। उन पर ही व्यंग्य है।)

सिंह से सरबर करे सियार

सियार सिंह का मुक़ाबला करे।

एक अनहोनी बात।

सिखाये पूत दरबार नहीं जाते

जिस लड़के को सिखाना पड़े, उसे दरबार नहीं जाना चाहिए।

(झूठे सिखे-पढ़ाये गवाहों से मुकदमा नहीं जीता जाता।)

सिड़ी है तो क्या? पर बात ठिकाने की कहता है

मूर्ख भी कभी-कभी समझदारी की बात करता है।

सिपहगरी के छत्तीस फन हैं

सिपाही के काम में भी उद्द कलाओं की जरूरत पड़ती है; अर्थात वह भी एक मुश्किल काम है।

सिपाही का माल, झांट का बाल

सिपाही के पास कुछ नही होता। वह फक्कड़ होता है।

सिपाही की जोरू हमेशा रांड

क्योंकि वह हमेशा बाहर रहता है और लड़ाई में कभी-भी मारा जा सकता है।

सिपाही की रोटी सिर बेचे की

उसके सदा मरने का खतरा रहता है।

सिपाही को ढाल रखने की जगह चाहिए

फिर तो वह अपने लायक जगह स्वय बना लेता है। अथवा उसका कोई घर नही होता। जहां लेट रहता है, वही उसका घर है।

सिफत भी हो, मुफत भी हो, बड़े पने का भी हो

जो कम दाम देकर बढ़िया चीज़ खरीदता है उससे व्यग्य में क०।

सिफत - खूबी, विशेषता।

बड़े पने का--चौड़ाई मे बड़ा (प्रायः धोती जोड़े के लिए कहते है।)

सिफले की मौत माघ

माघ में गरीब की मौत आती है; क्योंकि जाड़े के कपड़े बनवाने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते।

सिफ़ारिश बगैर रोजगार नहीं मिलता

स्पष्ट।

रोजगार --नौकरी।

सियार औरों को शगुन दे, आप कुत्तों से डरे

सियार दूसरों के लिए तो शुभ होता है, पर स्वयं कुत्तो से डरता है। अर्थात अपना बचाव नही कर सकता।

(यात्रा में सियार का मिलना अच्छा माना जाता है।)

सियार के मंत्री कौवा, छोड़ दहले हाड़ चाम, खाइले मसवा, (भो०)
मक्खन तो स्वय रख लेना और छाछ दूसरो के लिए छोड़ देना ।
(कहा जाता है कि अकबर के मंत्री टोडरमल ने जब कांगडा घाटी पर कब्जा किया, तब उन्होने बढ़िया उपजाऊ जमीन तो बादशाह के लिए रख छोड़ी और खराब वहा के जमीदारो को दे दी। तब टोडरमल ने उक्त बात कही कि मैने मास तो ले लिया है और हड्डी तथा चमडा जागीरदारो के लिए छोड दिया है।)

सियालकोटी, हराम बोटी
पजाब के सियालकोट के लोगो को व्यग्य मे क०।

सियाह करो या सफ़ेद
(१) कुछ तो करो। अथवा
(२) जो चाहे सो करो, सब तुम पर ही निर्भर है।

सियाही बालों की गई, दिल की आरज़ू न गई
बढे लंपट के लिए क०।
आरज़ू—इच्छाए ।

सिर का नहाया पाक
सबसे ऊंचा हाकिम जो फैसला सुना दे, वह ठीक ही होता है ।
(मुसलमान प्राय. नहाने के समय सिर भिगो लेते है, और उसे पर्याप्त मानते है।)

सिर का पसीना एड़ी को आना
(१) बहुत अधिक परिश्रम का काम करना।
(२) कठिन परिस्थिति से सामना पडना ।

सिर का पांव और पांव का सिर
उल्टी-सीधी बात करना ।

सिर का बाल घर की खेती है
कटवाने पर फिर बढ़ जाते है।

सिर गाड़ी, पैर पहिया करे तो रोटी मिलती है
चलने फिरने (उद्यम करने) से ही पैसा मिलता है।

सिर गाला, मुंह बाला
बूढ़े होकर भी लड़को जैसी बात करना ।
गाला=रुई के गाले की तरह (सफेद) ।
बाला=बच्चो जैसा।

सिर गैल सिरवाहा है
जैसा सिर वैसी पगड़ी चाहिए ।
नेता या अगुआ के बिना काम नही चलता, ऐसा भाव प्रकट करने को क० ।

सिर झाड़, मुंह पहाड़
बहुत भद्दी शक्ल का आदमी ।

सिर तो नहीं खुजलाया है
मार खाने की इच्छा तो नही है ?

सिर तो नहीं फिरा है ?
जो व्यर्थ की बात बकते हो ।

सिर दिया ओखली में तो मूसलों से क्या डरना ?
जब किसी खतरनाक काम को करने का बीड़ा ही उठाया, तो फिर उसकी कठिनाइयो से नहीं डरना चाहिए।

सिर नक़द, नौकरी उधार
काम तो तुरत करा लेना, पर मजदूरी के लिए टरकाना।

सिर नहीं, या सिरोही नहीं
मरने-मारने पर उतारू हो जाना ।
(राजपूताने के सिरोही नामक स्थान की बनी तलवार किसी जमाने मे बहुत प्रसिद्ध रही है । उसी से यह शब्द तलवार के लिए रूढ़ हो गया है।)
सिरोही तलवार ।

सिर पर आरे चल गये, तो भी 'मदार ही मदार; (स्त्रि०)
कठिन संकट मे पड़कर भी 'मदार' ही 'मदार' पुकारना, अर्थात केवल ईश्वर का ही नाम लेना, बचने का कोई उपाय न सोचना। घोर आलसी और अकर्मण्य के लिए क० ।

सिर पर जूती, हाथ में रोटी, (स्त्रि०)
बहुत अपमान सह कर भी रोटी कमाना ।

सिर बड़ा सरदारों का, पैर बड़ा पलवारों का
सरदारों का सिर बड़ा होता है और मजदूरों (या गंवारों) का पैर बड़ा ।

पलदार=पल्लेदार, बोझ ढोनेवाला ।

सिर मुंड़ा के क्या घुटना मुंड़ाओगे ?

जो कुछ कर चुके हो, उससे अधिक अब और क्या करोगे ?

सिर मुंडा के फ़जीहत हुए

अपना बना काम छोड़कर दूसरा काम करना और उसमे भी सफल न होना ।

दे०—मूड़ मुड़ाये. . .।

सिर मुंड़ाते ही ओले पड़े

(१) काम करते ही मुसीबत आई ।

(२) शुरू में ही काम खराब हो गया ।

सिर में बाल नहीं, भाल से लड़ाई, (स्त्रि०)

कमजोर होते हुए भी अपने से बलवान से झगड़ा करना।

(बालों के न होने के कारण भालू खोपड़ो ही नोंच डालेगा। वैसे कुछ रक्षा भी हो जाती।)

सिर सलामत, तो पगड़ी पचास

सिर रहेगा तो पगड़ी बहुत मिल जाएंगी; जैसे मूल रहेगा तो ब्याज बहुत आ जाएगा, लड़का रहेगा तो बहुएं बहुत आ जाएंगी, पेड़ रहेगा तो फल भी लग जाएंगे, इत्यादि ।

सिर सहलावें, भेजा खावें

ऊपर से मीठी-मीठी बातें करे, भीतर से जड़ काटे । धूर्त या कपटी मित्र ।

सिर सिजदे में, मन बड़ियों में

बगुला भगत ।

सिजदा - ईश्वर की प्राथना ।

सिर सिर अक्कल, गुर गुर विद्या

सबकी अलग-अलग बुद्धि, और सबकी सिखावन भी अलग-अलग होती है ।

सिर से उतरे बाल, गू में जाओ या मूत में

जिस वस्तु या मनुष्य को त्याग ही दिया, उससे फिर क्या मतलब ?

सिर से कफ़न बांधे फिरते हैं

जो हथेली पर जान लिये फिरे, या मरने-मारने पर उतारू हो, उसे क०।

सिर से खाया भारी

(१) असंगत काम। अथवा

(२) कोई बेडौल चीज ।

खाया=अंडकोश।

सिरे ही की भेड़ कानी

शुरू में ही ग़लती या विघ्न।

सिवैंयों बिन ईद कैसी ? (स्त्रि०)

पकवान के बिना उत्सव किस काम का ?

(मुसलमानों के यहां ईद में मीठी सिवैंयां विशेष रूप से बनती है ।)

सिसकते गये, बिलखते गये

बे-मन से काम करना ।

सिहबंदी के प्यादे का आगा पीछा बराबर

जिस आदमी को तीन आने रोज मिलते हों, उसका भूत, भविष्य दोनों बराबर है ।

सिहबंदी =सरकारी लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी । अमीन ।

प्यादा चपरासी।

सींक सड़प्पे तो लाला जी के साथ गये, अब तो देखो और खाओ

कंजूसो पर क० । जब किसी कृपण का लड़का उससे भी बढ़कर कृपण हो, तब व्यंग्य में क० ।

(कथा है कि किसी कजूस ने अपने घर में यह नियम बना रखा था कि घी के बर्तन में सीक डुबाने से जितना घी निकले, उतना ही हर आदमी ले लिया करे । जब वह मर गया, तो उसका लड़का उससे भी बढ़कर निकला। उसने घी के बर्तन का मुंह बंद करके उस पर पक्की डाट लगा दी और घरवालों से उक्त बात कही कि देखो, लाला जी के जमाने में तुम लोगों ने सीक डुबो-डुबो कर खूब घी खाया, अब तो देखो और खाओ । इसी प्रकार एक बंगाली कजूस की भी कथा है कि वह नदी किनारे बैठकर भात खाया करता था और प्रत्येक कौर के साथ नदी की ओर हाथ बढ़ाकर कहता था—ऊ मछली, ई भात' । इस प्रकार वह मछली खाने का आनंद उठा लिया करता था।)

सींग कटा बछड़ों में मिलना
(१) लड़कपन का काम करना।
(२) बड़ी उम्र के होते हुए भी लड़को मे उठना-बैठना।

सींग की के हूक ? और अरंड का के रूख
सींग का आंकड़ा क्या और अरड का वृक्ष क्या ? दोनो हं। बेकार।
हूक=अंग्रेज़ी 'हुक'।

सींचो हम हित जानके, इन न करी कछु कान।
छाती पै पैंड़ा किया, ओछे की पहचान।
जल काठ से कहता है कि वृक्ष के रूप मे इसे मैने सीचा और जब यह बडा और मज़बूत हुआ, तो यह मेरी ही छाती पर नाव (या जहाज़) बनकर चलने लगा। कृतघ्नता।

सीख उसी को देनी आछी, जो तेरी शिक्षा मानें सांची
सीख तो उसी को देनी चाहिए, जो उमे सुने और माने।

सीख तो वाको दीजिये, जाको सीख सुहाय।
बंदर को क्या दीजिये, बये का घर ही जाय।
दे० ऊ०।
(कथा है कि एक बया पक्षी ने वर्षा ऋतु मे एक बदर को पानी मे भीगते देखकर कहा—
मानस के-से हाथ पाव, मानस की-सी काया,
चार महीने बरषा बीती, छप्पर क्यो नही छाया।
जब बदर ने कहा— मुझे तो घर बनाना आता ही नही। तो बये ने उसे अपने जैसा घोसला बनाना सिखा दिया। इसका फल यह हुआ कि बदर ने अपना घर बनाने के लिए बया का घोसला ही तोड डाला, और अपना तो वह बना ही नही सका। बदर और बया पक्षी की यह कथा जातक में है और पचतंत्र में भी।)

सीख देत औरों को पांड़ा; आप भरें पापों का भांड़ा
स्वयं न करना, दूसरों को सीख देना।
(सं०—परोपदेशे पांडित्यं।)

सीखना न सिखाना, नाहक सिर फोड़ना
ऐसे लड़के से क०, जो कुछ पढ़े-लिखे नही।
(सीखना-सिखाना का अर्थ केवल सीखना ही है। रोटी-ओटी की तरह ही उसका प्रयोग हुआ है।)

सीखी सीख पड़ौसन को, घर में सीख जिठानी को, (स्त्रि०)
सीखी हुई सीख वह पड़ोसन को देती है, और घर मे जिटानी को भी।
दूसरो के पास से सीखी हुई विद्या औरो को सिखाना।

सीखेगा नाऊ का, कटेगा बटाऊ का
दे० —करेगा बटाऊ का।

सीखो बेटा सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई
ऐसी विद्या पढो, जिसमे खाने को मिलता रहे। स्कूल मे पढनेवाले लड़के से पिता का कहना।

सीढ़ी-सीढ़ी छत पर चढ़ते हैं
क्रम-क्रम से ही काम होता है।

सीत दूध जिसने दे साईं, बाको तो बैकुंठ यहां ई
ईश्वर जिसे दूध-भात खाने दे, उसे यहीं बैकुंठ है। (सीत का अर्थ मटा भी होता है।)

सीतल रख संसार को, जो तू भी सीतल होय।
तनक सी आग रे बालके, फूक देत जग कोय।
सब को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसमे तुम भी प्रसन्न रहो; थोडी-सी भी आग ससार को भस्म कर सकती है।

सीतला का खाजा
ऐसा मनुष्य जिसके मुह में शीतला के दाग बहुत हो।

सीतला का थड़ा
दे० ऊ०।
थड़ा स्थान।

सीतला का पुजापा
(१) निकम्मी वस्तु।
(२) बहुत बदशक्ल आदमी।
(शीतला चेचक की देवी हैं और उन्हें पुजापे में अत्यंत साधारण वस्तुएं ही चढ़ाई जाती हैं।)

सीधा घर खुदा का
अदालत से अभिप्राय है। किसी को वहां जाने से रोक-टोक नही।

सीधी उंगलियों घी नहीं निकलता, (व्य०)
कड़ाई के बिना काम नहीं चलता।
(जाड़े के दिनों में जब घी जम जाता है, तब उंगलियां टेढ़ी करके ही निकालना पड़ता है।)

सीधी उंगलियों घी निकले तो टेढ़ी क्यों कीजे?
अगर आसानी से मामला तै हो जाए, तो कोई और (सख्त) कार्यवाही क्यों की जाए?

सीधी राह छोड़ के टेढ़ी राह मत चलो
स्पष्ट।

सीपी से समुद्र खाली करना
मूर्खतापूर्ण कार्य।

सीमाब की खासियत रखती है
पारे की तरह (चंचल) है।

सीलवंत गुन न तजे, औगुन तजे न गुलाम।
हरदी जरदी ना तजे, खटरस तजे न आम।
सज्जन अपनी सज्जनता नहीं छोड़ता, दुष्ट भी अपनी दुष्टता नहीं त्यागता; उसी तरह जैसे कि हल्दी अपना पीलापन नहीं छोड़ती और आम खटाई नहीं छोड़ता।

सीस काटे, बालों की रक्षा
सिर काट कर बालों की रक्षा; असंभव है।

सुई, कतरनी, गज, उंगलेटा, रक्खे सो दर्जी का बेटा
आदमी के पेशे की पहचान उसके साज-सामान से हो जाती है।
उंगलेटा = लोहे या पीतल की वह टोपी, जिसे दर्जी सीते समय एक उंगली में पहन लेते हैं; अंगुश्ताना।

सुई कहे 'मैं छेदूं छेदूं', पहले छेद करावे
सुई कपड़े को छेदना चाहती है, पर वह स्वयं छिदी हुई होती है।
मनुष्य दूसरों के दोष देखना चाहता है, पर अपने दोष नहीं देखता।

सुई का भाला हो गया
तिल का ताड़ हो गया। साधारण बात बढ़कर बड़ी हो गई।

सुई के नाके से सब को निकाला है
(१) जो दूसरों के प्रति उचित सम्मान न दिखाए और सबके साथ एक-सा नासमझी का बर्ताव करे, उसके लिए क०।
(२) होशियार आदमी के लिए भी क०, जो सबको एक रास्ते पर चलाए।
नाका = छेद।

सुई चोर सो, बज्जुर चोर
चोरी हर हालत में चोरी ही कहलाएगी, चाहे थोड़ी करे चाहे बहुत।
बज्जुर = वज्र, फौलाद, यहां लोहे के टुकड़े से मतलब है।

सुई जहां न जाय, वहां सूआ घुसेड़ते हैं
जो काम हो नहीं सकता, उसे ज़बर्दस्ती करना।
सूआ = बड़ी मोटी सुई। सूजा।

सुख कारन सागर तजो, आन बिधायों अंग।
मोती नर यू कंपिया, तू हँसी और के संग।
सुख के लिए मोती ने समुद्र (अर्थात अपना घर) छोड़ा और अपना शरीर छिदवाया, अर्थात कष्ट उठाया; पर जब स्त्री पर-पुरुष के साथ हँसी, तो वह कांप उठा।
(उक्त दोहा मोती और पुरुष दोनों पर घटित होता है, जैसा स्पष्ट है। स्त्री के हँसने से बेसर का मोती कांपता (अर्थात हिलता) है। और पर-पुरुष के साथ उसे हँसते देख कर मोती रूपी नर (मनुष्य) कांप उठा।)

सुख के बड़े जोधा रखवाले हैं
सुख वीर पुरुष ही भोग सकते हैं। साधारण मनुष्यों को मुश्किल से मिलता है।

सुख के सब साथी हैं
सुख में सभी मित्र बनते हैं; दुख में कोई नहीं पूछता।

सुख दुख में जो रहे सहाई; सज्जन वाको बोलें भाई
जो सुख दुख में सहायक हो, वही सज्जन है।

सुखन उन्हीं पर डारिये जो हँस हँस राखे मान (स्त्रि०)
उन्हीं से कुछ मांगो, जो तुम्हारी बात रखें।
सुखन (सखुन) = (१) वचन। (२) कौल, वादा। (३) कविता। (४) सूक्ति।

सुखन-गोई मुश्किल नहीं, सुखन फ़हमी मुश्किल है
बढ़िया बात कहना मुश्किल नही, पर दूसरो की बढ़िया बात समझना मुश्किल है।
सुखन=दे० ऊ०।

सुख बढ़े मुटापा बढ़े
सुख मिलने से ही आदमी मोटा होता है।

सुख मानों तो सुख है, दुख मानों तो दुक्ख।
सच्चा सुखिया वह है, जो सुख माने ना दुक्ख।
स्पष्ट।

सुख में आये करमचंद, लगे मुड़ावन गंज
कोई मनुष्य बहुत सुख मे तो आया और अपनी गंजी खोपड़ी मुडवाने लगा। बैठे-ठाले मुसीबत मोल ले लेना। (गजी खोपडी मुडवाना एक महा-मूर्खता का काम है, उस से तो खून निकल आएगा।)

सुख में सांईं को भजो, जो दुख मूल न होय।
साध कहें रे बालके, सीख मान जस लेय।
सुख मे ईश्वर का भजन करने से फिर दुख बिल्कुल नही होता।

सुख संपत का सब कोई है
दे०—सुख के सब...।

सुख से दुख भला जो थोड़े दिन का होय
अनेक नए अनुभव होते है।

सुख सोवै कुम्हार, जाकी चोर न लेवे मटिया
जिस आदमी के पास जितनी कम चिन्ताएं होती है, वह उतने ही आराम से होता है।

सुख सोवें शेख और चोर न भांड़े लेय
शेख एक जाति के भाट होते है, जो पीरों का यश गाते फिरते हैं। वे बहुत गरीब होते है, और उनके पास चुराने लायक कोई बर्तन-भाडा नही होता।

सुख सोवै शेख, जिनके टट्टू न भेख
दे०—ऊ०।

सुख सोवै होरू, जिनके गाय न गोरू
दे० सुख सोवै कुम्हार...।
होरू=नाम विशेष।

सुखार बुहार आसमानी फरमानी है, (पू०, कृ०)
अनावृष्टि और अतिवृष्टि ईश्वर के हाथ है

सुखी रहेगा वह सदा, जिन छो दीना मार।
जग मां भला कहत है, छो का मारनहार।
जो क्रोध को जीत लेता है, वह सुखी रहता है।

सुगंध लगाऊं तो ऊम मरूं, ऊम मरूं पहने तन सारी।
हार चमेली का भारी लगत, तुम जनत हो तन की सुकवारी।
रूपगर्विता का कथन। झूठी सुकुमारता दिखाना।
ऊम=गर्मी। घबराहट।

सुघड़ बलैयां ससुरा ले, बैल मांग बहू को दे, (कृ०)
होशियार बहू को ससुर भी प्यार करता है। घर मे बैल न हो, तो भी उसे उधार लाकर देता है (खेती के लिए)।

सुघड़ सुघड़ हँस गई, फूहड़ों को आया हांसा, (स्त्रि०)
हँसी की कोई बात होने पर समझदार केवल मुस्करा देते है, पर मूर्ख ठठाकर हँसते है।

सुता जो राखै चोरी पर, तो पगड़ी पत रख मोरी पर
जो चोरी की नीयत रखता है, उसे अपनी इज्जत को भी एक ओर रख देना चाहिए।
सुता=सुध।
मोरी—नाबदान।

सुध और छो का बैर है, छो आवत सुध जाय।
वो ही नर भरपूर है, जो सुध न देत गंवाय।
वही सच्चा मनुष्य है, जो क्रोध मे अपनी बुद्धि नही खो देता।

सुध बुध अपनी ठीक रख, जब आवे तुझको छो।
छो है भूत बिगाड़वा, इसका मीत न हो।
क्रोध आने पर अपनी विवेक-बुद्धि को ठीक रखना चाहिए। क्रोध भूत की तरह बिगाड करनेवाला है।

सुध बुध ना खो आपनी, बात ले मेरी मान।
इस दुनियां रहना नहीं, होवे मत अनजान।
स्पष्ट।

सुध सूं सुधरें कार सब, सुध बिन होत बिगाड़।
ऐसा सुध बिन है मनुख, जैसा पत्थर झाड़।
बुद्धि से ही सब काम बनते हैं। बुद्धि के बिना मनुष्य पत्थर-पेड़ सरीखा है।

सुन कोई हजार। कुछ सुनावे
कीजे वही जो समझ में आवे
काबू हो तो कीजे न ग़फ़लत
आजिज हो तो हारिये न हिम्मत
आता हो तो हाथ से न दीजे,
जाता हो तो उसका ग़म न कीजे।
स्पष्ट।

सुन रे ढोल, बहू के बोल, (स्त्रि०)
किसी को सचेत करने के लिए क०।
(इसकी कथा है कि कोई बूढी औरत अपने लड़के से उसकी स्त्री की हमेशा शिकायत किया करती थी। स्त्री बदचलन थी। पर लड़के ने कभी उस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ दिनों बाद वह स्त्री बीमार पड़ी। कुल पुरोहित ने आकर उससे कहा कि तुम्हारा अंतिम समय निकट है। तुमने अब तक जितने अपराध किये हैं, उन्हें स्वीकार कर लो। स्त्री जब ऐसा करने को तैयार हो रही थी, तब बुढ़िया ने अपने लड़के को एक बड़े ढोल में छिपा दिया, जो वहीं रोगी के पास रखा हुआ था। इधर जब स्त्री अपने किए सभी दुष्कर्मों को एक-एक करके पुरोहित के सामने स्वीकार कर रही थी, तब उधर उसकी सास उक्त वाक्य कहकर ढोल बजाती जाती थी, जिसमें उसका लड़का अपनी दुराचारिणी स्त्री के सभी कर्मों को ध्यान से सुन ले।)

सुन सुन के तेरी बात सहेली, सोच हुआ मेरे मन को।
करके ब्याह घरों नहीं रखते, बाबुल अपनी धी को।
(स्त्रि०)
किसी कुंआरी लड़की का कहना कि ऐ मेरी सखी, तेरी यह बात सुन कर मुझे बड़ी चिंता हो रही है कि विवाह के बाद मां-बाप लड़कियों को घरों में नहीं रखते।
(तब फिर पीहर जैसा सुख मुझे कहां मिलेगा।) ?

सुन सुन मीठी बोल गत, बैठ न बैरी पास।
दही भुलावे बावरे, खावे कभी कपास।
दुश्मन की मीठी बातों में नहीं आना चाहिए। नहीं तो कभी दही के धोखे कपास खानी पड़ती है।

सुनाड़ी बेचे कांटू, अनाड़ी बेचें मांछू, (पू०)
होशियार आदमी हड्डी भी बेच लेता है, मूर्ख मछली बेचता है।
(वह किसी काम में लाभ नहीं उठा पाता।)

सुनार अपनी मां की नथ में से भी चुराता है
सुनार अपनी मां को भी ठग लेता है, फिर औरों की तो बात क्या?

सुनार की खटाई और दरजी के बंद
प्रसिद्ध हैं।
टालमटोल करने पर क०।
सुनार, दर्जी आदि कभी वादे पर काम करके नहीं देते।
इनसे जब कोई अपनी चीज़ मांगने जाता है, तब सुनार 'सब तैयार है, केवल खटाई में डालना है' और दर्जी 'केवल बंद लगाना है'—यह कहकर ग्राहक को टाल देता है।)

सुनिये सब की, कीजिये मन की
बात सबकी सुननी चाहिए, पर अपने को जो ठीक जंचे, वही करना चाहिए।

सुनी सुनाई बात की, गठरी बांधे लूट।
बरछिन की मार पड़ी, ककड़िन की भई लूट।
सुनी-सुनाई बातों को सच मान लेना, फिर चाहे वे संभव हों या असंभव।
(ककड़ी एक बहुत सस्ती चीज़ है। उनकी लूट और लूट में फिर बरछियों की मार का सवाल ही नहीं।)

सुन्नी ना शिया, जी में आया सो किया
(१) स्वतंत्र विचारों का व्यक्ति। अथवा
(२) मनमाना करनेवाले के लिए भी क०।
(सुन्नी और शिया मुसलमानों के दो फ़िर्के हैं, जिनमें हमेशा विरोध रहता है।)

सुपने की-सी माया, जिसको अपनी बतलावे
धन-संपत्ति किसी के पास हमेशा नहीं रहती, वह सपने जैसी चीज़ है।

सुपने में राजा भए, दिन को वही हवाल
सपने की बात सच नहीं होती।
मन के लड्डू खानेवाले के लिए क०।

सुपने में स्वामी मिले, कर न सकी दो बात।
सोवत थी, रोवत उठी, मलती रह गई हात।
स्पष्ट।

सुपुरदम ब तू मायये लेशरा,
तू दानी हिसाबे कम-ओ-बेशरा
मैंने अपनी वस्तु (रचना) तुम्हारे सुपुर्द कर दी। अब उसके गुण-दोषो की विवेचना आप करे। (पुस्तक की भूमिका मे लिखते है।)

सुफल होत मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत।
अपनो ऐपन लायके, तिरिया पूजत भीत।
प्रेम और विश्वास से सब मनोरथ सिद्ध होते है। स्त्रियां अपना लेप लाकर दीवार पर चित्र बनाती है (प्रेम और विश्वास के वश होकर ही)। ऐपन=पिसे हुए चावल और हल्दी का घोल।

सुफेद बाल, जवानी का जवाल
बाल सफेद होने पर बुढापा माना जाता है।

सुफेद बाल, मौत का पैग़ाम
स्पष्ट।
पैगाम=सदेश।

सुबह का भूला शाम को आवे तो भूला नहीं कहलाता
दे०—सबेरे का भूला ।

सुबह की नाँह अच्छी नहीं, (ब्य०, लो० वि०)
सुबह-सुबह जब कोई ग्राहक दूकान पर जाकर सौदा लेने की बात करके फिर लेने से इन्कार कर देता है,तब दूकानदार कहा करता है।

सुबह की बोहनी, और अल्लाह मियां की आस
स्पष्ट। दे० ऊ०।
(सुबह की पहली बिक्री को दूकानदार शुभ मानते हैं, और उसके आधार पर ही दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते है इसीलिए क०।)

सुबह ही सुबह ख़ुदा का नाम लो
स्पष्ट।

सुबह होती है, शाम होती है।
उम्र यूं ही तमाम होती है।
जीवन की क्षण-भंगुरता।

सुमरन कर में, सुरत न हरि में, कहो भेख यह कैसा है।
ऊपर से तो सिद्ध बन बैठा, भीतर पैसा पैसा है।
स्पष्ट।
सुमरन=सुमरिनी। माला।
सुरत=ध्यान।

सुरतीला सो फुरतीला
जो सब बातो का ध्यान रखता है, वह काम मे भी तेज होता है।
सुरतीला=सुर्त रखनेवाला। ऐसा व्यक्ति जो किसी बात को भूले नही।

सुर, नर, मुनि की है यह रीती।
स्वारथ लाग करहिं सब प्रीती। (तुलसी)
ससार मे सब लोग अपने मतलब से ही प्रेम करते है।

सुरमा सब लगाते है, पर चितवन भांत भांत, (स्त्रि०)
काम सब करते है, पर काम करने की विशेषता सब की अलग-अलग होती है।

सुर में इस्सर बसे
सगीत मे ईश्वर का वास है।

सुस्त मनुख का कोई न लागू, फुर्तीले के सब ले भागू
आलसी को कोई पसद नही करता, तेज काम करनेवाले को सब चाहते है।

सुस्ती बुरी रे बालके, याकूं जी से टार।
रत्ती बोझा सुस्त को, लागे बोझ पहाड़। (ग्रा०)
आलस्य बुरी चीज है। आलसी को एक बहुत छोटा काम भी पहाड़ जैसा बड़ा लगता है।

सुस्सा, गादड़, लोमड़ी, डरपोक तू इनको जान।
मानस, कूकर देख कर, तजने लगें पिरान।
स्पष्ट।
सुस्सा=खरगोश।
गादड़=गीदड़

सुस्सों जाऊं या गुस्सों जाऊं
खरगोश के लिए जाऊं, या उपले बीनने जाऊं ?
(एक औरत जंगल मे ढोरो का सूखा गोबर बीनने जाया करती थी। संयोग से एक दिन एक खर-

गोश उसके हाथ आ गया। तब उसने सोचा कि उसे रोज इसी तरह खरगोश मिल जाया करेगा और उसने उक्त वाक्य कहा।)

सुहागन का पूत पिछवाड़े खेले है

सुहागिन का अगर लड़का मर जाए, तो यह समझना चाहिए कि वह कहीं गया नहीं, बल्कि पिछवाड़े ही खेल रहा है। तात्पर्य यह कि उसे फिर भी पुत्र उत्पन्न होने की उम्मीद रहती है।

किसी बड़े रोजगारी या अच्छी आमदनीवाले का जब कोई नुकसान हो जाता है, तब इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए कि 'चिन्ता की कोई बात नहीं, घाटा शीघ्र पूरा हो जाएगा—वाक्य का प्रयोग करते है।

सुहाग भाग अरजानी, चूल्हे आग न घड़े पानी, (स्त्रि०)

सौभाग्य तो सस्ता मिल गया, पर चूल्हे में न आग है, न घड़े मे पानी।

बहुत ग़रीब या अभागे के विवाह पर क०।

सुहाते की लात, न सुहाते की बात

(१) प्रियजन की लात भी सही जा सकती है, जो प्रिय नही है, उसकी बात भी बुरी लगती है।

(२) जहा कुछ मिलने की आशा हो वहां गाली भी सह ले? पर जहा कुछ प्राप्ति न हो, वहां साधारण बात से भी नाराज हो उठे, तब भी क०।

सूआ सेमल देख के, सभी गंवाई सुध।
फल देख के रम रहे, फल की रही न सुध।

सेमल के फूल से आकृष्ट हो कर तोता अपनी सुध-बुध खो बैठा। फूल पर इतना मोहित हुआ कि फल का उसे ध्यान ही नही आया।

(वह यह नही सोच सका कि सेमल में फल होता ही नही और मै यहा व्यर्थ आया हूं।)

सूखा ढाक, बढ़ई का बाप

ढाक की लकड़ी सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है।

सूखा-साखा बामन हो गया फूलफाल चुगता

ग़रीबी हालत से जो एकदम बहुत पैसेवाला बन जाए, उसके लिए क०'

सूखी चिनाई करते हैं

सूखे मसाले भीत उठाते हैं।

(१) बुरे ढंग से व्यवसाय करना।

(२) ब्राह्मणों व चौबों पर ताना, जो खाते समय पानी नहीं पीते, जिसमें ज्यादा खाया जाए।

सूखे धानों पानी पड़ा

धान जब सूख रहे थे, तब पानी बरस गया।

ऐन मौके पर सहायता मिल गई।

सूखे मां झड़बेर घने हों, सम्मत मां अन ढेर घने हों, (कृ०)

अकाल में झड़बेरी बहुत होती है, और सुकाल में अन्न बहुत होता है।

सम्मत—सवत, अच्छे वर्ष से अभिप्राय है।

सूखे लकड़ी की तरह, खाय बकरी की तरह

खाए तो बहुत, फिर भी दुर्बल।

(बच्चों के सूखा रोग मे प्राय: ऐसा ही होता है।)

सूखे सावन, रूखे भादों, (कृ०)

सावन सूखा जाने पर भदई फसल अच्छी नही होती।

सूज सटका, कपड़ा फटका

सुई के घुसते ही कपडे मे छेद हो जाता है।

दुष्ट आदमी के लिए क०। जहां जाता है कुछ-न-कुछ उपद्रव करता है।

सूजी फूली, जैसे घी का कुप्पा

मोटी औरत के लिए क०।

सूझे न बिटौरा, चांद से राम-राम

बिटौरा (उपलों का टीला) तो दिखाई न पड़े, चले दूज का चांद देखने।

सूझे नहीं और गुलेल का शौक़

जिस काम के योग्य ही नही, उसे करने का चाव।

गुलेल=वह कमान जिससे मिट्टी या पत्थर की गोलियां चलाई जाती है।

सूत की अंटी और यूसुफ़ की खरीदवारी

थोड़ी-सी पूंजी से बहुमूल्य चीज खरीदने की इच्छा करना।

(यूसुफ हजरत याक़ूब के पुत्र थे, जिन्हें उनके भाइयों

ने ईर्ष्यावश बेच डाला था। कहते है कि जब मिस्र के बाजार में वह बेचे जा रहे थे, तब एक बुढ़िया ने एक अंटी सूत में उन्हे खरीदना चाहा था। उसी से कहावत बनी।)

सूत के बिनौले हो गए

सब काम चौपट हो गया। गुड गोबर हो गया।

सूत न कपास, कोली से लट्ठमलट्ठा

बिना कारण ही लडना।

कोली=उत्तर प्रदेश की एक बुनकर जाति; हिन्दू, जुलाहा।

सूधे का मुंह कुत्ता चाटे

बहुत सीधापन भी अच्छा नही होता।

सूना खेत कुलच्छना, हिरना ही चुग जाय।
खेत बिराना बोय के, बीज अकारथ जाय। (कृ०)

जिस खेत की रखवाली नहीं होती, वह किसी काम का नही। उसे हिरन ही चर जाते है। खेत का लगान तो देना ही पड़ता है, बीज भी व्यर्थ जाता है, (अर्थात कुछ लाभ नही होता)।

सूना घर, भिड़ों का राज

खाली घर मे बर्रें मौज करती है, अर्थात कुछ दिनो मे वह नष्ट हो जाता है।

सूनी सेज से मरखना बैल भी भला, (स्त्रि०)

रंडापे से तो बुरे स्वभाववाला पति ही अच्छा। कुछ न होने से तो कुछ होना हजार दर्जे अच्छा। (यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'सूनी-सार से मरखना बैल भी भला' और यही ठीक भी है। पर फैलन ने इसे उक्त प्रकार से ही लिखा है।)

सूने मां मत जीव रख, ले जाय चोर चकार।
चाऊ है धन औ जीव का, सूना और उजार।

स्पष्ट।

सूना=सुनसान, निर्जन स्थान।

सूप बोले तो बोले, चलनी भी बोले; जिसमें बहत्तर छेद

स्वयं अपने अवगुणों को न देखकर जब कोई दूसरों की बुराई करता है, तब क०।

सूम की थाती

(१) ऐसे कंजूस के धन के लिए कहते हैं, जो किसी काम में कुछ भी खर्च नहीं किया चाहता।
(२) बहुत यत्न से रखी जानेवाली वस्तु के लिए भी।

सूम के घर कुत्ता जाय, न जाने दे

धनवान कृपण के नीच नौकर पर व्यंग्य।

सूमन पूछे सूम से, 'काहे बदन मलीन?
का गांठी से गिर पड़ा, का काहू को दीन?'
'ना गांठी से कुछ गिरा, ना काहू को दीन।
देते देखा और को, ताते बदन मलीन।'

सूम की स्त्री सूम से पूछती है कि 'आज आपका चेहरा उदास क्यो है? क्या आपके पास से कुछ गिर गया है या किसी को आपने कुछ दिया है?' सूम उत्तर देता है—'न तो मेरा कुछ गिरा है, न किसी को कुछ दिया है, पर मैने दूसरे को देते देखा है, इसी से मै उदास हू।'
(कजूसो पर करारा व्यग्य। वे स्वय तो किसी को कुछ देते ही नही, दूसरे को देते देखकर भी उन्हे दुख होना है।)

सूरज को क्या आरसी लेके देखते हैं?

वह तो स्वयं ही दिखाई पड़ता है।

सूरज धूल डालने से नहीं छुपता

(१) बडों की बुराई करने से वे बुरे नहीं बन जाते।
(२) तेजस्वी पुरुष किसी के छिपाने से नही छिपता।

सूरज ने भान उभारी, रैन घर को सिधारी

सूर्य निकलने पर रात चली जाती है।

सूरज बैरी ग्रहन है, (और) दीपक बैरी पौन।
जीका बैरी काल है, आवत रोके कौन?

स्पष्ट।

पौन=पवन। हवा।

सूरत चुड़ैल की-सी, मिजाज परियों का-सा

बदशक्ल होते हुए दिमाक से रहना।

सूरत न शकल, भाड़ में से निकल

कालाकलूटा, बदशक्ल आदमी।

सूरत में ऐसे, सीरत में ऐसे

न देखने में अच्छे, न करनी के अच्छे; सब तरह से बुरा आदमी।

सूरत मेरे मित्र की, मन में रही समाय।
ज्यूं मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय।
अपने मित्र (या प्रियतम) की छवि मेरे हृदय में इस प्रकार बसी हुई है, जिस प्रकार मेंहदी के पत्ते में उसका लाल रंग छिपा रहता है, और उसे कोई देख नही पाता।

सूरदास जनम के नहीं आंधर
सूरदास जन्म के अन्धे नहीं थे।
अमुक व्यक्ति बिल्कुल मूर्ख नही, उसने दुनिया देखी है, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।
(हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और भक्त सूरदास अकबर के समय में हुए है। कहा जाता है कि किसी स्त्री के रूप पर मोहित हो जाने के कारण उन्होने अपने नेत्र फोड़ लिये थे।)

सूरमा चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
चने का मजबूत-से-मजबूत दाना भी भाड़ नहीं फोड़ सकता।
(कमजोर आदमी के लिए अपने से अधिक ताकतवर का मुकाबला करना ठीक नही।)

सूरा काटे और बिल में घुस जाय
वीर पुरुष अपना रास्ता आप बना लेता है।

सूरा रन में जाय के, लोहा करो निसंक।
ना मोहि चढ़े रंड़ापड़ो, ना तोहि चढ़े कलंक। (स्त्रि०)
वीर पत्नी का अपने स्वामी से कहना कि युद्ध-क्षेत्र में जाकर तुम इस तरह अपने जौहर दिखाओ कि न तो मुझे वैधव्य ही भोगना पड़े, और न तुम्हारे माथे कलक का टीका ही लगे।

सूरा सो पूरा
(१) अंधा बहुत होशियार होता है।
(२) जो वीर है, वह सब कुछ कर सकता है, यह अर्थ भी है।

सूली पर की रोटी खाता है
ऐसे काम करके अपना जीवन-निर्वाह करता है, जिसमें मौत की सजा हो सकती है।

सूली पर भी नींद आती है
नींद ऐसी चीज है, जो कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी आ जाती है।

सूहा जोग सुहाग का और कूप जोग है नीर।
गुरु विद्या का जोग है, सोच समझ रे बीर।
लाल रंग (यानी सेंदुर) सुहाग को, पानी कुएं को, और विद्या गुरु को शोभा देती है।

सूहेकी रीति नहीं, मशरूकी तौफ़ीक नहीं, (स्त्रि०)
लाल रंग के कपड़े पहनने का चलन नहीं, और रेशम खरीदने की ताकत नहीं।
जो संभव है उसे न करना और जो असंभव है उसे करने को मन चलना।
मशरू = एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
तौफ़ीक - सामर्थ्य। शक्ति।

सेंत का चूना, दादा की क़ब्र, (पू०, मु०)
मुफ़्त की चीज का उपयोग करने के लिए हर आदमी तैयार रहता है।

सेंत का माल, हिरदा निर्दयी, (पू०)
मुफ्त का माल खर्च करने में दर्द नहीं होता।

सेंदुर टिकुली जरल, तो पेटो मां बज्जर पड़ल, (स्त्रि०)
किसी स्त्री का कहना जो ससुराल में कष्ट पा रही है—
शौक की चीज नही मिलती, तो क्या पेट भर खाने को भी नही मिलेगा? जब किसी नौकर को पूरी तनख्वाह न मिले तब वह भी कहता है।

सेंदुर न लगाएं तो भतार का मन कैसे रक्खें?
कुछ काम ऐसे होते हैं जो दूसरों को प्रसन्न करने के लिए करने ही पड़ते हैं।

सेजकी मक्खी भी बुरी, (स्त्रि०)
फिर सौत के संबंध में तो कहा ही क्या जाए?

सेठ क्या जाने साबुन का भाव?
जिसका जिस काम से कोई संबंध नहीं, वह उसका भेदभाव क्या जाने?

सेर की हांडी में सवा सेर पड़ा और उफ़नी
छोटे आदमी को किसी काम में थोड़ी भी सफलता मिल जाए, तो उसका दिमाग़ फिर जाता है।

सेर को दूध, अधौन को पानी; घम्मर घम्मर फिरे
बच्चों की तुकबंदी।

यह बुंदेलखंड में इस प्रकार प्रचलित है—
सेरक दूध, पसेर पानी, घम्मर घम्मर दूध मथानी।
(प्रायः दूध मे पानी मिलाने वाले अहीरों के लिए क०।)
अघौन=बर्तनो को धोने से बचा हुआ पानी, धोवन।

सेर को सवा सेर
(१) जबर्दस्त को भी कोई-न-कोई दबानेवाला होता है।
(२) चालाक को भी उससे अधिक चालाक मिल जाता है।

सेर में पसेरी का धोखा, (व्य०)
(१) एक असगत बात। सेर भर माल की तौल मे पसेरी की गडबडी कैसे हो सकती है?
(२) बहुत अधिक नुकसान हो जाने पर भी क०।

सेर में पूनी भी नही कती
अभी कुछ भी काम नही हुआ।
पूनी=धुनी हुई रूई की वह छोटी बत्ती, जो सूत कातने के लिए बनाई जाती है।

सेवक सठ, नृप कृपन, कुनारी।
कपटी मित्र शत्रु सम चारी। (तुलसी)
धूर्त नौकर, कजूस राजा, दुराचारिणी स्त्री और कपटी मित्र—ये चारो शत्रु के समान है।

सेवक सोई जानिये, रहे बिपत में संग।
तन छाया ज्यों धूप में, रहै साथ इक रंग।
सेवक तो वही है, जो विपत्ति मे साथ दे; जैसे धूप मे छाया शरीर का साथ नही छोड़ती।

सेवा ऐसो लाभ दे, ज्यों गांडा दे रस।
सेवा की थी डोम ने, हुए एक के दस।
सेवा से उसी तरह लाभ होता है, जैसे गन्ने के रस से मिलता है। एक बार किसी डोम ने (भगवान की) सेवा की थी, उसका दस गुना फल उसे मिला।
(पता नहीं किस डोम की सेवा की चर्चा यहां है।)

सेवा करे सो मेवा पावे
सेवा का फल अच्छा मिलता है।

सेह का कांटा घर में मत रक्खो, लड़ाई होगी, (लो० वि०)
लोगो का विश्वास है कि सेही का काटा घर में रखने से लड़ाई होती है।

सैयां के अरजन, भैया के नाउं, पहिन ओढ़ में सासुर जाऊं, (स्त्रि०)
खरीदे हुए मेरे पति के है, नाम भाई का है, उन्ही (वस्त्रो) को पहिनकर मै ससुराल जा रही हूं।
मागकर लाई हुई चीज से शौक करना।
(स्त्रिया प्राय. पति के द्वारा खरीदकर लाई गई वस्तु को मायके का बता कर ससुराल लाती है। कहावत मे उसी का वर्णन है। भाव यह है कि कपड़ो के खरीदने मे भाई का कुछ खर्च नही हुआ और ससुराल के लोगों के सामने उसके बड़प्पन की रक्षा भी हो गई।)

सैयां गये बिदेस, मै ता कात कात मुई।
आगरे का चरखा, बुरहानपुर की रुई। (स्त्रि०)
किसी स्त्री का पति विदेश चला गया है। वही कह रही है।
(कठपुतली का नाच दिखानेवाले प्राय. इस तरह के गीत गाया करते है।)

सैयां गये लदनी लदाइन झड़ाझड़।
सौ के पचास किये, चले आये घर। (स्त्रि०)
व्यापार मे किसी को नुकसान हुआ। उसी को स्त्री व्यग्य मे कहती है।
लदनी=माल लादना।

सैयां जामत बिदेस को, कंथा हाट मत खोल।
हुनर देख मेरे हाथ का, कातं सूत अनमोल। (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने पति को विदेश जाने से रोकती हुई कह रही है कि 'हे प्रियतम! आप (व्यापार के लिए) दूर देश न जाए, और आप कोई दूकान भी न खोलें, आप मेरे हाथ का कौशल देखें, मैं कितना बढ़िया सूत कातती हूं। उससे भा में

जीवन निर्वाह हो जाएगा।

(इस कहावत से यह बात बहुत अच्छी तरह प्रकट होती है कि आज से सौ साल पहले जिस समय यह कहावत बनी होगी, भारत की स्त्रियां सूत कातने में विशेष निपुण ही नही थीं, बल्कि इस कार्य के द्वारा वे मज़े में जीवन-यापन भी कर सकती थी।)

सैंयां तेरे कारने, जल बल हो गई राख।
पत से मैं बेपत भई, पंचन में गई साख। (स्त्रि०)

पर-पुरुष से प्रेम करनेवाली विरहिणी स्त्री का कहना।

सैंयां ने इस दुनिया में लाखों पये बट्टे।
कभी न लाये लड्डू पेड़े, बेर खिलाये खट्टे। (स्त्रि०)

किसी धनाढ्य और सूम पति के प्रति उसकी स्त्री का उलहना।

बट्टे=इकट्ठे किए।

सैंयां भये कोतवाल, अब डर काहे का ? (स्त्रि०)

घर का आदमी ही जब किसी रोब-दाबवाली जगह पर पहुंच गया, तो अब किस बात का डर ? (चाहे जो करो।)

(फैलन की इस पर टिप्पणी है कि कोतवाल यद्यपि पुलिस का एक साधारण कर्मचारी होता है, पर साधारण जनता के लिए वह ज़ोर-ज़ुल्म का प्रतीक है।)

सैकड़ों के वारे-न्यारे हो गये

काफ़ी ख़र्च हो गया।

सोंटा बल बिन काम न आवे, बैरी छीन तुझे गुदकावे

शक्ति के बिना लाठी भी काम नहीं आती, दुश्मन छीनकर उल्टी मार लगा सकता है।

सोंटा हाथ, देह में हांगा, उसने भेंटे सब कुछ मांगा

जिसके हाथ में लाठी और शरीर में बल है, उसके लिए सब कुछ सुलभ है।

सोंटे अब चल तेरी बारी

सब तरह से हारकर अंतिम उपाय काम में लाना।

(इसकी कथा है कि एक बार शेखचिल्ली ने—जो अपने नाम के प्रसिद्ध मूर्ख हुए हैं—अपनी मां से कहा कि मैं देश-भ्रमण के लिए जाऊंगा, मेरे लिए रास्ते में खाने के लिए कुछ बना दे। उसकी मां ने चार रोटियां बना कर दी, जिन्हे लेकर वह यात्रा पर चल पड़ा। पहले मुकाम पर ही एक पेड़ के नीचे जाकर बैठा और रोटियां निकालकर कहने लगा—एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं या चारों को ही खाऊं। संयोग की बात कि उस पेड़ पर चार परियां रहती थी। शेखचिल्ली की बात सुनकर उन्होने समझा कि अवश्य यह कोई बड़ा दैत्य है, जो हम चारो को ही खाना चाहता है। इसलिए वे उसके सामने आकर बोली कि अगर आप हमें प्राणदान दें, तो हम आपको एक बहुत अनोखी वस्तु भेंट करेंगी। शेखचिल्ली इसके लिए राज़ी हो गया। तब परियों ने उसे एक जादू की कड़ाही दी और कहा कि आप इससे जितनी भी पूड़ियां मांगेंगे, यह आपको देगी। शेखचिल्ली कड़ाही पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे लेकर घर की तरफ़ लौट पड़ा। चलते-चलते एक जगह रात हो गई और एक सराय मे ठहर गया। वहां उसने बड़े चाव से कड़ाही की सब विशेषता भटियारे को बता दी। वह बड़ा चालाक था। उसने चुपचाप उस कड़ाही को उठाकर उसके स्थान पर एक दूसरी कड़ाही रख दी। शेखचिल्ली को इसका कुछ पता नही चला। वह जब घर पहुंचा, तो वही बदली हुई कड़ाही मां को देकर बोला—इसकी परीक्षा करो, यह मांगने से पूड़ियां देगी पर जब कड़ाही चूल्हे पर चढ़ाई गई और पूड़ियां मांगी गई तो कुछ भी न मिला। शेखचिल्ली बड़ा दुखी और निराश हुआ। दूसरे दिन वह फिर चार रोटियां साथ ले उसी पेड़ के नीचे आकर बैठ गया और फिर अपनी उसी बात को दुहराया कि 'एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं या चारों खाऊं।' सुनकर परियां बड़ी हैरान हुईं कि आखिर क्या बात है। अंत में जब उन्हें सारा किस्सा मालूम हुआ, तो इस बार उनको एक रस्सी और सोंटा देकर उन्होंने कहा कि इसकी सहायता

से तुम्हारी कड़ाही मिल जायेगी*। शेखचिल्ली उन दोनों चीजों को लेकर फिर उसी सराय में गया और रस्सी को ज़मीन पर बिछा कर बोला—बाघ ले सबको। रस्सी ने उन सब लोगों को जो वहां मौजूद थे, तुरंत बांध लिया। फिर सोटे को ज़मीन पर पटक कर उसने कहा—सौटे, अब चल तेरी बारी। उसके इतना कहते ही सोंटा सबको पीटने लगा। मार से घबराकर भटियारे ने तब उसकी कड़ाही वापिस कर दी, जिसे लेकर वह खुशी-खुशी घर आया।)

सोच के चलना मुसाफ़िर यह ठगों का गांव है।

(१) संसार मे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि जो शत्रु हैं, उनसे बचे रहना चाहिए।

(२) ससार मे सभी अपने स्वार्थ के लिए दूसरो को ठगने के लिए तत्पर रहते है, उनसे खूब सावधान रहना चाहिए।

सोचना, जी मोचना

चिता करना मन को कष्ट देना है।

सो जाये सुपने में प्रानी धन दौलत को पावे।
जाग पड़े जैसे को तैसो, हाथ कछू नाहिं आवे।
सुपने की-सी माया, जिसको अपनी बतलावे।

स्पष्ट।

सोत का पानी पाक

झरने का पानी स्वच्छ और पवित्र होता है।

सोता नाग जगाना

(१) किसी दुष्ट को छेड़ना।

(२) जानबूझकर कोई उपद्रव मोल लेना।

सोती थी पर काता नहीं, जो काता तो पांच पाव, (स्त्रि०)

(मैं) सो रही थी इसलिए नही काता, पर जब कातने बैठी, तो सवा सेर कात डाला। आलसी पर व्यग्य।

सोती भिड़ जगाना

सोती हुई बरों के छत्ते को छेड़ना, अर्थात जानकर मुसीबत बुलाना।

सोती रार जगाना

रुके-रुकाए झगड़े को फिर उभाड़ना।

सोते का कटहा, जागते की कटिया

सचेत रहनेवाला मुनाफ़े में रहता है।

दे०—जागते की कटिया...।

सोते का मुंह कुत्ता चाटे

असावधान को हर आदमी ठगता है।

सोते को सोता कब जगाता है ?

अज्ञानी को अज्ञानी नहीं सुधार सकता।

सोते लड़के का मुंह चूमा, न मां खुश, न बाप खुश

किसी मनुष्य के साथ एसा उपकार करने से कोई लाभ नहीं होता, जिसका उसे पता ही न चले।

सोना उछालते चले जाओ

राज्य के अच्छे प्रबन्ध के लिए क०।

सोना कहे सुनार से, उत्तम मेरी जात।
काले मुंह की चिरमिटी, तुली हमारे साथ।
मैं लालों की लाड़ली, लाल ही मेरा रंग।
काला मुंह जब से हुआ, तुली नीच के संग।

यह सोना और रत्ती, अर्थात सोना और घुंघुची की बातचीत है। सोना सुनार से कहता है—मैं ऊंची श्रेणी का हूं और यह काले मुह की (अर्थात नीच जाति की) घुंघुची मेरे साथ तुलने की धृष्टता करती है।

घुघची जवाब देती है—मै लालो की (रत्नों की) प्यारी हूं, (अर्थात मेरे साथ रत्न तुलते है) मेरा रग भी लाल है। पर नीच के साथ (अर्थात तुम्हारे साथ) तुलने से मेरा मुंह काला हो गया है; मैं बदनाम हो गई हूं।

(घुघची, जिससे सोना आदि तोला जाता है, लाल रंग की होती है, और उस पर काला दाग होता है। यहां 'काला' और 'लाल' दोनों ही शब्दों में श्लेष है।)

सोना-चांदी आग ही में परखे जाते हैं

मनुष्य की परीक्षा विपत्ति पड़ने पर ही होती है।

सोना छुए मिट्टी हो

अभागे, कर्महीन मनुष्य के लिए क०।

सोना जाने कसे, और मानस जाने बसे

सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से और मनुष्य की परीक्षा उसके निकट रहने से होती है।

सोना-रोना कुछ जात नहीं, (स्त्रि०)
रुपए-पैसे से जाति नहीं पहचानी जाती।

सोना नीक तो कान कराये के? (स्त्रि०)
सोना अच्छा है तो क्या कान फड़वाने के लिए? अच्छी वस्तु से हानि हो, तो उसे त्यागना ही चाहिए।

सोना पाना और खोना दोनों बुरा, (लो० वि०)
लोगों की ऐसी धारणा है कि सोना अगर पड़ा मिले या पास का खो जाए, तो दोनों से ही अनिष्ट होता है।

सोना ले के मिट्टी भी नहीं देता, (व्य०)
लेकर न देनेवाले के लिए क०।

सोना लेने पी गये, (और) सूना कर गये देश।
सोना मिला, न पी मिले, रूपा हो गये केश।
ऐसा काम जिसमें गांठ की पूंजी भी चली गई, और परेशानी हो रही है अलग।
रूपा=चांदी, चांदी के रंग के, सफ़ेद।

सोना सुगंध है
बहुत ही अच्छी वस्तु। (सोने में सुगंध नहीं होती, यदि होती, तो वह बहुत अनमोल हो जाता।)

सोना सुनार का, आभरण संसार का
गहना पहिननेवालों का, पर सोना सुनार का ही होता है।
(इसकी कथा है कि एक बार किसी बादशाह ने सुनार से पूछा कि तुम रुपए में कितना खा सकते हो? सुनार ने जवाब दिया—'सोहलों आना।' बादशाह ने इसकी परीक्षा करनी चाही और एक सोने की मूर्ति राजमहल में बैठकर ही बनाने को कहा। साथ ही उस पर कड़ा पहरा बिठला दिया। राजमहल में जाकर काम शुरू करने के पहले सुनार ने अपने घर पर ही एक पीतल की मूर्ति बना ली और उसे अपनी स्त्री के पास दही की मटकी में डालकर छोड़ दिया। राजमहल में जब सब के सामने स्वर्णमूर्ति बनकर तैयार हो गई तो उसने कहा कि इसे अब खटाई में साफ करना होगा। उसी समय उसकी स्त्री, जिसे उसने पहले से सिखा-पढ़ा रखा था, 'दही लो, दही लो' की आवाज करती हुई निकली। सुनार ने यह कहकर कि खटाई के लिए इसका दही खरीद लिया जाए, उसे बुला लिया, और उसकी मटकी लेकर उसमें सोने की मूर्ति डाल दी और उसके स्थान पर पीतल की मूर्ति, जो उसमें पड़ी हुई थी, निकाल ली। इस प्रकार सोने की मूर्ति उसके घर पहुंच गई और बादशाह के सामने उसने अपनी बात रख ली।)

सोने का गडुवा और पीतल की पेंदी
(१) अशोभन कार्य।
(२) ऐसी वस्तु या मनुष्य, जिसमें सब अच्छाइयों के होते हुए भी कोई बड़ा दोष हो।

सोने का निवाला खिलाइए और शेर की नजरों से देखिये
लड़कों के लालन-पालन के सम्बन्ध में क० कि उन्हें प्यार तो करे, पर उन पर कड़ी नजर भी रखे, जिससे वे बिगड़ने न पाए।

सोने की अंगूठी, पीतल का टांका, मां छिनाल, पूत बांका
किसी अच्छी वस्तु में एक ऐब होने से ही वह सब-की-सब वस्तु बुरी बन जाती है।

सोने की कटारी को कोई पेट में नहीं मारता
बड़े-से-बड़े लाभ के लिए कोई अपने प्राण नहीं दे देता।

सोने की कटोरी में कौन भीख न देगा?
(१) सुंदर कन्या को वर मिलने में देर नहीं लगती।
(२) धनी मनुष्य को जल्दी ही कर्ज मिल जाता है।

सोने की चिड़िया हाथ लगी है
(१) जब किसी लुच्चे व लफंगे धनवान को अपना आसामी बना लेते हैं, अथवा जब किसी उदार पुरुष की किसी पर विशेष कृपा हो जाती है, तब क०।
(२) वकीलों व अदालत के मामलों के पंजे में जब कोई धनी मुवक्कल फंस जाता है, प्रायः तब क०।
(३) धनी जजमान के मरने पर उसके पुरोहित का कथन।

सोने की चिड़िया हाथ से उड़ गई
दे० ऊ०। यह उसका उल्टा है।

जब कोई अच्छा ग्राहक हाथ से निकल जाता है, तब प्रायः दूकानदार कहा करता है।

सोने की बड़ेरी, फूस का छप्पर

(१) बिल्कुल ही विवेकहीनता का काम।

(२) असंगत काम।

बड़ेरी=वह लंबा लट्ठा जिस पर छप्पर रखते हैं।

सोने को सलाम, रूपे को आलेक, भूखे को न देख

सब लोग धनी मनुष्य की ही इज्जत करते हैं, ग़रीब को कोई नहीं पूछता।

सलाम + आलेक=सलामालेक; सलाम-अलैकुम का विकृत रूप मुसलमानों में वह प्रणाम या बंदगी के लिए प्रयुक्त होता है।)

सोने में पीली, मोतियों में धौली, (स्त्रि०)

सोने मोती के गहनों से लदी हुई स्त्री।

धौली=उज्ज्वल । सफेद ।

सोने सें गढ़ाई मंहगी

वस्तु के मोल से बनवाने की मजदूरी अधिक। अथवा कम लाभ के लिए बहुत परिश्रम ।

सोभा रन की सूरमा, घर की सोभा बीर।
रज की सोभा चांदनी, भोजन सोभा खीर।

वीर पुरुष से युद्ध की, गृहिणी से घर की, चादनी से रात की और खीर से भोजन की शोभा बढ़ती है।

सोभा लावें मनुख को, सुरत फुरत औ ज्ञान।
जिसमें यह तीनों नहीं, वे नर ढोर समान।

बुद्धि, चातुर्य और ज्ञान—ये मनुष्य की शोभा हैं; जिसमें ये तीनों नही, वह पशु के समान है।

सोया और मुआ बराबर

जो सचेत नही, वह मरे के समान है।

सोया सो चूका

आलस किया और गए।

सोरठ मीठी रागनी, रन मीठी तलवार।
जाड़े मीठी कामली, सेजों मीठी नार।

मीठी होती है सोरठ रागिनी, मीठी होती है युद्ध में तलवार, मीठी होती है जाड़े में कमली, मीठी होती है शैया पर रमणी।

कमली=कंबल।

सोवेगा सो खोवेगा, जागेगा सो पावेगा

जो सावधान रहता है, उद्योग करता है, वह पाता है।

सोवे भाड़ पर सपना देखे धरोहर का

साधारण मनुष्य के बड़ी-बड़ी इच्छाएँ करने अथवा डींग हांकने पर क०।

सोवे राजा का पूत या जोगी अवधूत

क्योंकि इन्हें किसी बात की चिंता नहीं होती ।

सोहनी बुआ और चटाई का लंहगा

बेतुका शौक।

दे०—शौक़ीन बुढ़िया...।

सोहबत का असर है

संगत का प्रभाव होता है।

जब कोई बुरी सोहबत में पड़ जाता है प्रायः तब क०।

सौ ऐबों का एक ऐब नादारी

ग़रीबी स्वयं ही एक बड़ा ऐब है।

सौकन गई और आंख छोड़ गई, (स्त्रि०)

कोई स्त्री सौत के लडके को क०।

सौकन चून की भी बुरी है, (स्त्रि०)

सौत आटे की भी बुरी होती है।

सौकन बुरी चून की और साझे का काम।
कांटा बुरा करील का और बदरी का घाम।
(स्त्रि०)

स्पष्ट। दे०—कांटा बुरा...।

सौ कपूत से एक सपूत भला, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

सौ कालियों में एक काला

बहुत धूर्त।

कालियो में=काले आदमियों में।

सौ की हानी, सहस्सर बखानी

बात बढ़ाकर कहना।

सौ के रह गये साठ, आधे गये नाठ, दस देंगे, दस दिला देंगे, दस का देना क्या ?

कोई कर्जदार साहूकार से कह रहा है कि हमने तुमसे जो सौ रुपये लिये थे, उनमें से साठ ही तो

देना बाकी हैं, आधे छूट गए; दस रुपया दे देंगे, दस (किसी) से दिला देंगे, बाकी रहे दस, सो उनका देना क्या? जब कोई अपना देना चुकाने में बहुत हीला-बहाना करता है, तब उससे भर्त्सना में क०। झूठा-सच्चा हिसाब बताकर रक़म को बराबर कर देने पर भी क०।

सौ कोसा और एक भरोसा बराबर, (स्त्रि०)
एक ग़मखोरी सौ गालियां देने के बराबर है। गालियाँ देने से सहनशीलता अच्छी।

सौ कौवों में एक बगला भी नरेस
धूर्तों का राजा भी धूर्त होता है।
(कौवे की तरह बगुला भी चालाकी का प्रतीक माना जाता है।)

सौ खोटों का वह सरदार, जिसकी छाती एक न बार
स्पष्ट।
(सामुद्रिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति, जिसकी छाती में बाल न हों, बुरा माना जाता है।)

सौ गज बारूं और गज भर न फाड़ूं
(१) देना कुछ नहीं, झूठ-मूठ ही मन बहलाना।
(२) कहना बहुत, काम कुछ न करना।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ सोते न एक मचला
सौ गाड़ियां एक छकड़े के बराबर हैं और सौ सोते हुए आदमी एक ऊंघते के बराबर। भाव यह कि जो जान-बूझकर भी न देखे, वह अंधों से भी बुरा है।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ हरामजादे न एक मगरा
मगरा या घुन्ना आदमी बहुत बुरा होता है। वह सौ हरामजादों से भी बढ़कर होता है।
मगरा ऐसा मनुष्य जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भाव को मन में ही छिपाकर रखे; चुप्पा, घुन्ना।

सौ गालियों का एक गाला बनाया और उड़ा दिया
सहनशीलों का क०।
गाला—धुनी हुई रुई का टुकड़ा।

सौ गुंडा न एक मुछमुंडा
एक मुछमुंडा सौ गुंडों से भी अधिक बदमाश होता है।
(यह कहावत उस समय चली होगी, जब लोगों ने मूंछें साफ़ रखना शुरू किया ही होगा। मूंछें मुंड़वाना विशेषकर पिता के जीवित रहते हुए किसी समय बहुत बुरी दृष्टि से देखा जाता था।)

सौ गुलामों घर सूना, (स्त्रि०)
सौ नौकरों के रहते हुए भी घर सूना लगता है। (मालिक के बिना।)

सौ जीवों का एक बचावा
जहां एक कमानेवाला और बहुत खानेवाले हों, वहां क०।

सौ डंडी न एक बुंदेलखंडी
एक बुंदेलखंडी सौ लठैतों के बराबर होता है।
(बुंदेला राजपूत अपनी वीरता के लिए किसी समय प्रसिद्ध रहे हैं।)

सौत की मूरत भी बुरी, (स्त्रि०)
दे० सौकन चून...।

सौत चून की भी बुरी, (स्त्रि०)
दे० सौकन चून...।

सौत जाय, सौत का नाड़ा न जाय, (स्त्रि०)
सौत चली जाए, पर उसका पति न जाये।
नाड़ा=इज़ारबंद।

सौत पर सौत और जलापा, (स्त्रि०)
सौत की सौत मौजूद है, और जलन अलग।

सौत भली, सौतेला बुरा, (स्त्रि०)
सौतेले लड़के से सौत भली। (वह सौत से बुरा होता है।)

सौतिया डाह मशहूर है
बड़ा विकट होता है।

सौदा अच्छा लाभ का, और राजा अच्छा दाब का
सौदा वही अच्छा, जिसमें मुनाफ़ा हो; राजा वही अच्छा, जिसका रोब-दबदबा हो।

सौदा कर नफ़ा होगा
माल खरीदो और बेचो, जरूर नफ़ा होगा। भाव यह कि उद्योग करो। फल मिलेगा।

सौदा बिक गया, दूकान रह गई
जवानी निकल गई, पंजर रह गया।

रस निकल गया, फोकट रह गया।

सौदा लीजे देख कर, और रोटी खाइए सेंक कर

सौदा देखमाल कर लेना चाहिए, और रोटी सेंक-कर खानी चाहिए।

सौदा सौदाइयों बात नफ़े में

सौदा तो सौदा करनेवालों के लिए है, बातें नफ़े में (सुनने को मिली)।

दूकानदार ग्राहक पटाने के लिए जो तरह-तरह की लच्छेदार बाते करते है, उनसे ही अभिप्राय है।

सौ दिन चोर के तो एक दिन साह का

कोई बदमाश आदमी कई बार शरारत करके भले ही बचता रहे, पर कभी-न-कभी पकड़ा ही जाता है।

सौ दिल्ली उजड़ गई, तौ भी सवा लाख हाथी

सब कुछ दिल्ली उजड़ गई हो, पर उसकी शान वैसी ही बनी है।

दे०—लटा हाथी . . .।

सौ नकटों में एक नाकवाला नक्कू

बुरे आदमियों के समाज में भला आदमी निभ नही पाता। वह अपनी भलमनसाहत के लिए ही बदनाम हो जाता है।

नक्कू शब्द के यहां दो अर्थ हैं (१) बड़ी नाक वाला। (२) ऐसा व्यक्ति जो सबसे अलग हो।

सौ बात की एक बात यह है

सारांश यह है।

सौ बार तेरी, एक बार मेरी

चालाक के लिए क०। कभी-न-कभी चक्कर में फंसोगे ही।

सौ बैरी कटवां कहे, मस्तक लिखा सो होय।
लेख लिखे को बालके, मेट न सक्के कोय।

शत्रुओं के कोसने से किसी का कुछ बिगड़ता नहीं। जो भाग्य में लिखा होता है, वही होता है।

कटवां कहे=कड़ुवी बात कहे।

सौ भड़वे मरें तो एक चम्मचचोर पैदा हो,
सौ रंडी मरें तो एक आया

सौ भड़ुओं के मरने पर एक चम्मचचोर पैदा होता है और सौ रंडियों के मरने पर एक आया।

(चम्मच-चोर से यहां मतलब उन खानसामों व खिमदतगारों से है, जो अंग्रेज़ों के ज़माने में उनके यहां काम किया करते थे। फैलन की उक्त कहा० पर टिप्पणी है कि अंग्रेज़ों के खानसामा और आया ये दोनो ही अपनी दुश्चरित्रता के लिए अत्यंत बदनाम है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।)

सौ मारे और एक न गिने

अर्थात बराबर पीटता ही जाए।

निकम्मे या बदमाश के लिए क०।

भाव यह है कि यह पीटे जाने के सिवा और किसी योग्य नही।

सौ मारे और गिनावे से भूल जाय

अर्थात मारता ही जाए, हाथ बंद न होने पाए।

ऊ० भी दे०।

सौ में फूला, हज़ार में काना, सवा लाख में ऐंचाताना

(आंख में) फुलीवाला सौ के मुकाबले में, काना हज़ार के मुकाबले मे और ऐचकताना सवा लाख के मुकाबले मे बुरा होता है।

फूला जिसकी आख मे चोट आ जाने की वजह से सफेद दाग पड़ गया हो।

ऐचकताना मेड़ी आख वाला।

सौ लगी तो क्या? हज़ार लगी तो क्या?

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो कई बार पिट चुका हो या अपमानित हुआ हो।

('सौ लगी' से मतलब जूतियो के लगने से है।)

सौ लठैत न एक पटैत

एक पटेबाज़ सौ लठैतों को हरा सकता है।

(पटा लोहे की एक पट्टी होती है, जिससे तलवार के काट और बचाव सीखे जाते है। उसी से पटैत या पटेबाज़ शब्द बना है।)

सौ हाथी लट गया तौ भी सवा लाख रुपये का

दे०—हाथी हज़ार लटा . . . .।

स्याम न छोड़ो, छोड़ो न सेत; दोनों मारो एक ही खेत

दे०—काली भली न सेत . . .।

स्वर्ग से उतरा, बबूल में अटका

जब किसी पूरे होते हुए काम में यकायक फिर कोई बाधा आ जाए, तब क०। (फैलन की टिप्पणी है कि यह कहावत उन सरकारी कर्मचारियो के लिए प्रयुक्त होती है, जो अक्सर लोगो का रुपया रोक रखते हैं, और समय पर देते पर नही।)

स्वांत बूंद सीपी मुकत, कदली भयो कपूर।
कारे के मुख बिख भयो, संगत सोभा सूर।

स्वाति की बूद सीपी मे पडने से मोती, कदली मे पड़ने से कपूर, और सर्प के मुख मे पडने से विष बन जाती है। सूरदास कहते है यह सब सगत का फल है।

(स्वाति नक्षत्र मे जो जल बरसता है, उसके विषय मे लोगो का ऐसा ही विश्वास है, और वही कहावत मे व्यक्त हुआ है।)

स्वांस स्वांस में कृष्ण रट, स्वांस बिरथा मत खोय।
ना जानूं या स्वांस का, यही अंत ना होय।

जीवन का कुछ ठिकाना नही, न जाने कब अत आ जाए, इसलिए प्रतिक्षण कृष्ण का नाम लेते रहो।

ह

हँसते ठाकुर, खसते चोर, इन दोनों का आया ओर

हँसने से ठाकुर का रोब जाता रहता है और खासने से चोर पकड़ा जाता है।

ठाकुर—गाव का जमीदार या मुखिया।

ओर=अत।

हँसते ही घर बसता है

हँसी मजाक करते करते घर बस जाता है, अर्थात प्रेम सबध हो जाता है।

हँसते हो, कुछ पड़ा पाया है?

जब कोई व्यर्थ हँसता दिखाई दे, तब क०।

हँसना बामन, खंसना चोर, कुपढ़ कायथ, कुल का बोर

हँसोड़ ब्राह्मण, खासनेवाला चोर, और अनपढ़ कायस्थ—ये तीनो कुल का नाश करते हैं।

हँस गुन पावे, तेवर लावे, (पू०)

प्रसन्नतापूर्वक उसे जो चीज दी जाती है, उसे वह भौंहें सिकोड़ कर लेता है, अर्थात कोई एहसान नहीं मानता। कृतघ्न के लिए क०।

हँस हँस खइये फूहड़ का माल, (स्त्रि०)

मूर्ख का माल उसे बेवकूफ बना कर खाना चाहिए।

हंसा चलल भाग, केओ न संगे लाग, (पू०)

मरने पर कोई साथ नही जाता।

हसा—आत्मा से अभिप्राय है।

हंसा थे सो उड़ गये (और) कागा भये दिवान।
जा बम्मन घर आपने, सिंह काके जजमान।

जब किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाए, तब क०।

(कथा है कि कोई लोभी ब्राह्मण सिंह की माद म गया। उसने सोचा था कि सिंह ने जिन मनुष्यो को मार डाला हे, उनका गहना और धन वहा पडा मिल जाएगा। पर सिंह ने उसे देखते ही उसे पकड लिया। उस समय सिंह का मत्री एक हस था। उसने ब्राह्मण देवता के प्राण बचाने के उद्देश्य से सिंह को समझाया कि आपके पुरोहित हैं और आप इनके जजमान, इनको मारना ठीक नही। सिंह ने हस की बात मान ली औरजो धन पडा था, उसे भी ले जाने दिया। कुछ दिन बाद ब्राह्मण फिर उसी स्थान पर पहुचा। उस समय एक कौवा सिंह का मत्री हो गया था। उसने ब्राह्मण को मार डालने की सलाह दी। किन्तु सिंह को यह पसद नहीं आया और उसने हस की बात याद करके ऊपर की पक्तिया ब्राह्मण से कही।)

हँसिये दूर, पड़ौसी से ना

दूरवालो से हँसी-मजाक करे पर पर्डा, सी से कभी नही।

हँसी और फंसी

स्त्री अगर हँसकर जवाब दे, तो समझ लो कि वह काबू मे आ गई। हँसना सम्मति का लक्षण है।

हँसी बैरी बइयर की, खांसी बैरी चोर की

हँसी स्त्री की शत्रु है और खांसी चोर की।

हँसी में खांसी
(१) बहुत हँसने से बुराई पैदा होती है।
(२) बहुत हँसने से खांसी आती है।

हँसी में बिखेली भेल, (पू०)
हँसी में विष पैदा हो गया।
हँसी-हँसी में बिगाड़ हो गया।

हँसुवा के ब्याह, खुरपा के गीत, (पू०)
असंगत काम।
हँसुवा=हँसिया, घास वगैरह काटने का एक औज़ार।

हँसुवा चोख न, खुरपा भोंतर, (पू०)
दोनो निकम्मे। हँसिया भी तेज नहीं, और खुरपा भी मोथरा।

हँसुवा दूर की पड़ोसिन की नाक, (स्त्रि०)
पड़ोस की एक स्त्री दूसरी स्त्री से हमेशा लड़ने को तैयार रहती है, उसी से अभिप्राय मे क०।

'हँसुवा रे! तू टेढ़ काहे?' 'आ लो अपना गों से' (पू० स्त्रि०)
'क्यो रे हसिया! तू टेढा क्यो?' जवाब मिला—'अपने मतलब से।' हसिया टेढा न हो, तो घास नही काट सकता। मनुष्य को अपना काम बनाने के लिए टेढा बनना पडता है।

हँसे तो औरों को, रोवे तो अपनों को
मनुष्य अगर प्रसन्न रहे, तो दूसरे भी उसे देखकर प्रसन्न होते है, अथवा उसके साथ हँसते है और यदि वह रोने बैठ जाए, तो उसे अकेला ही रोना पड़ेगा; मतलब कोई उसके साथ रोने नही आएगा।

हँसे तो हँसिये, अड़े तो अड़िये
जो जैसा करे, उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए। अड़ना—झगड़ा करना।

हक़ अल्ला, पाक ज़ात अल्ला, (मु०)
ईश्वर सत्य है, पवित्र है।

हक़ कड़वा है
सत्य कड़वा होता है।

हक़कर, हलालकर, दिन में सौ बार कर, (मु०)
सही और उचित काम कर, धर्म का काम कर, दिन में सौ बार कर।

हक़ कहने से अहमक़ बेज़ार
बेचारा मूर्ख सच नहीं बोल पाता। अथवा मूर्ख को सच से चिढ़ होती है।

हक़ कहे से मारा जाय
सच कहनेवाले को जान से हाथ धोना पड़ता है।

हक़ कहे सो दाढ़ीजार, (स्त्रि०)
सच कहनेवाले को गालियां सुननी पड़ती हैं। दाढ़ीजार= एक गाली।

हक़ का राज़ी ख़ुदा है, (मु०)
ईश्वर को सच पसंद है।

हक़ का साथी ख़ुदा, (मु०)
ईश्वर सच बोलनेवाले की मदद करता है।

हक़दार तरसें, अंगार बरसें
जो हकदार का हक छीनता है, उस पर अंगारे बरसते है।

हक़ न पावे, इनाम, (पू०)
नियमानुसार जो मिलना चाहिए, वह तो उसे कोई देता नही, इनाम चाहता है।

हक़ नाम अल्ला का, (मु०)
सत्य नाम परमात्मा का है।

हक़ सब को प्यारा
सत्य सब को प्रिय है।

हक़ हक़ है और ना-हक़ ना-हक़
सही सही है और गलत गलत।

हक़ीम को क़ारूरे से लाज
कोई मनुष्य व्यवसाय से सम्बन्ध रखनेवाली चीज से घृणा करे, तो काम कैसे चल सकता है?
कारूरा=पेशाब।

हग न सकें पेट को पीटें
स्वयं काम न कर सकें, दूसरों को दोष दें।

हगा, न घर रक्खा
दोनों दीन से गए; न इधर के रहे न उधर के। (कथा है कि एक बार किसी राजा ने शास्त्रार्थ में एक जाट से हार मान ली और उसे वचन दिया कि जो तुम मांगोगे, वही देंगे। इस पर जाट ने कहा कि मैं आपकि बिछौने पर हगूंगा। राजा उससे चकि

कह चुके थे, इसलिए पलट नहीं सके और उसकी बात उन्हें माननी पड़ी। उस समय मंत्री को एक युक्ति सूझी। उसने जाट से कहा कि बिछौने में हगना तो जरूर, लेकिन पेशाब न करना। अगर पेशाब की तो तुम्हारा घर छीन लिया जाएगा। जाट ने इस शर्त को मान लिया, किन्तु हगने के पहले ही उसने पेशाब कर दिया। तब उसे पकड़ लिया गया और उसका घर जब्त हो गया।)

हगासे लड़के के नखने पहचाने जाते हैं, (स्त्रि०)
मनुष्य का चेहरा देखकर पता चल जाता है कि वह कष्ट में है।

हज का हज, निज का निज, (मु०)
मक्का शरीफ़ की यात्रा भी, और अपना मतलब भी। एक काम में दो काम।
(बहुत से मुसलमान यात्री मक्का केवल इसलिए जाते हैं कि वहां से बहुत-सी चीजें ख़रीदकर लाई जाएं और फिर मुनाफ़े पर उनको यहां बेच दिया जाए। वही भाव कहावत में छिपा है।)
पाठा०—हज का हज, बनिज का बनिज।

हजामत हो गई
ठगे गए; मूर्ख बना लिए गए।

हजार आफ़तें हैं एक दिल लगाने में
प्रेम करना एक मुसीबत की चीज है।

हजार इलाज और एक परहेज
रोगी के लिए नियम-संयम से रहना, हजारों इलाज से कहीं अच्छा है।

हजार कहो इसके कान पर एक जूं नहीं चलती
कोई जब किसी की बात पर ध्यान न दे, तब क०।

हजार जूतियां मारूं और एक न गिनूं
बहुत पीटने के लिए क०।

हजार जूतियां लगीं और इज्जत न गई
बेशर्म के लिए क०।

हजार दवा और एक दुआ
हजार दवाओं से उतना लाभ नहीं होता, जितना ईश्वर की एक प्रार्थना से।

हजार नियामत और एक तन्दुरुस्ती
तन्दुरुस्ती हजार न्यामतों के बराबर है।
न्यामत=दुर्लभ वस्तु।

हजार बरस का रेजा और नन्हीं नांव
जब कोई बूढ़ा-पुराना आदमी अपने को भोला और अनजान बताए, तब०।
रेजा=नग, खंड, अदद। बोलचाल की भाषा में रेजा मजदूर के साथ काम करनेवाली औरत या छोटे लड़के को कहते हैं।

हजार भडुवे मरें तो एक खिदमतगार हो
स्पष्ट। (अंग्रेजों के जमाने में जो नौकर उनकी मेज पर खाना लगाते थे, वे खिदमतगार कहलाते थे और अपनी चालाकी के लिए बदनाम थे।)

हजार रंडियां मरें तो एक आया हो
स्पष्ट।
(यह कहावत भी ऊपर की कहावत की तरह ही है। अंग्रेजों के यहां जो नौकरानी उनके बच्चों को खिलाया करती थी, वह आया कहलाती थी और प्रायः दुश्चरित्रा होती थी।)

हजार लाठी टूटी, तौ भी घर-बार के बासन तोड़ने को बहुत है
भले ही बूढ़े हो गए हों, पर दम तो अब भी है।

हजारों घड़े पानी के पड़ गये
बहुत शर्मिन्दा हुए।

हज्जाम का उस्तरा मेरे सिर पर भी फिरता है, तुम्हारे सिर पर भी।
जैसा मैं हूं वैसे ही आप। एक आदमी उतना ही अच्छा हो सकता है, जितना दूसरा, बल्कि उससे भी अच्छा हो सकता है।

हज्जाम का टका
कहीं नहीं जाता। चाहे जैसे बाल बनाये पर एक टका उसे मिलेगा ही। ऐसा मुनाफ़ा जिसमें कोई खतरा नहीं।

हज्जाम का लड़का पहले उस्ताद का ही सिर मूंड़ता है
स्पष्ट। जब कोई अपने गुरु को ही चूना लगाए, तब क०।

हुक्काम के आगे सबका सिर झुकता है
वक़्त पर सबको सिर झुकाना पड़ता है।

हड़काया कुत्ता
भड़काया हुआ कुत्ता। ऐसा व्यक्ति जिसे किसी की शह मिल गई हो।

हड़काया बन गया
दूसरों की बातों में आ गया, भड़क गया। पागल हो गया।

हड़काया भला, परकाया न भला, (पू०)
पागल अच्छा, दुतकारा अच्छा नहीं।

हड़ खायें, उगलें बहेड़ा
कहें कुछ, करें कुछ।

हड्डी खाना आसान, पर पचाना मुश्किल
रिश्वतखोर के लिए क०।

हथिया चले न पैयां, बैठे दे गुसैंयां, (पू०)
आलसी के लिए क०।

हथिया बरसे, चित्रा मंडराय, घर बैठे किसान रिरियाय, (कृ०)
हस्त नक्षत्र मे वर्षा होने और चित्रा में केवल बादलों के घिरने से फसल को हानि होती है।
(हस्त नक्षत्र अक्टूबर में और चित्रा नवंबर में लगता है।)

हथिया बरसे तीन होत हैं, शक्कर, शाली माश। हथिया बरसे तीन जात हैं, तिल्ली कोदों, कपास। (कृ०)
. हस्त नक्षत्र मे वर्षा होने से ईख, धान और उर्द की दाल, इन तीन की फ़सल को लाभ और तिली, कोदों तथा कपास को हानि पहुंचती है।

हथियों से गन्ने खाने
हाथी से गन्ना छीन कर खाना।
जानबूझकर बड़े आदमी की दुश्मनी मोल लेना।

हथेली का फफोला
चौबीसों घंटे की मुसीबत। कष्टदायक मनुष्य।

हथेली पर ज़हर रक्खा रहो, खायेगा सो मरेगा
जो खतरनाक काम करेगा, वही हानि उठायेगा।

हथेली पर जान लिये फिरता है
मरने से नहीं डरता।

हथेली पर सरसों जमाते हैं
काम करते ही तुरंत उसका लाभ उठाना चाहते हैं। मुंह से बात निकालते ही काम हो जाए, ऐसा चाहते हैं।
(सरसों बहुत शीघ्र जमती है, इसी से कहावत की सार्थकता है।)

हनोज़ दिल्ली दूर है
अभी दिल्ली दूर है। अभी बहुत काम बाकी पड़ा है। अयोग्य या मूर्ख का काम जल्दी पूरा नहीं होता।
हनोज़=अब भी, अभी तक।

हनोज़ रोज़ अव्वल
अभी तो पहला ही दिन है। उन्नति की अब भी आशा है। अब भी चीज़ को सुधारा जा सकता है।

हप, हप, झप, झप खाते, हां, धंधा करते तजते प्रान
कामचोर के लिए क०।

हम क्या रांड़ के जंवाई हैं?
क्या लावारिस है?

हम खुरमा ओ हम सवाब, (फा०)
खाने का खाना और उसका पुण्य भी।
खुरमा अर्थात छुहारा मुसलमानों में बहुत पवित्र माना जाता है।

हम चौड़े, बाज़ार सकरा
अहंकारी के प्रति क०, जो अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा समझता है।

हमने क्या गधे चराये हैं?
क्या हम मूर्ख हैं?

हमने क्या घास खोदी है?
क्या हम कुछ जानते नहीं?

हमने भी तुम्हारी आंखें देखी हैं
हम भी तुम्हारी तरह ही है। हमें धौंस मत दिखाओ।

हमने लिया, तुम लीजियो, राह राह जाने दीजियो
साधारण वाक्य है। कोई आदमी संदेश लेकर जा रहा है। उसके सम्बन्ध में कहते हैं कि उसे छेड़ना नहीं, अपनी राह जाने देना।

हम परदेसी पाहुने (और) आन किया बिसराम। भोर भये उठ जायेंगे, बसो तिहारा गांव।
स्पष्ट। कोई यात्री किसी गांव मे रात्रि मे विश्राम करके सुबह जा रहा है। तब वह कहता है।

हम प्याला ओ हम निवाला, (फ़ा०)
एक साथ खाने-पीनेवाले। निकट सम्बन्धी अथवा गहरे मित्र।

हम रोटी नहीं खाते, रोटी हमको खाती है
रोटी के लिए आदमी चिन्तित रहता है, इसीलिए कहा गया है।

हम सांप नहीं हैं कि जियें चाट के मिट्टी
किसी नौकर या मजदूर का कहना, जिसे बहुत थोडा वेतन मिलता है और काम बहुत करना पडता है।

हमसे और चौसर
हमसे भी चालाकी! अथवा हमसे मजाक।

हम से बहू बड़ी सयानी, पैंचा मांगे पानी, (पू०, स्त्रि०)
सास कहती है कि बहू हमसे भी अधिक होशियार है। पानी भी उधार लेती है। इसलिए कि कोई दूसरा आदमी उससे कोई चीज मुफ्त न माग सके।

हम ही को करना सिखाने आया है
हम ही को बेवकूफ समझता है।

हमारा काम ही बीता, जहां से मैं चला रीता
मरते हुए आदमी का कहना।

हमारा दम तो तुम पर निकलता है, और तुम और पर मरती हो
स्पष्ट। प्रेम का बदला न चुकाना।

हमारी बिस्मिल्ला, और हमसे ही 'छू', (स्त्रि०)
हमसे ही मत्र सीखा और हम पर ही उसकी परीक्षा।

हमारी बिल्ली और हम ही से म्याऊं
हमारे आश्रित रहकर हम पर ही रोब। अथवा हमारे चेले होकर हमसे ही उस्तादी!
ऊ० भी दे०।

हमारी हमसे पूछो, कोहकन की कोहकन जाने
हम तो अपनी बात (या अपनी मुसीबत) जानते हैं, दूसरे की दूसरे से पूछो। मुझे व्यर्थ तंग मत करो। (कोहकन या फ़रहाद फारसी की प्रसिद्ध लोक-कथा 'शीरी व फरहाद' से सम्बद्ध है।)

हमारे घर आओगे क्या लाओगे ? तुम्हारे घर आवेंगे क्या खिलाओगे ?
हर हालत मे अपना ही मतलब देखना।

हमारे दादा ने घी खाया और हमारा हाथ सूंघो
अपनी कोई योग्यता न रखकर जो केवल पुरखो की बड़ाई करे, उसके लिए क०।

हमारे दोनों मीठे
हम हर तरह से लाभ मे।

हमारे बड़े पराये बरदे आजाद करते थे
हमारे पुरखे बडे उदार थे, वे दूसरे के बैलो को छुटकारा दिलाया करते थे। जो दूसरो का पैसा खर्च करवाकर यश लूटे, उसके लिए क०।

हमारे 'हां से आग लाई, नाम धरा बैसांदुर, (स्त्रि०)
(१) मागे की चीज पर घमड करना।
(२) दूसरे का उपकार न मानना।
बैसादुर– वैश्वानर, यज्ञ की अग्नि।

हमेशा रोते ही जनम गुजरा
मा-बाप प्राय उन बच्चो से कहते है, जो बहुत अच्छा खाते-पीते रहने पर भी हमेशा रोते रहते है।

हम्माम की लुंगी, जिसने चाहा उसने बांध ली
ऐसी वस्तु जो सर्वसाधारण के काम आती रहे।

हर एक के कान में शैतान ने फूंक मार दी है 'तेरे बराबर कोई नहीं'
हरेक आदमी अपने को दूसरे से बडा समझता है।

हर एक बात की कुछ इन्तहा भी है
जब कोई सीमा से बाहर काम करे, तब क०।

हर कमाले रा जवाले, (फ़ा०)
हर उत्थान का पतन भी है।

हर कसे मस्लहत-ए-खेश निको मीदानद, (फ़ा०)
हर आदमी अपना भला बुरा पहचानता है।

हरका माने, पा का न माने, (पू०)
नाराज आदमी समझाने से मान जाता है, पर भड़काया हुआ नही मानता।

हर कारे ओ हर मर्दे, (फ़ा०)
हर एक आदमी को अपना ही काम सूझता है।

हर के भजे सो हर का होय, जात पांत पूछे नहिं कोय
जो ईश्वर का स्मरण करता है, वही उसे प्रिय होता है।

हरखे पितर तिलंजल पाये
पुरखों का श्राद्ध करने से वे प्रसन्न होते हैं।

हर जैसे को तैसा
(१) जो जैसा करता है, भगवान उसे वैसा ही फल देता है।
(२) जिसकी जैसी भावना होती है, ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है।

हर देगी चमचा, (स्त्रि०)
हर देग के लिए चमचा।
(१) हरफ़न मौला।
(२) अविश्वासी पति के लिए भी क०।

हर निवाले बिस्मिल्ला, (मु०)
जो हमेशा खाने को तैयार रहे, पर काम कुछ न करे, उसे क०।

हर बार गुड़ मीठा ?
जब कोई हमेशा ही अपनी सफलता चाहता हो, तब क०।
(कथा है कि एक लड़का किसी बनिए की दूकान पर नौकर था। उसे रोज घड़े में से गुड चुराकर खाने की आदत पड़ गई थी। एक दिन उस बनिए ने अनुभव किया कि गुड़ कोई अवश्य चुरा कर खा लेता है, क्योंकि घड़ा बहुत खाली था। चोर को पकड़ने की गरज़ से उसने गुड़ के घड़े को उठाकर अलग रख दिया और उसके स्थान पर बिरोजे से भरा एक दूसरा घड़ा रख दिया। दूसरे दिन रोज़ की तरह लड़का वहां पहुंचा और गुड़ के धोखे बिरोजा निकाल कर खा गया, जिससे उसका मुंह चिपक गया। इस तरह बनिये को चोर का पता चल गया और लड़के की उसने खूब मरम्मत की। इसी से कहावत चली।)

हर भूम का राज
अत्याचारी शासन के लिए क०।
(हर भूमि इलाहाबाद के निकट एक छोटा गांव है, जहां का ज़मींदार बड़ा अत्याचारी था। इलियट ने अपनी Glossory (अभिधान) में इस कहावत की की यही व्याख्या की है।)

हर रोज़ ईद नेस्त कि हलवा खुर्द कसे, (फ़ा०)
हर रोज़ ईद नहीं होती कि हलवा खाने को मिले। हर एक चीज़ का समय होता है।

हर रोज़ कुआ खोदना और नया पानी पीना
रोज़ कमाना, रोज़ खाना। कठिनाई में जीवन बिताना।

हर शब शबे बरात है, हर रोज़ रोज़े ईद
(१) (मन अगर चंगा है तो) रोज़ शब-बरात और रोज़ ईद है।
(२) बहुत शान-शौकत से रहनेवाले व्यक्ति के लिए भी कह सकते हैं।
शबे-बरात=मुसलमानों का एक त्योहार, जिसमें आतिशबाजी छोड़ी और मिठाई बांटी जाती है।
ईद=मुसलमानों का प्रसिद्ध त्योहार।

हराम का बोल उठता है, हलाल का झुक जाता है
असल जहां विनम्रता से सिर झुका लेते हैं, वहां कम असल बेधड़क बोल उठता है।

हराम की कमाई, हराम में गंवाई
बुरी कमाई बुरे काम में खर्च होती है।

हराम कोठे चढ़ के पुकारता है
बुरा काम छिपा नहीं रहता, अपने आप प्रकट हो जाता है।

हराम खाना औ शलजम, (मु०)
अन्याय का (अथवा मुफ़्त का) खाना, सो भी शलजम (तात्पर्य यह कि जब ईमान ही बिगाड़ा तो शलजम क्यों खाएं, फिर तो हलवा-पूड़ी खाना ही अच्छा।)

हरामखोरी मुश्किल से छूटती है
रिश्वतखोरी (या कामचोरी) मुश्किल से छूटती है।

हराम चालीस घर ले कर डूबता है
दुश्चरित्र आदमी अपने साथ दूसरों को भी बदनाम करता है।

हरामज़ादे की रस्सी दराज़ है
बदमाशों से कोई कुछ नहीं कह पाता।

दराज=लंबी।

हरामजादे से खुदा भी डरता है

सब डरते हैं।

हराम में बड़ा मजा है

हरामखोरी करनेवालों पर व्यंग्य।

हरिगुन गावे धक्का पावे, चूतड़ डुलावे टक्का पावे, (स्त्रि०)

सज्जन को कोई नहीं पूछता, उचक्के मौज करते हैं। (कहावत में चूतड़ डुलानेवाली से मतलब वेश्या से है।)

हरिया हाथी हाकिम चोर, दोनों के बिगरे ओर न छोर

जंगली हाथी और चोर हाकिम, इनके उपद्रव की कोई सीमा नही होती।

हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार।
तौ भी नहीं बराबरी, वेदों किया विचार।

गुरु सेवा का फल हरि सेवा से अधिक है। गुरुओं ने इस प्रकार अपने पुजाने का मसाला कर लिया।

हरी की माया, छिन में धूप, छिन में छाया, (हिं०)

ईश्वर की लीला पर क०।

हरी खेती, गायन गाय, मुंह पड़ तब जानी जाय, (कृ०)

जब तक खेत का अनाज घर पर न आ जाय, और गाय भी न बियाए, तब तक क्या पता क्या हो?

हरे वृक्ष पर सब परंद बैठते हैं, ठूंठ पर कोई नहीं बैठता

जहां से कुछ मिलने की आशा होती है, सब वही जाते है। धनी का सब आश्रय लेते है।

परंद= पक्षी।

हलक का न तालू का, यह माल मियां लालू का

(१) बुरी चीज या अन्याय से उपार्जित धन के लिए क०।

(२) कजूस की चीज के लिए भी कह सकते हैं, उसे आसानी से कोई नही पा सकता।

हलक़ के कोतवाल

बच्चों के लिए क०, जो भोजन की सामग्री में से स्वयं कुछ खाए बिना बड़ों को नही खाने देते।

हलक़ न तालू, खावें मियां लालू

किसी फ़ालतू आदमी का मज़ाक उड़ाया गया है।

हलक़ रोवे जीभ टोवे

किसी को बहुत थोड़ी चीज़ खाने को मिली। तब वह क०।

हलक़ से निकली खलक़ में पड़ी

बात मुंह से निकली और दुनिया में फैली।

हलके पिछोड़े, उड़ उड़ जायें, (स्त्रि०)

थोथा अनाज फटको तो उड़ जाता है।

(१) ओछा आदमी घमंडी होता है।

(२) ओछे से किसी बात की आशा नहीं करनी चाहिए।

(३) ओछे मे गंभीरता नही होती।

हलवाई की जाई और सोवे साथ कसाई

धर्म विरुद्ध कार्य। हलवाई हिन्दू होते हैं और कसाई मुसलमान।

जाई—बेटी।

हलवाई की दूकान और दादा जी का फातिहा, (मु०)

हलवाई की दूकान पर जाकर (अर्थात उसके मत्थे) दादा जी का फातिहा मनाना।

दूसरों के पैसे पर वाहवाही लूटना।

(मरे हुए आदमी के नाम पर जो चढ़ावा बांटा जाता है, वह फातिहा कहलाता है।)

हलवा खाने को मुंह चाहिए, अथवा
हलवा-खुरदन रारुए बायद, (फ़ा०)

(१) अच्छी वस्तु पाने के लिए वैसी योग्यता भी चाहिए।

(२) हलुवे में पैसा बहुत लगता है। हर आदमी नही खा सकता, इसलिए भी क०।

हलवा पूरी बांदी खाय, पोता फेरने बीबी जाए

निकम्मे नौकरों के लिए क०।

हलवा-पूरी बीबी खाय, पुड़ा पिटावन बांदी जाय

हलवा-पूरी खाने के लिए तो बीबी, और पिटने के लिए बांदी।

हलवाही चरवाहे को!

चरवाहे को हल चलाने का काम सौंपना।

जिसका जो काम नहीं, उससे वह काम लेना।

हलाल में हरकत, हराम में बरकत

सज्जन दुख पाते हैं, और बुरे मौज करते हैं, दुनिया की रीति।

हल्दी की गांठ हाथ लगी, चूहा पंसारी ही बन बैठा

जब कोई थोड़ा धन या थोडी विद्या पाकर ही अपने को बड़ा समझ बैठे, तब क०।

हल्दी जर्दी ना तजे, खटरस तजे न आम।
जो हल्दी जर्दी तजे, तो औगुन तजे गुलाम।

हल्दी भले ही अपना पीलापन और आम अपनी खटाई छोड दे, पर नीच अपनी नीचता नहीं छोडता।

हल्दी लगी न फिटकरी, पटाक बहू आन पड़ी

जब कोई मुफ्त में ही अपना काम बना ले, तब क०।

हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा ही आवे

मनुष्य जब बिना खर्च किए ही काम अच्छा चाहता है, तब क०।

(हल्दी फिटकरी, कपडा रंगने के काम आती है।)

हवाई दीदा

शोहदे के लिए क०, जो हमेशा इधर-उधर नज़र फेंकता रहता है। दीदा—आंख।

हवा के घोड़े पर सवार हैं

(१) लंब-तड़ंगी हांकनेवाले के लिए क०।

(२) बहुत जल्दबाज के लिए भी क०।

हस्त ओ नेस्त बराबर है

उसका होना न होना (मेरे लिए) बराबर है।

हस्ती का क्या भरोसा ?

जिंदगी का भरोसा क्या ?

हां करो या ना करो

आखिर, कुछ तो कहो। जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो।

'हांजी हांजी' सब से कीजे, करिए अपने मन की

सबको खुश रखकर जो अपने को ठीक लगे, वही करना चाहिए।

हांड़ी का भात छुपे, मुंह की बात न छुपे

भात हांड़ी में छिप सकता है. पर मुंह पर आई बात नहीं छिपती, वह प्रकट होकर रहती है।

हांड़ी न डोई, सब पत खोई, (स्त्रि०)

स्त्री की पति से शिकायत कि घर में कुछ नहीं है, सब इज्जत बर्बाद कर दी।

हांड़ी में अच्छत ना 'चला समधी जेवे', (पू०)

कोरी शान बघारना।

हांड़ी में होगा तो डोई में आप ही आवेगा

मन में जो बात होगी, वह अपने आप सामने आएगी।

हांड़े से दौड़ा भला

बेकार घूमने की अपेक्षा तो बंद होकर बैठना अच्छा।

हांसी बैरी बइयर की, खांसी बैरी चोर की

हँसी-दिल्लगी से औरत बिगडती है और खांसने से चोर पकड़ा जाता है।

हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी न खड़ा हो

हाकिम के आगे खड़े होने से वह मन में नाराज हो सकता है, घोडे के पीछे खडे होने से उसकी दुलत्ती लग सकती है।

हाकिम के आंख नहीं होती, कान होते हैं

अफसर सुनी हुई बात मान लेते हैं, स्वयं आंख से नहीं देखते कि वह कितनी सच या झूठ है।

हाकिम के तीन, शहना के नौ

हाकिम के तीन और कर्मचारी के नौ हिस्से होते हैं। हाकिम के पास (रिश्वत में) जो कुछ पहुंचता है, उससे अधिक नीचे के क्लर्क और चपरासी खा जाते है।

शहना=चौकीदार, चपरासी।

हाकिम के मारे और कीचड़ के फिसले का किसने बुरा माना है ?

हाकिम के हाथ से पिटने और कीचड़ मे रिपट कर गिरने का बुरा नहीं मानना चाहिए। व्यंग्य में ही कहा गया है।

हाकिम, दो जाननेवालों में एक अनजान

वादी और प्रतिवादी दो ही सच्चा हाल जानते हैं, न्यायाधीश कुछ नहीं जानता।

हाकिम महकूम की लड़ाई क्या ?

अधीनस्थ अपने अफ़सर से लड़ ही कैसे सकता है ?

हाकिम हारे, मुंह ही मुंह मारे
जिसके हाथ में ताकत है, उससे बहस नहीं करनी चाहिए।

हाजरी के मेले में कोई हो, (मु०)
अच्छे काम में सब शरीक हो सकते हैं।
(मुहर्रम में शिया लोग एक भोज देते हैं, जो हाज़िरी का मेला कहलाता है। उसमें सभी फ़िरकों के मुसलमान आमंत्रित किए जाते हैं।)

हाजिते मश्शातह नेस्त रुए दिल-आराम रा, (फा०)
सौन्दर्य को श्रृंगार की जरूरत नहीं।

हाज़िर को लुक़मा, ग़ायब को तकबीर
जो मौजूद हैं उनका भरणपोषण करते हैं, मरों के नाम खैरात करते हैं। परोपकारी के लिए क०।

हाज़िर मारे गाफ़िल रोये
जो मौके पर मौजूद रहता है वह हाथ मारता है, (लाभ उठाता है); और जो चूक जाता है वह पछताता है।

हाज़िर में हुज्जत नहीं, गैर की तलाश नहीं
जो मौजूद हैं उन्हें देने में कोई आपत्ति नहीं, और जो नहीं है उन्हें तलाश करने नहीं जाएंगे।

हाट हाट पुकारे वैसा, जैसा करे सो पावे तैसा
जो जैसा करता है, वह वैसा पाता है।
(वैसा नाम के एक फ़कीर हो गए हैं।)

हाड़ होंगे तो मांस बहुतेरा हो रहेगा
जिंदा हैं तो तगड़े भी हो जाएंगे। बीमार के प्रति क०।

हाड़ों ढेरी या दामों ढेरी
या तो हड्डियों का ढेर हो जाए (मर जाए) या फिर खूब रुपया पैदा करे।

हाड़ों थका, ब्यौहारों थका
शरीर में भी थका, काम-काज से भी थका। बूढ़े का कहना।

हातम की गोर पर लात मारी, (मु०)
हातिम से भी बढ़कर दानी हो गए। व्यंग्य में कंजूस से क०।
ग़ोर=क़ब्र।

(हातिम अरब के एक बहुत प्रसिद्ध दानी और परोपकारी हो गए हैं।)

हाथ उठाना अच्छा नहीं
मारना ठीक नहीं। अधिकतर स्त्री और बच्चों के सम्बन्ध में कहते हैं।

हाथ कंगन को आरसी क्या? (स्त्रि०)
हाथ के कंगन को देखने के लिए दर्पण की क्या ज़रूरत? प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

हाथ कसीदह आसमान दीदा, (स्त्रि०)
बेलबूटे काढ़ रही है और आंखें आसमान की तरफ़ हैं। एक काम करते समय दूसरी ओर ध्यान लगाना। एकाग्र होकर काम न करना।

हाथ का चूहा बिल में पैठा
(१) हाथ में आई चीज़ निकल गई।
(२) बना-बनाया काम बिगड़ गया।

हाथ का दिया आड़ी आये
दान-पुण्य समय पर काम आता है।

हाथ का दिया साथ खाने लगा
धृष्ट के लिए क०।

हाथ का दिया साथ चलेगा
दानपुण्य परलोक में काम आता है।

हाथ का देना और बैर बिसाना, (व्य०)
किसी को पैसा उधार देना उससे दुश्मनी मोल लेना है; क्योकि मांगने से बुराई पैदा होती है।

हाथ का हथियार, पेट का आधार
अपने औज़ारों के संबंध में कारीगर का कहना। उन्हीं से वह रोटी कमाता है।

हाथ की लकीरें कहीं मिटी हैं?
(१) पुश्तैनी संबंध नहीं छूटता।
(२) भाग्य का लिखा होकर रहता है। भाग्यवादियों का कहना।

हाथ के सांकल, मुंह के प्यार, (पू०)
हाथों में बंधन डालना, और मुंह से प्यार की बात करना।
दिखावटी प्रेम।

हाथ को हाथ नहीं सूझता
घना अंधेरा।

हाथ को हाथ पहचाने
जिसके हाथ से हमने चीज़ ली उसी को देंगे, ऐसा भाव प्रकट करने के लिए क०।

हाथ कौड़ी न, बाजार लेखा
झूठी शान। पास में कौड़ी नहीं, कहते हैं हमारा बाजार मे हिसाब-किताब है, रक़म जमा है।

हाथ गोड़ लकड़ी, पेट बकरी
ऐसे लडके से कहते है, जो बहुत खाता है फिर भी दुबला हो।

हाथ गोड़ सिरकी पेट, नदकोला
दे० ऊ०।
सिरकी=सीक।
नदकोला—नाद।

हाथ देखन को आरसी क्या? (स्त्रि०)
स्पष्ट। दे०—हाथ कगन को आरसी क्या?

हाथ न गले, नाक में प्याज के डले, (स्त्रि०)
हाथ और गले मे कोई गहना नही, पर नाक मे प्याज के डले है। बेहूदा औरत के लिए क०।

हाथ न मुट्ठी, हुलबलाती उट्ठी, (स्त्रि०)
पास मे पैसा नही, फिर चीज़ लेने का शौक।

हाथ पांव की आलकसी (और) मुंह में मूंछें जायं, (मु०)
आलसी के लिए क०। जो अपनी मूछ भी नही संभाल सकता।

हाथ पांव के लंगड़े, नाम सलामत खां
निकम्मा आदमी।

हाथ पांव दियासलाई, बात करने को कबल इलाही
कमजोर आदमी जो बहुत बात करे, पर काम कुछ न कर सके।

हाथ-पांव बचाइए, मूजी को टरकाइए
दुष्ट को दूर से ही प्रणाम कर लेना चाहिए।
मूंजी=शत्रु, सांप, कंजूस।

हाथ-पांव हिला, भगवान देगा, (स्त्रि०)
मेहनत का फल मिलता है।

हाथ बेचा है कुछ जात नहीं बेची, (हि०)
ऐसे नौकर का कहना, जिससे उसका मालिक कोई ऐसा काम करने को कह रहा हो, जो उसके योग्य नही।

हाथ में न गात में, 'मैं धनवंती जात में', (स्त्रि०)
हाथ मे पैसा है और बदन पर कपड़ा, फिर भी कहती है कि मैं बिरादरी मे धनवती (सबसे बडी) हूं। झूठी कुलीनता दिखाना।

हाथ में लाना, पात में खाना, (स्त्रि०)
बहुत गरीब आदमी।

हाथ लिया कांसा, तो रोटियों का क्या सांसा
जब भीख ही मागनी है, तो रोटियो की क्या कमी रहेगी?
कासा=कटोरा, भिक्षापात्र।
सासा—सशय।

हाथ सुमरनी पेट कतरनी
धूर्त साधुओ के लिए क०।
सुमरनी—माला।

हाथ सुमरनी बगल कतरनी, पढ़े भगवत गीता रे।
औरों को तू ज्ञान बतावे, आप फिरे तू रीता रे।
जो केवल दूसरो को उपदेश देते हैं स्वयं उसके अनुसार नही चलते, उसके लिए कहा गया।

हाथ सूखा, फ़कीर भूखा
(१) फकीर जब इतना कमजोर हो जाता है कि भिक्षापात्र भी हाथ मे नही ले सकता, तब वह भूखो मरने लगता है।
(२) हाथ मे कुछ नही, फकीर भूखा गया, यह भाव भी हो सकता है।

हाथी अपनी हथयाई पर आ जाय तो आदमी भुनगा है
बलवान यदि अपना बल दिखाने लगे, तो सबकी आफ़त आ जाए।
(भाव यह छिपा है कि जो सच्चा बलवान है, वह किसी को कष्ट नही पहुंचाता।)

हाथी आवें, घोड़े जायं, ऊंट बेचारे गोते खायं
ऐसी परिस्थिति के लिए क०, जिससे निपटना बहुत मुश्किल हो।

हाथी का कंधा खाली नहीं रहता
हमेशा कोई-न-कोई उस पर बैठता है, क्योंकि उस पर बैठना बड़प्पन की निशानी है।

हाथी का जग साथी, कीड़ी पाहुन पीड़ी
जबर्दस्त के सब साथी होते हैं, ग़रीब का कोई नहीं। हाथी से सभी डरते हैं, और चींटी को पैरों से कुचलते हैं।

हाथी का दांत, घोड़े की लात, मूंजी का चंगुल
(१) इनसे बचना चाहिए।
(२) गाली के रूप में भी कहते हैं, तू हाथी के दांत या घोड़े के पैरों से कुचला जाए या मूजी के चंगुल पड़े।

हाथी का दांत निकला जहां निकला
(१) कोई बात एक बार खुल गई सो खुल गई।
(२) कोई आदमी एक बार धृष्ट (या निर्लज्ज) बन गया, सो बन गया।

हाथी का बोझ हाथी ही उठाता है
(१) बड़ों का भार बड़े ही सहन कर सकते हैं।
(२) बड़े कठिन काम को वही कर सकता है, जो उसके करने की क्षमता रखता हो।

हाथी का पीर आंकुस
हाथी अंकुश से ही दबता है।
पीर=महात्मा, सिद्ध, ऐसा व्यक्ति जिसके वश में देवी-देवता रहते हो।

हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और
कोई आदमी जब कहे कुछ और करे कुछ, तब क०।

हाथी के पांव में सब का पांव
बड़ों के साथ बहुत-से छोटे लोगों की गुजर होती है।

हाथी घोड़ा बहा जाए, गदहा कहे 'कितना पानी'
जिस काम को बड़े भी न कर सकें, छोटे उसे करने का दुस्साहस दिखाएं।

हाथी चढ़े कुत्ता काटे
हाथी पर सवार आदमी को कुत्ते ने काट खाया। होनी को कोई रोक नही सकता।

हाथी निकल गया, दुम रह गई
(१) जब किसी बड़े काम का बहुत थोड़ा हिस्सा करने को बाकी रह जाए, तब क०।
(२) काम का एक बड़ा हिस्सा हो जाए, पर थोड़े में असमंजस रह जाए, तब भी क०।

हाथी फिरे गांव गांव, जिसका हाथी उसका नांव
(१) किसी बड़ी या मूल्यवान वस्तु के असली मालिक का नाम छिपा नहीं रहता।
(२) किसी बड़े काम को करने वाले का नाम भी नहीं छिपता।

हाथी हजार लटा, तौ भी सवा लाख टके का
(१) बड़ा आदमी कितना भी ग़रीब हो जाए, तो भी साधारण आदमी से तो उसकी स्थिति अच्छी रहती ही है।
(२) मरा हाथी भी दांत और हड्डियों के लिए बहुत दाम मे बिकता है, इसलिए भी क०।

हाथों मेंहदी पांवों मेंहदी, अपने लच्छन औरां दें दो, (स्त्रि०)
किसी विधवा के हाथ-परों में मेंहदी लगाई, तब उससे कहा जा रहा है कि तू अपने में (बुरे) लक्षण औरों को भी सिखा रही है।
(मेंहदी लगाना सुहागिन का ही काम है, विधवा लगाए, तो उसे गई-बीती समझना चाहिए।)

हाथों हाथ बिक गया, (व्य०)
तुरन्त बिक गए माल के लिए क०।

हान, लाभ, जीवन, मरन, जस, अपजस, बिध हाथ
ये सब ईश्वर के हाथ है।

हानी को हनिये, पाप-दोष ना गिनिये
पापी को मारने में कोई पाप नहीं लगता।
पाठा०—हंते को हनिए...।

हाय री जवानी!
जवानी की मूर्खताओं पर क०।

हाय रे बुढ़ापे!
जवानी के दिनों की याद करके कोई अपने बुढ़ापे पर दुख प्रकट कर रहा है।

हार का न्याव क्या ?
हारी हुई बाज़ी के लिए क्या किया जा सकता है ?

हार जीत क़िस्मत के हाथ
हानि-लाभ भाग्य के अधीन है।

हार जीत सब में रहे, हारे नहिं दातार
परमात्मा को छोड़कर सभी के साथ हार-जीत लगी है, अर्थात सभी दुख भोगते हैं ।

हार मानी, झगड़ा जीता
जो हार मान लेता है, झगड़े में वही जीतता है । दो मे से एक व्यक्ति यदि अपना हठ छोड़ दे, तो झगड़ा मिट जाता है।

हार में हार, न घर में खेती
ग़रीबी हालत के लिए क०। न तो खेती होती है और न घर में कोई धंधा।
हार=(१) जंगल, मैदान। (२) खेत।
खेती=(१) कृषि। (२) काम-धंधा।

हारूं तो हूरूं, जीतूं तो हूरूं
हारने पर भी (मैं तुम्हें) नोचूंगा, जीतने पर भी नोचूंगा।
(१) जब हरहालत में कोई अपनी ही जीत चाहे, तब क० ।
(२) इच्छा के विरुद्ध किसी से कोई काम नही कराया जा सकता ।

हारे के हर नाम
मनुष्य जब शरीर से शिथिल हो जाता है अथवा असहाय बन जाता है, तब उसे भगवान का नाम सूझता है ।

हारे जुआरी को कब कल पड़ती है ?
हारे जुआरी को चैन नहीं पड़ता, वह फिर जुआ खेलने की फ़िक्र करता है ।

हारे भी हरावे, जीते भी हरावे
जो सब तरह से अपनी ही जीत चाहे, उसके लिए क० ।

हारे भी हार, जीते भी हार
अदालत के मुकदमों पर क० । बहुत से मुकदमों में इतना खर्च पड़ता है कि जीतने पर भी हानि ही रहती है।

हालका, न कालका; टुकड़ा रोंटी, पनवा दाल का, (स्त्रि०)
ऐसा आदमी, जो किसी काम का न हो ।

हाल का, न रोजगार का
निकम्मा आदमी।

हाल गया, अहवाल गया, दिल का ख्याल न गया
स्वास्थ्य गया, पैसा गया, पर बुरी आदत न गई।

हाल में फाल, दही में मूसल
जब चैन से गुज़र रही हो, तब ज्योतिषी के पास जाकर भाग्य पूछना बिल्कुल ही मूर्खता है। दही के लिए मूसल की जरूरत नही पड़ती। अथवा हलवाहा हांकनेवाला अच्छा, और बैल चलनेवाला अच्छा।

हाली का पेट सुहाली से नहीं भरता, (कृ०)
हलवाहे का पेट सुहाली से नहीं भरता, उस जैसे परिश्रमी के लिए तो अधिक भोजन चाहिए।
सुहाली=मोमन दी हुई बढ़िया किस्म की पूड़ी होती है।

हासिद का मुंह काला
ईर्ष्या करनेवाले की फ़ज़ीहत होती है ।

हा हा खाये बूढ़े नहीं ब्याहे जाते
(१) कोई असंगत काम हाथ-पैर जोड़कर नही कराया जा सकता ।
(२) बूढ़े बिनती करके नही ब्याहे जा सकते, हा,यदि रुपया खर्च किया जाए; तो भले ही काम बन जाए ।

हिंदी न फ़ारसी, लाला जी बनारसी
पढ़ा-लिखा मनुष्य जब कोई मूर्खता दिखाए, तब व्यंग्य में।
(बनारस संस्कृत के विद्वानों का केन्द्र स्थल है ।)

हिंदू मुसलमान का चोली दामन का साथ है
दोनों का घनिष्ठ संबंध है, एक के बिना दूसरा रह नही सकता।
(अचकन या अंगरखे के ऊपर का हिस्सा जो कमर तक बदन से चिपका रहता है, चोली और नीचे का ढीला-ढाला हिस्सा दामन कहलाता है।)

हिकमते चीन, हुज्जते बंगाला, (फ़ा०)
चीनवाले हिकमती (कला-निपुण) और बंगाली हुज्जती (झगड़ालू) होते हैं।

हिमायती की घोड़ी इराक़ी को लात मारे
(१) जब कोई साधारण व्यक्ति किसी प्रभावशाली मनुष्य का संरक्षण पाकर अपने से किसी बड़े और शक्तिशाली व्यक्ति से लड़ने की हिम्मत करे, तब क०।
(२) ऊंचे अफ़सरों के नौकर-चाकर अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझते और प्रायः प्रतिष्ठित लोगों का अपमान भी कर बैठते हैं, तब भी क० ।
हिमायती की घोड़ी--ऐसी घोड़ी, जिसे किसी की विशेष सहायता प्राप्त हो; बड़े आदमी की घोड़ी ।

हिम्मते मरदां, मददे ख़ुदा, (फ़ा०)
जो (काम करने की) हिम्मत करता है, ईश्वर उसकी सहायता करता है । अथवा मनुष्य को उद्योग करना चाहिए, ईश्वर सहायता करता है।

हिरसी टट्टू
ईर्ष्यालु आदमी ।

हिरी फिरी बल गई, जलबे के वक्त टल गई, (मु०)
नव-विवाहिता वधू पहले-पहल ससुराल आई है, कोई स्त्री बार-बार उसे प्यार तो बहुत कर रही है, पर जब उस पर नज़र-न्योछावर करने का वक्त आया तो चुपचाप खिसक गई । उसी से कहा० का प्रयोग तब करते है, जब कोई मनुष्य किसी काम में उत्साह तो बहुत दिखाए, पर जब कुछ खर्च करने का मौका आए तो गायब हो जाए। (मुसलमानों में जलवा वह दस्तूर होता है, जिसमें बहू पहले-पहल ससुराल आने पर लोगों के सामने अपना मुंह खोलती है । इस अवसर पर बहू को भेंट देने का रिवाज है।)

हिरे फिरे खेत में को राह
सब कुछ देख रहा है, फिर भी खेत में होकर ही जाता है। जानबूझकर गलत काम करना।

हिल न सकूं, मेरे सौ बखरे, (स्त्रि०)
(१) हिल नहीं सकता, फिर भी कहता है कि मेरे सौ बखर (हल) चलते हैं। झूठी शेखी मारना।
(२) बखरे का अर्थ हिस्से भी हो सकता है। तब कहा० का अर्थ हो जाएगा—काम कुछ न करे, पर अपना हिस्सा पूरा मांगे। आलसी के लिए कहेंगे।

हिलाव न झुलाव, मुझे बैठे ही खिलाव
घोर आलसी और कामचोर के लिए क० ।

हिसाब -एदोस्तां दर दिल, (फ़ा०)
दोस्तों का हिसाब दिल में रहता है ।

हिसाब जौ जौ, बख़्शिश सौ सौ, (ब्य०)
हिसाब एक-एक पाई का करना चाहिए, इनाम में चाहे सैकड़ों दे दे ।

हिसाब-ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों ?
बार-बार हिसाब लगाने या नाप-जोख करने पर भी जब किसी मूल का कारण समझ में न आए, तब क० । (कथा है कि कोई सेठ जी सपरिवार बैलगाड़ी पर यात्रा कर रहे थे। रास्ते में उन्हें एक नदी मिली। वे तुरन्त गाड़ी पर से उतरे और नदी के भिन्न-भिन्न स्थानों के जल को नाप डाला । औसत में पानी गाड़ी के पहिए के बराबर साबित हुआ । तब अपने उस हिसाब के अनुसार यह सोचकर कि ख़तरे की कोई बात नही और गाड़ी मज़े में पार हो जाएगी। उन्होंने गाड़ीवान से गाड़ी को नदी में होकर ले चलने के लिए कहा। पर आगे पानी गहरा था और गाड़ी जब वहां पहुंची, तो डूबने लगी, साथ ही सेठ जी के बच्चे चुमुर-चुमुर करने लगे। वे इस पर बड़े परेशान हुए । उन्होंने फिर अपना हिसाब लगाया और उसे ठीक पाया। तब उपरोक्त बात कही। अल्पविद्या हानिकर होती है ।)

हिसाब नित नया
(१) हिसाब का नित नया खाता खोलना चाहिए, तात्पर्य पुरानी बातों को भूल जाना चाहिए।
(२) रोज़ पिछला हिसाब देख लेना चाहिए, जिसमें उसे भुलाया न जा सके।

हिसाब लेब, कि बनिया डांड़ब ? (भो०)
हिसाब लोगे या मुझे बनिया समझकर धींगा-मुश्ती करते हो ?

बनिया डांडब=बनिया का-सा दंड दोगे।

हूँगे हमसे फिरोगे

अपने कर्मों का दंड भोगोगे, पड़े-पड़े रोओगे।

हीजड़े की कमाई मुड़ौनी में गई

क्योंकि अपने चेहरे को सुन्दर और औरतों जैसा बनाये रखने के लिए वह रोज-रोज़ हजामत बनवाता है।

हीजड़े के घर बेटा हुआ

जब कोई मनुष्य किसी ऐसे काम को करने का दावा करता है, जो उसके लिए असंभव हो, तब क०।

हीनी पुड़िया, छत्तीस रोग

(१) घटिया दवा से छत्तीस रोग पैदा होते हैं। अथवा (२) छत्तीस रोगो से ग्रस्त है और घटिया दवा का आश्रय लेते है।

हीरे की क़दर जौहरी जाने

गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

हीले रिजक, बहाने मौत

हीले से ही रोजी मिलती है, और बहाने से मौत होती है। आशय यह है कि ईश्वर ही रोज़ी देता है और वही मारता है। मनुष्य का प्रयास या रोग तो केवल एक उपलक्ष है।

हुंड़रा रे! बकरी चरैबे पठरू समेत? (पू०)

क्यों रे भेड़िये! क्या बकरी चरायेगा, बुकरेलू समेत? वह तो इस काम के लिए तैयार ही बैठा है, पर उससे इस तरह की बात कहना महान मूर्खता है।

हुंड़ार चीन्हे बामन का पूत? (पू०)

भेड़िया ब्राह्मण के लड़के को क्या पहचाने? वह तो उसे भी खा जाएगा।

कोई दुष्ट भले आदमी को सताए, तब क०।

अदालत के रिश्वतखोर कर्मचारियों के लिए क०, जो किसी की रू-रियायत नहीं करते।

हुकूमत की घोड़ी और छः पसेरी दाना

हाकिम की घोड़ी छः पसेरी दाना खाती है। वास्तव में वह खाती तो एक पसेरी ही होगी, बाकी नौकर-चाकर उड़ाते हैं।

हुक्का अफ़ीमी का

अफ़ीमची ही हुक्का पीना जानता है।

हुक़ा चार वक्त अच्छा; सोके, मुंह धो के, खाके, नहाके और चार वक्त बुरा—आंधी में, अंधेरे में, भूक में और धूप में

स्पष्ट।

हुक्का पैर दौड़ो का, रोटी किस्मत की

(१) हुक्का चलने-फिरने से मिल जाता है, जहां जाओ वहा लोग पिला देते है, पर रोटी भाग्य से ही मिलती है।

(२) हुक्का के लिए आग लाने जाना पड़ता है।

हुक्का भर बड़ों को दीजे, जब सुलगे तब आप ही लीजे

स्पष्ट।

हुक्के का शिष्टाचार।

हुक्का यकदम, दो दम, सिह दम बाशद, न कि मीरासे-जद्दो-आम बाशद, (फ़ा०)

हुक्का एक फूंक, दो फूंक, वा तीन फूक पीना चाहिए, उसे अपनी मीरास या बपौती नहीं समझ लेना चाहिए। जहा चार आदमी बैठे हों, वहां बारी-बारी से सबको हुक्का देना चाहिए, यह नहीं कि उसे स्वयं ही गुड़-गुड़ पीते रहें।

हुक्का, सुक्का, हुरकनी, गूजर और जाट;
इनमें अटक कहा, बाबा जगन्नाथ का भात।

इनमें छुतछात नहीं मानी जाती।

सुक्का=सुघनी।

हुरकनी=वेश्या।

हुक्का हर का लाड़ला, रक्खे सब का मान।
भरी सभा में यूं फिरे, ज्यूं गोपिन में कान।

हुक्के की प्रशंसा में।

हुक्का हुक्म खुदा का, चिलम बहिश्त का फूल।
पीवें मर्द खुदा के, घूरें नामाकूल।

यह भी धूम्रपान की प्रशंसा में।

हुक्के और बातों में बैर है

हुक्का पीते समय बात नहीं की जा सकती।

हुक्के का मज़ा जिसने ज़माने में न जाना।
वह मर्द मुख़न्नस है, न औरत, न ज़नाना।

हुक्का पीनेवालों की उक्ति।

हुक्के पानी का सुख
सब तरह का आराम।

हुक्के से हुरमत गई, नेम गया सब छूट।
पगड़ी बेच तंबाकू लिया, गई हिये की फूट।
स्पष्ट। धूम्रपान की निंदा।
हुरमत=इज्जत।
नेम=नियम, धर्म।

हुक्म के साथ सब कुछ मौजूद है
अधिकार होने पर सब चीज सुलभ रहती हैं।

हुक्म निशानी बहिश्त की, जो मांगे से पाए
हुकूमत बहिश्त है, उससे सब कुछ मिल सकता है।

हुक्मी बंदा जन्नत में
बड़ों की आज्ञा माननेवाला स्वर्ग जाता है।

हुक्मे हाकिम मर्गे मफ़ाजात, (फ़ा०)
हाकिम का हुक्म आकस्मिक मृत्यु के समान है, एक मुसीबत है।

हुजूरी की मजबूरी भली
मालिक की नजर के सामने ही काम करना अच्छा होता है, क्योंकि तब वह उसकी कद्र कर सकेगा।

हुज्जती ला उम्मती, (मु०)
तर्क करनेवाला संशयवादी होता है, वह यकायक किसी बात मे विश्वास नही करता।

हुनरमंद भूखा नहीं रहता
स्पष्ट।

हूं सजनी जानत नहीं, पिय बिछुड़न को सार।
जिय बिछुड़न से कठिन है, पिय बिछुड़न की बार।
स्पष्ट।
सार=तत्व, परिणाम।

हूर भी सौकन को डायन से बुरी है, (स्त्रि०)
सौत परी के समान भी सुंदर हो, तो भी डायन से भी बुरी होती है। सौतिया डाह पर क०।

हेर फेर आवे तो काकड़ी मटकावे, (ग्रा०)
यदि वह फिर मेरे पास आ जाए, तो ककड़ी खाने को मिले।
(कथा है कि किसी ग्रामीण को एक मोहर मिल गई। उसका वास्तविक मूल्य न जानकर उसने उसे एक शरीफ के हाथ इस शर्त पर बेच दिया कि वह उसे नित्य प्रति एक पैसा ककड़ी खाने को दिया कि करेगा। बहुत दिनो तक उस ग्रामीण को एक पैसा रोज मिलता रहा। अंत मे एक दिन शरीफ ने उसे टरका दिया, तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

हैं मर्द वही पूरे जो हर हाल में खुश हैं
साहसी मनुष्य वही है, जो हर परिस्थिति मे प्रसन्न रहे।

हैं घट में, सूझे नहीं, कर से गहा न जाय।
मिला रहे और ना मिले, तासे कहा बसाय।
स्पष्ट। ईश्वर के लिए कहा गया।

है आदमी, है काम, नहीं आदमी, नहीं काम
(१) जब तक मनुष्य जीवित रहता है, उसे हजार काम लगे रहते है, मरने पर सब काम भी खतम हो जाते है। अथवा
(२) तुम अगर मनुष्य हो, तो तुम्हारे लिए काम की कमी नही। नही हो, तो काम भी नही है।

है घरनी घर गाजत है, नहि घरनी, घर पावत है, (पू०)
स्त्री के बिना घर की शोभा नही होती।

होंठ चाटने से प्यास नहीं बुझती
जहां बहुत की आवश्यकता हो, वहा थोड़े से काम नही चलता।

होंठ से निकली हुई पराई बात
मुह से बाहर निकलते ही बात फैल जाती है, सबको मालूम हो जाती है।

होंठ हिले न जिभिया खाले, फिर भी सास कहे बड़-बोली, (प्रा०)
सास ने किसी बात पर बहू को डाटा, तब बहू कहती है कि मैने तो मुह से कुछ कहा भी नही, फिर भी सास मुझे ढीठ बताती है।

होठों निकली कोठों चढ़ी
मुह से निकली हुई बात धीरे-धीरे सब जगह फैल जाती है।

होठों से अभी दूध की बू नहीं गई
अभी तुम निरे बच्चे हो।

हो गई डड्डो, ठुमुक चाल कैसी ?
बुढ़िया हो गई, अब ठसक से चलना क्या ?

होड़ का कार, जी का भार
स्पर्द्धा का काम बड़ा कठिन होता है, चिन्ता रहती है।

होत का बाप, अनहोत की मां
सम्पत्ति में ही पिता काम आता है, विपत्ति में मां काम आती है।

होत की जोत है
जब तक तेल रहता है, तभी तक दीया जलता है, जब तक धन रहता है, तभी तक सब कुछ है।

होती आई है
परंपरा से चली आई है।

होती आई है कि अच्छों के बुरे होते हैं
हमेशा से होता आया है कि...।

होती आई है कि अच्छो को बुरा कहते हैं
हमेशा से होता आया है कि...।

होते ही ना मर गये, जो कफ़न भी थोड़ा लगता
नालायक के लिए क०। मजाक मे भी प्रयुक्त करते हैं।

होनहार बिरवा के चिकने-चिकने पात
होनहार लड़के के लिए क०, जो बचपन से ही अपनी योग्यता और प्रतिभा का परिचय देने लगता है।

होनहार मिटती नहीं, होवे बिस्वे बीस
जो होना है, वह अवश्य होकर रहता है।
बिस्वे बीस=बीस विस्वा, (मु०) निस्संदेह।

होनहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब बुद्ध
स्पष्ट। पूरा शुद्ध दोहा इस प्रकार है:
होनहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब सुद्ध।
जैसी हो होतव्यता, तैसी उपजै बुद्ध।

होनहार होके टले
दे०—होनहार मिटती नहीं...।

होन।नहोन।खुदा के हाथ है, मार मार तू किये जाय
किसी काम का होना न होना तो ईश्वर के हाथ है, पर प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

होनी बलवान है
दे०—होनहार मिटती नहीं...।

होम करत हाथ जले, (हिं०)
भला करते बुरा हुआ। प्रायः उस समय कहते हैं जब किसी के साथ कोई उपकार किया जाए और उसका नतीजा उल्टा हो।

होय भले के अनभला, होय दानी के सूम।
होय कपूत सपूत के, ज्यों पावक में धूम।
स्पष्ट।
अनभला=बुरा।

होला खाये मुंह हाथ दोनों काले
स्पष्ट।
होला=आग मे भुने हरे चने या मटर की फलियां।

होली का भडुआ है
फालतू आदमी। जिसका सब मज़ाक उड़ायें।

होश की (दवा) बनवाओ
अपने होश को ठिकाने करो।

हौंसनाक बुढ़िया, चटाई का लंहगा, (पू०)
बेतुका शौक।
हौंसनाक=स्पर्द्धा करनेवाली।
पाठा०—शौकीन बुढ़िया...।"

हौसं से रिस भली
स्पर्द्धा (या द्वेष) से शत्रुता अच्छी।

हौज भरे तो फव्वारे छूटें
जब खूब पैसा हो, तो खर्च भी खूब किया जाता है।

परिशिष्ट

अतिरिक्त कहावतें

अधूरे काम और जनती लुगाई को कभी न देखे
अरुचि पैदा होती है।
जनती लुगाई=ऐसी स्त्री, जिसके बच्चा हो रहा हो।

असौज में जो बरसे दाता, नाज नियार का रहे न घाटा, (कृ०)
क्वांर के महीने में पानी बरसने से फ़सल अच्छी होती है।

आँख, नाक, मुख मूंद के, नाम निरंजन लेय।
भीतर के पट जब खुलें, जब बाहर के पट देय।
एकाग्र चित्त होकर जो निरंजन अर्थात कल्मष-शून्य भगवान है, उसका ध्यान करना चाहिए। भीतर के पट (द्वार) तभी खुलते हैं, अर्थात सच्चा ज्ञान तभी प्राप्त होता है, जब बाहर के पट बंद कर दिए जाएं, अर्थात काम, क्रोध आदि का रास्ता रोक दिया जाए।

आग, जवासा, आगरी, चौथा गाड़ीवान।
ज्यों-ज्यों चमके बीजरी, त्यों-त्यों तजें प्रान।
ज्यों-ज्यों बिजली चमकती है, त्यों-त्यों आग, जवासा, आगरी और गाड़ीवान ये चारों घबराते हैं; अर्थात पानी बरसने से इन्हें हानि पहुंचती है।
जवासा=एक प्रकार की कांटेदार झाड़ी जो प्रथम वृष्टि होते ही मर जाती है,
आगरी=नोनिया नामक साग।

आता है हाथी के मुंह, जाता है च्यूंटी के मुंह
रोग के लिए क०।
आता बहुत जल्दी है, जाता मुश्किल से है।

आदमी चने का मारा मरता है
(मौत आने पर) चने की चोट से भी आदमी मर जाता है। जीवन की क्षणभंगुरता पर क०।

आप डूबा सो डूबा, और को भी ले डूबा
अपने साथ दूसरों को भी हानि पहुंचाई।

आप मिले सो दूध बराबर, मांगे मिले सो पानी।
कहें कबीर वह रकत बराबर, जामें ऐंचातानी।
जो बिना मांगे मिले, वह दूध के बराबर (कीमती) है, जो मांगने से मिले वह पानी है। कबीर कहते हैं, देनेवाले को जिसमें किसी तरह का कष्ट हो, वह रक्त के बराबर (घृणित और तुच्छ) है।

आपा तजे तो हरी को भजे
अहंकार को छोड़ने से ही ईश्वर की उपासना होती है।

आसपास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे
जहां जिस चीज़ की बहुत ज़रूरत है, वहां तो वह न मिले पर और जगह सुलभ हो। एक दुख की बात। अथवा ईश्वर की विचित्र लीला।

आसमान की चील, जमीन की असील (मु०)
आसमान में उड़ती हुई चील (जब तक किसी ने उसे देखा नहीं) अच्छे वंश की ही चिड़िया मानी जाएगी।
असील=उच्च कुल का।

उड़द कहे मैं सब से नीका,
सब पंचों मिल दीना टीका;
जब मेरे हों उड़दी बड़े,
तो गवरू आयं खड़े खड़े। (प्रा०)
उड़द की दाल की प्रशंसा में क०।
दे०—उड़द कहे मेरे माथे टीका...।
('सब पंचों मिल दीना टीका' से अभिप्राय है कि मैं सब दालों में प्रमुख हूं। उड़द पर सफ़ेद छींटा तो होता ही है।)

ऊँट की बरसात में कमबख्ती
क्योंकि वह रेगिस्तान का जानवर है, कीचड़ मे चल नहीं पाता।

एक आसामी सौ अर्जियां
एक जगह, और उसके उम्मीदवार बहुत से।

एक झूठ के सबूत में सत्तर झूठ बोलने पड़ते हैं
स्पष्ट।
एक आम अनुभव की बात।

एक पापी सारी नाव को डुबोता है
एक के बुरे काम का दड सारे समाज को भोगना पड़ता है।

एक बोटी, सौ कुत्ते
चीज़ तो एक और ग्राहक बहुत से।

एक शेर मारता है, सौ लोमड़ियां खाती हैं
एक बड़े की कमाई से दस छोटे लाभ उठाते है।

कह मर जायेंगे एक दिन, जो नर राखें बैर।
बकरे की मां कब तलक, रहे मनाती खैर।
जो मनुष्य दूसरों से बैर-भाव रखते हैं, वे एक दिन नष्ट हो जाएगे, बकरे की मा कब तक कुशल मनाएगी? (एक न एक दिन उसकी गर्दन पर छुरी फिरेगी ही)।

करना है सो आज कर, 'कल कल' मत ना कर।
चलता फिरता आदमी, छिन मां जावे मर।
जो भी (अच्छा) काम करना हो, सो कल के लिए न छोड़कर आज ही कर लेना चाहिए, क्योकि ज़िदगी का कुछ ठिकाना नही।

करनी ही संग जात है, जब जाय छूट सरीर।
कोई साथ न दे सके, मात, पिता, सुत, बीर।
मनुष्य के मरने पर उसके अच्छे कर्म ही साथ जाते है, मां-बाप, पुत्र या भाई--कोई साथ नही जाता।

कल्लर खेत रहे जिस पास;
वाके होय नाज न घास, (कु०)
जिसके पास ऊसर खेत होता है, उसके न तो अनाज ही पैदा होता है; न घास।

कां काशी, कां काश्मीर, कां खुरासान, गुजरात।
तुलसी यां तो जीव को, परालब्ध ले जात।
भाग्य मनुष्य को न जाने कहां-कहां ले जाता है।

काजल की कजलौटी और फूलों का हार
रंग कजलौटी जैसा काला और पहिनने को चाहिए फूलों का हार।
किसी बदसूरत का दिमाक से रहना।
कजलौटी काजल रखने की डिबिया।

क़ाज़ी के मरने से क्या शहर सूना हो जाएगा?
किसी एक मनुष्य के मरने से--फिर वह कितना ही बड़ा क्यो न हो--दुनिया के काम नही रुकते।

क़ाज़ी जी अपना आगा तो ढाको, पीछे किसी को नसीहत करना, (मु०)
पहले अपने दोष तो ढको, फिर दूसरों को उपदेश देना। (आप तो खुद नगे है।)
आगा = सामने का हिस्सा।

क़ाज़ी जी बहुतेरे हरये, मैं हारता हो नहीं
कोई कुछ कहें, मैं मानता ही नही। ज़िद्दी आदमी।

क़ाज़ी ब-दो गवाह राज़ी, (मु०)
दो गवाहों से अदालत को संतोष हो जाता है।

कातक मां जो सीत को, पिये सो लाभा पाय।
भादों मां जो कोई पिये, देवे ताप चढ़ाय।
कार्तिक में मठा पीने से लाभ और भादों में पीने से हानि होती है।

काना, याना, लाड़ला, तीनों हट की खान।
अंधा गूंगा कैयड़ा, हैं पूरे शैतान।
काना, अयाना (छोटा लड़का) और लाड़ला (दुलारा) ये तो हठी होते ही है, पर अंधे, गूंगे और तिरछी आखवाले भी पूरे शैतान होते हैं।

कानूनगो की खोपड़ी मरी भी दगा दे
कानूनगो और पटवारी, माल विभाग के ये दो कर्मचारी किसानों को हमेशा बड़ा तंग करते रहे हैं, इसी से क०।

कामन तो वोही भली, जो पर घर कभी न जाय।
भय राखे यों नाहु का, ज्यों गलकट से गाय।
स्त्री तो वही अच्छी जो कभी दूसरे के घर न जाए

और स्वामी से इस प्रकार डरे, जैसे कसाई से गाय डरती है।

कामन=कामिनी स्त्री।

काल करंते आज कर, आज करंते अब्ब।
पल में परले होत है, फेर करेगा कब्ब।

स्पष्ट।

दे०—करना है सो आज कर...।

परले=प्रलय।

काल का मारा सब जग हारा

मौत से सब हारे हैं।

काला हिरन मत मारियो रे सत्तर हो जायेंगी रांड़

हिरनियों के एक पूरे झुण्ड में एक ही नर होता है, जो उनका स्वामी माना जाता है। अब यदि वह मर जाए, तो निस्संदेह सभी हिरनियों को दुख होगा; इसी से कहा गया है। भाव यह है कि कभी ऐसे मनुष्य का घात नहीं करना चाहिए, जिसके आश्रित बहुत से लोग हों।

कुल्ला करे न दातुन फेरे
फिर कैसे हों दांत निखेरे

दांतों को साफ़ रखने के लिए नित्य कुल्ला-दातुन करना चाहिए।

खात संवारे खेत को और सीख संवारे मीत को, (कृ०)

खाद से खेत अच्छा बनता है, और दूसरों की बात मानने से मित्रता दृढ़ होती है।

खेत जो तब्बे भेंटे न हरी; बाके मिलते मत ले डहरी (कृ०)

यदि नहर के किनारे का खेत मिले, तो उसकी जगह फिर नीची जमीनवाला न ले।

खेत भला ना झील का, और घर आछा नहिं सील का, (कृ०)

नीची जमीन का खेत और सीलदार (नम) घर अच्छा नहीं होता।

गधा मरा कुम्हार का और धोबिन सती होय

किसी का कोई मरे और कोई रोने जाए। जिससे कोई संबंध नहीं, उसके लिए अनावश्यक सिर-दर्द।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कबाड़

जो वस्तु काम में आए, उसी का होना सार्थक है।

कबाड़=टूटे-फूटे सामान।

गाली मत दे किसी को, गाली करे फ़साद।
गाली सूं लाखों हुए, लड़भिड़ कर बरबाद।

गाली देना अच्छा नहीं।

गुरबा कुश्तन रोजे अव्वल, (फ़ा०)

बिल्ली को पहले ही दिन मारो।

(कथा प्रसिद्ध है कि एक पहलवान ने अपनी नव-विवाहिता स्त्री पर रोब जमाने के लिए सुहागरात के दिन एक बिल्ली को मार डाला, जो उसके शयनकक्ष में घुस आई थी। कहावत का भाव यह है कि किसी नए आदमी पर अपना प्रभाव जमाने के लिए शुरू से ही कड़ा रुख दिखाना चाहिए।)

गेहूं आछा नहर का और चावल आछा डहर का, (कृ०)

गेहूं नहर के किनारे का और चावल नीची जमीन का अच्छा होता है।

(डहर मिट्टी के बड़े बर्तन को भी कहते हैं, जिसमें चावल आदि भर कर रख दिया जाता है। इसलिए चावल पुराना अच्छा होता है, यह अर्थ भी हो सकता है।)

गेहूं कहे सुनो रे बीर; मैं हूं सब नाजन का मीर

सब अन्नों में गेहूं श्रेष्ठ है।

घर का खेत, न खेती बारी, कहें मियां मेरी नंबर-दारी, (कृ०)

झूठी शेखी बघारना।

घर की खांड़ किरकिरी, चोरी का गुड़ मीठा

घर की किसी अच्छी चीज को पसंद न करना और उस तरह की बाहर की बुरी चीज के लिए भी लल-चाना। प्रायः उन लोगों के लिए कहते हैं जो पत्नियों की उपेक्षा करके वेश्या के यहां जाते हैं। जिन्हें बाजार की मिठाई खाने की आदत पड़ जाती है, उनके लिए भी क०।

घर की जोरू की चौकसी कहां तक?

घर के आदमी पर कहां तक नजर रखी जा सकती है?

(यदि वह कुछ गड़बड़ करता हो तो।)

घर की शोभा घरवाली के साथ

स्पष्ट।

घी खावत बल तन में आवे, घी आंखों की जोत बढ़ावे

घी खाने से शरीर में बल आता है और आंखों की ज्योति बढ़ती है।

घूंघटवाली देखकर भली बीर मत जान

किसी स्त्री को घूंघट घाले देखकर उसे सच्चरित्र मत समझ लो।

चना पकत है चैत में और गेहूं बैसाख विचार।
कातिक पाके बाजरा और मगसिर पाके ज्वार।

चैत में चना, बैसाख में गेहूं, कार्तिक में बाजरा और अगहन में ज्वार की फ़सल आ जाती है।

चप्पे जितनी कोठरी और मियां मुहल्लेदार

झूठी शान दिखाना।

चप्पे जितनी=चार अंगुल जगह; थोड़ी जगह।

चाक कुनम, गिरह कुनम, देखो मेरा हुनर

मेरा हुनर देखिए। मैं काट भी सकता हूं, और सी भी सकता हूं। बहुत चालाक को व्यंग्य में क०।

चिराग़ से चिराग़ जलता है

ज्ञान से ज्ञान की ज्योति फैलती है, संतान से संतान बढ़ती है; एक समर्थ से दूसरे को सहायता मिलती है, इस प्रकार का भाव प्रकट करने को क०।

(कहावत उस समय का स्मरण कराती है, जब दियासलाई का आविष्कार नहीं हुआ था और दीये से दीया जलाकर काम चलाते थे।)

जने जने से मत कहो कार भेद की बात

अपने रोजगार का (या मन का) भेद हरेक को नहीं बताना चाहिए।

जल की मछली जल ही में भली

जहां का जीव वहीं सुख पाता है।

जल से अगनी बुझत है, जल बरसत ठंड होय।
जल से धोबी मैल को, दूर करत है धोय।

स्पष्ट।

जल्दी काम शैतान का, और देर काम रहमान का

(१) जल्दबाज़ी में किया गया काम शैतान के लिए होता है, और धीरज से किया गया काम ईश्वर के लिए अथवा (२) शैतान ही/हर काम में जल्दबाज़ी करता है, ईश्वर सोच-समझकर काम् करता है।

जहां गाय, वहां गाय का बच्चा

जहां मां, वहां बेटा।

जहां गुल होगा वहां ख़ार भी ज़रूर होगा

गुलाब में कांटा अवश्य होता है।

सुख के साथ दुख लगा है।

जाप के बिरते पाप

यह सोचकर कि अच्छे कर्मों से बुरे कर्म ढके जा सकते हैं, दुष्कर्म करना।

जिन मोलों आई उनही मोलों गंवाई

जिस तरह कोई चीज़ आई, उसी तरह वह हाथ से निकल भी गई; उसे ख़रीदने में कोई लाभ नहीं हुआ।

जिसका घोड़ा उसके बार

जिसकी वस्तु है, उससे संबंधित सामग्री भी उसी की मानी जाएगी।

जिस घर बड़े न बूझिये, दीपक जले न सांझ।
वह घर ऊजड़ जानिये, जिनकी तिरिया बांझ।

जिस घर में बड़े-बूढ़ों से सलाह न ली जाए, जहां संध्या को दीपक न जले और जिस घर की स्त्री बांझ हो, उसे नष्ट हुआ समझना चाहिए।

जिस बहुअर की बैरन सास।
वाका कभी न हो घर बास। (स्त्रि०)

जिस बहू की सास लड़ाकू होती है, वह कभी सुख नहीं पाती।

जीऊ किसी का मत सता, जब लग पार बसाय।
कांटे हैं इस राह में, इस बटिया मत जाय।

जब तक वश चले, किसी को सताना नहीं चाहिए। यह रास्ता कंटीला है। इस पर मत चल।

जी जलाने से हाथ जलाना बेहतर

(किसी का) हाथ भले ही जलाए, पर हृदय न जलाए।

जेठ, जिठानी, देवरा, सब मतलब के मीत।
मतलब बिन तो कोई भी राखे नांहि प्रीत। (ग्रा०, स्त्रि०)

सब सगे सम्बन्धी मतलब के ही यार होते हैं, मतलब

के बिना कोई प्रेम नहीं करता।

जेठ तपत हो बरखा गहरी, हंसे बांगरू, रोवे नहरी, (कृ०)

जेठ में गरमी पड़ने से वर्षा खूब होती है; (तब) ऊंची ज़मीनवाले हँसते और नीची ज़मीनवाले रोते हैं। (क्योंकि ज़मीन बहुत गीली हो जाती है।)

जैसी लक्खो बंदरिया, वैसे मनवा भांड़

दोनों एक से (चालाक)।

मनवा=नाम विशेष।

जैसी सरधा हो तेरी, वैसा ही बोझ उठाय।
हाथी बोझा च्यूंटी ठावत दब मर जाय।

अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही काम करना चाहिए; चींटी अगर हाथी का बोझ उठाए तो दब कर मर जाएगी।

जैसी सेवा करे वैसा मेवा पाये

स्पष्ट।

मेवा=फल।

जैसे के संग तैसा करे, आछा नाहीं काम।
बुरे के संग नेकी करे, नेकी को परनाम।

जैसे के साथ तैसा करना अच्छा नहीं। बुरे के साथ नेकी करना चाहिए। नेकी का फल मिलता है।

जो ईश्वर किरपा करें तो खड़े हिलावें कान अरहर के खेत में

ईश्वर जब देता है तब अनायास देता है। (कथा है कि एक बार राज्य का ख़ज़ाना गधों पर लदकर जा रहा था। संयोगवश उनमें से एक गधा अरहर के खेत में घुस गया और चरने लगा। किसी ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। दूसरे दिन खेत के मालिक ने आकर देखा कि एक गधा खेत में खड़ा कान हिला-रहा है। पास जा कर देखा तो उस पर रुपए लदे पाए। उसने सब रुपए तो लेकर घर में रखे और गधे को मारकर भगा दिया। तब कहावत का उक्त वाक्य उसने कहा।)

जो कोसत बैरी मरे और मन चितवे धन होय।
जल में घी निकसन लगे तो रूखा खाय न कोय।

न तो कोसने (शाप देने) से शत्रु ही मरता है, और न इच्छा करने मात्र से धन ही मिल जाता है। यदि जल में से घी निकलने लगे तो फिर रूखा कोई नहीं खाएगा।

जोगी किसके मीत और पातर किसकी नार

योगी किसी के मित्र नहीं होते और न वेश्या किसी की पत्नी।

जो जल 'साढ़ लगत ही बरसे, नाज नियार बिन कोई न तरसे, (कृ०)

यदि आषाढ़ के शुरू होते ही पानी बरस जाए, तो फ़सल बहुत अच्छी होती है।

असाढ़=अंग्रेज़ी का जून का महीना।

जो तू ही राजा हुआ, अपना सुख मत ठान।
फक्कड़ और फकीर के, दुख सुख पर कर ध्यान।

स्पष्ट।

जोते हल तो होवे फल, (कृ०)

परिश्रम का फल मिलता है।

जो बैरी हों बहुत से और तू होवे एक।
मीठा बन कर निकस जा, यही जतन है नेक।

दुश्मनों में अगर अकेले फंस जाओ, तो भी मीठे बनकर निकल जाओ; झगड़ा मत करो।

जो मैं ऐसा जानती, प्रीत किये दुख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती, प्रीत न कीजो कोय। (स्त्रि०)

अगर मैं ऐसा जानती कि प्रेम करने से दुख होता है तो मैं मुनादी करवा देती—'कोई प्रेम मत करो।'

जो साईं के हुक्म से मुंह न फेरे तोई।
तेरे भी फिर हुक्म से मुंह न फेरे कोई।

तू यदि ईश्वर की आज्ञा माने, तो सब लोग तेरी भी आज्ञा मानेंगे।

जो सावन में बरसा होवे, खोज काल का बिल्कुल खोवे, (कृ०)

सावन में वर्षा होने से फ़सल अच्छी होती है।

ज्यों-ज्यों बाव बहै पुरवाई।
त्यों त्यों अति दुख घायल पाई।

पूरब की हवा चलने से चोट का दर्द बढ़ जाता है।

झांसी गले की फांसी, दतिया गले का हार।
ललितपुर ना छांड़िये, जब लग मिले उधार।

(इस कहावत का ठीक अर्थ लगाना कठिन है। इतना अवश्य है कि दतिया एक सुरम्य स्थान है। राज्यो के विलीनीकरण के पहले यह मध्य भारत का एक छोटा, परन्तु प्रतिष्ठित देशी राज्य था। अब मध्य प्रदेश का एक जिला है। झासी में गर्मी बहुत पड़ती है। किसी के लिए कोई आकर्षण नही। खुश्क जगह है। ललितपुर दतिया की तरह ही आकर्षक है। किसी समय रुपए का लेन-देन वहा बहुत होता और जैन साहूकारो की वजह से लोगो को आसानी से रुपया मिल जाता था। अब वह बात नही। स्थानीय देशभक्ति की अभिव्यक्ति है।)

झूठ कहना और जूठ खाना बराबर है

स्पष्ट।

झूठी तो होती नहीं, कभी भी सांची बात।
जैसे टहनी ढाक में, लगे न चौथा पात।

सच बात कभी झूठ नही हो सकती। ढाक की टहनी मे तीन ही पत्ते होते है, चार नही होते।

झूठे का क्या दोस्ती, लंगड़े का क्या साथ।
बहरे से क्या बोलना, गूंगे की क्या बात?

इन चारो से कोई लाभ नही।

तुम घोरे जो चाकरा, वेवे उमर गंवाय।
बूढ़ा वाको जानकर, घोरे से मत ताह।

जिस नौकर ने जिंदगी भर तुम्हारे यहा काम किया हो, उसे बुढ़ापे मे भगा नही देना चाहिए।

दूर गये की आस क्या?

जो दूर देश गया, उसका क्या ठीक कब लौटे?

देख जगत में औदसा, मत डर और मत रो।
बिना हुकुम भगवान के, बाल न बांका हो।

संसार की कठिनाइयो से मत घबराओ, भगवान की इच्छा के बिना किसी का कुछ नही बिगड सकता।

देवा को रिन मिले सुहेला; अनदेवा को मिले न धेला, (व्य०)

जो लेकर दे देता है, उसे बहुत उधार मिलता है; जो लेकर नहीं देता, उसे अधेला भी नहीं मिलता।

दोनों बैरी दीन के, रांगड़ और शैतान।
बुरा करावें और से, और आप बुरे से काम।

रांगड़ और शैतान दोनों ही धर्म के शत्रु है। स्वयं बुरे कर्म करते हैं, और दूसरों को भी बहकाते है।

(रागड़ छोटी श्रेणी के मुसलमान होते हैं, जो चोरी-चपाटी के लिए बदनाम हैं।)

धन जोड़न के ध्यान में, यू ही उमर न खो।
मोती बरगे मोल के, कभी न ठीकर हो।

धन जोडने की चिन्ता मे आयु वृथा मत खोओ। ककड़ कभी बेशकीमती मोती नही हो सकते।

धरम पाप सब मनुख के, धोवत हैं इस तौर।
जल साबुन ज्यों धोवत हैं, सब कपड़न का घोर।

धर्म से मनुष्य के सब पाप उसी तरह कट जाते है, जैसे साबुन से कपड़ों का मैल कटता है।

धान कहे मै हूं सुलतान, आये गये का राखूं मान, (ग्रा०)

धान की प्रशंसा मे।

धोबी के घर पड़े चोर, वह न लुटे, लुटे और

उसके ग्राहको के ही कपडे चोरी जाएंगे, उसका क्या बिगड़ता है?

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार।
काली आछी कामली, काली भली न नार।

सफेद कपड़े अच्छे होते हैं, पर सफेद बाल अच्छे नही; काला कंबल अच्छा होता है, पर काली स्त्री अच्छी नही।

न्हा कर खाए और खाकर सोवे, उसके औसक कभी न होवे

जो नहा के खाता है, और खाकर विश्राम करता है, वह कभी बीमार नही पड़ता।

निकसत हैं इक आंक से, धोई, धोबी, धान।
ओछे भोंड़े हो गये, सब करतब के तान।

धोई, धोबी और धान, तीनों शब्द एक ही अक्षर से प्रारंभ होते हैं, पर अपने गुण-धर्म के कारण अच्छे और बुरे माने जाते हैं।

धोई=ठग, धोखेबाज़।

निम्नालके बड़े दूध में एक बड़ा पानी क्या जाना जाय ?

सब सयाने एक ही जैसा सोचते हैं।

(कथा है कि एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि किस जाति के लोग सबसे अधिक चतुर होते हैं। बीरबल ने जवाब दिया 'ग्वाले'। और अपने इस कथन की सत्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने आगरे के सब ग्वालों को बुलवाया और उनसे एक बड़े हौज को रात में दूध से भरने के लिए कहा। हरेक ग्वाले ने अपने मन में सोचा कि सब लोग तो दूध डालेंगे ही, यदि वह उसमें एक लोटा पानी डाल देगा तो किसी को पता नहीं चलेगा। यही समझकर सबने दूध की जगह पानी ही डाला और जब दूसरे दिन सुबह बादशाह और बीरबल हौज को देखने गए, तो उसे पानी से भरा पाया।)

निपट सबेरे खेत मां, जाकर हल को बाह।
जब सूरज हो सिखर मां, बैठ छांव में जा। (कु०)

किसान को उपदेश। स्पष्ट।

हल को बाह=हल चला। सिखर मां=सिर पर।

पंडित और मसालची दोनों उल्टी रीत।
और दिखावे चांदनी आप अंधेरे बीच।

पंडित और मशालची इन दोनो का उल्टा तरीका है। दूसरो को प्रकाश दिखाते है, पर स्वयं अंधेरे में रहते है। (पंडित दूसरो को उपदेश देता है, पर स्वय उनके अनुसार काम नही करता।)

पढ़तम ते मरतम, ना पढ़तम ते मरतम

जो पढ़ते हैं वे भी मरते हैं, नही पढ़ते हैं वे भी मरते है; मरना हर हालत मे है।

पढ़े के आगे टोकरा डाला, उसने कहा 'मुझे उपलों को भेजा'

पढ़े के आगे टोकरा डाला गया, तो उसने तुरंत समझ लिया कि मुझसे उपले लाने के लिए कहा जा रहा है। पढ़ा-लिखा इशारे में बात समझ लेता है।

पत चाहे तो बालके, पढ़ विद्या भरपूर।
बिन विद्या के आदमी, हैंगे जैसे बूर।

मान-सम्मान चाहते हो, तो विद्या पढ़ो। बिना विद्या के मनुष्य धूल की तरह है।

परजा जड़ है राज की, राजा है ज्यों रूख।
रूख सूख कर गिर पड़े, जब जड़ जावे सूख।

प्रजा राज्य की जड़ है। राजा वृक्ष की तरह है; जड सूखने से वृक्ष भी सूखकर गिर पड़ता है।

परजा भाजे छोड़ के, कुन्यायी का गाम।
बहुं ओर जग मां करे, फेर उसे बदनाम।

स्पष्ट। कुन्यायी=अन्यायी।

पराई बदशुगनी के वास्ते अपनी नाक कटाई

दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए अपनी हानि कर लेना। दुष्टों का काम।

पराया खाइये गा बजा, अपना खाइये टट्टी लगा

घर का भेद किसी को बताना नहीं चाहिए।

पाप डुबोवे धरम तिरावे, धरमी कभी नाह दुख पावे

स्पष्ट।

पाबंदी एक की भली

अधीनता एक की ही अच्छी।

पीर मियां बकरी, मुरीद मियां बांगा; आ गई बकरी चब गई बांगा, (पू०)

पीर मियां तो बकरी हैं, और उनका चेला है कपास का खेत; बकरी आई और कपास चर गई। गुरु चेलों की ही कमाई खाते है।

पैर जो पछवा मां बरसावे; वो ही निरमल रास उठावे, (कु०)

पश्चिम की हवा चलने पर उड़ावनी करने से अनाज की राशि शीघ्र प्राप्त हो जाती है। (फसल कट जाने पर उसे खलिहान में इकट्ठा करके थोड़ा-थोड़ा करके बैलों से कुचलवाते हैं; इसी कुचले हुए अंश को पैर कहते हैं। इसे टोकनी में भरकर धीरे-धीरे नीचे गिराते हैं, जिससे भूसा कुछ दूर जाकर गिरता है और दाना नीचे गिरता जाता है। पश्चिम की हवा चलने पर उड़ावनी की यह क्रिया शीघ्र संपन्न होती है। कहा० में वही बात कही गई है।)

पैसे बिन माता कहे 'जाया पूत कुपूत'।
भाई भी पैसे बिना मारें लख सिर जूत।

स्पष्ट।

बंजी और बटाउआ, सुख पावें जिस गाम।
वाकी तो चौखूंट में, करें नेक सरनाम।

व्यापारी और राहगीर सब जगह उस गांव की प्रशंसा करते हैं, जहां उन्हें सुख मिलता है।

बगल था सिपारा, तो पूत था हमारा।
जब कमर हुआ कटारा, तो कंत हुआ तुम्हारा।

जब उसकी बगल में किताबें थीं (अर्थात जब वह छोटा था) तब तो वह मेरा लड़का था, और जब उसकी कमर में कटारी बंध गई है (अर्थात वह सिपाही बन गया है।) तब वह तेरा कंत हो गया। (सास का बहू को उलाहना जो ईर्ष्यावश अपने पति को उसके पास जाने से मना करती है।)

बड़े आदमी ने दाल खाई, तो कहा सादा मिजाज है,
गरीब ने दाल खाई, तो कहा कंगाल है

जिस काम के लिए बड़े आदमी की प्रशंसा होती है, उसी काम के लिए गरीब की निंदा की जाती है।

बड़ों को होवे दुख बड़ा, छोटों से दुख दूर।
तारे सब न्यारे रहें, गहें राहु ससि सूर।

बड़ों के कष्ट भी बड़े होते हैं। ग्रहण चंद्र और सूर्य को ही लगता है, तारों को नहीं लगता।

बनते देर लगती है, बिगड़ते देर नहीं लगती

स्पष्ट।

बनी बनावे बानिया, बनी बिगाड़े जाट।
मूंड़े सीस सराह कर, डोम, कबीसर, भाट।

बनिया बने काम को (और भी अच्छा) बनाता है; जाट बने काम को नष्ट कर देता है; डोम, कवि और भाट खुशामद करके पैसा खाते हैं।

बल सूं नामी हो गये, रुस्तम, अर्जुन, भीम।
बल बिन कैसी हाकिमी, कह गये सांच हकीम।

बल के बिना हुकूमत नहीं होती।

बल से राजा राव है, बल बिन बड़ा न कोय।
सांच बड़े रे कह गये, बल बिन बड़ा न कोय।

स्पष्ट।

बहू नवेली और गऊ दुधेली, (बा०)

बहू सुंदर और गाय दुधार (होनी चाहिए।)

बाजरा कहे मैं हूं अलेला
दो मूसल से लड़ूं अकेला
जो मेरी नाजो खिचड़ी खाय
तो तुरत बोलता खुश हो जाय, (कु०)

बाजरा अपनी प्रशंसा में कहता है मैं सब अनाजों में अलबेला हूं, अकेला दो मूसलों से लड़ता हूं (अर्थात मुझे साफ़ करने के लिए मूसल से कूटना पड़ता है) सुकुमारी यदि मेरी खिचड़ी खाए, तो तुरंत खुश होकर बात करने लगे।

बाड़ लगाई खेत को, बाड़ खेत को खाय।
राजा हो चोरी करे, न्याव कौन चुकाय।

खेत की रक्षा के लिए बाड़ लगाई, (पर) बाड़ ही खेत को खाने लगी; कोई राजा होकर चोरी करे, तो न्याय कौन करेगा?

बात पर बात याद आती है

स्पष्ट।

बातों हाथी पाय, बातों हाथी पांय

बातों से ही हाथी की सवारी या हाथी इनाम में मिलता है, और बातों से ही हाथी के पैर तले कुचलवा दिया जाता है।

बाप डोम और डोम ही दादा; कहे मियां 'मैं शरफ़ाजादा'

शेखी मारना।

शरफ़ा जादा=शरीफ़ आदमी का लड़का।

बारह बरस के को बेद क्या? और अठारह बरस के को कैद क्या?

बारह वर्ष के लड़के को सिखाने की क्या जरूरत? वह स्वयं समझता है और अठारह वर्ष के लड़के पर नियंत्रण की भी क्या जरूरत। (उसे स्वयं अपना भला-बुरा समझना चाहिए।)

बिद्या तो वह माल है, जो खरचत दुगना होय;
राजा, राव, चोरटा, छीन न सके कोय।

विद्या ऐसा धन है जो खर्च करने से बढ़ता है, उसे न कोई चुका सकता है न छीन सकता है।

बेटा जनकर लिंच चले; सौना पहनकर डक चले, (स्त्रि०)

• लड़के को जन्म देने के बाद (स्त्री को) विनम्र बन-

कर रहना चाहिए; और सोने के गहने पहनकर उन्हें ढक कर रखना चाहिए।

तात्पर्य यह कि संतान या धन का घमंड ठीक नही।

बैरी लागे हाथ तो, छोड़ न लेकर माल।
उसकी जड़ को मूल ही, बाहर फेंक निकाल।

दुश्मन अगर चंगुल में फंस जाए, तो रुपए के लालच में उसे छोड़ नही देना चाहिए; (बल्कि) उसे जड़ से नष्ट कर देना चाहिए।

बैरी संग ना बैठिए, पीकर मद और भंग।
जो खोवा है बैठना, जब बैरी के संग।

नशा करके बैरी के साथ नहीं बैठना चाहिए, प्राण संकट में पड़ सकते है।

बैरी होना अपना, लाख जतनकर देख।
मेटे से मिट्टे नहीं, ज्यूं करमन की रेख।

भाग्य में लिखा कभी मिटता नहीं, उसी तरह कितना ही प्रयत्न करो, दुश्मन कभी दोस्त नही बन सकता।

भाग्यवान तो जगत में, बैस कोई न होय।
जो कोई राजा न्याव में, सगर उमर दे खोय।

जो राजा न्याय (करने) में ही अपना सारा जीवन बिता देता है, उसके बराबर कोई भाग्यवान नही।

भूखा चाहे रोटी दाल; 'धाया कहे 'मैं जोड़ूं माल'

भूखा तो भोजन चाहता है, पर जिसका पेट भरा है (जिसके पास पैसा है) वह रुपया इकट्ठा करना चाहता है।

धाया=अघाया, संतुष्ट।

भैंस कहे गुन मेरा पूरा; मेरा दूध पी होवे सूरा।
जिसके के घर में बंध जाऊं. दूध दही का नाल बहाऊं।
(ग्रा०)

भैस कहती है—मुझमें कोई कमी नहीं, मेरा दूध पीकर लोग वीर बनते है; मैं जिस घर मे पहुच जाती हू, वहां दूध-दही की नालिया बहने लगती हैं।

मंदर मांस ही संझ से, राखो दीपक बाल।
सांझ अंधेरे बैठना, है अति भोंड़ी चाल।

संध्या होते ही घर में दीपक जला लेना चाहिए; संध्या के अंधेरे में बैठना बुरा है।

मरना है बद नेक को जीना जीना नांह सवाय।
बेहतर है जो जगत मां नेक नाम रह जाय।

भले बुरे सबको मरना है। कोई हमेशा जीवित नहीं रहता। ऐसा काम करो, जिससे संसार में तुम्हारी कीर्ति बनी रहे।

मापा कनिया और पटवारी; भेंट लिये बिन करें न यारी

खेत नापने वाला (अमीन), कानूनगो और पटवारी, ये तीनो रिश्वत लिए बिना काम नही करते।

मितर से अंतर नहीं, बैरी से नहिं नेह।
पीतम से परदा नहीं, जिन निरखी सब देह। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

अंतर भेदभाव।

मिल्लत मां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल।
माखी जब हों एकठी, तो देवें शहद महाल।

सबसे मिलकर रहो, मिलकर रहने में बड़ा लाभ है। मधुमक्खियां जब मिलकर एक होती है, तभी बहुत-सा मोम और शहद इकट्ठा कर पाती है।

मीत बनाये ना बनें, बैरी, सिंह औ नाग।
जैसे कभी न हो सकें, एक ठौर जल आग।
(ग्रा०)

जैसे पानी और आग एक साथ नही रह सकते उसी तरह शत्रु, सिंह और सर्प ये किसी के मित्र नहीं बन सकते।

मूरख को मत सौंप तू, चतुराई का काम।
गधा बिकत मिलती नहीं, बड़ घोड़े के दाम।

मूर्ख को चतुराई का काम नही सिखाना चाहिए; गधा कभी कीमत में घोड़े की बराबरी नही कर सकता।

मूरख, मूढ़ गंवार को, सीख न दीजो कोय।
कूकर बरगी पूंछड़ी, कभी न सीधी होय। (ग्रा०)

मूर्ख या गंवार को उपदेश देना व्यर्थ है। कितना ही प्रयत्न करो, कुत्ते की जाति की पूछ को कभी सीधा नहीं किया जा सकता।

मूल न वा सूं भय करो, जो नर करे गरूर।
जो नर साईं से डरे, वा से डरो जरूर।

जो घमड दिखाए, उससे बिल्कुल मत डरो, पर जो ईश्वर से डरे, उससे अवश्य भय खाओ।

मेले में जो जाय तू, तो नावां कर में टांक।
चोर, जुआरी, गंठकटे, डाल सकें न आंख।
(ग्रा०)

मेले-ठेले मे जाने पर पैसा अपने हाथ मे रखना चाहिए, जिससे कोई चुरा न ले।

मैं हूं ऐसो चातुर सयानी; चातुर भरे मेरे आगे पानी

जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे व्यग्य मे क०।

मौत दीजो पर मंदी न दीजो, (व्य०)

मौत अच्छी, पर बाजार की मंदी अच्छी नही। व्यापारियो की उक्ति।

मौत दीजो, पर मौर न दीजो

मौत अच्छी, पर ब्याह अच्छा नही।

मौर – ब्याह के समय का सिर पर पहनने का एक आभूषण, जो ताड या खजूर पत्र का बनता है।

राजी राख किसान को जो हाला भर धन दे;
राजी हुआ मजूर तो मुकता काम करे। (ग्रा०)

जो किसान हमे खाने को दे, उसे सतुष्ट रखना चाहिए, मजदूर यदि प्रसन्न रहे, तो वह अधिक काम करता है।

लाज भली है बालके, या मत जी से खोय।
लाज बिना ऐसा मनुस; खसम बिना ज्यूं जोय।

स्पष्ट।

लालच मत कर बावरे, लालच बुरी बलाय।
तुरत पखेरू जाल मां,लालच सूं फंस जाय।

लालच बुरी चीज है।

लावण बिन ना सोहे रोटी; बिन गूंथे ना सोहे चोटी

मिर्च-मसाले से रोटी अच्छी लगती है, और गूथने से चोटी।

सुख, संपत और औबसा, सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।

सुख-दुख सब को लगे हुए हैं, पर (दुख के दिनो को) समझदार समझदारी के साथ और मूर्ख रो-रोकर काटता है।

सूना खेत, औंड़िया सोवे; क्यों न खेती ऊजड़ होवे

खेत यदि सूना हो, और रखवाली करनेवाला भी सोता हो, तो खेती तो उजड़ ही जाएगी।

सेज चढ़ते ही रांड़

(१) जीत के समय ही किसी की मृत्यु हो जाना।
(२) जीती बाजी हार जाना।
(३) बना-बनाया काम बिगड़ जाना। इत्यादि।

हाट भली ना सीर की, और संगत भली ना बीर की, (व्य०)

साझे की दुकान अच्छी नहीं, और स्त्री का साथ अच्छा नही।

हाली आछा हांगला, और बलदा आछा चांगला, (कृ०)

(१) हलवाला अगर बैलों को अच्छी तरह हांकता रहे, तो बैल भी अच्छी तरह चलेंगे। अथवा
(२) हलवाला हाकनेवाला अच्छा, और बैल चलनेवाला अच्छा।

होना बैरी जानकर, मत निडर हो यार।
कीड़ी बड़कर सूंड़ मां, दे हाथी को मार।

शत्रु को छोटा नही समझना चाहिए।
कीडी=चीटी।

हुए फेरे, चूमे मेरे

ब्याह हो गया, औरत मेरी, अब मैं उसके मनमाने चूमे ले सकता हू। अर्थात काम हो गया, अब मुझे किसी की कोई परवाह नहीं। अथवा चीज मेरे हाथ मे आ गई, उसका मनचाहा उपयोग कर सकता हूं।

होड़ लीजे गोड़, उधार दीजे छोड़

उधार दिया हुआ भले ही छोड़ दे, मगर जीता हुआ न छोड़े।

होते की बहिन और बाप हैं, बिन होते की जोय।
तुलसी रुपया पास का, सब से नीका होय।

बहिन और बाप समृद्धि में ही काम आते हैं। स्त्री विपत्ति में काम आती है।

तुलसीदास कहते हैं, अपने पास का पैसा ही सबसे अच्छा होता है।